राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

(सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर)

ग्रन्थाङ्क ७८

राघवदास कृत

भक्तमाल

(चतुरदास कृत टीका सहित)

प्र का श क

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य
सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएण्टल सोसाइटी जर्मनी
निवृत्त सम्मान्य नियामक (ऑनरेरि डायरेक्टर),
भारतीय विद्याभवन बम्बई; प्रधान सम्पादक
सिंघी जैन ग्रन्थमाला, इत्यादि।

ग्रन्थाङ्क ७८

राघवदास कृत

भक्तमाल

(चतुरदास कृत टीका सहित)

प्रकाशक
राजस्थान राज्याज्ञानुसार
संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)

राघवदास कृत

भक्तमाल

(चतुरदास कृत टीका सहित)

श्री आचार्य विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार, जयपुर

सम्पादक

श्री अगरचन्द नाहटा

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०२१ | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८५ | खिस्ताब्द १९६५
प्रथमावृत्ति १००० | मूल्य रु० ६.७५

मुद्रक : जगदीशचन्द्र स्वर्णकार, अजन्ता प्रिण्टर्स, जोधपुर.

BHAKTAMAL
OF
RAGHAVADAS

(with Commentary by Chaturdas)

Edited by

AGARCHAND NAHATA

PUBLISHED

under the orders of the Government of Rajasthan

BY

The Director Rajasthan Oriental Research Institute,
JODHPUR (RAJASTHAN).

V.S 2021 *Price : Rs. 6.75* 1965 A.D

सञ्चालकीय वक्तव्य

भगवद्भक्तो के आदर्श आचरण और त्यागमय जीवन सामान्य जन-जीवन में मार्गदर्शक होते हैं। इस द्वन्द्वात्मक जगत की जटिल परिस्थितियो के झकझोलो मे जब जनता के धार्मिक विश्वास डगमगाने लगते हैं, तो तारण-तरण पहुँचवान भक्तो की करुणापरिपूरित अमृतवाणी से ही भवदावदग्ध-जनो को शान्ति एव कर्तव्यपथ का निदर्शन प्राप्त होता है। ऐसे जगदुद्धारक हरि-भक्त सन्तो के पवित्र चरित्र और महिमा का वर्णन अनेक सतसङ्गी एव गुरुभक्तों ने विविध रूपो मे किया है।

भक्तमाल, भक्त-परिचयी, मुनि-नाम-माला, साधु-वन्दना आदि अनेक प्रकार की रचनाएँ विभिन्न ग्रन्थ-सग्रहो मे उपलब्ध होती हैं। ऐसी रचनाओ मे महात्मा पयोहारिजी के शिष्य नाभादासजी कृत भक्तमाल प्रसिद्ध है। दादूपथी, रामस्नैही, निरञ्जनी, राधावल्लभीय, गौडीय और हितहरिवशीय सम्प्रदायो के भक्तो के परिचय भी पृथक्-पृथक् भक्तमालो मे सन्दृब्ध हुए हैं।

दादू सम्प्रदाय के कतिपय भक्तो की परिचायिका चारण कवि ब्रह्मदास कृत भक्तमाल का प्रकाशन प्रतिष्ठान की ओर से 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत ग्रन्थाङ्क ४३ के रूप मे किया जा चुका है। दादू सम्प्रदाय का जन्म और विकास राजस्थान मे ही हुआ और दादूपथी भक्तो की वाणी भी अधिकाश मे राजस्थानी भाषा मे ही निबद्ध है।

हरिदास अपर नाम हापोजी के शिष्य राघवदासजी ने स्वरचित भक्तमाल मे अनेक दादूपथी भक्तो के पावन-चरित्रो का चित्रण किया है। इस भक्तमाल की एक टीका भी एतत् सम्प्रदायी शिष्य कवि चतुरदास द्वारा की गई, जिसमे भक्तो का चरित्र विस्तार से दिया गया है।

कुछ वर्षों पूर्व राजस्थान के सुप्रसिद्ध उत्साही साहित्यान्वेषक श्री अगरचन्दजी नाहटा ने 'राघवदास कृत भक्तमाल चतुरदास कृत टीका सहित' की एक प्रति की प्रतिलिपि हमे दिखाकर इस कृति को प्रतिष्ठान की ओर से प्रकाशित करने का प्रस्ताव किया जो हमने स्वीकार कर लिया और प्राचीन प्रतियो के आधार पर इसका विधिवत् सम्पादन करने के लिये श्री नाहटाजी से अनुरोध किया।

प्रस्तुत रचना की दो प्रतियाँ प्रतिष्ठान के जयपुर स्थित शाखा कार्यालय में स्व. पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण-संग्रह में विद्यमान हैं। इनमें से एक प्रति सं. १८६१ की अर्थात् चतुरदासजी कृत टीका के रचनाकाल से साढ़े तीन वर्ष बाद ही की लिखित है। इस प्रति की प्रतिलिपि करवा कर श्री नाहटाजी को भेजी गई और अन्य प्राप्य प्रतियों के पाठान्तरों सहित सम्पादन के लिये उन्हें सूचित किया गया। तदनुसार विद्वान् सम्पादकजी ने भूमिका में उल्लिखित प्रतियों को लेकर पाठान्तर आदि देते हुए प्रेसकॉपी तैयार कराई। समय-समय पर जिन अन्य प्रतियों की हमें सूचना मिली अथवा बाद में प्रतिष्ठान में जो प्रतियाँ प्राप्त हुईं, उनके विषय में भी श्री नाहटाजी को जानकारी दी गई और प्रतियाँ उनके अवलोकन व उपयोग के लिये भेजी गईं।

हमारा विचार है कि यदि ऐसी राजस्थानी रचनाओं का सम्पादन राजस्थान के विभिन्न भागों अथवा विभिन्न भूतपूर्व रियासतों में लिपिकृत प्रतियों के आधार पर किया जाय तो भाषाशास्त्र के अन्तर्गत ध्वनिभेद और भाषा-विकास सम्बन्धी अनेक गुत्थियों के हल निकलने के अतिरिक्त कितने ही अन्यान्य रोचक तथ्य भी सामने आ जाते हैं और उनसे नए निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। अस्तु, श्री नाहटाजी द्वारा प्रेस-कॉपी तैयार करा लेने तथा प्रेस में मूल ग्रन्थ का बहुत-सा अंश छप जाने के बाद प्रतिष्ठान में राघवदास कृत भक्तमाल (चतुरदास की टीका सहित) की दो और प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं। उनके विवरण इस प्रकार हैं :

(१) प्रतिष्ठान के ग्रंथांक २११७७ पर अंकित प्रति का विवरण
पत्र सं. ९२   पंक्ति प्रति पृष्ठ = १८
१२ × १६ ८ सी. एम. अक्षर प्रति पंक्ति = ४८
प्रतिलिपि संवत् १९५० वि.।

पुष्पिका इती श्री भक्तमाल टीका सहित राघोदासजी कृत संमस्त भक्तन को जसरीत वरनन संपूरण समाप्त ॥ छप्पय छंद ॥१४१॥ मनहर छंद ॥१६॥ इंदव छंद ॥४॥ साखी ॥६२॥ चौपई ॥२॥ इंदव छंद ॥८॥ एती राघवदासजी कृत संपूरण ॥१७३॥ चतुरदासजी कृत टीका ॥ इंदव छंद मनहर ॥६६३॥ समस्त मूल टीका कवित्त को जोड़ ॥१२३६॥ ग्रंथ को समस्त श्लोक संख्या हजार ॥४२ ॥

संवत अठारह सतक ॥ बरस नवगुन अधिकाहि ॥
मागमास सित प्रतिपदा ॥ बुधवासर के मांहि ॥

अथ ग्रंथमाला मध्ये श्लोक प्रस्तार भक्तमालदासजी का ता मध्ये लिखि साथ रामदयाल दादूपंथी ॥ संवत ॥१९ ॥ मीति भादवा सुदी ॥१२॥ रांम रं रं रं रं

इस प्रति में छंद संख्या १२५५ लिखी है परन्तु उक्त अंकों को जोड़ने पर
१२   आती है। पृष्ठ संख्या अनुपात प्रति पृष्ठ पंक्ति संख्या और प्रतिपंक्ति

अक्षर सख्या के गुणन से ४,६६८ श्लोक सख्या आती है, परन्तु प्रति मे ४,५०० ही लिखी है।

(२) संख्या २८००० पर अंकित प्रति का विवरण :

पत्र स० १२० पक्ति प्रति पृष्ठ=१३
माप ३०×१३ सी. एम. अक्षर प्रति पक्ति=५०
लिपि सवत् १९०४ वि०

पुष्पिका—"इति श्री भक्तमाल की टीका सपूरण समापत ॥ सुभमस्तु कल्याणरस्तु ॥ लेषकपाठकयो ब्रह्म भवतु ॥ छपै छद ॥३२३॥ मनहर छद ॥१४१॥ हसाल छद ॥४॥ साषी ॥३८॥ चौपई ॥२॥ इदव छद ॥७५॥ राघोदासजी कृत भक्तमाल सपूरण ॥५५३॥ इदव छद ॥ चतुरदास कृत टीका सब छं ॥६२१॥ सरवस कबित ॥११८५॥ ग्रथ की श्लोक सख्या ॥४१०१॥"

यहाँ प्रति मे दोहरा हसपद लगाकर दक्षिण हाशिए पर निम्न दो दोहे सूक्ष्माक्षरो मे लिखे हैं :

अण्यर वतीस ग्यन करि, सण्या चार हजार।
तामें अरथ अनूप है, वकता लह विचार ॥१॥
मैं मत. सारू आपणी, ग्रन्थ जो लिख्यो विचार।
सचर घालै अति घणो, बकता बकसणहार ॥२॥

लिषत सुभसथान रामगढ मध्ये ॥ सुकल पक्षे तिथ भादव सुधि पचमी मगलवार बार ॥ सबत ॥१९॥४॥ का ॥"

इसके आगे "दादूजी दयाल पाट ग्रीव मसकीन ठाठ" आदि पद्य लिखे हैं, जो पुस्तक के पृ० २७० पर मुद्रित हैं। ये पद्य २१६७७ वाली प्रति मे नही हैं।

इस प्रति की पुष्पिका मे लिखे अनुसार मूल भक्तमाल की छद सख्या ५५३ है, परन्तु जोडने पर ५९३ आती है। इसमें टीका के उल्लिखित ६२१ छद जोडने से योग १,२१४ आता है, परन्तु प्रति मे १,१८५ ही लिखे हैं। प्रति मे समस्त श्लोक सख्या ४,१०१ ही लिखी है, परन्तु उपर्युक्त प्रकार से पृष्ठ सख्या, प्रतिपृष्ठ पक्ति सख्या एवं प्रतिपक्ति अक्षर सख्या का गुणनफल ४,८७५ आता है।

विद्वान् सम्पादक श्री अगरचन्दजी ने प्रस्तुत पुस्तक के सम्पादन मे पूरी रुचि लेकर पाठ-शोधन, पाठान्तर, सूचनागर्भित प्रस्तावना और आवश्यक परिशिष्ट आदि का सङ्कलन कर पुस्तक को उपयोगी बनाने का यथाशक्य पूरा प्रयत्न किया है। तदर्थ वे हमारे धन्यवाद के पात्र हैं। जयपुर के दादू-महाविद्यालय के प्राण स्वामी मगलदासजी महाराज ने भी अतिरिक्त सूचनाएँ व

परिशिष्ट आदि दिये हैं अतः उन्हें भी धन्यवाद अर्पित करना हमारा कर्तव्य है। इनके अतिरिक्त जिन विभागीय एवं अन्य विद्वानों ने पुस्तक को पूर्ण बनाने में श्री नाहटाजी का हाथ बटाया है, वे भी प्रशंसा के पात्र हैं।

प्रस्तुत प्रकाशन भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय की ओर से 'आधुनिक भारतीय भाषा विकास-योजना राजस्थानी' के अन्तर्गत प्रदत्त आर्थिक सहयोग से किया जा रहा है अतः भारत सरकार के प्रति हम आभार प्रदर्शित करते हैं।

१५ ४ ६१
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर.

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक

भूमिका

भारत अध्यात्म-प्रधान देश है। यहाँ के मनीषियो ने सब से अधिक महत्त्व धर्म को ही दिया है, क्योंकि मोक्ष की प्राप्ति उसी से होती है और मानव-जन्म का सर्वोच्च अेव अतिम ध्येय आत्मोपलब्धि या परमात्म-पद-प्राप्ति का ही है। साध्य की सिद्धि के लिअे साधनो की अनिवार्य आवश्यकता होती है।

भारतीय धर्मों मे वैसे तो अनेक साधन प्रणालियो को स्थान दिया गया है, पर उन सब का समावेश ज्ञान, भक्ति और कर्म-योग में कर लिया जाता है। मानवो की रुचि, प्रकृति अेव योग्यता मे विविधता होने के कारण उनके उत्थान के साधनो मे भी भिन्नता रहती है। मस्तिष्क-प्रधान व्यक्ति के लिअे ज्ञान-मार्ग अधिक लाभप्रद होता है और हृदय-प्रधान व्यक्ति के लिअे भक्तिमार्ग। योग अेवं कर्म-मार्ग भी अेक सुव्यवस्थित साधन प्रणाली है, क्योंकि जब तक आत्मा का इस शरीर के साथ संबध है, उसे कुछ न कुछ कर्म करते रहना ही पडता है। गीता के अनुसार आसक्ति या फल की आकाक्षारहित कर्म ही कर्म-योग है। पतञ्जलि के योगसूत्र मे योगमार्ग के आठ अग बतलाये गये है, उनमे पहले चार अग हठयोग के अन्तर्गत आते हैं और पिछले चार अग राजयोग के माने जाते हैं। वेदान्त, ज्ञान-मार्ग को महत्व देता है, तो भक्ति-सप्रदाय सब से सरल और सीधा मार्ग भक्ति को ही बतलाता है।

जैन धर्म मे सम्यक्दर्शन, ज्ञान और चारित्र को मोक्ष-मार्ग बतलाया गया है। सम्यग्दर्शन मे श्रद्धा को प्रधानता दी गई है, अत. उसका सबध भक्तिमार्ग से जोडा जा सकता है, कर्म या योग का चारित्र से ज्ञान तो सर्वमान्य है ही, क्योंकि उसके बिना भक्ति किसकी[1] और कैसे की जाय तथा कर्म कौन-सा अच्छा है और कौनसा बुरा—इसका निर्णय नही हो सकता।

अपने से अधिक योग्य और सम्पन्न व्यक्ति के प्रति आदर-भाव होना मानव की सहज वृत्ति ही है। महापुरुष या परमात्मा से बढकर श्रद्धा या आदर का स्थान और कोई हो नही सकता। गुणी व्यक्ति की पूजा या भक्ति करने से गुणो के

[1]भगवान के सगुण व निर्गुण दो भेद करके उसकी उपासना दोनों रूपो मे की जाती है। इस रीति से निर्गुणोपासक व सगुणोपासक भक्त कहा जाता है।

प्रति आकर्षण बढ़ता जाता है और इससे अपने गुणों का विकास करने की प्रेरणा और शक्ति प्राप्त होती है। इसलिये ईश्वर या महापुरुष की भक्ति को सभी धर्मों ने महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। भक्ति कई प्रकार से की जाती है जिन में से नवधा भक्ति काफी प्रसिद्ध है।

भक्ति के द्वारा भगवान को प्राप्त करना या जैन-दर्शन के अनुसार प्रत्येक आत्मा परमात्म-स्वरूप है इसलिये परमात्मा के अवलंबन से अपने में छिपे हुये गुणों का विकास कर परमात्मा बन जाना ही भक्ति-मार्ग का इष्ट है।

जिन जिन व्यक्तियों ने भक्ति के द्वारा अपना विकास किया वे 'भक्त' कहलाते हैं। ऐसे भक्तों के नाम स्मरण एवं गुणस्तुति के लिये ही 'भक्तमाल' जैसे ग्रंथों की रचनायें हुई हैं—भक्तजनों की जीवनी के विशिष्ट प्रसंगों व चमत्कारों आदि का वर्णन इन ग्रंथों में संक्षेप से किया जाता है जिससे अन्य व्यक्तियों को भी भक्ति की प्रेरणा मिले और वे भक्त बनें।

महापुरुषों संत एवं भक्तजनों तथा अन्य विशिष्ट व्यक्तियों की गुणस्तुति या चरित्र-वर्णनात्मक साहित्य-निर्माण की परंपरा काफी प्राचीन है। वेदों और उपनिषदों में इसके सूत्र पाये जाते हैं। पुराणों तथा रामायण एवं महाभारत में इस परंपरा का उल्लेखनीय विकास देखने को मिलता है। इसके बाद भी समय-समय पर अनेकों व्यक्तियों के चरित एवं स्तुति-काव्य रचे गये। यह उनकी परंपरा आज भी है और आगे भी रहेगी। ऐसी रचनाओं में कुछ तो व्यक्ति-परक होती हैं और कुछ अनेक व्यक्तियों के संबंध में। 'भक्तमाल' जैसा कि नाम से स्पष्ट है भक्तजनों की नामावली एवं गुणस्तुति की एक माला है। जिस प्रकार माला में अनेक मनके होते हैं उसी तरह 'भक्तमाल' में अनेकों संतो एवं भक्तों के नाम तथा उनके जीवन प्रसंगों का संग्रह किया जाता है।

माला नामान्त पर्व वाली रचनाओं की परम्परा—

माला द्वारा जप करने की प्रणाली काफी पुरानी है पर माला नामान्त वाली रचनायें इतनी प्राचीन प्राप्त नहीं होतीं। वैसे करीब बारह सौ वर्षों से प्राकृत संस्कृत और अपभ्रंश भाषा में माला व माल नामान्त वाली शताधिक जैन जयमाल आदि रचनायें[1] प्राप्त होती हैं। संभवतः हिन्दी के कवियों को उन्हीं से अपनी रचनाओं को 'माला या माल' संज्ञा देने की प्रेरणा मिली हो।

---

[1] देखिये राजस्थान के दिगम्बर जैन ग्रंथ भण्डारों की सूचियाँ।

सतरहवी शताब्दी के कवि नाभादास ने सर्वप्रथम 'भक्तमाल' नामक महत्त्वपूर्ण ग्रथ बनाया। उसके बाद तो उसके अनुकरण मे 'भक्तमाल' और ऐसी ही अन्य नामो वाली रचनाएँ बहुत-सी रची गयी और प्रायः प्रत्येक भक्ति और सत सप्रदाय के कवियो ने पौराणिक-भक्तो के नाम एव गुरुस्तुति के साथ-साथ अपने सप्रदाय के सत एव भक्तजनो के नाम तथा चरित्र-सबधी प्रसगो का समावेश अपनी रचित भक्तमालो मे किया है।

सन्त एवं भक्तों को परिचइयाँ—

१७ वी शताब्दी से ही हिन्दी मे सतो एव भक्तो के व्यक्तिगत परिचय को देने वाली 'परिचयी' सज्ञक रचनाएँ भी रची जाने लगी, ऐसी रचनाओ मे सर्व प्रथम अनतदास रचित आठ परिचइयाँ प्राप्त है, जो कि स० १६४५ के लगभग को रचनाएँ हैं। इसके बाद तो छोटी व बडी शताधिक परिचयी सज्ञक रचनाएे रची गयी, जिनमे से १५ परिचइयो का आवश्यक विवरण डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित ने 'परिचयी-साहित्य' नामक ग्रथ में प्रकाशित किया है, जो लखनऊ विश्वविद्यालय से सन् १६५७ मे प्रकाशित हुआ था। इसके बाद मैंने ऐसी रचनाओ की विशेष रूप से खोज की, और करीब ७५ रचनाओ की जानकारी 'राष्ट्रभारती' के जनवरी और सितबर १६६२ के अको मे प्रकाशित मेरे दो लेखो मे दी जा चुकी हैं।

अब मैं 'भक्तमाल' नामक स्वतत्र रचनाओ की जानकारी यहाँ सक्षेप मे दे देना आवश्यक समझता हूँ।

भक्तमाल साहित्य की परम्परा—

नाभादास को भक्तमाल, उसकी टोकायें और प्रकाशित संस्करण

भक्तो के चरित्र-सबधी हिन्दी-काव्यो मे सब से प्राचीन एव सब से अधिक प्रसिद्ध ग्रथ नाभादास की 'भक्तमाल' है। इसकी पद्य सख्या, रचना काल, आदि अभी निश्चित नही हो पाये, क्योकि प्राचीनतम[1] प्रतियो के आधार से इस ग्रन्थ का सम्पादन वैज्ञानिक पद्धति से नही हो पाया है। कई विद्वानो की राय मे मूलत इसमे १०८ पद्य (छप्पय) थे, जैसे कि माला के १०८ मनके होते हैं। पर उतने पद्यो वाली प्राचीनतम प्रति अभी तक प्राप्त नही है। सवत् १७७० की

[1] जहाँ तक मेरी जानकारी है, सवतोल्लेखवाली प्राचीन प्रति स० १७२४ की लिखित सरस्वती भण्डार उदयपुर में है। वृन्दावन से प्रकाशित भक्तमाल के पृष्ठ ८६६ मे सं० १७१३ की अन्य प्रति का उल्लेख किया है, पर वह कहाँ है—इसकी जानकारी नहीं मिल सकी।

प्रति में १६४ पद्य हैं। प्रियादास की टीका में २१४ पद्य छपे हैं। शुक्लजी ने इसकी छन्द-संख्या ३१६ बतलाई है। इससे मालूम होता है कि समय-समय पर अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रक्षेप होता रहा है। और इसलिये इसका रचना-काल भी अभी तक निश्चित नहीं हो पाया। साधारणतया इसका रचना-काल संवत् १६४२ से १७०० तक का माना जाता है। पर मूल ग्रन्थ में रचना-काल दिया हुआ नहीं है और इस ग्रन्थ में जिन व्यक्तियों संबंधी पद्य हैं, उनमें से कई व्यक्ति और उनके ग्रन्थ संवत् १६८६ और १७०० के बीच के समय के हैं। इसलिये श्री वासुदेव गोस्वामी ने इसका रचना-काल संवत् १६८६ के बाद का सिद्ध किया है—(देखें नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ६४, अंक ३-४)।

श्री किशोरीलाल गुप्त ने अपने 'भक्तमाल का संयुक्त कृतित्व' नामक लेख में जो कि ना॰ प्र० पत्रिका, वर्ष ६६, अंक ३–४ में छपा है लिखा है कि भक्तमाल अभी जिस रूप में उपलब्ध है, वह एक व्यक्ति की रचना न हो कर ३ व्यक्तियों की रचना है। उन्होंने लिखा है— 'भक्तमाल के अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि यह ग्रन्थ किसी एक व्यक्ति की रचना न होकर कम-से-कम ३ व्यक्तियों की संयुक्त कृति है। ये ३ व्यक्ति हैं—अग्रदास और उनके शिष्य नारायणदास तथा नाभादास। ——— मेरा ऐसा खयाल है कि नारायणदास के मूल भक्तमाल का परिवर्तन नाभादास ने किया और आज वह जिस रूप में उपलब्ध है उसे वह रूप देने का श्रेय नाभादास को है। नाभादास ने ग्रन्थ की भूमिका और उपसंहार में कोई परिवर्तन नहीं किया है और भक्तमाल के सभी दोहे नारायणदास की ही रचना हैं। नाभादास ने केवल छप्पयों को ही बढ़ाया है। २४ छप्पय अग्रदास कृत हैं। जिनमें से २ में स्पष्टतः अग्रदास की छाप है। अग्रदास के छप्पय नाभादासजी ने भक्तमाल को वर्तमान रूप देते समय जोड़े। भक्तमाल के ३० से १११ संख्यक १७ छप्पयों में भक्तों का विवरण है इनमें से १०८ छप्पय नारायणदास के होने चाहियें और ६२ *नाभादास के। श्री किशोरीलाल गुप्त ने इस संबंध में विस्तार से प्रकाश डाला* है।[1] स्वामी मंगलदासजी की राय में दादूपन्थी राघोदास ने भक्तमाल की रचना नारायणदास रचित भक्तमाल के आधार पे संवत् १७१७ में की है। अतः उसके तुलनात्मक अध्ययन से भी नारायणदास (नाभा) की भक्तमाल के मूल पद्यों का निर्णय करने में सहायता मिल सकती है।

---

[1] इस सम्बन्ध में वृन्दावन से प्रकाशित भक्तमाल वाला बृहद् संस्करण भी महत्त्व की सूचनाएँ देता है।

भक्तमाल की निम्नोक्त टीकाओ का उल्लेख विभिन्न ग्रन्थो मे देखने मे आया है।

१. प्रियादास की टीका 'भक्ति-रस-वोधिनी' स० १७६९। मे रचित स० १९८८ में वेकटेश्वर प्रेस से प्रकाशित सस्करण में मूल पद्य २१४ और टीका पद्य ६२४।

२ 'भक्तमाल प्रसग' वैष्णवदास कृत (सन् १९०१ की खोज रिपोर्ट में सवत् १८२९ मे लिखित प्रति) प० उदयशकर शास्त्री ने वैष्णवदास की टिप्पणी—'भक्तमाल-वोधिनी' टीका सवत् १७८२ मे लिखी गई, लिखा है। उनकी राय में वैष्णवदास दो हो गये हैं।

३. लालदास कृत टीका—इसका रचनाकाल अनूप सस्कृत लायब्रेरी की सूची मे सवत् १८६८ छपा है, पर राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान मे इसकी तीन प्रतियाँ सवत् १८५६, १८७० और १८९३ की लिखी हुई हैं। इसलिये इसकी रचना सवत् १८५६ के पहले की ही समझनी चाहिये।

४. वैष्णवदास और अग्रनारायणदास कृत रसवोधिनी टीका—सन् १९०४ की खोज रिपोर्ट मे इसका रचना सवत् १८४४ दिया गया है।

५. भक्तोवर्शी टीका, लालजीदास—इसका विशेष विवरण नीचे दिया जा रहा है।

भक्तमाल अर्थात् भक्तकल्पद्रुम ले० श्री प्रतापसिंह, सम्पादक-कालीचरण चोरासिया गौड, प्रकाशक-तेजकुमार प्रेस बुक डिपो, लखनऊ। सन् १९५२, बारहवी बार, मूल्य दस रुपये—बडी साइज पृ० ४९३। इस ग्रन्थ मे मगलाचरण के बाद प्रस्तुत ग्रन्थ और इससे पहले की टीकाओ सम्बन्धी निम्नोक्त विवरण दिया गया है।

"छप्पय छन्द मे नाभाजी ने भक्तमाल बनाया। यह माला भक्तजन मणिगण से भरा है। जिसने हृदय मे धारण किया तिसने भगवत को पहिचाना, ऐसी यह माला है। श्री प्रियादासजी माध्वसम्प्रदाय के वैष्णव श्री वृन्दावन मे रहते थे। उन्होने कवित्व मे इस भक्तमाल की टीका बनाई। उनके पश्चात् लाला लालजीदास ने सन् ११५८ हिजरी मे पारसी मे प्रियादासजी के पोते वैष्णवदास के मत से तर्जुमा किया व तर्जुमे का नाम 'भक्तोर्वशी' धरा। यह रहने वाले काँधले के थे, लक्ष्मणदास

नाम था। मथुरा की चकलेदारी में सत्संग प्राप्त हुआ। हितहरिवंशजी की गद्दी के सेवक हुये, लालजीदास नाम मिला। राधावल्लभलालजी के उपासक हुये।

दूसरा तर्जुमा एक और किसी ने किया है नाम याद नहीं है तीसरा तर्जुमा लाला गुमानीलाल कायस्थ रहने वाले रयक के, संवत् १६०८ में समाप्त किया। चौथा तर्जुमा लाला तुलसीराम रामोपासक लाला रामप्रसाद के पुत्र अगरवाले रहनेवाले मीरापुर अम्बाले के इलाके के, कलक्टरी के सरिश्तेदार। उस मूल भक्तमाल और टीका को संवत् १६१३ में बहुत प्रेम व परिश्रम करके शास्त्र के सिद्धान्त के अनुसार बहुत विशेष वाक्यों सहित अति ललित पारसी में उर्दू वाणी लिये हुए तर्जुमा करके चौबीस निष्ठा में रच के समाप्त किया।

सम्वत् उन्नीस सौ सत्रह १६१७ श्रावण के शुक्ल पक्ष में पडरौना ग्राम में जो श्यामधाम में मुख्य भगवद्धाम है तहाँ श्री राधाराजवल्लभलालजी ठाकुर हिंडोला झूल रहे थे। उसी समय 'उमेदभारथी' नामक सन्यासी रहने वाला ज्वालामुखी के जो कोटकांगड़े के पास है भक्तमालप्रदीपन नाम पोथी जो पंजाब देश में अम्बाले शहर के रहने वाले लाला तुलसीराम ने जो पारसी में तर्जुमा करके भक्तमालप्रदीपन नाम ख्यात किया है जिसको लिये हुये आये। उनके सत्कार व प्रेमभाव से पोथी हम ईश्वरीप्रतापराय को मिली। जब सब अवलोकन कर गये तो ऐसा हर्ष व आनन्द चित्त को प्राप्त हुआ कि वर्णन नहीं हो सकता। साक्षात् भगवत् प्रेरणा करके मनवांछित पदार्थ को प्राप्त कर दिया। व लाला तुलसीराम के प्रेम व परिश्रम की बड़ाई सहस्रों मुख से नहीं हो सकती। कुछ काल उसके श्रवण व अवलोकन का सुख लिया तब मन में यह अभिलाषा हुई कि इस पोथी को देवनागरी में भाषान्तर अर्थात् तर्जुमा करें कि जो फारसी नहीं पढ़े हैं उन सब भगवद्भक्तों को आनन्ददायक हो सो थोड़ा २ लिखते २ तीसरे वर्ष संवत् उन्नीस सौ तेईस १६२३ मासिक ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को श्री गुरुस्वामी व भगवद्भक्तों की कृपा से यह भक्तमाल नाम ग्रन्थ सम्पूर्ण व समाप्त हुआ व चौबीस निष्ठा में सत्रह निष्ठा तक तो ज्यों का त्यों क्रमपूर्वक लिखा गया परन्तु अठारहवीं निष्ठा से भक्तिरस के तारतम्य से क्रम न लगाकर इस ग्रन्थ में लिखा है। प्रथम (१) धर्मनिष्ठा जिसमें सात उपासकों का वर्णन और (२) दूसरी भागवतधर्मप्रचारक निष्ठा जिसमें बीस भक्तों का बरणन तीसरी (३) साधुसेवा निष्ठा व सत्संग जिसमें पन्द्रह भक्तों की कथा चौथी (४) श्रवण महात्म्य निष्ठा में ४ भक्तों की कथा और पाँचवीं (५) कीर्तन

निष्ठा में १५ भक्तो को कथा है, छठई (६) भेषनिष्ठा निसमे आठ भक्तो की कथा, सातई (७) गुरुनिष्ठा तिसमे ग्यारह भक्तो की कथा, आठई (८) प्रतिमा व अर्चानिष्ठा तिसमे पन्द्रह भक्तो की कथा, नवई (९) लीला अनुकरण जैसे "रासलीला राम लीला" इत्यादि तिसमे छहो भक्तो की कथा, दसवी (१०) दया व अहिंसा तिसमे छवो भक्तो की कथा, ग्यारहवी (११) व्रतनिष्ठा तिसमे दो भक्तो की कथा, बारहवी (१२) प्रसाद निष्ठा तिसमे चार भक्तो की कथा, तेरहवी (१३) धामनिष्ठा तिसमे आठ भक्तो की कथा, चौदहवी (१४) नामनिष्ठा तिसमे पाँच भक्तो की कथा, पन्द्रहवी (१५) ज्ञान व ध्याननिष्ठा तिसमे बारह भक्तो की कथा, सोलहवी (१६) वैराग्य व शान्तनिष्ठा तिसमे चौदह भक्तो की कथा, सत्रहवी (१७) सेवानिष्ठा तिसमें दश भक्तो की कथा, अठारहवी (१८) दासनिष्ठा तिसमे सोलह भक्तो की कथा, उन्नीसवी (१९) वात्सल्यनिष्ठा तिसमे नव भक्तों की कथा, बीसवी (२०) सौहार्दनिष्ठा तिसमे छवो भक्तो की कथा, इक्कीसवी (२१) शरणागती व आत्म-निवेदन निष्ठा तिसमे दस भक्तो की कथा, बाइसवी (२२) सख्यभावनिष्ठा तिसमे पाँच भक्तो की कथा, तेइसवी (२३) शृगार व माधुर्यनिष्ठा तिसमे बीस भक्तो की कथा, चौबीसवी (२४) प्रेमनिष्ठा तिसमें सोलह भक्तो की कथा का वर्णन लिखा गया।"

६. बालकराम कृत भक्तदाम-गुणचित्रणी टीका—इसकी एक प्रति उदयपुर के सरस्वती भण्डार मे है। ४५८ पत्रो की यह प्रति स० १९३२ की लिखी हुई है। बालकराम ने टीका के अन्त मे अपना परिचय देते हुए लिखा है कि रामानुज की पद्धति मे रामानन्द हुये उनके पौत्र-शिष्य श्रीपयहारी की प्रणाली मे सन्तदास के शिष्य, खेम के शिष्य प्रहलाददास और मीठारामदास हुये। उनके शिष्य बालकदास ने यह टीका बनाई है। डॉ० मोतीलाल मेनारिया ने इसके सबध मे लिखा है कि "नाभाजी के भक्तमाल की यह एक बहुत बड़ी, सरस और भावपूर्ण टीका है। इसमे दोहा, छप्पय आदि कई प्रकार के छन्दो मे वर्णन किया गया है, पर अधिकता चौपाई छन्द की ही है। हिन्दी के भक्त कवियो के विषय मे नाभादास ने, अपने भक्तमाल मे जिन-जिन बातो पर प्रकाश डाला है, उनके अलावा भी बहुत-सी नयी बातें इसमे बतलायी गई है और इसलिये साहित्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होने के साथ-साथ वह सत महात्माओ के इतिहास की दृष्टि से भी परम उपयोगी है। इसका रचनाकाल सवत् ८०० से ११८२० तक का है। बालकराम की रचना कहने को नाभाजी के भक्तमाल की टीका है, पर वास्तव

में इसे एक स्वतन्त्र ग्रन्थ ही समझना चाहिये। यह ब्रजभाषा में है जिस पर राज स्थानी का भी थोड़ा-सा रंग लगा है। कविता बहुत ही सरस और प्रवाहयुक्त है।' इसमें दिये हुये कबीर-चरित्र को मेनारियाजी ने अपने राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज भाग १ में पूर्ण रूप से उद्धृत कर दिया है। इस ग्रन्थ की अन्य प्रति हिन्दी विद्यापीठ आगरा के संग्रह में है उसके अनुसार इसकी रचना सं० १८१३ के फाल्गुन एकादशी सोमवार को हुई है।

७ भक्तरसमाल—ब्रजजीवनदास रचना सं० १९१४। सन् १९०९ से १९११ की रिपोर्ट में इसका विवरण प्रकाशित हुआ है। पंडित महावीरप्रसाद, गाजीपुर के संग्रह में इसकी प्रति है। विवरण में इसकी श्लोक संख्या ८५० बतलाने से यह बहुत ही संक्षिप्त मालूम देती है।

८ हरिभक्तिप्रकाशिका टीका—खेतड़ी निवासी हरिप्रपन्न रामानुज दास कायस्थ ने इसकी रचना की। जिसे पंडित ज्वालाप्रसाद मिश्र ने विस्तृत करके लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस से सम्वत् १९५६ में प्रकाशित की थी। भूमिका में श्री मिश्रजी ने लिखा है कि उर्दू भाषा संस्कृत, छन्दोबद्ध आदि कई प्रकार की भक्तमाल इस समय मिलती हैं तथा एक इसी भक्तमाल को दोहे-चौपाई में मैंने भी रचना किया है जो अभी तक प्रकाशित नहीं हुई है। संवत् १९५५ मुरादाबाद में मिश्रजी ने इस हरिभक्तिप्रकाशिका टीका को नये रूप से लिखके पूर्ण की। ७७६ पृष्ठों का यह ग्रन्थ अवश्य ही महत्त्वपूर्ण है।

'हिन्दी पुस्तक-साहित्य' में रामानुजदास कृत हरिभक्तिप्रकाशिका टीका का उल्लेख है।

९ भक्तिसुधास्वादतिलक—इस की रचना अयोध्या निवासी श्री सीतारामशरण भगवानप्रसाद रूपकला ने संवत् १९५० के बाद की है। मूल भक्तमाल व प्रियादास की टीका के साथ इसे संवत् १९५६ में काशी के बलदेव नारायण ने प्रकाशित की। इसका तीसरा संस्करण नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ। इसके अन्त में प्रियादास के पौत्र शिष्य वैष्णवदास रचित भक्त माल महात्म्य भी छपा है। १००० पृष्ठों का यह ग्रन्थ अपना विशेष महत्व रखता है

१० सखाराम भीसेत कृत टीका—'हिंदी में उच्चतर-साहित्य'नामक ग्रन्थ के पृष्ठ ४८ मे बम्बई से इसके प्रकाशन का उल्लेख है। इसी ग्रन्थ में तुलसीराम की टीका (?) मबाउल उलूम प्रेस, मुहाना से प्रकाशित होने का उल्लेख है तथा

भक्तमाल के कई सस्करण, (१) नृत्यलाल शील, कलकत्ता, (२) पजाब कानोमिकल प्रेस, लाहौर, (३) चश्म-ए-नूर प्रेस, अमृतसर का भी उल्लेख है। पर ये संस्करण मेरे देखने मे नही आये। 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' के पृष्ठ ५३ मे तुलसोराम तथा हरिबख्स मुशी की भक्तमाल का भी उल्लेख है।

(११) मलूकदास लिखित भक्तमाल टीका—इसका विवरण सन् १९४१ से १९४३ की खोज रिपोर्ट के पृष्ठ १०५३ मे छपा है। ना० प्र० सभा, काशी के पुस्तकालय मे सवत् १९६२ की लिखी २९० पत्रो की प्रति है। मलूकदास वैष्णवदास के शिष्य थे और छत्रपुर रियासत मे रविसागर के निकट रहते थे।

उक्त खोज रिपोर्ट के पृ३ १०५२ मे भक्तचरितावली ग्रन्थ का विवरण छपा है जिसमे पौराणिक-चरितो का अभाव है। पर महाराजा बदनसिंह, विजयसिंह, शिवराम भट्ट आदि १९वी शताब्दी के भक्तो का वर्णन भी है। ग्रन्थ खण्डित है। ग्रन्थ की शैली भक्तमाल के समान प्रौढ न होते हुये भी उत्तम बतलाई गई है।

(१२) जानकीप्रसाद की उर्दू टीका—प० उदयशकरजी शास्त्री की सूचनानुसार नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से यह छप चुकी है।

(१३) छप्पयो पर फारसी टीका—प० उदयशकरजी शास्त्री के कथनानुसार मन्नूलाल पुस्तकालय, गया मे इसकी हस्तलिखित प्रति है।

(१४) सस्कृत भक्तमाला—श्री चद्रदत्त ने नाभादास की भक्तमाल (एव टीका) के आधार से सस्कृत-पद्य-बद्ध इस ग्रन्थ को बहुत विस्तार से लिखा है। इसके तीन खण्ड—विष्णु, शिव और शक्ति मे से केवल विष्णु खण्ड ही ६,७०० श्लोक परिमित वेकटेश्वर प्रेस मे छपा हुआ हमारे सग्रह मे है। श्री बाल गणक कृत और जयपुर नरेश की प्रेरणा से रचित दो अन्य सस्कृत भक्तमाल का उल्लेख वृन्दावन से प्रकाशित भक्तमाल के पृष्ठ ९५७ मे है।

(१५) भक्ति-रसायनी व्याख्या—श्री रामकृष्णदेव गर्ग की यह आधुनिक व्याख्या वृन्दावन से सन् १९६० मे प्रकाशित हुई है। इसमे भक्तमाल व प्रियादास की टीका भी दी गई है। करीब १००० पृष्ठ का यह ग्रन्थ भी विशेष महत्त्व का है। इसके प्रारम्भ मे श्री उदयशकर शास्त्री ने प्रियादास के बाद उनके पौत्र वैष्णवदास रचित 'भक्ति-उर्वशी' टीका का उल्लेख करते हुये वैष्णवदासजी को मथुरा मे किसी सरकारी पद पर होना बतलाया है। तीसरी टीका सवत् १८९८ मे रोहतक के निवासी

लाला गुमानीराम ने की है। 'वार्तिक प्रकाश' नामक टीका अयोध्या के महात्मा रसरंगमणि ने बनाई, जो रामोपासक सन्तों में प्रसिद्ध हुई। श्री मार्तण्ड बुआ ने सं० १९१३ में मराठी भाषा में छन्दोबद्ध टीका की, लिखा है।

वृन्दावन से प्रकाशित श्री भक्तमाल के पृष्ठ ६५५ में लिखा है—"मार्तण्ड बुआ कृत 'भक्त प्रमामृत' नामक मराठी टीका जो सं० १९३८ में पूर्ण हुई, सं० १९८४ मे चित्रशाला छापाखाना में मुद्रित हुई है। मराठी में महीपति कृत 'भक्त-लीलामृत' महीपति बुआ कृत 'भक्ति-विजय' नामक ग्रन्थ भी उल्लेखनीय है। इनमें से 'भक्ति विजय' में नाभाजी की भक्तमाल को भाषा ग्वालियरी बतलाई है। 'हिन्दी को मराठी सन्तों की देन' शोध-प्रबन्ध में 'भक्ति-विजय' १७ वी शताब्दी मे रचित बतलाने से यह उल्लेख महत्वपूर्ण है।

(१६) बंगला भक्तमाल—लालदास या कृष्णदास बाबाजी रचित। 'हिन्दी और बंगाली वैष्णव कवि' नामक शोध प्रबन्ध में रत्नकुमारी ने इसका विवरण देते हुये लिखा है— 'बंगला के दो कवियों ने भक्तमाल का अनुकरण किया। ये दोनो ही १९ वीं शती के परवर्ती कवि हैं। एक तो लालदास या कृष्णदास बाबाजी रचित ग्रन्थ है जिसका नाम भी श्री भक्तमाल[1] ही है। इसमें मूल हिन्दी छप्पय देकर फिर उसका बंगला में भाष्य सा किया गया है। उन सम्पूर्ण भक्तों की नामावली तो 'बंगला भक्तमाल' में नहीं है जो 'हिन्दी भक्तमाल' में है। थोड़े से मुख्य हिन्दी भाषा-भाषी वैष्णव भक्तों का परिचय है। दूसरी रचना जगन्नाथदास कृत भक्तचरितामृत है। यह भी भक्तमाल का अवलम्बन लेकर रची गई है।

लालदास बाबा की उक्त भक्तमाल अविनाशचन्द्र मुखोपाध्याय सम्पादित पूर्णचन्द्र शील कलकत्ता द्वारा बंगाब्द १३५० साल में प्रकाशित हो चुकी है।

(१७) गुरुमुखी भक्तमाल—कीर्तिसिंह रचित इस ग्रन्थ का उल्लेख वृन्दावन से प्रकाशित भक्तमाल के पृष्ठ ६५६ मे किया गया है।

(१८) अरिल भक्तमाल—१८२ अरिल छन्दों में रचित इस भक्तमाल की प्रति गोस्वामी गोवर्धनलाल राधारमण का मंदिर मिमुहानी मिर्जापुर में है।

---

1 पूर्णचन्द्र शील द्वारा सम्पादित कलकत्ते से (प्रथम संस्करण बंगाब्द १३१२) द्वितीय संस्करण १३५० में प्रकाशित हुआ।

व्रजजीवनदास की (माझा) भक्तमाल (इश्कमाला) के साथ ही इसका उल्लेख उक्त श्री भक्तमाल ग्रन्थ के पृष्ठ ९५८ मे एव खोज रिपोर्ट मे छपा है।

(१९) भक्तमाला-रामरसिकावली—श्री रघुराजसिंह रचित यह महत्त्वपूर्ण और बडा ग्रन्थ लक्ष्मी वैंकटेश्वर प्रेस से स० १९७१ मे छपा था। इसकी पृष्ठ सख्या उत्तर-चरित्र के साथ ९८९ है।

(२०) भक्तमाल के अनुकरण मे सवत् १८०७ मे हँसवा (फतेहपुर) के चन्ददास ने भक्तविहार नामक ग्रन्थ की रचना की।

इस तरह की और भी अनेक रचनाये हैं। जिनमे दुःखहरण की भक्तमाल का उल्लेख 'उत्तर भारत की सन्त परम्परा' और माझा भक्तमाल का उल्लेख 'खोज विवरण' मे पाया जाता है।

(२१) उत्तरार्द्ध भक्तमाल—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इसकी रचना की है। 'कल्याण' के भक्त-चरिताक के प्रारम्भ मे नाभादास की भक्तमाल के बाद इसे भी दे दिया गया है। गोस्वामी राधाचरण तथा गोपालराय कवि वृन्दावन वाले ने एक भक्तमाल बनाई है। उपरोक्त तीनो रचनायें २० वी शताब्दी की हैं। इससे स्पष्ट है कि नाभादास की भक्तमाल[1] का अनुकरण आज तक होता रहा है। गुजरात, पजाब, महाराष्ट्र, बगाल, आदि प्रदेशो मे भी भक्तमाल का बडा प्रचार रहा है।

अब विभिन्न सम्प्रदायो की भक्तमालो का सक्षित विवरण दिया जा रहा है।

दादूपंथी सम्प्रदाय

१. जग्गाजी रचित भक्तमाल

दादू शिष्य जग्गाजी रचित भक्तमाल, जिसमे केवल भक्तो की नामावली दी है, ६९ चौपाई छन्दो में है। उसकी प्रतिलिपि स्वामो मगलदासजी ने अपने हाथ से करके मुझे भेजी है। उसमे पुराने भक्तो की नामावली ३२ पद्यो मे देने के बाद दादूजी के शिष्य आदि सतो के नाम साढे पैंसठ पद्यो तक मे ठूस-ठूस के भर दिये हैं। यह भक्तमाल प्रस्तुत ग्रन्थ के परिशिष्ट न० २ मे दे दी गई हैं।

२ चैनजी की भक्तमाल

९१ पद्यो की इस भक्तमाल की प्रतिलिपि भी स्वामी मगलदासजी ने स्वय करके भेजी है। इसमे भी सतो एव भक्तो की नामावली ही दी है। अतिम

---

[1]भक्तमाल के मूल पद्यों और नये तथ्यों के सम्बन्ध मे मेरा एक लेख "सप्त सिन्धु" मे शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

लाला गुमानीराम ने की है। 'रसिक प्रकाश' नामक टीका अयोध्या के महात्मा रसरंगमणि ने बनाई, जो रामोपासक सन्तों में प्रसिद्ध हुई। श्री मार्तण्ड बुवा ने सं० १९१२ में मराठी भाषा में छन्दोबद्ध टीका की, लिखा है।

वृन्दावन से प्रकाशित श्री भक्तमाल के पृष्ठ ६५५ में लिखा है— 'मार्तण्ड बुवा कृत 'भक्त प्रेमामृत' नामक मराठी टीका जो सं० १९३८ में पूर्ण हुई, सं० १९८४ में चित्रशाला छापाखाना में मुद्रित हुई है। मराठी में महीपति कृत 'भक्त-लीलामृत' महीपति बुवा कृत 'भक्ति विजय' नामक ग्रन्थ भी उल्लेखनीय हैं। इनमें से 'भक्ति-विजय' में नाभाजी की भक्तमाल को भाषा ग्वालियेरी बतलाई है। 'हिन्दी को मराठी सन्तों की देन' शोध प्रबन्ध में 'भक्ति विजय १७ वीं शताब्दी में रचित बतलाने से यह उल्लेख महत्वपूर्ण है।

(१६) बंगला भक्तमाल—लालदास या कृष्णदास बाबाजी रचित। 'हिन्दी और बंगाली वैष्णव कवि' नामक शोध प्रबन्ध में रत्नकुमारी ने इसका विवरण देते हुये लिखा है— 'बंगला के दो कवियों ने भक्तमाल का अनुकरण किया। ये दोनों हो १९ वीं शती के परवर्ती कवि हैं। एक तो लालदास या कृष्णदास बाबाजी रचित ग्रन्थ है जिसका नाम भी श्री भक्तमाल[1] ही है। इसमें मूल हिन्दी छप्पय देकर फिर उसका बंगला में भाष्य सा किया गया है। उन सम्पूर्ण भक्तों की नामावली तो बंगला भक्तमाल' में नहीं है जो हिन्दी भक्तमाल' में है। थोड़े से मुख्य हिन्दी भाषा-भाषी वैष्णव भक्तों का परिचय है। दूसरी रचना जगन्नाथदास कृत भक्तचरितामृत है। यह भी भक्तमाल का अवलम्बन लेकर रची गई है।

लालदास बाबा की उक्त भक्तमाल अविनाशचन्द्र मुखोपाध्याय सम्पादित पूर्णचन्द्र शील कलकत्ता द्वारा बंगाब्द १३५० साल में प्रकाशित हो चुकी है।

(१७) गुरुमुखी भक्तमाल—कीर्तिसिंह रचित इस ग्रन्थ का उल्लेख वृन्दावन से प्रकाशित भक्तमाल के पृष्ठ ९२६ मे किया गया है।

(१८) फारसी भक्तमाल—१४२ फारसी छन्दों में रचित इस भक्तमाल की प्रति गोस्वामी गोवर्धनलाल, राधारमण का मंदिर मिर्जापुर में है।

---

[1] दुर्गादास लाहिड़ी सम्पादित कलकत्ते से (प्रथम संस्करण बंगाब्द १३१२) द्वितीय संस्करण १३१९ में प्रकाशित हुआ।

व्रजजीवनदास की (माभा) भक्तमाल (इश्कमाला) के साथ ही इसका उल्लेख उक्त श्री भक्तमाल ग्रन्थ के पृष्ठ ६५८ मे एव खोज रिपोर्ट मे छपा है।

(१९) भक्तमाला-रामरसिकावली—श्री रघुराजसिंह रचित यह महत्त्वपूर्ण और बडा ग्रन्थ लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस से स० १९७१ मे छपा था। इसकी पृष्ठ सख्या उत्तर-चरित्र के साथ ९८९ है।

(२०) भक्तमाल के अनुकरण मे सवत् १८०७ मे हँसवा (फतेहपुर) के चन्ददास ने भक्तविहार नामक ग्रन्थ की रचना की।

इस तरह की और भी अनेक रचनाये हैं। जिनमे दु.खहरण की भक्तमाल का उल्लेख 'उत्तर भारत की सन्त परम्परा' और माभा भक्तमाल का उल्लेख 'खोज विवरण' मे पाया जाता है।

(२१) उत्तरार्द्ध भक्तमाल—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इसकी रचना की है। 'कल्याण' के भक्त-चरिताक के प्रारम्भ मे नाभादास की भक्तमाल के बाद इसे भी दे दिया गया है। गोस्वामी राधाचरण तथा गोपालराय कवि वृन्दावन वाले ने एक भक्तमाल बनाई है। उपरोक्त तीनो रचनायें २० वी शताब्दी की हैं। इससे स्पष्ट है कि नाभादास की भक्तमाल[1] का अनुकरण आज तक होता रहा है। गुजरात, पजाब, महाराष्ट्र, बगाल, आदि प्रदेशो मे भी भक्तमाल का बडा प्रचार रहा है।

अब विभिन्न सम्प्रदायो की भक्तमालो का सक्षित विवरण दिया जा रहा है।

दादूपंथी सम्प्रदाय

१. जग्गाजी रचित भक्तमाल

दादू शिष्य जग्गाजी रचित भक्तमाल, जिसमे केवल भक्तो की नामावली दी है, ६९ चौपाई छन्दो में है। उसकी प्रतिलिपि स्वामो मगलदासजी ने अपने हाथ से करके मुझे भेजी है। उसमे पुराने भक्तो की नामावली ३२ पद्यो मे देने के बाद दादूजी के शिष्य आदि सतो के नाम साढे पैसठ पद्यो तक मे ठूस-ठूस के भर दिये हैं। यह भक्तमाल प्रस्तुत ग्रन्थ के परिशिष्ट न० २ मे दे दी गई हैं।

२ चैनजी की भक्तमाल

९१ पद्यो की इस भक्तमाल की प्रतिलिपि भी स्वामी मगलदासजी ने स्वय करके भेजी है। इसमे भी सतो एव भक्नो की नामावली ही दी है। अतिम

[1] भक्तमाल के मूल पद्यों और नये तथ्यों के सम्बन्ध मे मेरा एक लेख "सप्त सिन्धु" में शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

उपसंहार का पद्य प्राप्त प्रतिलिपि में नहीं है। यह भक्तमाल भी प्रस्तुत ग्रन्थ के परिशिष्ट नं० १ में दे दी गई है।

३ राघवदास की भक्तमाल—

प्रस्तुत दादूपंथी कवियों में राघवदास ने ही सब से बड़ी और महत्त्वपूर्ण भक्तमाल बनाई। नाभादास की भक्तमाल के बाद यही सर्वाधिक उल्लेखनीय रचना है। सं० १७१७ में इसकी रचना हुई है। प्रब से ४८ वर्ष पूर्व इस रचना का परिचय श्री चन्द्रिकाप्रसाद त्रिपाठी ने सरस्वती पत्रिका के अक्टूबर सन् १९१६ के अंक में प्रकाशित 'दादू-पंथी सम्प्रदाय का हिन्दी-साहित्य' नामक लेख में दिया था। उनका दिया हुआ विवरण इस प्रकार है—

स्वामी दादूदयाल के सम्प्रदाय में एक सन्त राघवदासजी हो गये हैं। उन्होंने भक्तमाल नाम का एक ग्रन्थ रचा है। उसमें शिवजी अजामिल, हनुमान्, विभीषण आदि से लेकर जितने भक्त हुए हैं सब का वृत्तान्त पद्य में दिया है। इस ग्रन्थ में १७५ भक्तों के चरित हैं और निम्नलिखित चार सम्प्रदाय और द्वादस पंथ शामिल हैं—

(१) स्वतन्त्र भक्त ११।

(२) चार सम्प्रदायी भक्त—(क) रामानुज सम्प्रदाय के १० भक्त। (ख) विष्णुस्वामी सम्प्रदाय के ६ भक्त। (ग) मध्वाचार्य सम्प्रदाय के १५ भक्त। (घ) निम्बादित्य सम्प्रदाय के ६ भक्त।

(३) द्वादस पंथी—(क) षटदर्शन सन्यासी योगी जङ्गम जैन, बौद्ध, अन्यान्य। (ख) समुदायी भक्त ४। (ग) चतुःपन्थी गुरु नानक साहब के पन्थ के कबीर साहब के पन्थ के दादूदयाल के पंथ के निरञ्जन के पंथ के। (घ) माधीकाणी। (ङ) चारण।

इस ब्योरे से विदित हो जावेगा कि भारतवर्ष की सम्पूर्ण सम्प्रदायों से दादूपन्थियों का मेल है।

४ चारण ब्रह्मदासजी की भक्तमाल—

राजस्थानी भाषा में रचित ६ भक्तमालों का समूह राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर से प्रकाशित हो चुका है। ब्रह्मदासजी दादूपंथी साधु थे उनका समय सं० १८१६ के लगभग का है।†

---

† लघु भक्तमाल के नाम से इसकी १ हस्तलिखित प्रति जयपुर सरस्वती भण्डार में है उससे मिलान करने पर कुछ नये पद्य मिलने की सम्भावना है।

रामस्नेही सम्प्रदाय

(१) रामदासजी रचित भक्तमाल १७६ पद्यो की है। जिनमे से १२४ चौपाइयो मे अनेक सत एव भक्तो के नाम दिये गये है। यह रचना 'श्री रामस्नेही धर्मप्रकाश' नामक ग्रथ मे सन् १९३१ मे प्रकाशित हुई थी। अब पुन "श्री रामदासजी की वाणी" मे भी प्रकाशित हो चुकी है।

२ रामदासजो के शिष्य दयालदासजी ने एक विस्तृत भक्तमाल स० १८६१ मे बनाई है जिसमे सभी प्रचलित पथो के महात्माओ का निरूपण किया गया है। इस ग्रन्थ का आवश्यक विवरण मैंने अपने अन्य लेख में दिया है।

३ रामस्नेही सम्प्रदाय की रैण शाखा (दरियावजी की) के सुखशारणजी ने भक्तमाल की रचना स० १९०० में की, जिसका परिमाण १७३५ श्लोको का है। यह अभी-अभी स्वामी युक्तिरामजी, जोधपुर से प्रकाशित 'श्री सन्तवाणी' ग्रन्थ के पृष्ठ १३९ से २०६ मे प्रकाशित हो चुकी है।

निरञ्जनी सम्प्रदाय

महात्मा प्यारेरामजी ने स० १८८३ मे भक्तमाल की रचना की। इसका विवरण देते हुए स्वामी मगलदासजी ने अपनी सम्पादित "श्री महाराज हरिदासजी की वाणी" में लिखा है–कि "इस भक्तमाल की रचना मोरिड मे हुई। प्यारेरामजो ने अपने गुरु की आज्ञा से इसकी रचना की। अवतारो का निरूपण करने के बाद खेमजी, चत्रदासजी, पोकरदासजो, दयालदासजी, सेवादासजी, अमरपुरुषजी व दर्शनदासजी तक का निरूपण किया है। पश्चात अन्य भक्तो का विवेचन किया है। २०४ मनहर कवित्त इस भक्तमाल के हैं, अन्त मे ४ दोहे हैं।" इसकी प्रतिलिपि हमारे सग्रह में भी है।

राधावल्लभ सम्प्रदाय

(१) गोस्वामी हितहरिवश के शिष्य ध्रुवदासजी ने "भक्तनामावलि" नामक ग्रथ की रचना की, जिसमें १२३ व्यक्तियो की नामावली दी हुई है। मूल ग्रथ ११४ पद्यो का है। इसे श्री राधाकृष्णदास ने बहुत अच्छे रूप में टिप्पणी सहित सम्पादित करके सन् १९२८ में प्रकाशित किया, जो नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से अब भी प्राप्त है। ध्रुवदासजी की अनेक रचनाओ में से "सभा-मडली" में

१६८१ वृन्दावनशत' में १६८६ और 'रहसिमंजरी' में १६९८ रचना काल दिया है। इससे उक्त 'भक्त-नामावलि' की रचना नाभादास की भक्तमाल के थोड़े वर्षों के बाद ही हुई प्रतीत होती है।

(२) रसिक अनन्यमाल—भगवत मुदित रचित इस ग्रंथ का प्रकाशन वृन्दावन से हो चुका है। इसका सम्पादन श्री ललताप्रसाद पुरोहित ने किया है। इसमें ३४ व्यक्तियों की परिचयी पाई जाती है। इसका रचना काल सं० १७०६ से १७२ के मध्य का बतलाया गया है।

इसकी पूर्ति रूप में उत्तमदासजी ने अनन्य-माल की रचना की।

बल्लभसम्प्रदाय की ८४ २५२ वैष्णवन की वार्ता भी इसी तरह की गद्य रचनाएँ हैं।

गौड़ीय-सम्प्रदाय

देवकीनन्दन कृत वैष्णव-वन्दना—वैष्णव-वंदना में अनेक वैष्णव भक्तों की वंदना की गई है। इन व्यक्तियों की जीवनी पर तो विशेष प्रकाश इस रचना से नहीं पड़ता नाम बहुत से मिल जाते हैं। यही इसका ऐतिहासिक मूल्य है। यह रचना अत्यन्त लोकप्रिय है।

माधवदास कृत वैष्णव-वंदना—इस रचना का प्रचार उस वैष्णव-वंदना की अपेक्षा जो देवकीनन्दन की रचना है कम है। बंगीय साहित्य-परिषद् ने शिवचन्द्र शील द्वारा सम्पादित इस रचना को १३१७ बंगाब्द (१९१ ई) में प्रकाशित किया है। इसमें श्री चैतन्य नित्यानंद अद्वैत हरिदास श्रीनिवास रामचन्द्र कविराज मुरारिगुप्त वासुदेव इत्यादि का उल्लेख है।

रामोपासक-सम्प्रदाय

रसिकप्रकाश भक्तमाल—इसकी रचना छपरा निवासी शंकरदास के पुत्र एवं अयोध्या के श्री रामचरणजी के शिष्य जीवाराम (जुगलप्रिया) ने सं० १८६९ में की। इसमें रामोपासक रसिक-भक्तों का इतिवृत्त संग्रह किया गया है। उनके शिष्य जानकीरसिकशरणजी ने सं० १९१९ में रसिक-प्रबोधिनी नामक टीका लिखी। २३५ छप्पय और ५ दोहों के मूल ग्रन्थ पर ६११ कवित्तों में यह टीका पूर्ण हुई है।

उक्त रसिक-प्रकाश भक्तमाल लक्ष्मण किला अयोध्या से प्रकाशित हो चुकी है।

हितहरिवंश—सम्प्रदाय

श्री उदयशंकर शास्त्री ने श्री कृष्ण पुस्तकालय विहारीजी के मन्दिर के पास, वृन्दावन मे प्रकाशित "केलिमाल" नामक ग्रन्थ की सूचना दी है, जो हितहरिवश सम्प्रदाय के भक्तो के सम्बन्ध मे है तथा आगरा से प्रकाशित (भारतीय-साहित्य वर्ष ७ अक १ मे) भक्त-सुमरणी-प्रकाश, महर्षि शिवव्रतलाल रचित सन्तमाल, (सत नामक पत्रिका के ३ जिल्दो मे प्रकाशित) और खाडेराव रचित भक्त-विरुदावली (खडित रूप मे हिन्दी विद्यापीठ आगरा के सग्रह मे) आदि रचनाओ की जानकारी भी दी है, पर ये ग्रन्थ मेरे अवलोकन मे नही आये।

जैन-धर्म मे भक्तमाल जैसी रचनाओं की परम्परा—

जैन-धर्म म सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र को मोक्ष का मार्ग बतलाया है। सम्यक् दर्शन को सर्वाधिक महत्त्व देने पर भी सम्यक् चारित्र अर्थात् आचार को ही प्रधानता दी गई दिखाई देती है। अत सम्यक् चारित्र की आराधना करने वाले तीर्थंकरो व मुनियो के प्रति विशेष आदर व्यक्त किया गया है। उनके नाम-स्मरण, गुण-स्तुति और चैत्य-निरूपण सम्बन्धी जैन-साहित्य बहुत विशाल है। नाभादास की भक्तमाल की तरह तीर्थंकरो व मुनियो के नाम स्मरणपूर्वक उनको वन्दना करने वाली रचनायें 'साधु-वन्दना' के नाम से प्राप्त होत है। १६ वी शताब्दी से लेकर २० वी शताब्दी तक साधु-वन्दना या मुनि-नाममाला जैसी रचनाओ की परम्परा बराबर चली आ रही है। १६ वी शताब्दी के कवि विनयसमुद्र और पार्श्वचन्द्र की साधु-वन्दना प्राप्त है। १७ वी शताब्दी के प्रारम्भ के कवि ब्रह्म, विजयदेवसूरि, पुण्यसागर, कुवरजी, नयविजय, केशवजी, श्रीदेव, समयसुन्दर आदि कवियो की साधु-वन्दना नामक रचनाये प्राप्त हैं। इनमे से समयसुन्दर की रचना सबसे बडी है। ५६१ पद्यो की इस साधु-वन्दना की रचना स० १६६७ अहमदाबाद मे हुई है। १८ वी शताब्दी के कवि यशोविजय और देवचन्द्र तथा १६ वी शताब्दी के कवि जयमल रचित साधु-वन्दना छप चुकी हैं।

माला या मालिका सज्ञक रचनाओ मे खरतर-गच्छीय कवि चारित्रसिंह रचित मुनिमालिका स० १६३६ की रचना है, जो हमारे प्रकाशित 'अभय-रत्नसार' में छप चुकी है। २० वी शताब्दी के मुनि ज्ञानसुन्दर रचित मुनि-नाममाला भी प्रकाशित हो चुकी है, उसमे करीब ७५० मुनियो के नाम हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सन्त एवं भक्तजनों के नामों के संग्रह रूप या उनके चरित्र को संक्षिप्त या विस्तार से प्रकट करने वाली रचनाओं की परम्परा बहुत लम्बी है। जैन, अजैन सभी धर्म-सम्प्रदायों में ऐसी रचनायें बनाई गई हैं। उनमें से बहुत-सी रचनाओं का तो अच्छा प्रचार रहा है। छोटी छोटी रचनाओं को तो लोग नित्य-पाठ के रूप में पढ़ते रहते हैं। महान् पुरुषों के जीवन से प्रेरणा मिलती रहती है। अतः ऐसी रचनाओं का विशेष महत्व है। प्रस्तुत राघवदास की भक्तमाल भी इसी परम्परा की एक विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण रचना है। उसी के सम्पादन प्रसंग से ऐसी ही अन्य रचनाओं की परम्परा की कुछ जानकारी यहाँ विशेष प्रयत्नपूर्वक देदी गई है।

अब प्रस्तुत संस्करण में प्रकाशित "भक्तमाल" के रचयिता राघवदास व उनकी रचनाओं का स्वामी मंगलदासजी से प्राप्त विवरण दिया जा रहा है।

राघोदासजी

दादूजी महाराज के प्रमुख बावन शिष्यों में बड़े सुन्दरदासजी व प्रह्लाददासजी का समुचित निरूपण है जैसा कि भक्तमाल टीकाकार चतुरदासजी ने व स्वयं राघोदासजी ने ५२ शिष्यों के निरूपण प्रसंग में "सुन्दर प्रह्लादवास घाटडे सु धीर मधि" (दे पृ २७) ऐसा उल्लेख किया है। किन्तु जहाँ दादूपन्थ का विवरण है वहाँ प्रह्लाददासजी का विवरण पोता-शिष्यों में है। स्वयं प्रह्लाददासजी ने अपनी वाणी की रचना में सुन्दरदासजी महाराज को गुरु माना है। इस विवरण से (१) दादूजी (२) सुन्दरदासजी (बड़े), (३) प्रह्लाददासजी (४) हरीदासजी (हापीजी) (५) राघोदासजी—यह क्रम है।

राघोदासजी का जन्म सत्रहवीं सदी के उत्तरार्द्ध का होना चाहिये। वे सत्रहवीं सदी के अन्तिम चरण मे हरीदासजी के शिष्य हुये हैं। उनकी रचना का काल अट्ठारहवीं सदी है। राघोदासजी ने दादूजी की परम्परा में शिष्यों तथा पोता-शिष्यों का भक्तमाल में वर्णन किया है। इससे सिद्ध होता है कि उनके जीवन-काल में जो प्रशिष्य मौजूद थे उन्हीं तक का निरूपण भक्तमाल में आया है।

वे किस सम्वत में किस स्थान में उत्पन्न हुये ? यह ज्ञात नहीं होता। प्रह्लाददासजी महाराज घाटड़ेम में विराजते थे वहीं उनकी चरणपादुका व छत्री आज भी मौजूद है। यह स्थान पहिले अलवर स्टेट में था अब वह शायद अलवर

जिले मे सम्मिलित हो। राजगढ से रहले तथा रहले से घाटडे जाया जाता है। अब भी घाटडे मे प्रह्लाददासजी महाराज की परम्परा का मान्य स्थान है, जिस परम्परा मे इस समय महन्त आशारामजी विद्यमान हैं।

प्रह्लाददासजी के कई शिष्य हुये थे, उन्ही मे प्रमुख थे हरिदासजी महाराज। इन्ही के अनेको शिष्यो मे अन्यतम शिष्य राघोदासजी हुये हैं। ये पीपावशी चागल गोत मे उत्पन्न हुये थे। इनके पिता का नाम हरिराज तथा माता का नाम रतनाई था। शायद इनकी बहन का नाम केसीबाई था। इन्ही को प्रेरणा से इन्होने शिकार तथा मद्य-मास का परित्याग किया था, जैसा कि इनने स्वयं उल्लेख किया है —

नमो तात हरिराज नमो रतनाई माई।
जीव वध मद मास छुडायो केसीबाई।
सत सगति गति ग्यांन ध्यांन धुनि धर्म बतायो।
हरीदास परमहस परष पूरो गुरु पायो॥
राघो रज मो पायकै रामरत उमग्यो हियो।
दादूजी के पंथ को तब ही तनक वर्णन कियो॥३५॥

चौपाई पीपावशी चांगल गोत। हरि हिरदै कीनो उद्योत॥
भक्तिमाल कृत कलिमल हरणी। आदि अन्त मध्य अनुक्रम वरणी॥
साध सगति सति स्वर्ग निसेणी। जन राघव अगतिन गति देणी॥

उक्त सदर्भ से उपरोक्त विवरण की पुष्टि होती है। राघोदासजी घाटडे से फिर "उदई" ग्राम चले गये थे। वही उनका समाधि-स्थान है। राघोदास जी के पश्चात् उनकी परम्परा मे महात्मा कुञ्जदासजी सिद्ध पुरुष हुये। करोली नरेश उनमे अत्यन्त श्रद्धा रखते थे। करोली मे महाराज कुञ्जदासजी का स्थान आज भी 'कुञ्ज' के नाम से प्रसिद्ध है। कुञ्जदासजी के पश्चात् राघोदासजो की परम्परा का स्थान करोली मे ही आ गया। 'उदई' की जमीन आदि सब अब इसी स्थान के अधीन है। वर्तमान मे, राघोदासजी की परम्परा का यही स्थान है। महाराज करोली ने एक ग्राम भी कुजदासजी महाराज को समर्पित किया था, जो राजस्थान के एकीकरण होने से पहिले तक 'कुज' के महन्तजी के अधिकार में था।

महाराज राघोदासजी अच्छे सुशिक्षित व कवि-गुणो से विभूषित थे—यह उनकी रचना से स्पष्ट है। उन्होंने महाराज प्रह्लाददासजी की प्रेरणा से प्रेरित हो "भक्तमाल" की रचना को थी, जेसा कि टीकाकार चत्रदासजी व्यक्त करते हैं:—

मनहर

अग्र गुरु नाभाजु के आज्ञा किन्ही कृपा करि,
प्रथम ही साखी छप्पै कीन्ही भक्तमाल है।
तैसे प्रभु प्रहलादजु विचार कही राघो यु लौं,
करी सन्त-आयसो सु बात यौ रसाल है।
मई मान करी आन धरे आन भक्त सब
निर्गुण सगुण पट-दरशन विशाल है।
साखी छप्पै मनहर इन्दव अरेल चौपै
निसानी सवईया छंद चाल यौं हुंसाल है॥

राघोदासजी ने भक्तमाल की समाप्ति पर कालज्ञापक दोहा भी लिखा है—

दोहा

सम्वत् सत्रह से सत्रहोतरा शुक्ल पक्ष शनिवार।
तिथि तृतिया आषाढ़ की राघो कियो उचार॥

सत्रह सै सत्रोहतरे से १७७७ सो स्पष्ट प्रतीत होता है। पुरोहित हरिनारायणजी ने सुन्दर ग्रन्थावली की भूमिका में सत्रह सो सत्रोहतरे को १७७० माना है। मेरी समझ से १७१७ ही अधिक उपयुक्त है क्योंकि भक्तमाल में प्रशिष्यों तक का ही उल्लेख है। १७७ सम्वत् यदि भक्तमाल की रचना का हो तो तब तक तो प्रशिष्यों के भी प्रशिष्य हो गये थे। भक्तमाल का रचनाकाल भट्टारकजी सदी का प्रथम चरण ही संगतिपरक है।

राघोदासजी ने भक्तमाल से भिन्न वाणी तथा लघु ग्रन्थों की भी रचना की है। उनकी वाणी में साखी अरिल तथा पद भाग हैं। पद अंगों में १६१७ साखियें हैं। अरिल के १७ अग हैं तीन सौ सत्तर अरिल हैं। राग २१ में १७६ पद हैं। लघु ग्रन्थावली में १ हरिश्चन्द्र सत २ ध्रुव चरित्र ३ गुरु-शिष्य सम्वाद ४ गुरुदत्त रामरज ५ पन्द्रहा तिथि विचार ६ सतवार ७ भक्ति योग ८ चिन्ता मणि ज्ञान निषेध है। १३ अग कवित्तों के हैं जिनमें करीब सवा-सौ कवित्त है।

भक्तमाल से भिन्न रचनाओं के कुछ उद्धरण नीचे दिये जाते हैं जिससे राघोदासजी के रचनाकार के रूप का और भी विशद परिचय प्राप्त होगा:—

वाणी अंग साखी भाग

साध महिमा अंग

गगन गिरासी विमल चित, अमर करावण हार।
जन राघो वे सन्त जन, धन्य पुष्टि ससार॥४॥

पारस रूपी पादुका, चम्बक रूपी बैन।
राघो सुनि मृतक जिये, भागे मिथ्या दैन ॥५॥
मृतक लोचें (?) मुनि भजै, देव करें आराध।
जन राघो जगपति खुसी, भक्ति उजागर साध ॥६॥

अंग विरक्तताई

जे जन आसाजित भये, ता जन कौ जुग दास।
राघो जे आसा सुरत्त, ते करहिं जगत की आस ॥६॥
आसा तृष्णा जिन तजी, जे त्रिभुवन पुजि पीर।
राघो शोभित अति खरे, हरि सुमरण कठ हीर ॥८॥
इन्द्रीजीत विज्ञान मे, हृदै रह्यौ हरि पूरि।
जन राघो रुचि राम सौं, माया निकट न दूरि ॥१२॥

शब्द को अंग

वह पुदगल वह प्राण मन, वह नख नासा नैन।
हाथ पाव पलटै नहीं, राघो पलटै बैन ॥३॥
शब्दै हु निपजै साध, शब्द सु सेवग सीझहिं।
राघौ शब्द सु वस्तु, शब्द सु साहिब रीझहिं ॥१०॥
राघो बोलत परखिये, बोल मनुष को मोल।
इक मुख तं मोती झडहिं, इक मुख सेती टोल ॥१७॥

उपदेश को अग

धर्म बडो धर ऊपरै, जे करि जाणै कोइ।
राघो जग मे जस रहै, हरि दर कष्ट न होइ ॥ ३॥
आसा भग अतीत की, गृह आये जे होइ।
राघो सुकृत ले गयै, अकृत जाइ समोइ ॥१५॥
सत सुकृत दोऊ बडे, सत तै बडो न कोइ।
राघो सत तप रूप है, सत तैं सब कुछ होइ ॥१८॥
भौ जल सिन्धु अगाध है, बूडत अदत अकाज।
राघौ धन धर्मातमा, बान्धी धर्म की पाज ॥२०॥

राघोदासजी को बाणी

कलजुगी को अंग

अरिल — कलजुग कठिन कठोर न कलके पाप सौं।
पुत्र संताप्यां करं प्रबल मां बाप सौं॥
चेला गुरु सु गुप्त कुराबै शीम रे।
परि हां! राघो एेसी रीति मिल क्यों राम रे॥ १॥

कलि अपने बल जीति राज अपनो बप्यो।
तिन सौं बैर प्रसिद्ध राम जिन जिन जप्यो॥
हरिजन हरि की ओट सबल के पास रे।
परि हां! राघो कलि के तोर न आवै पास रे॥ ४॥

कलि केवल हरि नाम रटत रोकी मिले।
विघ्न दोष दुख कुमति होत बिग्रह टले॥
और जुगनि मधि जोग जाप जप तप सरे।
परि हां! राघो कलि मधि राम जपत नर निसतरे॥ ६॥

पाखंड प्रपंच झूठ कपट कलि में घनो।
प्रवेस्यो अहंकार बहोत कहां लग गिनौं॥
परनिन्दा परद्रोह छिद्र पर नित तकै।
परि हां! राघो राम बिसारि अधम आनहि बकै॥१०॥

चितावणी को अंग

कोठीवाल बाजार बैठते बाणियें।
दुनियादार सराफ जगत में जाणिये॥
हीरा मोती लाल मुहर थैली भरी।
परि हां! राघो बांधै काम काल करियों बुरो॥ ११॥

कर कछु नेकी नीति बदी बेराह तजि।
परवरदिगार खुदाइ प्रेम परिपूर भजि॥
करि लै कुबी और दुनी है पेखनां।
परि हां! राघो जोबन मिलत यहां ही देखना॥१२॥

राम बिना सब धन्ध धन्ध कछु चेत रे।
तन मन धन सर्वस्व अर्प हरि हेत रे॥

आंन धर्म दिन चारि इरंड को मौरनो।
परि हां ! राघो किती बुनियाद वान को दौरनो ॥१९॥
ग्रह चहल पहल दिन चारि दुनी की चिलक है।
कनक कामनी रूप कांम की किलक है॥
जन राघो रुचि राग कुरग उर सर सह्यौ।
परि हां ! एसै जग को अग्नि अज्ञानी नर दह्यौ ॥२६॥

न्यायमार्गी अङ्ग

हिन्दू के हद वेद रहै मर्याद मैं।
खडै न खोटो खाय वस्त नहिं वाद मैं॥
तज असार गहि सार रांम रस पीजिये।
परि हां ! राघो जुक्ति विचारि जोग जिग कीजिये ॥४॥
मुसलमान मुस्ताक सरै कै हक चलै।
हाथ न छुवै हराम रहै उजले पलै॥
हक हलाल टुक खुर्दनी जिकर फिकर विसियार।
परि हां ! राघो खडा रहीम दर बन्दा है हुशियार ॥५॥

ज्ञान उपदेश को अङ्ग

जैसी सगति करै तिसे फल आखिर पावै।
कहत सयाने साध साषि पुनि आगम गावै॥
जांण पडही मति जगत मैं जाग भागि जिन व्है सतो।
परि हां ! राघो रही रुचि रांम सू रैण दिवस धरि द्रढ़ मतो ॥५॥
ग्यानी गुण की रास निर्गुण सौं व्है रहे।
गहै शील सन्तोष काम क्रोधहि दहे॥
खिझै न रीझै चाह चित्र को पेखणौ।
परि हां ! राघो हर्ष न शोक तमासौ देखणौ ॥११॥

धर्म कसौटी को अङ्ग

षलक खूब दिन दोइ सुनो सब लोइ रे।
तन धन अपना नांहि विछोहा होइ रे॥
सत करि सुणवे जोग यहै इतिहास रे।
परि हां ! राघो वित उनमान वाटियो गास रे॥२॥

नर तन पाइ उपाइ यहै गुरु बूझिये।
तजि भूतागति धर्म धम कछु कीजिये॥
सुबस रहै संसार अगम आवर घणी।
परि हाँ! राघो करे निहाल इष्ट भज आपणी॥११॥
विमुख काम बिन देहु अतिथि गृह आर पे।
टूक मास घटि खाउ स्वकीय अहार पे॥
सत मैं सु सत बाटि सत्य हरि राखि है।
परि हाँ! जन राघो धर्मराइ धर्म को साखि है॥१२॥

९ राग-रामगिरी

त्राहि त्राहि त्राहि नाथ हाथ गहो दास को।
नीर परे पीर धरो टेक विरद तास को॥टेक॥
काम क्रोध लोभ मोह मर्कट नचावे मोहि
भूलि गयो ग्यान ध्यान मारे डर तास को॥१॥
त्रिगुण त्रिदोष धर्म प्रेरिके करावे कर्म,
काम पौं पसारे पास करमहार माया को॥२॥
राघौ यों पुकारे राम यम्ही डर आठों जाम
पारे सो न मारे हौं तौ पारधी तेरे गास को॥३॥

राग—टोडी

सकल शिरोमणि भाव भरी।
ज्यौं वसि आवे त्यौं सुख पावे घट ही माँहि रहत परी॥टेक॥
ज्यों सेती मृतक मुख बोल अमृत गुणों भरी॥
भागवत बिना रहै नहिं कबहूँ आतम होत हरी॥१॥
पायो तत्त तीन्यों सुख तहाँ, महोत्सव पाठ परी॥
लोके सोई सपूत शिरोमणि भागवत वस्त धरी॥२॥
भक्ति इकान्त शास्त्र जब राखै भिन्न-भिन्न साखि भरी॥
राघो कहै नहीं सोई गुरधर्मि, सुक्षम सुक्षम करी॥३॥

राग—आसावरी

हरि परदेश हूँ काहे देऊँ पाती कोई न मिले ऐसा सज्जन सपाती॥टेक॥
हा! हा! करि करि हौं हरि हारी कोई न कहै मोहि बात तुम्हारी॥१॥
आरति अधिक बहुत उर मेरे अहोनिस मिल चातक ज्यूं टेरे॥२॥

मो उर करक काठ ज्यूं वीझै, का जाणौं हरि का विधि रीझै ॥३॥
जन राघो विरहनी विललावे, थाकी रसना राम कब आवे ॥४॥

राग-नट नारायण

अब तौ आई वनी जिय मेरे !
चित चकचाल काल के डर तैं, कर्म दसौं दिस फेरैं ॥टेक॥
त्रिगुणधार पार परमेश्वर, चौथे गुण थे नेरे ॥
दीनानाथ हाथ दै अबकै, करुणा करि करि टेरैं ॥१॥
भयो भैकप स जौनी सुनि कै, दइया न्याव नवेरै ॥
दाँवणगीर दर्द नहिं समझे, लगे ही रहतु है केरे ॥२॥
परिहरि पाप परमारथ कर लै, जो कछु हाथि है तेरे ॥
विन जगदीश जक्त मधि जोल्यौ, जैहै जम कै डेरे ॥३॥
तीनों लोक सकल जल थल मधि, बचे जीव मैं मेरे ॥
राघोदास राम अघमोचन, रट ज्यौं तोहि निवेरे ॥४॥

राग-सारंग

ऐसो राम गरीबनिवाज है !
भक्तवत्सल सरणाई समरथ, सारण जन कै काज है ॥टेक॥
आदि अन्त मधि अखंड अहोनिशि, अनन्त लोक जा कौ राज है।
सुर नर असुर नाग पशु पछी, देत सबनि जल नाज है ॥१॥
रिधि सिधि भक्ति मुक्ति को दाता, पूर्णब्रह्म जहाज है।
निर्बल को बल निर्धन को धन, वहत विरद की लाज है ॥२॥
कर्त्ता पुरुष अनातम आतम, सन्तन मध्य समाज है।
राघौ तन मन करि नौछावर, मिलन महातम आज है ॥३॥

राग मलार

मौज महाप्रभु तेरी हो !
खानांजाद इन्द्र से अधिपति, अष्ट सिधि नव निधि चेरी हो ॥टेक॥
तीन लोक ब्रह्मांड पचोसौं, एक शब्द सर्व साजे।
सुर नर नाग पुरुष मुनिपतनि, रचि रचि रूप निवाजे ॥१॥
सूरति अनन्त सुभाव सुरति अति, शब्द भेद बहु वांणी।
मूर्ख चतुर निर्धन धनवन्त किये, करता पुरुष विनांणी ॥२॥

चतुरासि लषि सिरजि चराचर, रिजक सबनि कौ मेलै ।
व्यापक ब्रह्म सकल जल थल मधि, जीव सीव संग खेलै ॥३॥
बिधि संकर सनकादिक नारद भक्त परापर लगी ।
त्रिगुण रहित भयकाल कला प्रति तारस्वतिरस त्रिभंगी ॥४॥
चार वेद चहुँ जुग जस गावत, पावत पार न कोई ।
राघोदास सुमरि निसबासर, यौं बिन मुक्ति न होई ॥५॥

राग–मारू

वचन बसे हिरदै गुर कौ ।
परा परी बायक उभायक, कहे हुते धुर कौ ॥टेक॥
षटदल चतुर अष्ट दस द्वादस, षोडस उमें मुहुर कौ ।
ध्यान ध्यान उनमान भावऐं, हरि हरि कहत निघरकै ॥१॥
अमृत भई अचानक अन्तर अघ मेटे उर के ।
सोई बब साधि राधि मन मांही, दास भये वा घर के ॥२॥
राम रमापति सुमर रैण दिन, भ्रम भंजन भव तर के ।
राघौ हाथ गहे जन हित करि भाग जगे भये नर के ॥३॥

राग–सोरठि

हरि अब अवधि पुगी आव ।
काम निकस नहीं तुम बिन, राखि बूडत नाव ॥टेक॥
महा बिपति बिदेस साँई रहत चिन्ता ताव रे ।
मौ अनाथ भतीसनो पर, करो राम पसाव ॥१॥
तरस मेटौ आइ भेटौ बिरहनी अतु दाव ।
पीव पावन जीव कीजे परौं तेरे पाव ॥२॥
पपीहरा ज्यौं प्राण टेरे अखंड एक भाव ।
दास राघो करै बिनती सुनि त्रिभुवन राव ॥३॥

हरीचन्द सत

मनहर विश्वामित्र चले जब हरिचन्द देखन कौ
प्रगट अयोध्यापुरी भाव इहि देखनौ ।
राह मधि राहो कीन्हो काल यहै कसौटी दई
धर्मित अगाध नृप नाहि सिसि सेलनो ॥

वंर कियो विश्वामित्र विष्णुजी की आज्ञा पाय,
त्राहि त्राहि त्राहि नाथ तीनों लोक पेखनो।
राघौ कहै राम काम एसो विधि कीजिये तु,
कासी कै नखासै विकै विप्र विण चेकनो ॥३०॥
राजा मोल लीयो काल दमन ही नामा डोम,
कहर कसौटी नाम लेत लाज मरिये।
जाचक के द्वार जल भरवायो हरिचन्द,
धरम-धुरीण वैसे आलोकन करिये॥
छितभुज छेत्रन को राख्यो रखवारो वनि,
माया मौण माथे धरि सन्ध्या प्रात भरिये।
सेर चून पावे समसान भूमि भोजन व्है,
राघौ अवगति गति सेति ऐसे डरिये ॥३५॥
तक्षक भये हैं ततकाल विश्वामित्र मुनि,
राघौ चढि रूख रोहितास वन डस्यो है।
जाकै जी मै कसर कटाक्ष नांही कामना की,
को जानें कर्त्तार गति काहे कों धो कस्यौ है॥
बालक विलाप करै तो वा त्रयलोक नाथ,
धर्म की जहाज बूडी ऐसो ज्ञानी ग्रस्यौ है।
बोल्यौ रोहितास जिन रोवो मुनि मेरी सोह,
पाहुणं सों देख पेख काको घर वस्यौ है ॥४३॥
कंचन किरच सुमेरु को, सापर सरवा नीर॥
सूरज वाती ससि दसी, कल्पवृक्ष चव चीर॥
इकलव गिरा गणेश को, वाणी र वारतीक॥
पित्रण कु जल अजियां, देवन फूल पतीक॥
यों रघवाने रचक कथ्यो, गुण हरिचद हेट अनेक॥
सब कवि पडित सुरता सुघर, सुन कीजो छमा छनेक ॥६४॥

ध्रुव चरित्र

इन्दव ध्रुव की जननी ध्रुव को समझावत रोवे कहा रटि राम धणी को।
केतीक राज कहा नृप आसन का पर तूं कर मेलव नीको॥

मह शाप मिटै ततकाल करो तप मृतक ह्वै सुत पाम धनी को।
राघो कहै कुल की ममता तजि ग्यांन के खड़ग सू मार मनी को ॥१८॥

मनहर
भग गयो राम रंग रघवा रिवक मधि
कवर कलेश तजि ग्यांनी गवन्यो बन कों।
मंत्रिन सुनायो बाप नृपति सों ततखण
ध्रु व मन धर्‍यो कहा हुकम है हम कों ॥
राणी पूछी राणी उन बात बानीं हँसी खेल
बो बो सेर धन दै संतोष्यो वाके मन कों।
एतें पर धू में कही द्वार ही में धून भई
धन धन धन जगदीस दियो जन को ॥११॥

इन्दव
धूनें कभी नृप सों कर छाडिये मैं महिहौं अपमान को पायो।
सेरहु माल में फेर करी तुम वेन लगे अब राज सवायो ॥
ता बेर क्यों न बिचार कियो तुम गोद मैं से गहका दे उठायो।
राघो गषद्यो ध्रु व राम के काम को आप रह्यो रुप बाप भुठायो ॥१७॥

मनहर
लियो धन पंचमास फल मूल पाणी पौन
छठें मास संयम संतोष मन मार्‍यो है।
जप नेम प्राणायाम आसन आहार अरु
प्रत्याहार धारणा समाधि ध्यान धार्‍यो है ॥
माया छलबे को छलबल बहुतेरे किये,
पच रही रैण दिन रोमहु न टार्‍यो है।
राघो तब भेटे राम मन वच कर्म करि
ध्रू को दीजे राज भाव का यै यों बिचार्‍यो है ॥२१॥
रामजी नें राज दियो रामजी मनायो ताज
मन तप ध्रू को भाव भवन पधारे हैं।
अष्ट सिद्धि नव निधि आप पुरी सारी विधि
समर्थ धणी न एक सिर-सों बधारे हैं ॥
गरीबनिवाज नै गरीब जाण बाह दई
राम रघ बैठ हलके सें भये भारे हैं।

तात मात भ्रात कुल कुटुम्ब छतीसौं पौंन,
राघौं गनि धूनैं सब ही कै काज सारे हैं ॥३५॥

ग्रन्थ करुणा-वीनती

इन्द्व ब्रह्मा शिव शेष गणेश नमो सनकादिक नारद पाँय परौं।
प्रणाम कहौं परमेश्वर सौं जिन छाडहू नाथ अनाथ डरौं॥
हरि मैं गुलमा सुनि हौं वलमां तुम को दे पीठ यो गात गरौं।
कर्त्तार पुकार लगौं अब कै जन राघौ कहै शरणं उवरौं॥१॥
हा ! हा ! धनी दुख देत गनी तुम ही तुम एक अधार हौ मेरे।
जानत हो परवेदन की परमेश्वरजी प्रभु न्याव है तेरे॥
जोर करे जिन को समझावहु साहबजी चढि साक कै केरैं।
राघौ अनाथ अतीत की हे हरि भीर परे भगवन्त निवेरैं॥४॥
कौन उपाय करौं हरिजी वरजी न रहैं मनसा विगरानी।
भ्रमित अभक्ष अहार अहोनिशि नीच क्रिया करि पीवत पांणी॥
धर्म कै पथ मे पाव धरे नहि पाप की गैल फिरै फहराणी।
राघौ कहे विपरीत विकारणि चाल कुचाल मिथ्या मुख वाणी॥१४॥

मनहर बन्दगी तुम्हारी वीच अन्तर करत नीच,
जानत हो जानराय कहूं कहा टेरि कै।
मोह करै द्रोह गति काम की कटाक्ष अति,
क्रोध वडो जोध जुग लोभ मारै हेरि कै॥
मैं तो रावरो गुलाम वीनती सुनो हो राम,
पारत है मेरी मांम दशो-दिशि घेर कै।
रघवा दुर्यौ है भाजि शरणैं तुम्हारैं राजि,
दीनबन्धु दीन जान राखल्यो निवेरि कै॥१८॥

इन्द्व भीर परे भगवन्त भली विधि देहु यहै तुम को न विसारैं।
जाव शरीर सबै धन सर्वस जो जिये थे जगदीश न टारैं॥
खार अनी वहनी विषहू विष पत्र म परे कहूँ धर्म न हारैं।
रघवा सिदकै कियो साहबजी वरिया शत सहस्रहू प्राण तुम्हारे॥२१॥

मनहर कामरी कै भौरे हाथ मेल्यौ दीनानाथ जी मैं,
मैं ते माया मोह द्रोह रौंघ घट घेरो है।

यह त्रास मिटै ततकाल करौ तप मृतक भई सुत धाम धनी को ।
राघो कहै कुल की ममता तजि ग्यांन के खड्ग सू मार मनी को ॥१६॥

मनहर लग गयो राम रंग रचना रिजक मधि
कबर कलेस तजि त्यागी गमछ्यो धन कौं ।
मंत्रिन सुनायो जाय भूपति सौं ततखण,
प्रभु धन बख्शी कहा हुकम है हम कौं ॥
राजा पूछी राणी उन बात आनी हँसो बेत,
दो दो सेर अन्न दे सतोष्यो वाके मन कौं ।
एते पर धूनें कह्यो भार ही दै धूम भई
धन धन धन जगदीश कियो जन कौ ॥११॥

छप्पय धूनें कही नृप सौं नर छाडिये मैं मरिहौं अपघात को आयो ।
सेरहु नाज में केर करो तुम देन लगे अब राज सवायो ॥
ता बेर क्यों न बिचार कियो तुम गोद में से लरका दे उठायो ।
राघो गरख्यो प्रभु राम के काम को मान रह्यो सब आप भुलायो ॥१७॥

मनहर लियो षट पंचमास फल मूल पानी पौन
छठ मास संयम संतोष मन मारयो है ।
जप नेम प्राणायाम आसन अहार अरु
प्रत्याहार धारणा समाधि ध्यान धार्यो है ॥
माया असखे को एकबार बहौतेरे किये,
पच रही रेण दिन रोमहू न टार्यो है ।
राघो तब भेटे राम मन बच कर्म करि
धू को दीन्हें राज भाज बा दे यौं बिचार्यो है ॥२१॥
रामजी मैं राज दियो रामजी बनायो साज
धन तप धू को आज भवन पधारे हैं ।
अष्ट सिद्धि नव निधि आय जुरी सारी बिधि
समर्थ धणी न एक सेर-सौं धपारे हैं ॥
गरीबनिवाज न गरीब जान बार दई
राम रथ बैठ हलके से भले भारे हैं ।

गुरु वचन

धर्म विना धरती सकुचानी । धर्म विना घट वरसै पाणी ॥
धर्म विना कलि मैं घन थोरा । राजा लोभी दुष्ट डडोरा ॥२१॥
परजा चोर चुगल विसतारी । साचे हू को मुशकिल भारी ॥
मन्त्री दुष्ट करावरण मूढा । परजा कं ल्यं दोऊ कूढा ॥२२॥
काचे जती कलेश न त्यागै । करै मोह माया सू लागै ॥
कलि मे कल सौं वरतत रहिये । सनै सनै सत-सगति गहिये ॥२४॥
साकत को अन्न पान न लीजे । हत्याकार ठं पांव न दीजे ॥
नुगरा नर को अन्न रु पाणी । लियाँ होय क्षय बुधि अरु वाणी ॥
अब कछु बात कलू मैं नीकी । सो तू सुन सिख जीवन जीकी ॥
नाँव लेत नरक न जाई । और जुगन सू या अधिकाई ॥२७॥
एसो नाँव कलू मे राख्यौ । शुक मुनि परिक्षत सौं यू भाख्यौ ॥
जिहि वन सिंह सहज मै गाजै । जबुक सुनत जीव ले भाजै ॥३०॥

दोहा
राघो आघो सुण सरचौ, सुन सतगुरु कै वैन ॥
हृदै कमल मधि कर्णिका, तहां हेरि हरि सैन ॥३२॥

ग्रन्थ उत्पत्ति-स्थिति चिंतामणि—दोहा चौपाई में—समाप्ति स्थल

दोहा
श्रीहरि श्रीगुरु सो कही, सो श्री गुरु कहि मुझ ।
रघवा रचक गम भई, श्रीगुरु पं पायो गुझ ॥३९४॥
ब्रह्मा व्यास वशिष्ठ दिग, वालमीक शुक सूत ।
ब्रह्मसुता शभुसुवन, गुणग गवरि को पूत ॥३९५॥
रवि रविसुत को मान गुण, उपगारी शिव शेष ।
इन मिलि मोहे आज्ञा दई, रटि राघव राम नरेश ॥३९६॥
कहि उत्पति स्थिति कथा, सकल वतायो भेव ।
जन राघौ कं हिरदै वसै, श्री हरीदास गुरुदेव ॥३९७॥
याहि वाचि सीखै सुनै, गुण ते उपजे ज्ञान ।
राघो यौं रामहि रटै, धरै निरन्तर ध्यान ॥३९८॥
कवि कोविद पडित मिसर, सुनि जनि डाटहु मोहि ।
मम वांणी वालक वचन, जनि कोई मानो द्रोहि ॥३९९॥

॥ इति ॥

पूजन ही आवत हु अब पछतावत हूँ,
न तो आनी हार हरि मारग में पैरो है ॥
भगतबछल भगवन्त महि सेहु सन्त,
ऊबरों न और ठौर एक बल तेरो है।
रघवा बिचारो रंक मन में प्रयन्त सक,
राम भरि लेहु अक काल आयो नेरो है ॥३३॥

प्रन्थ चितावणी

इन्दव समये सुमरयो नहि राम घणी सु घणी जम की तन त्रास सहैगो।
आठ र बीस में सोस क्यूं सुन को व कहू विधि ध्यान कहैगो ॥
जोजन द्वादस आट घरे की सी ता मधि सूरज भूरि मरेगो।
राघो कहै निघ्रेमि गुसाइ को आवत ही जम कंठ गहैगो ॥१॥
मै मन देख्यो महा मिरपत्रप एक रती हू त्रिया नहि ताके।
प्रेत ज्यों प्राण को नाच नचावत कामना सूं कबहू नहि थाके ॥
इन्द्रिन द्वार अनीति करै अति पापि परनारि परद्रब्य को ताकै।
राघो कहै अपस्वारथ सों अधि प्रीति नहीं परमारथ माकै ॥७॥

कवित्त साधु संगति को

मनहर वास को पुरण आस सगति करै निवास,
पाप ताप होत नाश गहै गुणसार की।
पाय है परम सुख राम नाम जाके मुख
बीसरै न एक चुक प्राणन आधार की ॥
सोई जन जाके तन नांव सों रहै लगन
पर मन राखे मन सोई स्वामी कार को।
राघो गुरु-मन्त्र अति राखे रैण-दिन रति
सुमरि सुमरि सिध साध भये पार की ॥१॥

गुरुसिस सम्वाद प्रन्थ—शिष्य वचन

चौपई नमो नमो मम गुरु सत स्वामी। देव निरंजन अन्तर्यामी ॥
आनन्दरूप महा सुखसागर। सदा मगन हिरदै हरि नागर ॥१॥
तुम मजनीक परम ततवेत्ता। स्वामी कहि समझाओ एता ॥
वर्तमान अति विकट गुसांई। कैसे करि रहिये या मांई ॥२॥

प्रहलाददासजी के शिष्य हरिदासजी के शिष्य थे। राघवदास की रचनाओ मे उनकी वाणी, १, (अग १७), साखी भाग, २, (सा० १६३७), अरिल ३७०, ३, (पद १७६ राग २६), ४, लघु ग्रन्थ २० (छन्द ५०४)५, ग्रन्थ उत्पत्ति, स्थिति, चितावणी, ज्ञान, निषेध, (छन्द सख्या ४००-७२) की सूचना स्वामी मगलदासजी ने दी है। भक्तमाल काफी प्रसिद्ध ग्रन्थ है ही। करौली मे उनकी परम्परा का स्थान है।

मगलाचरण के ७ वे पद्य मे राघवदासजी का भी वर्णन है। प्रस्तुत ग्रन्थ के पृष्ठ २४० मे राघवदास के गुरु, बाबा गुरु, काका गुरु, गुरु भ्राता आदि का विवरण भी उन्होने दिया है। उन पक्तियो की ओर पाठको का ध्यान आकर्षित किया जाता है।

टीकाकार चतुरदास—

प्रस्तुत भक्तमाल के टीकाकार चतुरदास हैं। संवत् १८५७ के भादवा वदि १४ मगलवार को उन्होने यह टीका बनाई। प्रशस्ति मे उन्होने नारायणदास की भक्तमाल को देखकर राघवदास ने भक्तमाल बनाई और प्रियादास की टीका को देखकर चतुरदास ने इन्दव छन्द में इस टीका की रचना की, लिखा है। अपनी परम्परा बतलाते हुये वे अपने को सतोषदास के शिष्य बतलाते हैं। प्रारम्भ मे भी दादू के बाद सुन्दर, नारायणदास, रामदास, दयाराम, सुखराम और सतोष नामोल्लेख किया है।

चतुरदासजी की अन्य किसी रचना की जानकारी नही मिली। स्वामी मगलदासजी ने दादूद्वारा, रामगढ के महन्त शिवानन्दजी से विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिये लिखा था, उन्हे पत्र भी दिया गया और "वरदा" के सम्पादक श्री मनोहर शर्मा को भी चतुरदासजी सम्बन्धी विशेष जानकारी उनसे प्राप्त कर भेजने के लिये लिखा गया, पर सफलता नहीं मिली।

इस तरह यथा-साध्य लम्बे समय तक प्रयत्न करने पर भी जो सामग्री प्राप्त नही हो सकी, उसके लिये विवशता है। खोज चालू है, अतः फिर कभी प्राप्त होगी, तो उसे लेख द्वारा प्रकाशित की जायगी। चतुरदासजी की टीका मे मूल ग्रन्थ की अपेक्षा विशेष और नई जानकारी भी है, इसलिये इस टीका की महत्ता स्वय सिद्ध है।

ग्रन्थ के अन्त में मूल भक्तमाल और टीका मे आये हुये नामो की सूची देने का विचार था, जिससे इस ग्रन्थ मे कितने सन्त एवं भक्तजनो का उल्लेख हुआ

राघवदास की भक्तमाल—

यद्यपि नाभादास की भक्तमाल के अनुकरण में ही राघवदास ने अपनी भक्तमाल बनाई पर एक तो यह उससे काफी बड़ी है और दूसरा इसमें ऐसे अनेक सन्त एवं भक्तजनों का उल्लेख है, जिनका नाभादास की भक्तमाल में उल्लेख नहीं है। कवि राघवदास दादूपन्थी सम्प्रदाय के थे, इसलिए उक्त सम्प्रदाय के सन्तजनों का विवरण तो इसमें विशेष रूप से दिया ही गया है और इसमें मुसलमान चारण आदि ऐसे अनेक भक्तों का विवरण भी है, जिनके सम्बन्ध में और किसी भक्तमालकार ने कुछ भी नहीं लिखा है। इसलिये इस भक्तमाल की अपनी विशेषता है और यह ग्रन्थ बहुत ही महत्वपूर्ण है।

डॉ॰ मोतीलाल मेनारिया ने अपने 'राजस्थान का पिंगल-साहित्य' नामक शोध-प्रबन्ध में इस ग्रन्थ का महत्व बतलाते हुये लिखा है कि 'यह ग्रन्थ नाभादास की भक्तमाल की शैली पर लिखा गया है पर उसकी अपेक्षा इसका दृष्टिकोण कुछ अधिक व्यापक और उदार है। नाभादास ने अपने भक्तमाल में केवल वैष्णव भक्तों को स्थान दिया है। परन्तु, इन्होंने दादूपन्थी सन्तों के अतिरिक्त रामानुज विष्णुस्वामी कबीर नानक आदि अन्य मतावलम्बियों का भी विवरण दिया है और यह इसकी एक प्रधान विशेषता है। यह ग्रन्थ बहुत प्रौढ़ और उपयोगी रचना है।"

वृन्दावन से प्रकाशित श्री भक्तमाल ग्रन्थ के पृष्ठ ११८ में लिखा है कि इस भक्तमाल में चतुःसम्प्रदायी वैष्णव भक्तों के साथ सन्यासी जोगी जैनी बौद्ध, यवन फकीर नानकपन्थी कबीर दादू, निरंजनी आदि सम्प्रदायों के भक्तों का भी उल्लेख है।

स्वामी मंगलदासजी ने राघवदास की भक्तमाल की विशेषता के सम्बन्ध में लिखा है कि "इसमें सगुण भक्तों के वर्णन के साथ-साथ निर्गुण भक्तों का भी निरूपण किया गया है।" उक्त ग्रंथ में इसका रचनाकाल सम्वत् १७७७ बतलाया गया है पर वास्तव में 'सत्रोत्तरा' शब्द से १७ की संख्या लेना ही अधिक संगत है।

राघवदास व उनकी रचनाएँ—

राघवदासजी का विशेष परिचय प्रयत्न करने पर भी प्राप्त नहीं हो सका। इस ग्रन्थ की प्रशस्ति के अनुसार वे दादूजी के शिष्य बड़े सुन्दरदासजी उनके शिष्य

सबसे प्राचीन थी, उसकी नकल करवा ली गई। यह प्रति चतुरदासजी की टीका की रचना (सवत् १८५७) के केवल ३॥ बरस बाद की ही (सवत् १८६१ के वैशाख वदि ३ डीडवाणा मे) लिखी हुई है। चतुरदासजी के शिष्य नन्दरामजी के शिष्य गोकलदास की लिखी हुई होने से इस प्रति का विशेष महत्व है। अत. इसको पाठमूल मे रखकर (२) सवत् १८९७ की लिखी हुई दूसरी (B) प्रति से पाठ भेद देने का विचार किया गया, पर मिलान करने पर वह प्रति भी सवत् १८६१ वाली प्रति की नकल-सी मालूम हुई, अत. कोई खास पाठभेद प्राप्त नही हो सका। इन दोनो प्रतियो की लेखन-प्रशस्ति इस ग्रन्थ के पृष्ठ २४८ मे छपी हुई है।

(३) इसी बीच बीकानेर राज्य के एक प्राचीन नगर रिणी (तारानगर) मेरा जाना हुआ, तो वहाँ के तेरहपथी सभा के ग्रन्थालय मे कुछ हस्तलिखित प्रतियाँ यो ही पडी हुई थी, उनको मै सभा के सचालको से नोट करके ले आया। उसमे प्रस्तुत भक्तमाल की एक प्रति सवत् १८८६ की लिखी हुई प्राप्त हुई। इस (C) प्रति से मिलान करके जो पाठ-भेद प्राप्त हुये, उन्हे टिप्पणी मे दे दिया गया है। ६० पत्रो की इस प्रति की लेखन-प्रशस्ति भी प्रस्तुत सस्करण के पृष्ठ २४८ की टिप्पणी मे दे दी गई है। प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादन मे प्रधानतया इन तीनो प्रतियो का ही उपयोग किया गया है। मूल पाठ सवत् १८६१ की प्रति का प्राय. ज्यो का त्यो छापा गया है।

(४) प्रस्तुत ग्रन्थ छप जाने के बाद स्वामी मगलदासजी की प्रेसकॉपी से भी मिलान करना जरूरी समझा, अत उनके वहाँ से उक्त प्रेसकॉपी फिर से मगवाई गई। मिलान करने पर विदित हुआ कि उसमे काफी पद्य अधिक हैं। अतः जहाँ-जहाँ जो पद्य अधिक हैं, उन्हे नकल करवाके परिशिष्ट मे दे दिया गया है।

(५) जोधपुर जाने पर श्री गोपालनारायणजी बहुरा से विदित हुआ कि राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान मे इसकी एक प्रति और खरीदी गई है, तो उसे मगवाकर देख लिया गया। पहले की तीनो प्रतियो मे ग्रन्थ की श्लोक सख्या ४१०१ लिखी हुई थी, इस प्रति मे वह सख्या ४५०० तक लिखी हुई है अर्थात् यह प्रति भी परिवर्द्धित सस्करण की ही है। ९२ पत्रो की यह प्रति स० १९०० की लिखी हुई है।

(६) छठी प्रति भारतीय विद्या मंदिर शोध सस्थान, बीकानेर मे देखने को मिली। यह प्रति पूर्व प्राप्त तीन प्रतियो जैसी ही है। पर हाँसिये मे अनेक जगह

है उसकी जानकारी मिल जाती। पर उन नामों की अधिकांश सूचना आगे विस्तृत अनुक्रमणिका में दे ही दी गई है, इसलिये अन्त में नामानुक्रमणिका देने की उतनी आवश्यकता नहीं रह गई।

चतुरदास ने मंगलाचरण में राघवदासजी का वर्णन करते हुवे ठीक ही लिखा है कि इसमें सन्तों का यथार्थ स्वरूप बहुत थोड़े में कह दिया गया है —

सन्त सरूप जथारथ गाइ र कीन्ह कवित्त मनू यह हीरा।
साध अपार कहे गुण ग्रन्थन थोरहु आंकन में सुख सीरा।
सन्त सभा मुनि है मन साह र हंस पिवे पय छाड़ि र नीरा।
राघवदास रहास विलास सु सन्त सबै थलि भावत करा।।

प्रस्तुत ग्रन्थ का सम्पादन और प्राप्त हस्तलिखित प्रतियाँ—

करीब १५-२० वर्ष पहले की बात है मेरे विद्वान् मित्र श्री नरोत्तमदासजी स्वामी के पास स्वामी मंगलदासजी के यहाँ से आई हुई राघवदास के भक्तमाल की टीका सहित प्रेस कापी मुझे देखने को मिली। मुझे वह ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी और महत्त्व का लगा इसलिये उसकी प्रतिलिपि मैंने उसी समय करवा ली। तदनन्तर स्वामी मंगलदासजी को प्रेरणा दी कि वे इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ को शीघ्र ही प्रकाश में लावें। पर उन्होंने कहा कि इसके प्रकाशन का प्रयत्न किया गया, पर अभी तक कहीं से कोई भी व्यवस्था नहीं हो पाई। इसके कुछ समय बाद मुनि जिनविजयजी से मैंने इस ग्रन्थ के प्रकाशन की चर्चा की और उन्होंने राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान की ग्रन्थमाला द्वारा इसे प्रकाशित करना स्वीकार कर लिया। मैंने उन्हें अपनी करवाई हुई प्रतिलिपि को भेज दिया और प्रेस की व्यवस्था भी कर दी गई। फर्मा कम्पोज भी हो गया इसी बीच मुनिजी ने पुरोहित हरिनारायणजी के संग्रह में इसकी दो महत्त्वपूर्ण हस्तलिखित प्रतियाँ देखी तो उनका आदेश हुआ कि उन प्रतियों के आधार से पाठ-भेद सहित इसका पुन सम्पादन किया जाय क्योंकि स्वामी मंगलदासजी वाली प्रेस-कॉपी में हस्तलिखित प्रतियों से प्राप्त पाठ से कुछ भिन्नता थी।

प्राचीनतम प्रति—

मुनिजी के आदेशानुसार गोपालनारायणजी बहुरा द्वारा पुरोहित हरिनारायणजी के संग्रह की उपरोक्त दोनों प्रतियों को प्राप्त करके उनमें से एक प्रति

उसमे ६२१ टीका की पद्य सख्या बाद देने पर मूल के ५६४ पद्य रहते है, जबकि अलग-अलग छन्दो की सख्या लिखी गई है। उनको मिलाने से ५९४ की सख्या बैठती है, अर्थात् ३० पद्यो का फर्क रह जाता है। प्रतिलिपि करने वालो ने, पता नही, ऐसी गडबडी क्यो कर दी है।

अभी तक राघवदास के भक्तमाल के केवल मूलपाठ की एक भी प्रति प्राप्त नही हुई और न टीकाकार चतुरदास के समय के पहले की लिखी हुई प्रति ही मिल सकी, इसलिए यह निर्णय करना कठिन है कि राघवदास ने मूल मे कितने पद्य बनाये थे और उसमे कब कितने पद्य बढाये गये ? प्रस्तुत सस्करण मे मूल और टीकाकार के पद्यो की जो सख्या छपी है, उसमे भी कुछ गडबडी रह गई है। क्योकि जिन प्रतियो की नकल की गई थी, उन्ही मे पद्यो की सख्या देने मे गडबड कर दी गई है। प्रति नम्बर A और B के अनुसार मूल पद्य सख्या ५५५ और टीका के पद्यो की सख्या ६३६ छपी है। C प्रति मे मूल पद्यो की सख्या ५४४ दी हुई है और टीका के पद्यो की सख्या ६४१। यह दोनो सख्यायें मिलाकर लेखन-प्रशस्ति मे दी हुई कुल पद्यो की सख्या मे भी अन्तर रह जाता है। केवल C प्रति को ही लें, तो ५४४ और ६४१ दोनो को मिलाकर ११८५ की सख्या तो ठीक बैठ जाती है, पर इसी प्रति की प्रशस्ति मे मूल पद्यो की सख्या ५५३ और टीका के पद्यो की सख्या ६२१ लिखी है, उससे मिलान नही बैठता। मालूम होता है कि टीका की पद्य सख्या तीनो प्रतियो मे ६२१ बतलाने पर भी उससे अधिक है, क्योकि A और B प्रति मे पद्य सख्या ६३६ और C प्रति मे ६४१ दी हुई है। अतः मूल की तरह टीका मे भी कुछ पद्य पीछे से बढाये गये हैं, यह तो निश्चित-सा है। परिवर्द्धित सस्करण मे तो काफी पद्य बढे हैं।

उपरोक्त प्रतियो के अतिरिक्त दो अन्य प्रतियो की जानकारी भी मुझे है, पर उनको मैं प्राप्त नही कर सका। उनमे से एक प्रति का विवरण ना० प्र० सभा के सन् १९३८ से ४० तक के १७ वें त्रैवार्षिक विवरण के पृष्ठ ३०२ मे छपा है। उस प्रति की पत्र सख्या १३९ और ग्रन्थ-परिमाण ६५१६ श्लोको का बतलाया गया है, जो ऊपर दी गई प्रतियों के परिमाण से करीब डेढा बढ जाता है। इसकी भी लेखन-प्रशस्ति मे गडबड है, उसमे श्लोक सख्या ५००० की बतलाई है। छन्द सख्या भी बढ गई है। यथा—

छप्पय ३५३, मनहर १८७, हसाल ४, साखी ८५, चौपाई २, इन्दव १००२ (?) और टीका की इन्दव और मनहर छन्दो की सख्या ६६६ लिखी है।

टिप्पण लिखे हुये हैं और अन्त में टीकाकार की प्रशस्ति के पद्य इसमें नहीं लिखे गये हैं। कुल पद्यों की संख्या ११८५ दी हुई है। लिखने का समय दिया नहीं गया है पर १९वीं शताब्दी की है।

पद्यों की कमी-बेशी व संख्या में गड़बड़ी—

स्वामी मंगलदासजी वाली प्रेस-कापी में पद्यों की संख्या १२८६ दी गई है। इससे मालूम होता है कि करीब १०० पद्य पीछे से बढ़ाये गये हैं। इन पद्यों को स्वामी राघवदासजी या टीकाकार ने बढ़ाया है या और किसी ने—यह अभी निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। पर यह निश्चित है कि संवत् १८६१ और संवत् १९०० के बीच में यह परिवर्द्धन हुआ है। प्रस्तुत ग्रन्थ के पृष्ठ २४८ में तीन प्रतियों की लेखन प्रशस्ति में ग्रन्थ की श्लोक संख्या यद्यपि ४१०१ समान रूप से लिखी हुई है पर प्रति नं० १-२ से प्रति नं० तीन में दी हुई छन्दों की संख्या भिन्न प्रकार की है। चतुरदास की टीका के इन्दव छन्दों की पद्यसंख्या तो तीनों प्रतियों में ६२१ दी हुई है, पर राघवदास के मूल पद्यों की संख्या में अन्तर है और लेखन प्रशस्ति में छन्दों के नाम के साथ जो संख्या अलग-अलग दी हुई है वह कुल पद्यों की संख्या से मेल नहीं खाती। जैसे—

A और B प्रति छप्पय १२८ मनहर १५२, हंसाल ४, साखी ३८ चौपाई २, इन्दव ७५।

C प्रति दोहा १ छप्पय १११, मनहर १४१, हंसाल ४ साखी ३८ चौपाई २ इन्दव ७५।

अर्थात् C प्रति में छन्दों की संख्या में ५ छप्पय और ११ मनहर छन्दों की संख्या ? बतलाई गई है, पर कुल पद्यों की संख्या ११८५ बतलाई है जो A और B में १२०४ बतलाई गई है। अर्थात् १९ पद्यों की संख्या में कमी बतलाने पर भी वास्तव मे अलग-अलग छन्दों के संख्या विवरण में छप्पय ५ और मनहर ११ कुल १६ ही कम होते हैं। आश्चर्य की बात है कि अलग-अलग छन्दों की संख्या का मिलान कुल छन्दों की संख्या से भी ठीक नहीं बैठता। जैसे प्रति नम्बर A और B में कुल पद्यों की संख्या १२ ४ बतलाई है उसमें से टीका के ६२१ पद्यों के बाद देने पर मूल ग्रन्थ के पद्यों की संख्या ५८३ रह जाती है। पर छन्दों के विवरण के अनुसार वह संख्या ६ ९ बैठती है। अर्थात् २६ पद्यों का फर्क पड़ जाता है। इसी तरह प्रति नम्बर C में कुल पद्यों की संख्या ११८५ दी गई है

में मूल और टीका के पद्यो को अलग से चिह्नित कर देने का कहा और आपने उसे अपना ही काम समझ कर कर दिया--इसके लिये मैं आपका आभारी हूँ।

ग्रन्थ का मुद्रण जोधपुर मे हो रहा था, वहाँ से प्रूफ बीकानेर आने-जाने से अधिक विलम्ब होता, इसलिये प्रूफ सशोधन का कार्य मैंने महोपाध्याय मुनि विनयसागरजी को सौंपा और उन्होने बडो आत्मीयता के साथ सारे ग्रन्थ का प्रूफ सशोधन कर दिया। उनका और मेरा वर्षों से धर्म-स्नेह का सबध रहा है, फिर भी उनका आभार प्रकट करना मेरा कर्त्तव्य है। प्रूफ सशोधन मे उन्हे श्री गोपालनारायणजी बहुरा का मार्ग-प्रदर्शन भी मिलता रहा है।

ग्रन्थ छप जाने के बाद इसकी अनुक्रमणिका बनाना प्रारभ किया, तो एक और दिक्कत सामने आई कि ग्रन्थ मे यद्यपि बहुत-सी जगह तो पद्यो के प्रारम्भ मे भक्तो के नाम दिये हुये हैं, पर ऐसे भी बहुत से पद्य हैं, जिनमे शीर्षक का अभाव है। इसलिये उन पद्यो को पढ कर शीर्षक लगाते हुये विस्तृत अनुक्रमणिका बना देने का काम सिंहस्थल के रामस्नेही सम्प्रदाय के महन्त स्वामी भगवत्दासजी महाराज को दिया गया और उन्होने बड़े परिश्रम से मेरी सूचनानुसार दो बार जाँच कर के अनुक्रमणिका तैयार कर दी, जिसे विद्वद्वर नरोत्तमदासजी स्वामी ने भी देख लेने की कृपा की है। इस सहयोग के लिये मैं महन्तजी व स्वामीजी का आभारी हूँ। श्री गोपालनारायणजी बहुरा ने भक्तमाल की जो प्रति बाद मे राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान मे खरीदी गई, उसकी सूचना दी और प्रति को बीकानेर के शाखा कार्यालय मे भिजवा दी तथा प्रूफ सशोधन मे भी सहायता की, इसलिये उनका भी आभार मानना मैं अपना कर्त्तव्य मानता हूँ।

मेरी इच्छा थी कि ग्रन्थ मे जिन जिन भक्तो एव सन्तो का उल्लेख है, उनके सम्बन्ध मे अन्य सामग्री के आधार से विशेष प्रकाश डाला जाय, पर यह कार्य बहुत समय एव श्रम-सापेक्ष है। और चूकि मूल ग्रन्थ गत वर्ष ही छप चुका था, इसलिये अधिक रोके रखना उचित नही समझा गया। सम्बन्धित सामग्री को जुटाने मे भी कई महीने लगे। फिर भी पूरी सामग्री नही मिल सकी। अत अपनी उस इच्छा का सवरण करना पडा। पाठको को यह जानकारी दे देना उचित समझता हूँ कि प्रस्तुत ग्रन्थ को हिन्दी विवेचन या अनुवाद के साथ प्रकाशित करने का प्रयत्न श्री सुखदयालजी एडवोकेट कर रहे हैं। उन्होने उसके कुछ पृष्ठो की प्रेस-कॉपी स्वामी मगलदासजी को भेजी थी और मैंने उसे स्वामीजी के पास देखी थी। पता नही, वे उस कार्य को पूर्ण कर पाये या नहीं।

यह प्रति सं० १९३३ में साध भगतराम ने रोभड़ी गांव में साध मीजीराम के लिये लिखा है। अभी यह प्रति भरतपुर राज्य के श्री कामवन के श्री गोकुल चन्द्रमा मंदिर के पुस्तकालय में गो० देवकीनन्दन आचार्य के पास है।

विवरण संशोधन —

खोज विवरण में टीका का रचना काल सं १८१८ लिख दिया गया है पता नहीं इसका आधार क्या है। नीचे जो टीका के रचनाकाल संबंधी पद्य उद्धृत हैं उससे तो १८५७ ही सिद्ध होता है। दूसरी महत्वपूर्ण गलती राघवदास का गोत्र 'भांडास' लिख देना है। वास्तव में 'भांगल' शब्द को 'भांडास' पढ़ लिया गया है और इसी से इतनी शोचनीय गलती हो गई है उद्धृत पाठ भी अशुद्ध और त्रुटित है। प्रति बृहद् सस्करण की है ही। सम्भव है, परिवर्धित संस्करण के जो पद्य मैंने परिशिष्ट में दिये हैं, उनमें आगे चलकर फिर परिवर्धन हुआ होगा।

'राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान' से प्रकाशित विद्याभूषण ग्रन्थ-संग्रह सूची के पृष्ठ १० में प्रति नं० ११९ संवत् १९८३ की गोपीचन्द शर्मा लिखित है। इसकी पृष्ठ सख्या २ ४ बतलाई गई है, बीच के ४ पृष्ठ नहीं हैं। वास्तव में यह किसी हस्तलिखित प्रति की आधुनिक प्रतिलिपि ही है। सम्भव है, मम्बर A और B की ही यह नकल पुरोहित हरिनारायणजी ने करवाई हो। खोज करने पर और भी कुछ प्रतियां मिल सकती हैं।

आभार प्रदर्शन—

सर्वप्रथम मैं स्वामी मंगलदासजी का विशेष आभार मानता हूं जिनकी प्रेरणा से ही इस ग्रन्थ के सम्पादन का काम मैंने हाथ में लिया और समय-समय पर विविध प्रकार की सूचनायें व सहायता भी वे देते रहे। तत्पश्चात् मुनि जिनविजयजी का मैं आभारी हूं जिन्होंने इस ग्रन्थ के प्रकाशन की स्वीकृति दी और पुरोहितजी ने संग्रह की प्रतियां भिजवाईं।

ग्रन्थ की प्रस-कॉपी तैयार हो जाने पर मेरे सामने यह दुविधा उपस्थित हुई कि हस्तलिखित प्रतियों में मूल और टीका के पद्यों का सर्वत्र स्पष्टीकरण नहीं था अतः इसकी छंटाई कैसे की जाय ? संयोग से श्री सुरजनदासजी स्वामी बीकानेर डूंगर कॉलेज में प्राध्यापक के रूप में पधार गये। उनको मैंने प्रेस कॉपी

में मूल और टीका के पद्यो को अलग से चिह्नित कर देने का कहा और आपने उसे अपना ही काम समझ कर कर दिया- –इसके लिये मै आपका आभारी हूँ।

ग्रन्थ का मुद्रण जोधपुर मे हो रहा था, वहाँ से प्रूफ बीकानेर आने-जाने मे अधिक विलम्ब होता, इसलिये प्रूफ सशोधन का कार्य मैंने महोपाध्याय मुनि विनयसागरजी को सौंपा और उन्होने बडो आत्मीयता के साथ सारे ग्रन्थ का प्रूफ सशोधन कर दिया। उनका और मेरा वर्षों से धर्म-स्नेह का सबध रहा है, फिर भी उनका आभार प्रकट करना मेरा कर्त्तव्य है। प्रूफ सशोधन मे उन्हे श्री गोपालनारायणजी बहुरा का मार्ग-प्रदर्शन भी मिलता रहा है।

ग्रन्थ छप जाने के बाद इसकी अनुक्रमणिका बनाना प्रारभ किया, तो एक और दिक्कत सामने आई कि ग्रन्थ मे यद्यपि बहुत-सी जगह तो पद्यो के प्रारम्भ मे भक्तो के नाम दिये हुये हैं, पर ऐसे भी बहुत से पद्य हैं, जिनमे शीर्षक का अभाव है। इसलिये उन पद्यो को पढ कर शीर्षक लगाते हुये विस्तृत अनुक्रमणिका बना देने का काम सिंहस्थल के रामस्नेही सम्प्रदाय के महन्त स्वामी भगवत्दासजी महाराज को दिया गया और उन्होने बड़े परिश्रम से मेरी सूचनानुसार दो बार जाँच कर के अनुक्रमणिका तैयार कर दी, जिसे विद्वद्वर नरोत्तमदासजी स्वामी ने भी देख लेने की कृपा की है। इस सहयोग के लिये मैं महन्तजी व स्वामीजी का आभारी हूँ। श्री गोपालनारायणजी बहुरा ने भक्तमाल की जो प्रति बाद मे राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान मे खरीदी गई, उसकी सूचना दी और प्रति को बीकानेर के शाखा कार्यालय मे भिजवा दी तथा प्रूफ सशोधन मे भी सहायता की, इसलिये उनका भी आभार मानना मैं अपना कर्त्तव्य मानता हूँ।

मेरी इच्छा थी कि ग्रन्थ मे जिन जिन भक्तो एव सन्तो का उल्लेख है, उनके सम्बन्ध मे अन्य सामग्री के आधार से विशेष प्रकाश डाला जाय, पर यह कार्य बहुत समय एव श्रम-सापेक्ष है। और चूकि मूल ग्रन्थ गत वर्ष ही छप चुका था, इसलिये अधिक रोके रखना उचित नही समझा गया। सम्बन्धित सामग्री को जुटाने मे भी कई महीने लगे। फिर भी पूरी सामग्री नही मिल सकी। अत अपनी उस इच्छा का सवरण करना पडा। पाठको को यह जानकारी दे देना उचित समझता हूँ कि प्रस्तुत ग्रन्थ को हिन्दी विवेचन या अनुवाद के साथ प्रकाशित करने का प्रयत्न श्री सुखदयालजी एडवोकेट कर रहे हैं। उन्होने उसके कुछ पृष्ठो की प्रेस-कॉपी स्वामी मगलदासजी को भेजी थी और मैंने उसे स्वामीजी के पास देखी थी। पता नही, वे उस कार्य को पूर्ण कर पाये या नही।

मेरी यह भी इच्छा थी कि जिस प्रकार नाभादास की भक्तमाल का व्याख्यान करने वाले कई भक्तमाली सन्त हैं इसी तरह राघवदास की इस भक्तमाल के व्याख्याता सन्त भी हों, तो उनके पास से इस ग्रन्थ में वर्णित भक्तों की विशेष जानकारी प्राप्त की जाय। स्वामी मंगलदासजी को पूछने पर उन्होंने यह सूचना दी कि "राघवदासजी की भक्तमाल के जानकार दादूपन्थी सम्प्रदाय में २ ही हैं, उनमें तपस्वी भूरारामजी प्रमुख हैं। भक्तमाल पर महात्मा रामदासजी दूधाधारी ने अपने शिष्य कृपाराम को भक्तमाल की कथाओं का विवरण लिखा दिया था वह शायद उसी के पास वाराणसी में है।" पर मैं इन दोनों सन्तों से लाभ नहीं उठा पाया। अतः जैसा भी बन पड़ा है, इस ग्रन्थ को पाठकों के हाथों में उपस्थित करते हुये सन्तोष मान रहा हूं।

—अगरचन्द नाहटा

आचार्य १५॥ .

अनुक्रमणिका

[1] नाभादास कृत भक्तमाल में मूल पद्य सख्या ७-८ देखें।

[†]यहाँ ६ मनहर छदों का टिप्पणी मे फरक है अन्यथा १०४ होवे है।

[1] यह पद पहिले पद्यांक ४० पृष्ठ १५ पर आ चुका है

[†] यह छंद पहिले पद्यांक ४३ पृष्ठ ११ पर आ चुका है

राघवदास कृत भक्तमाल

चतुरदास कृत टीका सहित

टीका-कर्त्ता को मंगलाचरण

साखी (दोहा) गुर गनेस जन सारदा, हरि कवि सवहिन पूजि।
भक्तमाल टीका करू[1], मेटहु दिल की दूजि ॥

इदव छंद
पैल निरजन देव प्रणामहि, दूसर दादुदयाल मनाऊं।
सुन्दर कौं सिर ऊपरि धारि रु, नेह निराइणदास लगाऊं।
राम दया करिहै सुख सपति, मैं सु सतोष जु सिष्य कहाऊं।
राघवदास दयागुर आइस, इदव छद सटीक वनाऊं ॥१

टीका सरूप-वर्णन

कावि वनावत आनददाइक, जो सुनिहै सु खुसी मन माही।
माधुरता अति अक्षर जोडन, आइ सुनै सु घने हरखाही।
जोड सराहत जे अपने[2] कवि, ताहि सवै कहि सो कछू नाही।
ह्वै उर भाव र ग्यान भगत्तन, राघव मो[3] तन टीक कराही ॥२

भक्ति-सरूप वर्णन

भावत भगति तिया श्रव सतनि, तास सरूप सुनौं नर लोई।
नाव सुनीर नवन्य नहावन, वेस विवेक बन्यौ वप वोई।
भूषन भाव चुरा चित चेतन, सौंध सतोष सु अग समोई।
अजन आनद पान[4] सचौपन, सेज सदा सतसगति सोई ॥३

भक्ति पच रस-वर्णन

पाच भगत्य कहे रस सतन, सो विसतार भली विधि गाये।
१वाछलि २दास्य ३सखापन ४सात रु और ५सिंगार सरूप दिखाये।
टिप्पण[5] को उर स्वाद लहौ जब, बैठि विचार करौ मन भाये।
रोम उठै न बहै द्रिग तै जल, ऐसिनु प्रेम समुद्र वुडाये ॥४

---

१ करौं। २. अपनी। ३ सो। ४ आनन्दयान। ५ टप्पण।

राघवदासजी द्वारा

ग्रन्थ समर्पण

मगन महोदधि है भरयौ जन पूजत अरपै ।
यह गंभीर गहरौ भरयौ यह दुग्ध जल अरपै ।
रती एक किरची कंचन की, ले मेरहि परसै ।
वैभव निकर न ठाहरै, कंचनमय दरसै ।
जैसे सुरतर कौं यजन, रचि पचि अरपै भक्त नर ।
त्यूं रचना इस पूजित है उत हरिजन त्रिय-ताप-हर ॥

मूल · मंगलाचरण-वर्णन

दोहा छंद
नमो परम गुर सुद्ध कर, तिमर अग्यांन मिटाइ।
आदि अजन्मां पुरुष कौं, किंहि विधि नर दरसाइ ॥१
नरपद सुरपद इद्रपद, पुनि हि मोक्षपद मूर।
सदगुर सो द्रिव द्रिष्टि द्यौ, अन्तर भासै नूर ॥२
(अब) कहत परमगुरु प्रप्रए[1] ह्वै, दयौ परमधन दाखि।
भक्त भक्ति भगवत गुर, राघव श्रै उर राखि ॥३
प्रथम प्रणम्य गुर-पादुका, सब संतन सिर नाइ।
इष्ट अटल परमातमां, परमेसुर कुल गाइ ॥४
विष्णु विरचि सिव सेस जपि, जती सती सिद्धिसैण।
बाणी गणपति कविन कौं, द्यवै चतुर विग-वैण ॥५
अब अरज भक्त भगवंत सौं, गरज करौ गम होइ।
हरि गुर हरि के आदि भृति, जन राघव सुमरै सोइ ॥६
व्यापिक ब्रह्मण्ड पच्चीस मधि, सुरग मृति पाताल।
भक्तन हित प्रभु प्रगट ह्वै, राघव राम दयाल ॥७
सत त्रेता द्वापर कलू, ये अनादि जुग च्यारि।
राघव जे रत रांम सू, संत महंत उर धारि ॥८
भक्त भक्ति भगवंत गुर, श्रै मम मस्तक मौर।
राघव इनसौं बिमुख ह्वै, तिनकू कतहु न ठौर ॥९
भक्त भक्ति भगवत गुर, ये उर मधि उपवासि।
राघव रीझै रामजी, जाहि विघन-क्रम नासि ॥१०
भक्त बडे भगवत सम, हरि हरिजन नहीं भेद।
अरस परस जन जगत गुर, राघव बरणत वेद ॥११
हरि गुर आज्ञा पाइकैं, उद्यम कीनों ऐह।
जन राघौ रामहि रुचै, संतन कौ जस प्रेह ॥१२
भक्तमाल भगवत कौं, प्यारी लगै प्रतक्ष।
राघव सो रटि राति दिन, गुरन बताई लक्ष ॥१३

---

१. प्रसन्न।

फूल भये रस पंचम रंगन याकद्र[1] यह दाम बनाई।
राघव मालनि लै करि साम्हनि सुन्दर देखि हरि मन भाई।
डारि लई गरि प्रीति भरी करि कावत माहि न[2] भेन सुहाई।
भार भयो बहु भक्तन की छबि जानत हैं इन पाइन भाई ॥५

सतसंग-प्रभाव

पौधि भगत्य बिघन सबाकर मोत विचार सु वारि लगाई।
साध समागिम पाइ वहै जल प्रौढ भयौ भति डार बधाई।
पावस संत रिदौ बिसतीरन जीव जिये दुख ताप मसाई।
खेरनि को डर नाहि हुतौ बहु ज्यौरि बध्यो मतगैद भुलाई ॥६

राघवदासजी को वर्णन

संत सरूप अपारन गाइत कीन्ह कवित्त मनूं यह हीरा।
साध अपार कहे गुन ग्रंथन पोरहु पांकन मे सुख सीरा।
संत सभा सुनिहै मन लाइ र हंस पिवे पय छाड़ि र नीरा।
राघवदास रसाल बिसाल सु संत सबै चलि आवत कीरा ॥७

श्री भक्तमाल-सरूप-वर्णन

दीरघदास पढै निसबासुर, पाप हरै अग आप करावे।
जानि हरी सनमान करै जन प्रीत धरै जग रीति मिटावे।
कौंन भराधि थकै उन भक्तन ठीक न ठाक मनों भ्रम भावे।
माल गरै सिसकादिक भास सु, माल भगत्त बिना रुलि जावे ॥८
संत हरी गुर सौं जन सो मुख टेक गही यह भक्त सही है।
रूप भगत्य सुनो चित लाइ र, नांव लये द्रिग धार बही है।
भक्तन प्रीति बिचार लवै हरि झूठि उठांवन कृष्ण कही है।
लै गुर की गुरताइ दिखावत श्री पयहारि निहारि मही है ॥९

---

१ पावकस्य पुत्रा। २ साहि न।

मूल मगलाचरण-वर्णन

दोहा छद

नमो परम गुर सुद्ध कर, तिमर अग्यांन मिटाइ।
आदि अजन्मा पुरुष कौं, किंहि विधि नर दरसाइ ॥१
नरपद सुरपद इंद्रपद, पुनि हि मोक्षपद मूर।
सदगुर सो द्रिव द्रिष्टि द्यौ, अन्तर भासै नूर ॥२
(अब) कहत परमगुरु प्रप्रण[1] ह्वै, दयौ परमधन दाखि।
भक्त भक्ति भगवत गुर, राघव अै उर राखि ॥३
प्रथम प्रणम्य गुर-पादुका, सब सतन सिर नाइ।
इष्ट अटल परमातमां, परमेसुर कृत गाइ ॥४
विष्णु बिरचि सिव सेस जपि, जती सती सिद्धिसैण।
बाणी गणपति कविन कौं, चवै चतुर विग-बैण ॥५
अब अरज भक्त भगवत सौं, गरज करौ गम होइ।
हरि गुर हरि के आदि भृति, जन राघव सुमरै सोइ ॥६
व्यापिक ब्रह्मण्ड पच्चीस मधि, सुरग मृति पाताल।
भक्तन हित प्रभु प्रगट ह्वै, राघव राम दयाल ॥७
सत त्रेता द्वापर कलू, ये अनादि जुग च्यारि।
राघव जे रत रांम सू, सत महत उर धारि ॥८
भक्त भक्ति भगवत गुर, अै मम मस्तक मौर।
राघव इनमौं विमुख ह्वै, तिनकू कतहु न ठौर ॥९
भक्त भक्ति भगवत गुर, ये उर मधि उपवासि।
राघव रीझै रांमजी, जाहि बिघन-क्रम नासि ॥१०
भक्त बड़े भगवंत सम, हरि हरिजन नहीं भेद।
अरस परस जन जगत गुर, राघव बरणत बेद ॥११
हरि गुर आज्ञा पाइकै, उद्यम कीनौं ऐह।
जन राघौ रांमहि रुचै, सतन कौ जस प्रेह ॥१२
भक्तमाल भगवंत कौं, प्यारी लगे प्रतक्ष।
राघव सो रटि राति दिन, गुरन बताई लक्ष ॥१३

---

१. प्रसन्न।

समद समाइ न पेट में, को सिर धरे सुमेर।
ऐसो बकता कौन है प्रभुक्रम बरण सेर ॥१४

गुर दादू गुर परमगुर, सिष पोसा परबत।
आगे पीछे बरनते मति कोई दूषो संत ॥१५

हू कछू समझत हू नहीं, मधुप मिसरी की बात।
अमृतपिता सम जपत हूँ, हरि हरिजन गुर तात ॥१६

छपै छंद गुर उर मधि उपगार करत, कछू तथा न राखी।
अघ'सज्जन अब कृपा' सकल भिन भिन करि भाखी।
रती एक रस (मो) प्रापि, काच तें कंचन कीनौं।
जत सत ज्ञान बिबेक, धर्म धीरज व्रत दीन्हौं।
श्री गुर सुर तारण-तिरण, हरण बिघन त्रिय ताप दुख।
(अब) राघव के रछपाल तुम, बिकट बेर मधि बाप सुख ॥१

मीसाखी छपै दिनकर को जो दीवो जिती ले जोति दिखावै।
सिसि ज्यौं सीरक सींक भरे, सनमुख सिर नावै।
बाणी गणपति ज्यौं ज, गुणी हूँ' अक्षर चढावै।
भजन भक्ति जग जोग कृत सिव सेस मनावै।
भोज वृति सनकादिक, मुनि नारद ज्यूं गाव।
राघव रीति अड़ैम की बा पै बनि आवै ॥२

सागर महोदधि है भर्यौ अन पूजत बरषै।
बहु गंभीर गहरौ भर्यौ मह सुख अस मरषै।
रती एक निरखी कंचन को ले मेरहि परसै।
देखत निझर न ठाहरै, कछनमय बरसै।
जैसे सुरतर कौं मजा रचि पचि मरपै मेक भर।
त्य रघवा इत सुधिक है उत हरिजन त्रिय ताप हर ॥३

गुर गोबिंद प्रणाम करि तबहि गम तीनौं होइ है।
ब्यार्‌यौं जुग के संत मगन माला' ज्यौं पोइ है।
मग रूपी मित्र संत पोइ प्रगट करि बाणी।
नाम मगन गलतान हेरि हिरदा मधि आणी।

---

१ अघ। २ कृपा। ३ ई। ४ कहै। ५. माला।

मगल रूपी मांड महि, हरि हरिजन तारन तिरन।
भृत्य करत विरदावली, जन राघव भणि भव दुख हरन ॥४

नमो नमो कवि ईस, भये जेते सत त्रेता।
द्वापर कलिजुग आदि, तिरन तारन ततबेता।
नमो सुति समृति, नमौ सास्त्र पुरांनन।
नमो सकल वकताव, नमो जे सुनत सुकानन।
मै गम बिन ग्रंथ आरभियो, कविजन करिहैं हासि।
अव सिलहारे कौं को गिनै, जन राघव ताकै[१] रासि ॥५

ॐ चतुर निगम षट सास्त्रह,गीता अरु बिसिष्ट बोधय।
बालमीक कृत व्यास कृत, जपै जो करहि निरोधय।
प्रथम आदि नवनाथ, भणहु चतुरासी सिधय।
सहस अठ्यासी रिष, सुमरि पुनरपि कवि बिधिय।
सिध साधिक सुरनर असुर, अब मुनि सकल महत।
अव अब अरज अवधारिज्यौ, जन राघवदास कहत ॥६

मनहर छंद

अगीकार आप अविनासी जाकौं करत है,
सोई अति जान परवीन परसिधि है।
सोई अति चेतन चतुर चहुं चकॅ मधि,
बांणीं को बिनांणी बिस्तार जैसै दधि है।
जोई अति कोमल कुलोन है कृतज्ञ विज्ञ,
रिद्धि सिद्धि भगति मुगती जाकै मध्य है।
राघौ कहै रामजी के भाव सौं भगत भणि,
बात तेरी जैहै वणी बाणी तेरी बृधि है ॥७

मया दया करिहैं देवादिदेव दीनबंधु,
तब कछु ह्वै है बुधि बाणी की बिमलता।
जैसी शसि कातिग मे अवता अमि असंख,
निखरि कै होत नीकी नीर की नृमलता।
रजनी कौ तिमर तनक मधि दूरि होत,
दीसै वित वस्त भाव दीपक ह्वै जलता।

१ जिनकै।

समद समाइ न मेढ में, को सिर धर सुमेर।
ऐसो बकता कौन है, अनुक्रम बरण लेर ॥१४
गुर दादू गुर परमगुर, सिष पोता परजंत।
आगे पीछे बरनते, मति कोई दूषो संत ॥१५
हूं कछु समझत हूं नहीं महत मिसली की बात।
जगतपिता सम जपत हूं, हरि हरिजन गुरु तात ॥१६

छपै छंद
गुर उर मधि उपगार करत कछु तमा न राखी।
अष[1]लखन अघ कुना[2] सकल भिन भिन करि भाखी।
रती एक रज (भी) आनि काच ते कंचन कीनों।
ज्ञान ध्यान वैराग, धर्म धीरज व्रत दीन्हों।
श्री गुर धुर तारन तिरण, हरण बिघन त्रिय ताप दुख।
(अब) राघव के रछपाल तुम, त्रिकुटी पैर मधि आप सुख ॥१

गोसाई
छपै
विघकर को जो दीवो जिती ले जोति दिखावै।
सिसि कौं सीरक सींक भरे सनमुख सिर नावै।
बाणी गणपति कौं ज, गुणी ह्वै अक्षर घढावै।
भजन भक्ति जग जोग कृत सिव सेस मनावै।
भोज्ञ कृति सनकादिक मुनि नारद ज्यूं गावै।
राघव रीति बड़ेन की का पै बनि आवै ॥२
गगन महोदधि है भर्यो, घन घूमत बरषे।
बहु गंभीर गहरी भर्यो यह दुख जल अरषै।
रती यक किरची कंचन की, ले मेरहि परसे।
देखत मिश्र न ठाहरे कंचनमय दरसे।
जैसे सुरतर कौं पवन रवि पंथि परसै नैर नर।
यूं राघवा इत धूमिक है उत हरिजन त्रिय ताप हर ॥३
गुर गोविंद प्रणाम करि तबहि गम तीनों होइ है।
ल्यार्‍यो गुण के संत ममन भासा[3] ज्यों पोइ है।
नग रचो निज सत पोइ प्रगट करि डांणी।
गगन मगन गसतोन हेरि हिरदा मधि आंणी।

---
१ अष। २ कृपा। ३ ई। ४ नहै। ५. माला।

राघौ कहै सबद सपरस रूप गंध,
दूरि कीजं दीनबधु ये तौ दोष मेरौ है ॥१२
नमो बिधि बिबधि प्रकार के रचनहार,
आदि ततवेता तुम तात त्रिहूँ लोक के।
जप गुर तप गुर जोग जज्ञ व्रत गुर,
आगम निगम पति जाण सब थोक के।
नर पुजि सुर पुजि नागहूँ असुर पुजि,
परम पवित्र परिह्वारि सर्व सोक के।
ऊपजे कवल मधि नाभि करतार की सूं,
राघो कहै मांनियो महोला मम थोक के ॥१३
अरक अहार सिणगार भसमी को भर,
असो हर निडर निसंक भोला चक्कवै।
पूरक पवन प्राण-वायु को निरोध करै,
जपति अजपा हरि रहे थिर थक्कवै।
गौरी अरधंग सग कीयो है अनंग भंग,
कालहू सूं जीत्यो जंग पूरा जोगी पक्कवै।
राघौ कहे जगै न[1] जगतपति सेती ध्यांन,
अडिग अडोल अति लागी पूरी जक्कवै ॥१४
आदि अनभूत तू अलेख हैं अद्वीत गुन,
नमो निराकार करतार भनै सेस है।
हारे न हजार मुख रांम कहै राति दिन,
धारैं धर सीस जगदीशजी के पेस है।
दुगण हजार हरि नांव निति नवतम,
रटत अखड व्रत भगत नरेस है।
राघो कहै फनिपति असौ अन्य न अति,
केवल भजन बिन आंनन प्रवेश है ॥१५

छपै छंद चतुरवीस अवतार जो, जन राघो कै उर बसौ ॥टे०
कछ मछ बाराह, नमो नरस्यंघ बांवन वलि।
रघुबर फरसाधरन, सुजस पिवत्र[2] कृष्ण कलि।

---

१ छुट नहीं। २ पित्र।

राघो कहै जाकी वाणी सुणि गुणि होत सुधि,
नीति के बिचारे बिन धर्म नाहीं पसता ॥८

कुंडलीया छंद
मया क्षमा करि मान है, अंतरजामी आप।
सोई कवि कोविद सिरै, जपै अजपाजाप।
जपै अजपाजाप, पाप त्रिय-ताप न व्यापै।
आसा बीत अतीत, भजन सूं कबहु न धापै।
बिपति छीन बिस्रांम सु अब मल-सल पुनि होई।
जन राघौ रटि सोई रांम जन, यौं भक्तमाल उर पोई ॥९

अब राघव नमो निरंजन, मेटहु अंग अंधेर कौं।
नमो बिष्णु-बिधि सिवहि, सेस सनकादिक नारद।
नमो पारषद भक्त, नमो गणपति गुण सारद।
स्वांमु मनु कासिब, बल कबीरहि अम्बर।
ऋषम अपरबा धर्म, करन सो क्रम निकंदन।
नमो सुराधिपति सूर ससि, नमो सुबरण कुबेर कौं।
अब राघव नमो निरंजन मेटहु अग अंधेर कौं ॥१०

मनहर छंद
नमो नमो नमो निराकार करतार कपि
बिष्णु बिरंचि सिव सेस सीस नाई हूं।
द्वादस भक्त नमो दस षट पारषद
नमो नव नाथ जु चौरासी सिध भाइ हूं।
देव सर्व रिष सर्व निरखी महात्म अब
सती पट सती सत बीस हूं नमाई हूं।
तत्व कौन बीस बयसोक मध्य जे प्रसिधि
रघबा रटत अलस कब पाई हूं ॥११
नमो बिस्वमरन बिसंभर बिधस्ता दाता,
बिष्णु जु बैकुण्ठनाथ मेरौ बल तेरौ है।
लक्ष्मी चरणसेव बाहण गरुड़देव
आयुध चकर कर तीनों लोक डेरौ है।
द्वादस भक्त संग दस षट पारषद
भगतबछल भूप नीर परे नेरौ है।

राघौ कहै सबद सपरस रूप गंध,
दूरि कीजे दीनबंधु ये तौ दोष मेरौ है ॥१२
नमो विधि बिबधि प्रकार के रचनहार,
आदि ततवेता तुम तात त्रिहूं लोक के।
जप गुर तप गुर जोग जज्ञ व्रत गुर,
आगम निगम पति जाण सब थोक के।
नर पुजि सुर पुजि नागहूं असुर पुजि,
परम पवित्र परिहारि सर्व सोक के।
ऊपजे कवल मधि नाभि करतार की सूं,
राघो कहै मांनियो महोला मम थोक के ॥१३
अरक अहार सिणगार भसमी को भर,
असो हर निडर निसंक भोला चक्कवै।
पूरक पवन प्राण-वायु को निरोध करै,
जपति अजपा हरि रहे थिर थक्कवै।
गौरी अरधंग सग कीयो है अनग भग,
कालहू सूं जीत्यो जंग पूरा जोगी पक्कवै।
राघौ कहे जगै न[1] जगतपति सेती ध्यांन,
अडिग अडोल अति लागी पूरी जक्कवै ॥१४
आदि अनभूत तू अलेख हैं अद्वीत गुन,
नमो निराकार करतार भनै सेस है।
हारे न हजार मुख रांम कहै राति दिन,
धारैं धर सीस जगदीशजी के पेस है।
द्रुगण हजार हरि नांव निति नवतम,
रटत अखंड व्रत भगत नरेस है।
राघो कहै फनिपति असौ अन्य न अति,
केवल भजन बिन आंनन प्रवेश है ॥१५

छपै छद चतुरबीस अवतार जो, जन राघो कै उर बसौ ॥टे०
कछ मछ वाराह, नमो नरस्यंघ बांवन वलि।
रघुवर फरसाधरन, सुजस पिवत्र[2] कृष्ण कलि।

---

१ छुट नहीं। २. पित्र।

ब्यास कलंकी बुद्ध मनुंतर, पृथु हरि हंसा।
हयग्रीव जग रिषभ धमुन्तर, ध्रुव वरबंसा।
दत्त कपिल सनकादि मुनि, नर नारांइन सुमरि सो।
चतुरवीस अवतार जो, जन राघो कै उर बसौ॥१६

टीका

इंदव कूरम ह्वै गिर मन्दर धारि मथ्यौ सब देव दयन्त समुद्रा।
छंद मीन भये सतिवर्त सु अंजलि मैं परलै दिपराइहु क्षुद्रा।
सूकर काढि[1] मही जल मांहि र मारि हिरनाक्षस थापि र दुद्रा।
सिष सरूप प्रसाद उधारन ह्वैत हिरण्यांकुस कारन उग्रा॥१०
बावन रूप छले बलिराजन इन्द्रहि राज दियो इकतारा।
मात पिता दुखदाइक जो परसराम खित्री न रख्यौ जग सारा।
रांम भये दसरत्थ तणै घर रांवन कुंभकरन्न विडारा।
कृष्ण जरासुर कंस हने मुरि साल्वहि मारि भगत्त उधारा॥११
बुद्ध छुड़ाइ जज्ञादिक जीवन जैन दया ध्रम को बिसतारा।
रूप कलंकि जबै धरिहैं हरि भूप करैं अपराध अपारा।
ब्यास पुरांनन बेद सुधारन भारत भाखि बिवांत उधारा।
दोहि धरा अन्न बांटि दई रिषि गांव पुरादिक प्रिथु सुधारा॥१२
ग्राह गह्यौ गज कू जल भीतरि राम कह्यौ हरि बेग उधारयौ।
हंस सरूप धरयौ अज कारनि प्रश्न करी सुत हंन विचारयौ।
रूप मनुंतर धारि धमहरु इन्द्र सुरेसहु कारिज सारयौ।
जज्ञ भये मनु रावन मंजुल आदि र अंति जगे विस्तारयौ॥१३
ब्रह्महि मांग दिखांइ सबै जग देव रिषम्भ सरीर धरायो।
बेद हरे मधुकैटक दांनव ह्वै हयग्रीव हन्यौ श्रुति ल्यायो।
बालक बारस भक्ति करी अति धू वर दे हरि राज करायो।
रोग र भोग भरयौ दुख सूं जग होइ धनुंतर बैद स आयो॥१४
आतमग्यांन उदित्त कियो जिन सो दत्रिआत्र या जग[2] के स्वांमी।
ग्यान कह्यौ गुर को जदुराजहि आनंद मैं दत अंतरजांमी।

---
१ काढि। २ या चार्वक।

मात मुक्कति करी उपदेसि र, साखि सुनाइ कपिल्ल सो नामी।
च्यारि सरूप धरे सनकादिक, ऐक दिसा इकही लछि प्रामी ॥१५
जो अवतार सबै सुखदाइक, जीव उधारन कौं क्रम कीला।
तास सरूप लगै मन आपन, जासहि पाइ परै मति ढीला।
ध्यान करे सव प्रापति है निति, रकन ज्यौ वित ल्यावन हीला।
च्यारि रु वीस करौ वकसीस, सुदेवन ईस कही यह लीला ॥१६

मूल छपै

अवतारन के अंघ्रि द्वै, इते चहन नित प्रति बसै॥ टे०
ध्वजा सख षटकौंण, जबु फल चक्र पदम जव।
वज्र अम्बर अकुश, धेन पद धनुष सुबासव।
सुधा-कुम्भ सुस्त्यक, मंछ बिंदु तृय कौंण।
अरध-चन्द्र अठ-कौंण, पुरष उरध-रेखा होंणं।
राघव साध सधारणा, चरनन मैं अतिसै लसै।
अवतारन के अंघ्रि द्वै, इते[1] चिहनि निति प्रति बसै ॥१७

टीका

इंदव छंद
साध सहाइन कारन पाइन, राम चिहन्न सदाहि बसाये।
मन मतग स हाथि न आवत, अकुस यौ उर ध्यान कराये।
सीत सतावत है जडना नर, अम्बर ध्यान धरे मिटि जाये।
फोरन पाप पहारन बज्रहि, भक्ति समुद्र कवल्ल बुडाये ॥१८
जौ जग मैं जन देत बहौ गुन, जो चित सौ निति प्रीति लगावै।
होत सभीत कुचाल कलू करि, ध्यान धुजा निरभै पद पावै।
गो-पद ह्वै भव-सागर नागर, नैन लगे हरि त्रास मिटावै।
माइक जाल कुचाल अकालन, सख सहाइ करै मन लावै ॥१९
काम निसाचर मारन चक्रहि, स्वस्त्यिक मगलचार निमत्ता।
च्यारि फलै करि है निति प्रापति, जबु फलै धरि है सुभ चित्ता।
कुम्भ सुधा हरिभक्ति भरयौ रस, पान करै पुट नैननि नित्ता[2]।
भक्ति वढावन ताप घटावन, चन्द्र धरयौ अछ जानि सु वित्ता ॥२०

---

१. हवं। २ निमित्ता।

ब्यास कलंकी बुद्ध मनुंतर, पृथु हरि हंसा।
हयग्रीव अज रिषभ धनुंतर, ध्रू व बरहंसा।
दत्त कपिल सनकादि मुनि, नर नारांइन सुमरि सो।
चतुरबीस अवतार जो, जन राघो के उर बसो॥१६

टीका

इंदव　कूरम ह्वं गिर मन्दर धारि मथ्यौ सब देव दयन्त समुद्रा।
छंद　मीन भये सतिवर्त सु अंजलि में परम दियराइहु क्षुद्रा।
सूकर काढि[1] मही जल मांहि र मारि हिनाक्षस पापि र कुद्रा।
सिंघ सरूप प्रलाद उधारन हेत हिरणांकुस फारन उद्रा॥१०
बावन रूप छले बलिराजन इन्द्रहि राज दियो इकतारा।
मात पिता दुखदाइक जो प्रसरांम खित्री न रख्यौ जग सारा।
रांम भये दसरत्थ धरैं वर रांवन कुंभकरन्न बिडारा।
कृष्ण जरासुत कंस हने मुरि साल्वहि मारि भगत्त उधारा॥११
बुद्ध छुडाइ अजादिक जीवन जैन दया ध्रम की बिसतारा।
रूप कलंकि जबै धरिहैं हरि भूप करें अपराध अपारा।
ब्यास पुरांनन बेद सुधारन भारत आदि बिधांत उचारा।
दोहि धरा अन्न बांटि दई रिषि गांव पुरादिक प्रिथु सुधारा॥१२
ग्राह गह्यौ गज कूं जल भींतरि रांम कह्यौ हरि बेग उधारयौ।
हंस सरूप धरयौ अज कारनि प्रश्न करी सुत हेत बिचारयौ।
रूप मनुंतर धारि जबइह इंद्र सुरेसहु कारिज सारयौ।
जज्ञ भये मनु राजन अंजुल आदि र भक्ति जगें बिस्तारयौ॥१३
ब्रह्महि ग्यांन बिलोइ सबै जग देख रिषभ्भ सरीर धरायो।
बेद हरे मधुकैटक दानव सों हयग्रीव हन्यौ श्रुति ल्यायो।
बालक बारन भक्ति करी अति ध्रू वर दे हरि राज करायो।
रोग र भोग भरयौ दुख सूं जग होइ धनुंतर बैद स आयो॥१४
आतमग्यांन उदित्त कियो जिन सो दत्तिभाष या कल[2] के स्वांमी।
ग्यान कह्यौ गुर को अनुरागहि आनंद में दत अंतरजामी।

---
१ काढि। २ दा पाखंड।

मात मुक्ति करी उपदेसि र, साखि सुनाइ कपिल्ल सो नामी।
च्यारि सरूप धरे सनकादिक, ऐक दिसा इकही लछि प्रामी ॥१५
जो अवतार सबै सुखदाइक, जीव उधारन कौ क्रम कीला।
तास सरूप लगै मन आपन, जासहि पाइ परै मति ढीला।
ध्यान करे सव प्रापति है निति, रकन ज्यौं वित ल्यावन हीला।
च्यारि रु बीस करौ बकसीस, सुदेवन ईस कही यह लीला ॥१६

मूल छपै

अवतारन के अघ्रि द्वै, इते चहन नित प्रति बसै ॥ टे०
ध्वजा सख षटकौंण, जबु फल चक्र पदम जव।
वज्र अम्बर अकुश, धेन पद धनुष सुबासव।
सुधा-कुम्भ सुस्त्यक, मंछ बिंदु तृय कौंण।
अरध-चन्द्र अठ-कौंण, पुरष उरध-रेखा ह्रोणां।
राघव साध सधारणा, चरनन मैं अतिसै लसै।
अवतारन के अघ्रि द्वै, इते[1] चिहंनि निति प्रति बसै ॥१७

टीका

इदव छंद साध सहाइन कारन पाइन, राम चिह्न सदाहि बसाये।
मन मतग स हाथि न आवत, अकुस यौं उर ध्यान कराये।
सीत सतावत है जडना नर, अम्बर ध्यान धरे मिटि जाये।
फोरन पाप पहारन वज्रहि, भक्ति समुद्र कवल्ल बुडाये ॥१८
जौ जग मैं जन देत वहौ गुन, जो चित सौं निति प्रीति लगावै।
होत सभीत कुचाल कलू करि, ध्यान ध्रुजा निरभै पद पावै।
गो-पद ह्वै भव-सागर नागर, नैन लगे हरि त्रास मिटावै।
माइक जाल कुचाल अकालन, सख सहाइ करै मन लावै ॥१९
काम निसाचर मारन चक्रहि, स्वस्तियक मगलचार निमत्ता।
च्यारि फलै करि है निति प्रापति, जवु फलै धरि है सुभ चित्ता।
कुम्भ सुधा हरिभक्ति भरयौ रस, पान करै पुट नैननि निम्ता[2]।
भक्ति वढावन ताप घटावन, चन्द्र धरयौ अछ जानि सु वित्ता ॥२०

---

१. हवं। २ निमित्ता।

व्यास कलंकी बुद्ध मनंतर, पृथु हरि हंसा।
हयग्रीव जग्य रिषभ धनुन्तर, ध्रुव बरवंसा।
दस कपिल सनकादि मुनि, नर नारांइन सुमरि सो।
चवुरबीस अवतार को, जन राघो के उर बसौ ॥१६

टीका

इंदव छंद
कूरम ह्वै गिर मन्दर धारि मथ्यौ सब देव दयन्त समुद्रा।
मीन भये सतिवर्त सु अंजलि भ परलै दिपराइहु क्षुद्रा।
सूकर कादि[1] मही जल मांहि रु मारि हिरनाक्षस धापि र दुद्रा।
सिघ सरूप प्रसाद उधारन ह्वैत हिरणाकुस फारन उद्रा ॥१०
बावन रूप छले बलिराजन इन्द्रहि राज दियो इकसारा।
मात पिता दुखदाइक जो प्रसरांम छिमी न रख्यौ जग सारा।
रांम भये दसरत्थ तणे बर रांवण कुंभकरण बिडारा।
कृष्ण जरासुध कंस हने मुरि, साल्वहि मारि भगत्त उधारा ॥११
बुद्ध भुराइ जग्यादिक जीवन जैन दया ध्रम को बिसतारा।
रूप कलंकि जबै धरिहै हरि भूप करैं अपराध अपारा।
व्यास पुरांनन बेद सुधारन भारत आदि बिदांत उधारा।
दोहि धरा भव भांति दई रिषि गांव पुराग्नि प्रिथु सुधारा ॥१२
ग्राह गह्यौ गज कू जल भीतरि रांम कह्यौ हरि बेग उधारयौ।
हंस सरूप भरयौ भज कारनि प्रष्ण करी सुत हेत बिचारयौ।
रूप मनुंतर धारि चवदह इंद्र सुरेसहु कारिज सारयौ।
जग्य भये मनु रावन मंजुल आदि र भक्ति जगैं बिस्तारयौ ॥१३
ब्रह्महि ग्यांन दिखाइ सबै जग बेद रिषम्भ सरीर धरायो।
बेद हरे मधुकैटभ दानव सों हयग्रीव हन्यौ स्रुति ल्यायो।
बालक मारन भक्ति करी अति ध्रू बर दे हरि राज करायो।
रोग र भोग भरयौ दुख सूं जग होइ धनुंतर बैद स आयो ॥१४
आतमग्यांन उचित्त कियो जिन सो कपिलाय या संड[2] के स्वांमी।
ग्यान कह्यौ गुर को जदुराजहि आनंद मे दत अंतरजांमी।

१ कादि। २ या षण्ड।

राघौ धनि ध्रू से देखो अटल अकास तपे,
नारद निराट नग नाव देत चुनि कें ॥२०

आदि अंति मध्य बडे द्वाद भक्त रत तहां,
सत्य स्वांभू-मनु अखंड अजपा जपै।
जाके सुत उभये उद्यौत ससि सूर समि,
नाती ध्रूव अटल अकास अजहूँ तपै।
दिव्य तन, दिव्य मन, दिव्य दृष्टि, दिव्य पन,
अन्य भगत भ[ग]वतजी ही कौं थपै।
राघो पायो अजर अमर पद छाड़ी हद,
अरस परस अविनासी सग सो दिपै ॥२१

सनका सनदन सनातन सत कुमार,
करत तुम्हार त्रियलोक मधि ज्ञांन कौं।
बालक विराजमान सोभै सनकादिक अैसै,
प्रात मुख सेस कथा सुनत नित्यांन कौं।
मन वच क्रम मधि बासुर बसेख करि,
धारत विचार सार स्यंभूजी के ध्यांन कौं।
राघो सुनि साझ काल विष्णुजी के वैन बाल,
रहैं छक छहूं रुति श्रुति बृति पांन कौं ॥२२

नमो रिष क्रदम देहूति जननी कूं ढोक,
तारिक तृलोक जिन जायो है कपिल मुनि।
कांम जि क्रोध जित लोभ जि मोह जित,
तपोधन जोग बित माता उपदेसी उनि।
सील कौ कलपवृक्ष हरत विषै की तप,
ब्रह्म की मूरति आप अतरि अखंड धुनि।
राघो उनमत प्रमतत मिलि येक भये,
तावत उत्म कृत कीन्हे यौं मुनिंद्र पुनि ॥२३

भगतन हित भागवत बित कृत कीन्हौं,
व्यासजी बसेख खीर नीर निरवारयौ है।

सांप विषै बपु मांहि रहे बसि साध बसै न उपाद करे हैं।
मच्छ कौंण मिकौंण पुनें पट जीव जिवावन अन्न करे हैं।
मीन र विस्नु वसीकम यौ पद रांम धरे जन प्रांन हरे हैं।
सागर पार उतारन कौं जन ऊरध-रेख सु-सेत धरे हैं ॥२१
इन्द्र-धनुष धरयौ पद मैं हरि रावन आदिक मांन निवारयौ।
मांनुष रूप बसेष सुनौ पद सुन्दर स्यांम जु हेत विचारयौ।
जो मन सुद्ध करे सुभ क्रमन या जन क्यौं रखि हौ सु उचारयौ।
जो बुधिवंत सदा सुख सम्पति मैं गुन गाइ महै पन पारयौ ॥२२

मूल-छपै

कमला कपिल बिरंच, सेस सिव भव सुखकारी।
भरिए भीषम प्रहलाद, सुमरि सनकादिक ब्यारी।
ब्यास जनक नारद मुनी धरम परम निरने कीयो।
जग्यासेन कौं भारतैं, जमदूतन कौं दंड दीयो।
द्वादस भक्तन की कथा, श्री सुकमुनि प्रोखत सू कही।
जन राघो सुनि सखि बडी, नृप की बुधि निर्मल भई ॥१८

मनहर छंद

मीन बरा कमठ नृसिंघ बलि बांवन जू
छल करि आय देवकाज कौं सवारे हैं।
रांम रघुवीर कृष्ण बुध कलकी धीर ब्यास,
पृथु हरि हंस छीर नीर निरवारे हैं।
मनुंम जग्य रिषभ धनुंम हयग्रीव
श्रीपति दत्त बद्र गुर-कांमतें उबारे हैं।
ध्रुव बरदान सनकादि कपिल ग्यांन
जन राघो भगवांन भक्तकाज रखवारे हैं ॥१९
कैसे नर भारद मैं नांव सूं नमन कीये
घन-सुत तीन भये बीन सुर मुनि के।
नरपति उलटि पलटि देखौ नारि भयौ
तहां रिष श्राप भयो भूरि भागि[1] उनि कै।
असुर की मारि सुर साहि बदि तैं छुडाइ,
तहां महसादजी प्रगट भये मुनि कै।

---
[1] भागि।

राघौ धनि ध्रू से देखो अटल अकास तपे,
नारद निराट नग नांव देत चुनि कै ॥२०

आदि अति मध्य बड़े द्वाद भक्त रत तहां,
सत्य स्वांभू-मनु अखंड अजपा जपै।
जाके सुत उभये उद्यौत ससि सूर समि,
नानी ध्रूव अटल अकास अजहूं तपै।
दिव्य तन, दिव्य मन, दिव्य दृष्टि, दिव्य पन,
अन्य भगत भ[ग]वतजी ही कौं थपै।
राघो पायो अजर अमर पद छाडी हद,
अरस परस अबिनासी सग सो दिपै ॥२१

सनका सनदन सनातन संत कुमार,
करत तुम्हार त्रियलोक मधि ज्ञांन कौं।
बालक विराजमान सोभै सनकादिक अैसै,
प्रात मुख सेस कथा सुनत नित्यांन कौं।
मन बच क्रम मधि बासुर बसेख करि,
धारत बिचार सार स्यंभूजी के ध्यांन कौं।
राघो सुनि साझ काल बिष्णुजी के बैन बाल,
रहै छक छहू रति श्रुति बृति पांन कौं ॥२२

नमो रिष क्रदम देहूति जननी कूं ढोक,
तारिक तृलोक जिन जायो है कपिल मुनि।
कांम जि क्रोध जित लोभ जि मोह जित,
तपोधन जोग बित माता उपदेसी उनि।
सील को कलपवृक्ष हरत विषै की तप,
ब्रह्म की मूरति आप अतरि अखड धुनि।
राघो उनमत प्रमतत मिलि येक भये,
तावत उत्म कृत कीन्हे यौं मुनिंद्र पुनि ॥२३

भगतन हित भागवत वित कृत कीन्हौं,
व्यासजी बसेख खीर नीर निरवारयौ है।

व्यास प्रति सुक मुनि आदि अति पढि गुनी
प्रथम सुनाइ नृप प्रीक्षत उधारयो है।
सूत कौं सर्वंब धार बयो बर ताही बार,
श्रोता सौनकादि सो सबेब पम पारयौ है।
राघो कहै सार है संधार करै पापन कौ,
आपन कौं उत्यम सुमे ते फल प्यारयौं है ॥२४

गयन मगन महा गंगेव गगासौं भयो,
देखि सुत सातन प्रवीन परचारयो है।
धींवर की कन्या मांगि विरक्त प्रणायो जिन,
प्रथम प्रमार्यौं पिता के काज आयो है।
ब्याह तज्यो बल तज्यो, राज तज्यो, रोस तज्यो
धमि धमि जननी गंगेव जिनि जायो है।
राघो कहै सील को सुमेर है गगेव गुर,
काछ-बाछ नि:कलंक मोक्ष पद पायो है ॥२५

धनि धरमराइ कह्यौ आप भत मूरख सौं,
मारेमें कपूत मम कूल संधि तोरिकें।
मन बच क्रम कछु धर्म करि धीरज सू,
रांम रांम रांम गुन गाइ सुति जोरिकै।
काम क्रोध लोभ मोह मारिकें[२] मिसक होइ
साहिब सौं सांमकुम राखि चित्त चौरिके।
राघो कहै रवि-सुत मेटियो कर्म-कुत,
रांमजी मिसावो चरवाता बंदि छोरिकें ॥२६

तनके विर्मान तिहूं लोक के थाकामबीस
चित्रगुपतर नमो कायथी करतार के।
बीनती करत हूं विलग जिमि मांनो मेरो
छेक मो प्रथमक्रम आंक अहंकार के।
लिखियो भरज असतूति अति बार बार,
बाइक थमाई कही प्रभुजी सूं प्यार के।

---

१ उधारयौ है। २ मोरि कै।

राघो कहै अतिकाल कीजियो मदति हाल,
बाचियो अक्रूर अति उत्म लिलार के ॥२७
नमो लक्ष लक्षमी पलोटे प्रभुजी के पग,
राति दिन येक टग भक्तन को आदि है।
रहै डर सहत कहत नमो नमो देव,
अलख अभेव तब देत ताकौं दादि है।
जत बिन, सत बिन, दया बिन, दत्त बिन,
जीवन जनम जगदीस बिन बादि है।
राघो कहै रामजी के निकटि रहत निति,
आदि माया ऊँकार सहज समाधि है ॥२८

सिव जू की टीका

इंदव छंद द्वादस भक्त कथा सु पुरानन, है सुखदेन बिबिद्धिन गाये।
सकर बात घने नहि जानत, सो सुनि कै उर भाव समाये।
सीत बियोगि फिरै बन राम, सती सिव कौं इम बैन सुनाये।
ईसुर येह करौं इन पारिख, पालत अग वसेहि बनाये ॥२२
सीय सरूप बना इन फेरउ, राम निहारि नही मनि आई।
आइ कही सिव सू जिम की तिम, आच लगी खिजिकै समझाई।
रूप धरयौ मम स्वामिन कौ सठि, त्याग करयौ तन सोच न माई।
भाव भरे सिव ग्रथ धरे जन, बात सु प्यारनि रीझि क गाई ॥२३
जात चले मग देखि उभै धर, सीस नवावत भक्ति पियारी।
पूछत गोरि प्रनाम कियो किस, दीसत कोउ न येह उचारी।
बीति हजार गये ब्रखहु दस, भक्त भयो इक होत तयारी[1]।
भाव भयौ परभाव सुन्यौ जन, पारबती लगि यो रग भारी ॥२४

अजामेल की टीका

मात पिता सुत नाम धर्यौं, अजामेल स साच भयो तजि नारी।
पान करै मद दूरि भई सुधि, गारि दयो तन वाहि निहारी।
हासिन मै पठये जन दुष्टन, आइ रहे सुभ पौरि सवारी।
संत रिझाइ लये करि सेवन, नाम नराइन बालक पारी ॥२५

---

१ बयारी = रखि पण मैं मठी मैं अस्त्री राखो। पीछै ब्राह्मण भयो। वन मैं गयो। फूला मैं वेस्यां मेली।

आइ गयो जब काल महाबस मोह अजामल परयो भ्रम आये।
नांम नरांइन पुत्र लयो उरि मारतिवत स बैन सुनाये।
देव सुन्यौ सुर दौरि परे जमदूतन कू हरि धर्म बताये।
हारि गये तब ताड़ि दये भ्रम मैं भट आपन हू समझाये ।।२६

मूल छप्पै

राघो रांम मिलावही अंतिकालि परमारथी ॥
नन्द सुनन्द सुप्रबल बल, कुमुद कुमुदाइक भारी।
चन्ड प्रचंड जै बिजै, बिराजें भले सु द्वारी।
बिष्वकसेन सुसेन, सील सुसील सुनीता।
भद्र सुभद्र गुरणन, गाइये प्रम[1] पुनीता।
ऐते षोड़स पारषद, भक्त भजन के सारथी।
राघव रांम मिलावही, अंतकालि परमारथी ॥२६

टीका

इंदव छन्द
सोरह पारषदे मुखि जानहु सेवक भाव सु ये रिधि जोरी।
श्रीपति कूं करि है निति प्रीतम ध्यांन धरै मन पारत[2] कोरी।
आप दिवाइ बनाइ कही हरि आइस पांन धमी जिम धोरी।
दोष सुभाव गह्यौ उर अन्तर, रीति भली सुधरी कुध मोरी ।।२७

मूल छपै

बिष्णु बल्लभ की चरण रज निस दिन प्रारथना करूं ॥
लक्ष्मी बिहंग सुनन्द आदि षोडष बषि हरि पद।
सुग्रीव हनुमांन जांबवत बिभीषन स्यौरी जस।
सुदांमा बिदुर अक्रूर[3], ध्रूव अंबरीष सु रुषमो।
चित्रकेत चन्द्रहास यह भक्त कीयो सुषी।
द्रुपद-सुता कौं आर दै राघव सब कौ उर धरूं।
बिष्णु वल्लभ की चरण रज निस दिन प्रारथना करूं ॥३०

टीका-हनुमान जू को

इंदव छंद
सागर धार उधार कियै नग माल बिभीषन भेट करी है।
सो बह मे करि ईस निसाचर, आइ सियावर पाइ[4] धरी है।

---
१ प्रेम। २ पालत। ३ अक्रूर। ४ पाय।

चाहि सभा मनि देखि हनूं गरि, डारि दई चित चौकि परी है।
राम बिना मनि फोरि दिखावत, काटि तुचा यह नाम हरी है ॥२८

बिभीषन जू की टीका

इंदव छंद

भक्ति बिभीषन कौंन कहै जन, जाइ कहीस सुनौ चित लाई।
चालत ज्याभि अटक्कि परी, बिचि मानुष येक दयोल वहाई।
जाइ लग्यौ तटि राक्षस गोदन, ले करि दौरि गये जित राई।
देखि र कूदि परयौ सु ठरयौ जल, आजहि राम मिले मनु भाई ॥२९
ता छिन रीझि दई बहु दैतन, आसन पै पधराइ निहारै।
आनन अबुज चाहि प्रफुल्लत, आप खडौ[1] कर दड सहारै।
होत प्रसन्न न माहि डरै अति, धाम रहौ मम राइ उचारै।
पार करौ सुख सार यही बड, दे रतनादिक सिंघ उतारै ॥३०
नाम लिख्यौ सिर राम सिरोमनि, पार करै सति-भाव उचारै[2]।
ठौर वही नर रूप भयो फिर, ज्याज हु आइ गई सु किनारै।
जानि लयो वह पूछत है सब, बात कही यन लेहु बिचारै।
कूदि परयौ जल देखि कुबुद्धिन, जाइ चल्यौ हरि नाम उधारै ॥३१

सवरी जू की टीका

आरनि मैं सवरी भजि है हरि, सतन सेव करयौ निति चावै।
जानि तिया तन नूंन किया कुल, या हित तें किन हू न लखावै।
रैनि रहै तुछ माग वुहारत, आश्रम मैं लकरी धरि जावै।
गोपि रहै रिष जानत नाहि न, प्रात उठै सब आश्चर्ज पावै ॥३२
मातग ईंधन बोझ निहारत, चोर यहा जन कौंन सु आयो।
चोरत है निति दीसत नाहि न, येक दिना पकरौ मन भायौ।
चौकस रैनि करी सब सिष्यन, आवत ही पकरी सिर नायौ।
देखत ही द्रिग नीर चल्यौ रिष, बैनन सूं कछु जात कहायो ॥३३
नैन मिले न गिनै तन छोत न, सोच न सोत परी न निकारै।
भक्ति प्रभाव भलै रिष जानत, कोटिक ब्राह्मन या परिवारै।
राखि लई रिष आश्रम मैं उन, क्रोध भरे सब पाति निवारै।
आवत राम करौ तुम द्रसन-मैं प्रलोकउ जात सवारै ॥३४

---

१. पड़ौ। २. उवारं।

आइ गयो अब काल महाबल, मोह अजाल परयो भ्रम भाये।
नाम नरायन पुत्र भयो उरि, पारतिषद स बैन सुनाये।
देव सुन्यो सुर दौरि परे जमदूतन कूं हरि धर्म्म बताये।
हारि गये तब छाड़ि दये भ्रम नै भट आपन हूं समझाये ॥२६

मूल-छप

राघो रांम मिलावहि, अंतिकालि परमारथी ॥
नन्द सुनन्द सुभद्र जय, कुमुद कुमुदाइक भारो।
चंड प्रचंड ध बिजै, बिराज भल सु द्वारो।
विष्वकसेन सुसेन, सील सुसील सुमीता।
भद्र सुभद्र गुणाल, गाइये प्रम[1] पुनीता।
ऐते षोड़स पारषद भक्त भजन के सारथी।
राघव रांम मिलावही अंतकालि परमारथी ॥२९

टीका

इंदव छन्द सोरह पारषदै मुक्ति जानहु सेवक भाव सु ये रिधि थोरी।
श्रीपति कूं करि है निति प्रीतन ध्यान धरै जन पारत[2] कोरी।
आप दिवाइ बनाइ कही हरि आइस पांन भ्रमी जिम भोरी।
दोष सुभाव गह्यो उर अन्तर गीति भली सुधरी बुध बोरी ॥२७

मूल-छपै

विष्णु बल्लभ की चरण रज मिल बिन प्रारब्ध कक ॥
लक्ष्मी बिहंग सुनन्द आदि षोडष बधि हरि पग।
सुग्रीव हनुमान जामवंत बिभीषन स्यौरी जग।
सुदांमा बिद्र आक्रूर[3], ध्रू ब अंबरीष सु ऊधो।
बिजकेत बाह्रास यह गज कीयो सूधो।
द्रुपद-सुता करि कार है, राघव सब की उर मक।
विष्णु बल्लभ की चरण रज मिल बिन प्रारब्ध कक ॥३०

टीका-हनुमान प्र को

इंदव छंद सागर सार उधार किये नग माल बिभीषन भेट करी है।
सो बह मे करि ईस मिलाधर, आइ सियावर पाइ[4] धरी है।

१ प्रेम। २ पालत। ३ अक्रूर। ४ पाप।

कोप्यौ मुनि काल-रूप वरत न छाडै भूप,
कष्ट सह्यौ तन निज धारचौ ध्रम ईष कौ।
जन परि कोपत[भु]जुलाह ल चिराक्यौ चक्र,
आनि कै परचौ है बक्र आगि उद भीष कौ।
राघो दुरबासा दुख पायो अति क्रोध करि,
फेरचो तिहू लोक हरि मांन मारचौ तीष कौ ॥३९

टीका

इंदव छंद
कौंन करै अमरीष बरोवरि, भक्त इसौ उर और न आसा।
सतन पै कछु सीख सुनी नहि, खैचि चलात जटा दुरबासा।
काल-सरूप उपाइ लई, पठई जन पैं वह वीर हुलासा।
चक्र रिषाइ र राख करि रिष, भीर परी डरिकैं अब न्हासा ॥४१
जावत लोकन लोकन मैं मम, जारत चक्र सहाइ करौ जू।
सकर वै अज इंद्र कहै यम, बानि बुरी उर बेद धरौ जू।
जाइ परचौ परमेसुर पाई, कहै अकुलाइ सु ताप हरौ जू।
भक्त अधीन मनू गुन तीनन, भक्त-बछल्ल विडद्द खरौ जू ॥४२
सतन कौ अपराध करौ तुम, जात मह्यौ किम भौ अति प्यारे।
बाम धनादिक त्याग करै सुत, मोहि भजै दिन राति बिचारे।
साच कहौं उन साधु बिना रिष, औरन सौ दुख जाइ न टारे।
वेगहि जा अमरीष कनै मम, भक्त दयाल करै जु सुखारे ॥४३
होइ निरास चल्यो नृप पास, उदास भयौ पग जाइ गहे हैं।
भूप लजात करै सनमानहु, चक्र[1] दिसा ढरि बैन कहे हैं।
भक्त न चाहत और पदारथ, ब्राह्मन राखहु कष्ट सहे हैं।
व्याकुल देखि सहाइक सतन, आड गई मनि तेज रहे है ॥४४
भूप-सुता अमरीष सुने जन, चाव भयो उनही वर कीजै।
मात पिता न कही दिल लासिक, पत्ति कीया उर को लिखी दीजै।
कागद ब्राह्मन दै पठ्यो कर, लै नृप बाचिति याहि न धीजै।
जाइ कहे उन जोइ घनी वत, वोल सुहाइन भक्ति भनीजै ॥४५

---

१. चत्र।

दीरघ भाग वियोग भयौ गुर, रांम मिलाप सरीरहि रासै।
घाट बुहारत न्हांवन कौ निति¹ बेर लगी रिप आवत पासै।
लागि गयौ तन क्रोध करयौ बहु न्हांन गयो सिवरी पग नासै।
रक्त भयो जल मांहि लटै लट गौतम सोच भयौ यह भासै ॥३५

ल्यावन बेर बसेर लगी हरि चाखि धर फल रांमहि मीठे।
मारग नैंन बिछाइ रहे रघुराई चले कब आइसि ईठे।
देखत भाग भये दिन बीसत दूरि गये दुख आवत दीठे।
नून सरीरहि जांनि छिपि किहि बूझत आपन त्यौंरि कहैं ठे ॥३६

बूझत बूझत आइ रहे जित रांम सनेह भरे तित त्यौंरी।
आश्रम मैं तब जांनि भये हरि, भग नभावत लावत त्यौंरी।
आप उठाइ मिले भरि अकन नैंन ढरै जल प्रेम पग्यौ री।
बेरन खाइ सराहत भोजन भौर कहू न सवादि लग्यौ री ॥३७

सोच करै रिप आश्रम मैं सब नीर बिगार सह्यौ नहि जावै।
आवत रांम सुने बन मारग जाइ वसैं उन भेद सुनावैं।
आज बिराज रहे सिवरी-गृह मांन मरयौ सुमिरैं दुख पावैं।
आइ परे पग तोइ करौ सुध, पाव गह्यौ भिलनी सुष मावैं ॥३८

जटायु की टीका

रांवन सीतहि जात हरैं खग रांम सुन्यौ सुर वीरत आयौ।
राडि करी तन मारि हरी परी प्रांन रखें प्रभु देखन आयो।
आइ र गोद भयो प्रिम नीरज सींचत बात कही रघुरायो।
मांन करयौ दसरत्थ समां जल-दांन दयो पुनि धांम पठायो ॥[३]९

भौर की गाय भरें महिमा जु भरै हरि छांह करै मुख धोइ निहारैं।
पूछत पत्त न लत्त न है सत वा इक भुंगम चौंच सुधारैं।
मोचत आंसुन सोचत रांम सह्यौ दुख मो-हित भीच बिचारैं।
आपन हाथन भोरपुलांप जटायु की धूरि जटांन सु झारैं ॥४

मूल

छप्पो जु करै ऐसें जगदीस जन कारनै धरायौ मुनि
मनहर		ईच्छ सहायौ पनि आप अंबरीष कौ।

---

१ निति।

कोप्यौ मुनि काल-रूप बरत न छाडे भूप,
कष्ट सह्यौ तन निज धारचौ ध्रम ईष कौ।
जन परि कोपत[भु]जुलाह ल चिराक्यौ चक्र,
आनि कै परचौ है बक्र आगि उद भीष कौ।
राघो दुरबासा दुख पायो अति क्रोध करि,
फेरचो तिहू लोक हरि मांन मारचौ तीष कौ ॥३६

टीका

इंदव छंद
कौन करै अमरीष बरोबरि, भक्त इसौ उर और न आसा।
संतन पै कछु सीख सुनी नहि, खेंचि चलात जटा दुरबासा।
काल-सरूप उपाइ लई, पठई जन पै वह धीर हुलासा।
चक्र रिषाइ र राख करि रिष, भीर परी डरिकै अब न्हासा ॥४१
जावत लोकन लोकन मैं मम, जारत चक्र सहाइ करौ जू।
संकर वै अज इंद्र कहै यम, बानि बुरी उर बेद धरौ जू।
जाइ परचौ परमेसुर पाई, कहै अकुलाइ सु ताप हरौ जू।
भक्त अधीन मनूं गुन तीनन, भक्त-बछल्ल बिड्द खरौ जू ॥४२
संतन कौ अपराध करौ तुम, जात सह्यौ किम भौ अति प्यारे।
बाम धनादिक त्याग करै सुत, मोहि भजै दिन राति बिचारे।
साच कहौ उन साधु बिना रिष, औरन सौं दुख जाइ न टारे।
बेगहि जा अमरीष कनै मम, भक्त दयाल करै जु सुखारे ॥४३
होइ निरास चल्यो नृप पास, उदास भयौ पग जाइ गहे हैं।
भूप लजात करै सनमानहु, चक्र[1] दिसा ढरि बैन कहे हैं।
भक्त न चाहत और पदारथ, ब्राह्मन राखहु कष्ट सहे हैं।
व्याकुल देखि सहाइक संतन, आइ गई मनि तेज रहे हैं ॥४४
भूप-सुता अमरीष सुने जन, चाव भयो उनही बर कीजै।
मात पिता न कही दिल लासिक, पत्ति कीया उर को लिखी दीजै।
कागद ब्राह्मन दै पढ्यो कर, लै नृप बार्चिति याहि न धीजै।
जाइ कहै उन जोइ घनी वत, बोल सुहाइन भक्ति भनीजै ॥४५

---
१ चत्र।

भूप सुताहि कहै सुन नाटस पौन समान गयो घर आयो।
फेरि पठावत आनत पैलहि, भक्त बड़ौ बिपिया न सुभायो।
आइ कही मन भक्ति रिझावत मानि भयो पथि और न भायो।
मोहि न आवरि है मन बाधक प्रान तजौं कहि मैं समझायो ॥४६

ब्राह्मन आइ कही मुनि ब्याकुल, लग्न धयो नृप फेर फिरायो।
ब्याह भयो न उछाह समावत, देखि छिपी अमरीक सुभायो।
मौतम मंदिर जाइ उसारहु याहि जिको यह हीन बड़ायो।
पूरब भक्ति हुती हमरे तुछ, या करि भाव अध्यौ र मिलायो ॥४७

सेस निसापति मंदिर मैं मुकि मावत पातर देत बुहारी।
लेपन धोवन दीपक जोवन प्रेम सनेह लग्यौ अति भारी।
भूपति देखि निमेख न लागत कौन भुराबत सेव हमारी।
तीन दिना मधि आनि कही उन जो मनि मूरति त्यौ सिर भारी ॥४८

मानि लई मनु भग दयो यह भोर भये सिर सेवत त्याई।
बस्तर औ पहराइ अभूषन, देखि रहै द्रिग नीर बहाई।
राग र भोग करै अतिभावन भक्ति बधी पुर मैं सब छाई।
भूपति कानि परी चलि आवत देखन को बुधि हु अकुलाई ॥४९

पाव धरै हरवै हरवै कव देखत मैं उन भाग भरी कौं।
चालि गये अति ठीक नहा कछू, गाइ रही द्रिग भाइ झरी कौं।
बीन बजावत साम रिझावत त्यू अति-भावत धन्य घरी कौं।
दूरी रही नहिं जात गयो ढिग देखि उठी गुर राज हरी कौं ॥५०

बीन बजाइ र गाइ वही बिधि काम परै सुनि हूं मन राची।
भीजि रही सु कही नहि भावत चित्त चुभ्यौ मधुरै सुर बाची।
फेरि अलापि र तान उचारत ध्यान मई मति लै हरि साची।
भूपति प्रेम मगन्न रह्यौ मिलि भीर मई सब भौर कह्याची ॥५१

बात सुनी तिय औ र न ब्याकुल कौन समो उन भूपति मोह्यो।
आपन हु मिलि सब करै पति मति हरै बिरया तन खोयो।
भूप सुनी मन मांहि खुसी अति चोप लगी पुर चामनि जोयो।
पाव गई दिन-ही-दिन मौतम भाव तिया गुन यौं सुत होयो ॥५२

ध्रूवजी का मूल

ध्रू व की जननी धुव सूज कहै, सुत राम बिनां नर-नारि न वोपै।
रोज तजौ हरि नाम भजौ, खल की वृति त्यागि कहा अब कोपैं।
धुव के मन मैं बन की उपनी अब, ज्ञानी सोई जो अज्ञान कौ लोपै।
राघो मिले रिष नारद से गुर, बोल बढ्यो हरि आंवैगे तोपै ॥३२

सुदामाजी का मूल

मनहर छंद :

पतनी प्रमोधत है पति कौं बिपति मधि,
कत जिन लेहु अन्त कह्यौ मेरौ कीजिये।
आपां हैं नृबल निरधार निरधन अति,
झौंपरा पैं नाहीं फूसभ मनमै भीजिये।
कहत सुदांमां सुनि बावरी उधारै अग,
मो पै कछू नाहीं भेट कैसैक मिलीजये।
राघो रौरि चावल कवल-नैन काजै कन,
लूघरे की बांधी गाठि जाहु दिज दीजिये ।।३३

चले हैं सुदांमां दिज द्रुबल दुवारिका कौं,
जाके छुये बेर कोऊ खात नै खलक मैं।
आगै भेटे कृष्णजी कृपाल करुणा-निधान,
लेकै भरि मूठी आप आरोगे हलक मैं।
सदन सुदांमा कै जु अष्ट-सिधि नव-निधि,
इद्र हु कुबेर सम कीयो है पलक मैं।
राघो गयो उलटिउ सास लेत बारू-बार,
देखि दुख भूलो मणि-माया की झलक मैं ।।३४

सुदामाजी की टीका

इदव छद

आपन धाम कनक-मई लखि, मानत कृष्ण पुरी चलि आई।
नीकरि लैन गईं तिरिया तिहि, माहि चलौ तब मित्र वनाई।
ध्यान वहै हरि माधुरता तन, दे हरखै नव प्रीत बधाई।
चाह नही उर भोगन की वहै, चाल चलै तन कौं निरबाई ।।५३

बिदुरजी को टीका

न्हावत अग पखारि विदुर्तिय, कृष्ण जु आइर बोल सुनायो।
प्रेम भयो मद पीवत लाज न, दौरि वही बिधि द्वार चितायो।

नांखि दयो पट पीत लयो धरि आइ गयो मुखि वेस बनायो।
बैठि संवावत केरन छीलक आइ खिज्यो पति यों दुख पायो ॥५४
आप लग्यो फलसार खवावन चैन भयो तिय को समझाई।
कृष्ण कहै यह स्वाद लगे मम प्रेम मिल्यो वह ह्वौं सरसाई।
नारि कही अरि आहु महै कर छपींत खवाइ महा पछिताई।
हेत बखानि करयो उन दंपति जानत सा हरि भक्ति कराई ॥५५

चंदरहास को टीका

भूपति के सुत चंदरहास जु जोसि लियो पुर भौरस ल्याई।
पुष्टि बुधी धरि आप रहे सुत बालन मैं निति केलि कराई।
विप्रन को सम धाइ भयो जित जाइ कुमारन धूम मचाई।
जोसि उठे दिज ह्वूं कमर मर बालन यों सुनि लाज न माई ॥५६
सोच परयो अति येह बिचारत होइ इसो पति मोर सुता को।
प्रांन विना करिये उर मैं यह मीच बुलाइ लये सठ ताको।
मारनि चालि गये छवि देखि र क्यो निजरो हम सोचिहु ताको।
मारत हैं अब कौन सहाइक याहन मैं कर नेम जु ताको ॥५७
मांनि लई यक गोख कपोलन काटिर¹ सब करी अति नीकी।
होइ गयो हरि रुप ततपर जोरि भये कर बाहि कही की।
आइ दया मुखांइ परे मर, भक्ति भई क्रम दाट न पीकी।
काटि लई छटी अगुरी उन जाइ दई दुखदाइक जी की ॥५८
देस रहै मधु भूप सबै सुख पुत्र बिना दुख पावत भारी।
भारनि आइर देखत बालक छांह करै खग सी रखवारी।
दौरि उठाइ लयो सु गयो पुर, मांनत मोद घणी अधिकारी।
होत भये दिन जांनि लयो मन राज दयो हन भक्ति पियारी ॥५९
देसपती कछु भूप न पावत फौज दई र दिवांन पठायो।
आनि मिल्यो वह जानि लयो उन मारन कौं इक फंद उपायो।
कागद हाथि दयो सुत दीजिये बात करी वह मोहि पठायो।
चालि गयो पुर बाग बिराज र सेज बनी फिर सैन करायो ॥६०

---
१ काटिर।

साथि सहेलिन आवत बागहि, होइ जुदी छवि देखित रीझी।
कागद पाथ लयो झुकि वाचत, देन लिख्यौ बिप तातहि खीजी।
नाम हुतौ विषया द्रिग काजल, लै विषया करि कै रस-भीजी।
आनि मिली फिर आलिन मैं मद, लालन ध्यान गई गृह धीजी ॥६१

चदरहास गयो पठ्यो जित, देखि मदन गलै स लगायो।
कागद हाथि दयो उन वाचत, विप्र बुलाइ र ब्याह करायो।
रीति करी नृप जीति लिये धन, देत गयो निठि चाव न मायो।
आइ पिता सुनि मीच भई किन, बीदहि देखि घणो दुख पायो ॥६२

बैठि इकात कही सुत वात, करी अति आत सु पत्र दिखायौ।
बाचत आपहि कौं धिरकारत, राड सुता परि मारन भायौ।
नीच बुलाइ कही मढ जा करि, आवत ता नर मारि सुहायौ।
चदरहास करौ तुम पूजन, है कुल-मात सदा चलि आयौ ॥६३

पूजन जात कहै नृप पुत्रन, मैं उन राजहि दे बन जाऊ।
ल्याव बुलाइ मदन भलौ दिन, जाइ महूरति फेरि न पाऊ।
वेगि गयो चलि जाइ लयौ मग, देत पठाइ म सेव कराऊ।
पैठत वद्ध करयौ इन भूपति, राज दयो अब मैं न रहाऊ ॥६४

आइ कहीस मदन मुवो मढ, कापि उठ्यौ र झरी द्रिग लागी।
देखि परयौ सिर पाथर फोरत, मृतु भई समझ्यौ न अभागी।
चदरहास चले मढ पासहु, मातहि अग चढावत रागी।
मात कहै तव मैं अरि मारत, ह्वै सज्जीव उठे वड भागी ॥६५

राज करै इम भक्त किये सब, पासि रहै तिन क्यू र बखानौं।
नाम उचारत धामन धामन, काम न और सु सेव न मानौं।
मोह न लोभ न काम न क्रोध न, है मद नाहि न नैन नसानौं।
आदिर अति कथा उर भावत, प्रात प्रढै[1] फल जै मन जानौं ॥६६

समुदाई टीका

नाम कुखार अपत्ति सुमैत्रिय, राघवदास बखान करयौ है।
कृष्ण कही मम भक्त बिदूर जु, दे उपदेसहि भाव भरयौ है।
प्रेम-धुजा चित्रकेत पुरानन, दूसर देह पलट्टि वरयौ है।
ध्रू अकरूर वड़े प्रिय उधव, पत्रन पत्रन नाम धरयौ है ॥६७

---

१. प्रढै = पुत्री।

कर्ती की टीका

प्रीति न देखत हू परिषा बिन भूप र देव विपत्ति म मागी ।
घाहत है मुख लाल हि देखन होहु दयाल कि यो बन घागी ।
व्याकुल देखि भरी प्रभु आंखिन फेरि लये घन प्रांन सु आगी ।
भवर ध्यान भये सुनि कांनन ता छिन ही मछ ज्यूं तन त्यागे ॥६८

द्रोपति की टीका

द्रोपति बात कहै वस कौनस सेवक भवर ढेर¹ भयो है ।
द्वारिक वासि कह्यौ सु हुतौ किग स्वैपुर आइ र भाइ रह्यौ है ।
आप दिलावन भेजि दुसासहि जात युधिष्टर सीस नयौ है ।
चोट भंरी तिय आइ कही नृप सोच भयो कत कृष्ण गयो है ॥६९
भाव सती सुनि थाकि भयो मन कृष्ण पधारि करयौ मन कांम ।
भूख लगी कछु देहु कहै हरि सोच हिये मन है नहि धांम ।
पूरण ह्वै जग मांहि रह्यौ पगि नांहि छिपाइ कहै हम स्यांम ।
साकहिं पात भयौ जल सूं सब धापि तिसोक दुर्वासहु नांम ॥७०

मूल छप्पै

नारांइण तें बिधि भयौ बिध तें स्वांभू मनु ।
स्वांभू-मनु के प्रेय बरत तास के अगनीधर गन ।
अगनीधर के नाभि तिम रिभ्यौ करतारा ।
तास पछोपै प्रगट, रिषभदेव सु अवतारा ।
रिषभदेव के सत सुवन जन राघो वीरध भरत पधि ।
दसमत पुत्र भये नव जोगेसुर अवर इकयासी राम-रिष ॥१२
तन मन धन अपि हरि मिले जन राघो येते राज रिष ।
प्रतीचपात पृथबरत अंग सुचक्र प्रचेता ।
जोगेसुर मिथसेस पृथु प्रचित उपरेता ।
हरिअरवा हरि बिरच रघु गुरु जनक सुधन्वा ।
भागीरथ हरिचंद सगर सति बरत सुमन्वा ।
प्राचीन बही इक्ष्वाकु रघु, रुकमांगद कुरुसाषि सुचि ।
भरथ सुरथ सुमती रिभु पैल अमूरति रैप दधि ॥१३

---

१ हेर ।

सतधन्वा बबस्व नघुष, उतंग भूरद बल।
जदु जजाति सरभाग पूर, दीयो जोबन बल[1]।
गै दिलीप अबरीष मोर-धुज सिवर पड धुव।
चद्रहास अरुरंत, मानधाता चकवै भुव।
सजै समीक निम भारद्वाज, बालमीक चित्रकेत दक्ष।
तन मन धन अर्पि हरि मिले, जन राघो येते राज-रिष ॥३७

आदि सक्ति ॐ नमो नमो, लक्ष उमा ब्रह्माणी।
नमो तिपुर कन्यां सु, नमो पतिबरता रांणी।
सति रूपा देहूति, सुनीति सुमित्रा अहल्या।
कौसल्या तारा चूड़ाला, कहिये पहल्या।
सीता कुंतां जयती बृदा, सत्यभामा द्रोपती।
अदति जसौधा देवकी, अब धम सरिवोपती।
मदवरि त्रिजट मदालसा, सची अनसुया अजनीं।
जन राघो रांमहि मिली, पतिबरता पतिरंजनीं ॥३८

मनहर छद

ॐ कारे आदिनांथ उदैनांथ उत्पति,
ऊमापति सिंभू सत्य तन मन जित है।
सतनांथ बिरचि सतोषनाथ बिष्णजी,
जगनाथ गणपति गिरा को दाता नित है।
अचल अचभनाथ मगन मिछद्रनाथ,
गोरख अनत-ज्ञान मूरति सु बित है।
राघो रक्षपाल नऊं नाथ रटि राति दिन,
जिनको अजीत अबिनासी मधि चित है ॥३९

प्रेयब्रत प्रगट पसारौ तज्यौ प्रथम ही,
बृकत बैरागी भयो मोक्ष पद कारणैं।
ताकौ बिधि बिबिधि सुनायौ मत-मातंग ज्यू,
लेहु सुत राज परकाज तोहि सारणैं।
मन बिन जीते न मिटत्त मनसा के भोग,
ह्वै है अगै रोग सोई क्यू न अब टारणैं।

---

[1] दल।

एकादस अर्बुद कीयो है राति दिन राम
रोम न बिसारयौ छिन राघो ताकौं वारणें ॥४०

भयो भर्थ चक्रवर्ती जिन कीये नवखंड
अष्ट-खंड भ्रातन कै ऐक खंड आप कौ ।
सोऊ पुनि पुत्रन कौं दे गयो नरेस देस
गलका कै तटि जाइ कीन्हौं व्रत आप कौ ।
निमत हम पाइ मज्जन करत मुनि
मृगी प्रम टारयौ डरि स्यघ की प्रताप कौ ।
राघो कहै जदपि जंजाल तजि लीन्हौं जोग
मृग छू नां छूटत ही भंग भयो आप कौ ॥४१

गौंडवारणौं देस तहां देविका विपत ऐक
छठे मास मांग बलि मानस कै सीस कौ ।
रिपसुते देतसम जिम भुज ताके चर
पकरि लै आये जन पेसि कीयो ईस कौ ।
भूप दीन्यौ देखि अम पुष्ट हू कराई पुष्ट[1],
अष्टमी कौ भर्थ मुनि आमपा मैं रीस की ।
राघो देवि देखि रिप नृपति कौ कीयौ नास
ऐसे मुनि मारौं[2] तौ हू जोरि जगदीस की ॥४२

देवी देखि साहिस स हंस बेर की स्तुति
तुम्ह रिष इहां हम मूरखान आने हौ ।
तुम्ह भर्थ चक्रवर्ती हुते चहूं चक्र मधि
पुनि मृगराज भये तहां हम जानि हौ ।
अब जिन देह पाइ जड़-भर्थ जोगेसुर
जीवन मुक्ति मुनि मोष पद माने हौ ।
राघो रिष ऐक रस मात भई ताकै बसि
धनि रिष तेरौ मौन रिझे न रिसाने हौ ॥४३

मृग मधि मति रही मृग गयो मृगन मैं
मृग मृग करत ही मुक्ति भई मुनि की ।

---

१ पुष्ट । २ मोरौं ।

तातैं मुनि मृगी-पेट आइ कै जनम लीयो,
दस व्रष मृग रह्यौ मांहि बृति धुनि की।
तीसरै जनम निज नेष्टीक बिप्र भयो,
देह तैं निसक नहीं सक पाप पुनि की।
राघो रघु नृपति सूं बोले मुनि मौनि तजि,
जांन्यौं जड़ भर्थ अर्थ मोक्ष भई उनि की ॥४४

जनकजी को टीका : [मूल]

मनहर छंद
करम-हरण कवि बरतमान भूत भव्य,
आये नव जोगेसुर जीवन जनक कै।
नाहरी के दूध सम नृबृती धरम धार,
छीजै न लगार राखि पातर कनक कै।
राज तजि, मोह तजि, सुद्ध होइ हरि नामं भजि,
कंचन ह्वै छुयें लोह पारस तनक कै।
राघो रह्यौ थकित थिराऊ धुनि ध्यांन लगि,
कीट गही मीट मारचौ भृंगी की भुंनक कै ॥४५
माया मांधि मुकति बहतरि जनक भये,
चित्र के से दीप रहे धारचौ धर्म समता।
सुख-दुख रहत गहत सतसंग सार,
तजे हैं बिकार न काहू सूं मोह ममता।
असें नग जनम जतन सेती जीति गयो,
बदगी मैं बिघन न पारी कहीं कमता।
श्रवन मनन मन बच क्रम धर्म करि,
राघो असें राज मैं रिझायौ रांम रमता ॥४६

छपै
भृगु मरीच बासिष्ट, पुलस्त पुलह क्रतु अंगिरा।
अगस्त चिवन सौंनक, सहस अठ्यासी सगरा।
गौतम ग्रग सौभरी रिचिक-सृगी समिक गुर।
वुगदालिम जमदगनि, जवलि परवत पारासुर।
बिस्वामित्र माडीफ कन्व, बांमदेव सुख ब्यास पखि।
दुरबासा अत्रे अस्ति, देवल राघो ब्रह्मरिष ॥४७

धरमपाल रसपाल, नमो व्रिगपाल बखांणों।
नमो सूर सापुरस नमो कवि चतुर सुजांणों।
नमो सती सरवज्ञ नमो दाता धर्म-धारी।
नमो इंद्रासन भोमि, नमो भ्रात्म उपगारी।
नमो अनंत जमनी सक्ति, भक्ति सक्त भगवंत जै।
नमो जती जोगेसुर्ण, राघो दासन-दास है ॥४८

नमो सुबरण कुबेर नमो धर्मराइ मन्वतर।
चित्रगुप्त गणपति, नमो बांगी महामतर।
नमो सप्तरिष अनंत रिष, नमो त्रिभवन तत-वेता।
बालखल्य रिष ग्रष्ट बसु नृप नवखंड जेता।
विप्र बेद गंगा गऊ, सुमरि सकल सुक्रत सिलो।
राघो जीवन-मुक्ति मत सब बरसन सूं मिलि चलौ ॥४९

मनहर छंद

नमो इंद्र नरप र सकल सुरपति सत्य जस,
करि लीनो जस बिपति निवारणा।
जीव की जीवनि चतुरासी लख लगी तोहि
पीव पीव टेरें जीव लेत निति धारणां।
सची के नाइक मैंना उरबसी रभा के कंत,
लीजियें न अंत भव-जल निस तारणां।
राघो गज ऐरापति कामधेन कलपवृक्ष
अष्ट सिधि नव-निधि रहै जाके द्वारणां ॥५०

नमो दिव्य देवता कुबेर कुलि आज्ञाकारी,
सब गति जांण अविनासी को भंडारी है।
मायाधारी मूरति अनंत कोटि रबि-छबि
साहिब की साहिबी सकति अति भारी है।
रिधि सिधि अरब खरब जग जामैं सब
हरि को हजूरि राखि सौंपी ताहि सारी है।
राघो ऐसी सहित रहत रत राम की सौं
धनि सो धनाढ़ि नृप सोभै अति भारी है ॥५१

नमो बरण देवता बनाइ कहूं कहां लग
तिर पग पूजत पताल माग भागरी।

नवसै निवासी नदी तेरी जीभ जग मध्य,
सप्त साइर उर गावै बाग बागरणी।
तेरौ बल ब्रह्मण्ड पचीस लग पूरै जल,
अकल अजीत प्रलै काल पौढौ है धरणी।
काली गहली बीनती कछूक बनि आई मो पै,
राघो कही सुलप तुम्हारी सोभा है घणी ॥५२

कसिब सुवन तेरे ऊगत[1] ये तो प्रताप,
रजनी के पाप गुर जाप सुनि सटके।
जल सुचि दान असनान षट-क्रम धर्म्म,
खोलत कपाट भाण भूप अब घटके।
मुदित सकल बन गऊ उठि लगी तिन,
राम जन रांम कांम पाठ पूजा अटके।
भगति करत भगवतजी को भासकर,
राघो रटि सुमरिये भाव ये सुभटके ॥५३

छप्पै बड़ी कला करतार, कीयो ससि सू अब थोक।
रजनी मंडन रतन, सुधा सरवैत[2] अब लोक।
सीतल मिष्ट मयक, चराचर मैं सचार है।
रस गोरस अन सकल, चंद सरजीवत करि है।
राघो रुचि राम हि रटै, ससि ब्रह्मण्ड-प्यंड मधि मुदित।
पूरणवासी प्रष्ण अति, बित घटियां बाको उदित ॥५४

मनहर छंद अपरस उतम उतग जाकै सोभै अति,
बृ चि की सुता बखाणौं बागी ब्रह्मचारणी।
सरस्वती सरल जु सलाघा कीये प्रष्ण ह्वै,
जब ही आराधै कोऊ ह्वै है काज कारणी।
कोमल कुमारजा है न्यारी निकलंक कन्या,
अतुल सकति सु सुफल तत-धारणी।
राघो कहै रुति सूं रहैत तन तेजपुंज,
प्रसन-बदन हरि हित पैज पारणी ॥५५

---

१. ऊगन येता। २ सुधा सरवत।

प्रथम प्रवेस है गनेस गवरी के सुत,
आवै जाहि चंदीमत विद्या को निधान है।
चतुर निगम नव व्याकरन पुरान पढ़े,
जानें दस च्यारि छह् वेतो गुनगांन है।
सप्तम वतीस जगदीस के सहस्र-नाम,
पाठ कर आठौं जांम ईश्वर प्रमान है।
राघो कहै बोमर्ज विनायक विद्या के गुर,
मांन नर-नारि-सुर जानत को जांन है ॥२६

छपै
मत्त लछमनां कुमार रांम के कामहि लाइक।
हैदि हैदि हनुमत प्रणम्य रघुपति के पाइक।
गवड़ अतुल-बल वरनिए, विष्ण विमनां को वाहन।
कन्ह स्यांम सिव सुवन, मदन-जित मन अवगाहन।
व्यास पुत्र सुकदेव ऋषि, गोरख ज्ञांन गिरापती।
राति दिवस रत रांम सौं, राघो येते पद जती ॥५७

मनहर छंद
मच्छ गोपालजी को आग्याकारी आठौं जांम,
सारे हैं अनंत नांम ऐसी स्वांमी कारजी।
पल मैं सकल ब्रह्मण्ड सब आवै फिरि
बठत बैकुंठ-नाथ चलत अपारजी।
तीर्थ्यू गुन जीति गही नीति जु गुर्वति पद
छाड़े विषै भोग रोग साध्यो जोग सारजी।
जगपति अति भजनीक है प्रतुत दृढ़,
राघो कहै राति दिन रटत रकारजी ॥५८

इंदव छंद
आजनी मांन महात्मनू को सुन, देखो मतौ बन स्यांम जती को।
नारी जिती जननी करि देखत रूप सबै ज्यौं पारवती को।
सील गह्यो मनसा मन जीति क भोग न भावत जोग है नीको।
राघो लगी धुनि ध्यांन टरै नहीं आप चवै हरि प्रानपति को ॥५९
करि देख्यो महा बल क्यों न कहूं मुन के मुख मेरन भेद सुनी को।
धुन की धनिमी तजि के उतनी जति धाई जहां बन-वास मुनी को।

कीये लावन-रूप रिझावन कौं, सुख के मुख बाइक है जननी कौं।
आगि कौं लागि कहा करै माछर, राघौ कहै सत सूर अनी कौं ॥६०

मनहर छंद
द्वादस अबद राख्यौ सबद पिता कौ परण,
लखि सम लक्षमन दास रांमचन्द्र कौं।
फल जेते फूल पात राखे है हजूरि तात,
आप न भक्षण कीन्हौं आप सेती अद्र कौं।
रांवन पलटि भेख सीया हरि लै गयौ,
सु बिपुन मै निपुन निवार्यौ दुख-बध कौं।
राघौ कहै पदम अठारै कपि रहे जपि,
तहां लक्षमन सिर छेद्यौ दसकध कौं ॥६१

इदव छंद
राम के काम सरे सब ही, जब ही हनुमत लीयो हसि बीरो।
लक प्रजारि सीया कौ सदेस, ले आइ दई रघुनाथ हि धीरौ।
राम चढे जिहि जाम हनू सगि, जाइ परे दल सागर तीरौ।
राघौ कहै जग जीति रमापति, लक बिभीषण कौं दई थीरौ ॥६२
हा हा हनू कीयो काम घनौं, रजनी बिचि सैल समूह ले आयौ।
मग दैत कीये छल छद जिते, सुत ते सब जीति कै आतुर धायो।
मुरछे लक्ष बीर से धीर धरा धनि, सेवग प्रात ही भ्रात जिवायो।
राघो कहै रघुनाथ कै साथ, सदा हनुमत कीयो मन भायो ॥६३
इद ज्यौं जिद की जीवनि गोरख, ग्यान घटा बरख्यौं घट धारी।
नृप निन्याणवै कोड़ि कीये सिध, आतम और अनंतन तारी।
बिचरै तिहू लोक नहीं कहू रोक हो, माया कहा बपुरी पचिहारी।
स्वाद न सप्रस यौं रह्यौ अप्रस, राघो कहै मनसा मनजारी ॥६४

मनहर छंद
चले हैं अजोध्या छाडि रामजी पिता कै काज,
भरथ न कीन्हौं राज राखी सिर पावरी।
धृग यह राज तज्यौ नाज रघुनाथ काज,
काहे कौं बिछोहे भ्रात मात मेरी बावरी।
आसन अवनि खनि नीवै सैन कीनौं जिन,
रोवत बिवोग मनि रहै तन तावरी।

राघो कहै भरत भरथ गृह मुनि गयौ,
मेरो कछू नांही बस रवा रांम रावरी ॥९५

छपै
राघो रिझ ये रांमजी, भलौ गह्यौ मत मुक्ति कौ ॥
बांणासुर प्रहलाद कहू, बलि मय पुनि त्वाष्टर।
असुर भाव कौं त्यागि, भज्यौ सौं मिल बिन नरहर।
रांम उपासिक तीन, भौर रांवण सम हैं।
लंका लेकै रांम, बिभीषन कौं सु दई है।
कीयो मंदोदरी त्रियजटी, मांनि महात्म भक्ति कौ।
राघो रिझ ये रांम जी भलो गह्यो मत मुक्ति कौ ॥९६
अपग विमल जस त्यप, पावक हूं ढिग न धरणी।
तब संगी तजि गये सकल, सुत सबही परणी।
परय सहंस घुप कीयो, लीयो तब लखि मांहि लस।
गज कायर ह्वै रह्यौ, गयौ मन कौ सब छल बल।
बल बीत्यौ कूकर लग्यौ बीति लीयौ जय निपट घरि।
राघो रहत रंकार के, ततखन बिमुखायो सु हरि ॥९७

अरिल
छपै
दया धर्म चित राखि, सत कौं पोषिये।
कुरबम कुसी अमाय तास कौं तोषिये।
करि लीजै इहि वैर भजन भगवंत कौं।
पीछैं कछु न होइ, बुरी दिन अंत कौं।
जा दिन देह बल घटै भजन बस रासि है।
मन राघो गज गोप अजामिल साखि है ॥९८
गनिका गहबर पाप कीये अघिहुत अति मौड़े।
पर-पुरषन सूं भोग, रिझाये पापी भौंड़े।
हाड़ चांम अर अंत मुत मिष्टा जिन मांही।
मीड़ रींट रत मास बदन तैं लाल चुवांहीं।
अंत-काल सुहत हृदय रटि रांम सनातन मैं भई।
राघो प्रगट प्रलोक कौं, चढ़ि बिमांन गनिका गई ॥९९
उमो बिद्र अक्रूर भये मीतारय मैत्रे।
गंधारी धृतराष्टर तज सारथि [illegible] मे।

सु रतिदेव बहुलास, आस मन की सब पूरी।
मित्र सुदामां जानि कीयौ, सब ही दुख दूरी।
सोक समद तै काढ़ि कै, कीये महाजन मुक्ति रे।
राघो सूके काठ सब, होत अवै सतसग हरे ॥७०
नमो सूत वक्तास नमो, रिष सहस अठ्यासी।
सुणी भागौत पुराण भक्ति, उर माहि उपासी।
चटिड़ा द्वादस कोड़ि, रांम सुमर्त कुलि उधरे।
जन प्रहलाद प्रसाद, पाय संगति सौं सुधरे।
साध सती अरु सूरिवां, हीरा खड़ गरू वाज।
राघो अस दधीच कौ, कीयो तिहूं-पुर राज ॥७१
जन राघो रांम अ रीझ है, परि रीझत है सर्बस दीये ॥
उछ वृति जु सिवर सुदरसन, हरिचंद सत गहि।
स्यार सेठ बलत्री[1] ईषण, जित रतदेव लहि।
करन बल्य मोहमरद, मोरध्वज सेद बेद वन।
परवत कुडल धृत बार, मुखी च्यारि मुक्ति भन।
व्याधि कपोत कपोती कपिला, जल-तटांग उपगार जल।
तुलाधार इक सुता साह की, भोज बिक्रमांजीत बीरबल।
ये वड़ सती सताई सौं, जपि उधरे उतम कृत कीये।
जन राघो रांम अ रीझ है, परि रीझत है सर्बस दीये ॥७२

मोहमरद की टीका [मूल]

अरिल छपै
रिष नारद वैकुंठ, गये हरि पास है।
प्रश्न करी, नहीं मोह, इसौ कोइ दास है।
मोहमरद भणि भूप, रूप रांणी सिरै।
ताके सुत की घरणि, बरणि बकता तिरै।
नारद सौं निरवेव, विष्णजी विधि कही।
राघो भेद न भ्रांति, भगत भगवत सही ॥७३

इदव छंद
ध्यांत धरचौ जन कौ जगदीसु र, ताही समैं रिष नारद आयौ।
तारि छुटी तबहि लगे बूझन, काहि भजौ हरि को मन भायौ।

---
1. बलह।

राघो कहै भरत भरम गृह भूलि गयो,
मेरो कछू नांही बस रजा रांम रावरी ॥६५

छपै

राघो रिझ ये रांममी, भलो गह्यौं मत मुक्ति को ॥
बांणासुर प्रहलाद कहू, बलि मय पुनि त्यासुर।
असुर भाव कौं त्यागि, भज्यो सौं निस-दिन मरहूर।
रांम उपासिक तोम, और रांवण सम ईहै।
लंका लंकै रांम, बिभीषण कौं शु दई है।
कीयो मंदोदरी त्रिजटी नांम महात्म भक्ति की।
राघो रिझ ये रांम की भलो गह्यो मत मुक्ति को ॥६६
अचग विमल जस त्यग, पावक हू टिकै न धरणी।
तब संगी तजि गये सकल, सुत सबही घरणी।
बरष सहस दुख कीयो, सोयो तब बंधि माहि जल।
भव कायर ह्वै रह्यो, भयो मन को सब धुन बल।
जस बीत्यौ दुबण लग्यौ कीति सीयो जब निपठ भरि।
राघो रवत रकार क, ततखन बिमुखायो सु हरि ॥६७

मरिल छपै

दया धर्म चित राखि, सत कौं पोषिये।
दुरबल दुखी अनाथ, तास कौं तोषिये।
करि सीखै इहि धेर भजन भगवंत कौं।
पीछें कछु न होइ दुरी बिन संत कौ।
जा दिन देह बल घटै, भजन बल राखि है।
जन राघो भव पीम, अजामिल साखि है ॥६८
गनिका महबर पाप कीये अविहृत अति भौड़े।
पर-पुरषन सूं भोग रिमाये पापी मौड़े।
हाड़ चांम पर मत मुख मिष्टा जिन मांही।
पीब रीढ रत मास वदन तै लाल दुर्नाही।
प्रेत-काम सुकृत हृदय रटि रांम सनातन मैं भई।
राघो प्रगट प्रलोक कौं चढ़ि बिमांन गनिका गई ॥६९
ऊधो विप्र अकूर भये मोक्षारथ मैंने।
गंधारी धृतराष्ट्र सबे सारथि ह्वै भे।

मोरधुज की टीका [मूल]

मनहर मोरधुज तामरधुज हंसधुज सिखरधुज,
नीलधुज ध्रमधुज रतिधुज गनि है।
ताकी रार्णी मगन मदालसा मुकति भई,
वैसे सुत च्यारि कोई जननी न जनि है।
हरिचद सत त्रियलोक मै सराहियत,
सग रुहितास मदनावती जु र्धनि है।
सिवर कपोत बलि[1] रतदेव उछ[2] वृति,
राघो जाके भूरि भाग जोया[3] जस भनि है ॥७९

छपै इम मन वच क्रम रत राम सौं, जन राघौ कथत कवीस ॥८०
दीरघ सुघ सुबाहु गरक, आसन जित गादी।
जाकै सत्रु न कोई, सत्रु मरदन सतवादी।
अति विगि विस न बिक्रात, जुगति जोगी उर्धरेता।
अलरक अग है अजीत, सूर सर्बज्ञ ततबेता।
मात सुमगन मदालसा, तात है तत्वनवीस।
इम मन बच क्रम रत राम सूं, जन राघो कथत कबीस ॥८०
हरि हृदै जिनकै रहै, तिन पद पराग चाहूं सदा ॥८०
प्रेय-व्रत जोगेसुर पृथु, श्रुतिदेव अंग पुनि।
परचेता मुचकद सूत, सौनक प्रीक्षत सुनि।
[4]सत्यरूपा [5]त्रियसुता[6], मंदालस ध्रुव की माता।
जगपतनी वृज-बधू, कृष्ण बसि कीये विख्याता।
नरनारी हरि भक्त जो, मैं नांहीं बिसरत कदा।
हरि हृदै जिनकै रहै, तिन पद पराग चाहू सदा ॥८१

टीका

इदव जा जन की पद रेंन अभूषन, अग करौ हरि है उर जाकै।
छद स्वाद निपुन्न महाकबि आदि, कहै श्रुति देव बडौ धर्म ताकै।
सत लयें धरि जात भये हरि, फेरत चादरि प्रेम सु वाकै।
साधन कौ परनाम न आदर, आप कही हम सू बड पाकै ॥७१

---

१ कपोत छलि। २ उच्छा। ३ जाया। ४. देवहू। ५ अय। ६ आकूती।

नाथ कह्यो जन हाथी खिलामों सो मोहमरद बसेष सुनायो।
राघो कीयो रिष नारद मैं छल स्यघ पै साध कौ पुत्र मरायो ॥७४

इंदव
८८
नृप-कुमार मार दरबार नारद गये,
दास राघो कहो सोग-वांणी।
रावलड़ा भवन सू गवन करि छोकरी,
कसस ले कूवा कू चली पांणी।
देखि रिष दौरि करि जोरि पाइन परी
रिष तहां कुंवर की मृति ठांणी।
देव-दासी कहै कौन काकी सगो,
मापिका नांव सजोग जांणीं ॥७५
चले रिष कगम नौं मारिग रांणी मिली,
पुत्र के मृत को कही गाथा।
महं जांनौं नहीं कहां सुत अवतरयो,
कहां अब देह तजि गयो भाथा।
कौंन को असत कहो सोग काकौं करुं
तिल की घात अभेद हाथा।
दास राघो कही स्वांन दिज की कथा
रहे रिष ठगे से धूंणि माथा ॥७६
नृप क कुंवर को मारि नारद मिली,
कहो रिष अजि पति मुवो तेरो।
कुसरपू कहो करतार की असत है
कौंन को मारि पति कौंन केरो।
अब समझा भरम हार है मिलि चले
दई गमि कौतुके कहा कस मेरो।
दास राघो कहै देवजी सेहु कपू
मधुनी दुरगम है प्राण तेरो ॥७७

१०१ रिष नारद पास कही नृप सौं सुत तेरो तिहार मैं खंध में मारयो।
नृ० नृप कही भगवंत रचा रिष समबंधी पांचो बरषों र तिपारयो।
देव मुवो दृष्टांत कहो नृप दीन कुंमार रोयो मुनि हारयो।
राघो कहै इनकी मुनि न रिष थापो मकान मूरख पूं मारयो ॥७८

मोरधुज की टीका [मूल]

मनहर मोरधुज तांमरधुज हंसधुज सिखरधुज,
नीलधुज ध्रमधुज रतिधुज गनि है।
ताकी रांणीं मगन मदालसा मुकति भई,
वैसे सुत च्यारि कोई जननी न जनि है।
हरिचंद सत त्रियलोक मैं सराहियत,
संग रुहितास मदनावती जु धंनि है।
सिवर कपोत वलि[1] रतदेव उछ[2] वृति,
राघो जाके भूरि भाग जोया[3] जस भनि है ॥७९

छपै इम मन वच क्रम रत राम सौं, जन राघो कथत कबीस ॥ टे०
दीरघ सुध सुबाहु गरक, आसन जित गादी।
जाकै सत्रु न कोई, सत्रु मरदन सतवादी।
अति विगि विमन विक्रात, जुगति जोगी उर्धरेता।
अलरक अंग है अजीत, सूर सर्वज्ञ ततवेता।
मात सुमगन मंदालसा, तात है तत्वनवीस।
इम मन वच क्रम रत रांम सूं, जन राघो कथत कबीस ॥८०
हरि हृदै जिनकै रहै, तिन पद पराग चाहूं सदा ॥ टे०
प्रेय-व्रत जोगेसुर पृथु, श्रुतिदेव अंग पुनि।
परचेता मुचकंद सूत, सौनक प्रीक्षत मुनि।
[4]सत्यरूपा [5]त्रियसुता[6], मंदालस ध्रुव की माता।
जगपतनी वृज-वधू, कृष्ण वसि कीये विख्याता।
नरनारी हरि भक्त जो, मैं नांहीं विसरत कदा।
हरि हृदै जिनकै रहै, तिन पद पराग चाहूं सदा ॥८१

टीका

इंदव छंद जा जन की पद रैंन अभूपन, अंग करौं हरि हैं उर जाकै।
स्वाद निपुन्न महाकवि आदि, कहै श्रुति देव बडौ धर्म ताकै।
सत लयें धरि जात भये हरि, फेरत चादरि प्रेम सु वाकै।
साधन कौं परनाम न आदर, आप कही हम सू बड पाकै ॥७१

---

१ कपोत छलि। २ उच्छा। ३ जाया। ४. देवहू। ५ त्रय। ६ आकूती।

मूल

छपै   चरन-कमल मकरंद कौं जनमांतर मांगत रहौं ॥टे०
सति-बरत सगर मिथलेस भरथ हरिचंद रघुगए।
प्राचीन बर्ही इष्वाक भगीरथ, सिबर सुदरसए।
बालमीक दधीच बींभ्रबलि, सुरथ सुधन्वा।
रुकमांगद रिभु औस, अमूरति देवल-मन्वा।
सिघर ताम्रधुज मोरधुज अलरक की महिमां कहौं।
चरन-कमल मकरंद कौं जनमांतर मांगत रहौं ॥८२

टीका

इंदव   धार न देह नहीं अपसोचहु साधन की पद रैन सुहावै।
छंद   सत्यव्रतादि कथा जग जानत हु बलमीक कथा मन भावै।
भीलन साधि भये रिष मीलहि राम चरित्र अध्यम बनावै।
गावत ताहि सबै सुर नागर, कान सुनेंत हियो भरि आवै ॥७२

दूजा बालमीक की टीका [मूल]

मनहर   पांडुन की भक्ति निहारन कूं कीनी जग,
छंद   बिप्रन हजार कोडि क्यों'पे जिमि नेम सौं।
कनक के थार द कठोरे झारी कनक की
                भोजन छपन भोग बीस दीन्हों हेम सौं।
राजा कहैं शहन-महल बर बाई जोर[2]
                बड़े बड़े महारिष बैठ पहैं प्रेम सौं।
रामो कहै जन बिन ज्यां मैं जग पूरो नांहि
                साध बिन बज्र सब बाजैं सुर-खेम सौं ॥८३

इंदव   पंड-सुत पंच कर जोडि कही कृष्ण सूं,
छंद   देव सहित मम करी पूरो।
बिप्र दस कोडि रिष राइ राजा घणा
                जीमियो तऊ जग रह्यौ ऊरो।
जब कृष्ण कृपाल ह्व कही जिन की तिन
                भक्त भगवंत बिन ह्वै न पूरो।

१ ज्यांपि। २ जोर सो जोर।

राम भजनीक राघो कहै सुपचतन,
बालमीक जीमतां बजहि तूरौ[1] ॥८४

मनहर छंद
गये है सकल बल डारि कुल राज तेज,
स्वामीजी पधारौ मम काज आजि जांनि कै।
हस ज्यूं हस्त बिग बस्त रूपी आयो द्वारि,
भोजन-छपन भरि थार धरचौ आंनि कै।
अब अन तीवन र घृत दधि दूध भात,
अर्पि अबिनासीजी कौं ऐक कीये सांनि कै।
राघो कहै राम धनि राखत है जन पन,
पाचौं ग्रास पच बेर बाज्यौ संख तांनि कै ॥८५
भूधर कहैत तोहि भाजि डारौ भाठिन सौं,
जन कै जीमत कन बाज्यौ क्यूं न पातकी।
देवजी दयाल ह्वै जे मेरौ कछू नांहीं दोष,
द्रौपदी कू आई भिन अंति देखि जातिकी।
बाजतौ असखि बेर भाव मैं परचौ है फेर,
नारि न निहारि देख्यौ साध सील सातकी।
राघो कहै संख नै सुधारि कही साहिब सूं,
मो कौं कित ठौर है जु आज्ञा मेरौं तातकी ॥८६

करन की टोका [मूल]

बासुर की आदि भयें रजनी कौ अंत जबै,
पढत जाचिग अब पहर करन कौ।
सवा भार कंचन क्रिया सूं देतौ निति प्रति,
जासूं होत प्रतिपाल द्रुबल बिप्रन कौ।
अरजन कौ रथ अवटायो जिन अहूठ पैंड,
जामैं बठै कृष्ण देव नाइक नरन कौ।
राघो कहै रवि-सुत दाग्यौ हरि हाथन पं,
साधिगौ अबस दे कै मांमलौ मरन कौ ॥८७

---

१. छजहि सूरौ।

मूल

छपै चरन-कमल मकरंद कौं, जनमांतर मांगत रहौं ॥८०

ससि-बरत सगर मिथलेस, भरथ हरिचंद रघुराए।

प्राचीन बर्ही इक्ष्वाकु भगीरथ, सिबर सुदरसण।

बालमीक दधीच बौंकाबलि, सुरथ सुधन्वा।

रुकमांगद रिषु भैस, अमूरति मैबस-मन्वा।

सिधर ताम्रधुज मोरधुज अलरक की महिमा कहौं।

चरन-कमल मकरंद कौं, जनमांतर जाचत रहूं ॥८२

टीका

इंदव छं ८

भार न देह नहीं अपसोचहु साधन की पद रैंन सुहावै।

सत्यब्रतादि कथा जग जानत ह्वै बलमीक कथा मन भावै।

भीलन साथि भये रिष भीलहि राम चरित्र प्रबन्ध बनावै।

गावत ताहि सबै सुर नागर कान सुनैंत हियो भरि आवै ॥७२

दूजा बालमीक की टीका [मूल]

मनहर छं ९

पांडुन की भक्ति बिहाग रूप कीनी जग,

विप्रन श्रावस कोटि ज्यौं[1] पै मिलि प्रेम सौं।

कनक के थार र कटोरे झारी कनक की

भोजन छप्पन-भोग बीस दीन्हौ हेम सौं।

राजा करै टहल-महल बर भाई चोर[2]

बड़े बड़े ब्रह्मरिष बैठ पढ़ै प्रेम सौं।

राघो कहै जन बिन क्यों पै जग पूरो मांहि

साध बिन कैसे संख बाजै सुध-क्षेम सौं ॥८३

इंदव छं ९

पंडु-सुत पंच कर जोरि कही कृष्ण सूं

देव संदेह मम करौ दूरौ।

विप्र अस कोटि रिष-राइ राजा घणां

जीमिया तऊ जग रह्यौ कूरौ।

जब कृष्ण कृपाल हूं कही जिम की तिम

भक्त भागवंत बिन ह्वै न पूरौ।

---

१ ज्यांपे। २ चोर दो चौर।

राम भजनीक राघो कहै सुपचतन,
वालमीक जीमता वजहि तूरौ[1] ॥८४

मनहर छंद
गये हैं सकल वल डारि कुल राज तेज,
स्वामीजी पधारौ मम काज आजि जानि कै ।
हस ज्यूं हस्त विग वस्त रूपी आयो द्वारि,
भोजन-छपन भरि थार धरचौ आंनि कै ।
अव अन तीवन र घृत दधि दूध भात,
अर्पि अविनासीजी कौं ऐक कीये सांनि कै ।
राघो कहै रांम धनि राखत है जन पन,
पाचौं ग्रास पच वेर वाज्यौ संख तांनि कै ॥८५
भूधर कहैत तोहि भाजि डारौ भाठिन सौं,
जन कै जीमत कन वाज्यौ क्यूं न पातकी ।
देवजी दयाल ह्वै जे मेरौ कछू नांहीं दोष,
द्रौपदी कू आई भिन अति देखि जातिकी ।
वाजतौ असखि वेर भाव मैं परचौ है फेर,
नारि न निहारि देख्यौ साध सील सातकी ।
राघो कहै सख नैं सुधारि कही साहिव सूं,
मो कौं कित ठौर है जु आज्ञा मेरौं तातकी ॥८६

करन को टीका [मूल]

वासुर की आदि भयैं रजनी कौ अंत जबै,
पढत जाचिग अब पहर करन कौ ।
सवा भार कचन क्रिया सूं देतौ निति प्रति,
जासू होत प्रतिपाल द्रुबल बिप्रन कौ ।
अरजन कौ रथ अवटायो जिन अहूठ पैंड,
जामैं बठै कृष्ण देव नाइक नरन कौ ।
राघो कहै रवि-सुत दाग्यौ हरि हायन पै,
साधिगौ अबस दे कै मांमलौ मरन कौ ॥८७

---

१. छजहि सूरौ ।

बलि बींझावली की टीका [मूल]

इंदव भाव बड़े बलि के ग्रहि बांवन, आवत ही कीयौ सबद उचारा।
छंद राज गऊ धन धाम कन्या प्रभु, देव करौ इनकौं अंगीकारा।
भाव सौं भूमि दे पेंड अढ़ाइक ता मधि ह्वै बिश्राम हमारा।
राघो त्रिलोक त्रिपेंड कीये जिन आप अमाप बढ्यो करतारा ॥८८

मनहर बांध्यौ राजा बलि कसि इन्द्र सौं कीन्ही बिहसि
छंद रामजी कहत हसि अर्ध-पेंड आप दे।
बोले बलि बींझावली धनि प्रभु कीन्ही भली,
मन की पगोई रली लीजे पेंड आप दे।
जै जै जगदीस कीन्हौं आपनौं बतायौ चीन्ही,
मेरौ निज रूप भूप एहुमो प्रताप दे।
बलि के दरबार प्रतिहार प्रभू प्रानंनाथ
राघो जोरे हाथ यौं अभ्यासी ठाढ़ौ आप दे ॥८९

हरिचंद की टीका [मूल]

लोकपाल सारे ऋषि देवता तेतीस कोड़ि
ठाढ़े कर जोरि ह्वै के कही करतार सूं।
हरिचंद की देखि सत हल-चल हमारौ मत,
कीजीये इलाज प्रभु आज याही बार सूं।
तब हरि कृपा करी सबै की दिलासा दई
नारद बुलाइ लीये बूझे है बिचार सूं।
राघो कही रामजी मैं रिष बिधि पूजी परि
हरिचंद छलौ बिस्वामित्र अहंकार सूं ॥९०
राघो रिष दीयो रोइ मोहि तौ कठिन दोइ
मत तुम साहिब उत ह्वै दास रावरी।
तब बोले बिष्णुजी बिसाल नैन नारायन
रिष मेरी कीयौ देखि ह्वै तौ नहि बावरी।
भगतवछल मेरौ बिड़द गावै साध बेद
संत मोहि प्यारे जैसे मात पिता बावरी।

राघो कहि राम हरिचंद नहीं हारै धर्म,
भेडन की भै न मांनै स्यघ कौं ज्यू छावरी ॥६१[†]

टीका [मूल]

मनहर छंद

चाले वेग रिष विस्वामित्र वैठे वन आइ,
सूर भयो सूर-देव वाग खोदि डारचौ है।
माली जाइ कही हरिचद चढ़ि आयौ तव,
सूर भग्यो गैल लग्यौ कहै अब मारचौ है।
दीखवे सौं रह्यौ रिष देखि वैठि गयो सीस,
नाइ करि कह्यौ मम चलौ यौं उचारचौ है।
सकलप लेहु सर्व राज हम देहु तीन,
लाख फिरि येहु दये सत नहीं हारचौ है ॥६२
खोसि लीयो घोरा आप नृप कौं पयादौ कीयौ,
काटा धूप लगै लोग सुनि और ल्याइये।
सर्व ही हमारे ये तौ ल्यावो तीन लाख हारो,
भूप रुहितास रांनी कासीपुरी आइये।
सीस घास लीयें ठाढ़े वेस्या कही नारि देहु,
नकटी बखानी कीस नांक काटि जाइये।
अगनि सुश्रमां रिष रांनी रुहितास लीये,
दीये ड्योढ़ लाख हीयो फटै विछुराइये ॥६३
मागत रुपईया डेढ़ लाख रिष राजा पासि,
बचन कौं तजौ अजौं नहीं बेगि दीजिये।
अब देऊ झफड़ा सु डौम आयो ताही छिन,
अहट सभारौ हां जू तौ तौ गिनि लीजिये।
रानी रुहितास करै अगनि सुश्रमां सेव,
इंधन वुहारी लेय जल ल्याइ भीजिये।
सुत ल्यावै फल-फूल पूजन करन रिष,
येक दिनां चढ्यौ द्रुम अह काटि खीजिये ॥६४
वालां कही माता सूं सरप डस्यौ रुहितास,
रोवत गई है संग सुत जहां परयौ है।

[†]टिप्पणी . सम्वत् १८८६ की प्रति में इसके वाद के ६ मनहर छंद नहीं हैं।

देखि छाती फटी मै उठाइ धाई मरहट,
सकरी बरै' न मेहु बसै नहीं बरयो है।
पूंछी सखि आयो हरिचंद मांगै भूमि भाठो,
दयो फारि चीर आयो तब सैको डरयो है।
गंगा मैं न्हाइ आइ आश्रम मैं रात छिन,
चील हार ल्याइ रांनी गरै मांझ धरयो है ॥१४॥
कासी के राजा-घर बेस्यो हार गर-मांझ,
मार धर बार-बार ल्याये भूप पास ही।
धायो मरहट कही काटो सिर सट फेरि,
चलै नहीं बट झट-पट करो नास ही।
सुर्गों इक पाय असि देहु टेस वाके हाथ,
देखें मम माथ दई माथ सेर बास ही।
बिरम्हा बिसन सिव गह्यौ कर मांगि बर
उर नहीं चाहि कलि करो मति त्रास ही ॥१६
देवतांन कीयो छल सूर भयो देव भल,
मैं हू बिस्वामित्र रिष बैठो बन माहि को।
अगनि सुधर्मा भज मेंनका सो जमराज
सक्ति भई बेस्या पुनि कट्यौ नांक ताहि को।
सुरपति आप जानौं चील हू रंभा कौं मानौं,
कासी-नृप देव जानौ सर्व ही को चाहि को।
गंगा जू उसठी बाहि कहितास आयो सही,
राज दयो महोराजा रांनी मुक्ति चाहि को ॥१७

छपै   जै जयंती-सुत जगतगुर, राघो दडवत निति नमो ॥८०
कवि हरि हरि-रत अंतरीछ नहीं प्रभु सूं अंतर।
चमस प्रबुध परबीएा करहि पुनि ध्यांन निरंतर।
दर भाजन पिपलाइन, द्रुमल रहै राति दिवस रत।
अग्निहोत्र अरबंद भुपि नपन कोइक मत।
नव जोगेसुर नांव भणि मिटै सरस संकट समो।
जै जयती-सुत जगतगुर, राघो दंडवत निति नमो ॥१८

---

१ वैर।

नमो पड-सुत पंच, नमो परचंड पर-काजी।
अति क्षत्री अति साध, कृष्ण जिन सूं अति राजी।
नमो जुधिष्ठर भूप रूप, धर्म सति के नाती।
नमो भींवभड़ पवन-सुत, पाप कर्मन की काती।
नमो धनंजय धनुष धर, सत्रुन सर सज्या-धरण।
नमो नकुल सहदेव कौं, जन राघो रोगन हरण ॥९९

रिष नारद नै निरभै कीये, प्राचीन बृह के पुत्र दस ॥टे०
कुवरन कौं कैलास, बताई निश्चल ठौरा।
महादेव मन जीत रहै, संग सीतल-गौरां।
बक्ता मगन महेस राज-रिष सनमुख श्रोता।
भक्ति-ग्यांन अतिहास, सार तत निरनै होता।
यौं चकेता प्रसिधि भये, जन राघो पीवत राम-रस।
रिष नारद नै निरभै कीये, प्राचीन बृहै के पुत्र दस ॥१००

अदृष्ट-चक्र इनके चले, रटि राघो षट चक्कवै ॥टे०
प्रथम बेणि धर्म जेठा, दुतीय बलिवंत[1] वलि बहरी।
धुध मारवि सियार, जास रजधांनी गहरी।
मानधाता अति बढ्यौं, प्रसिधि महा भयो पूरवा।
अजैपाल अब तपै, धारि उर भलै गुरदवा[2]।
उदै अस्त लौं राज धरि, करते न्याव हरि हक्कवै।
अदृष्ट-चक्र इनके चले, रटि राघो षट चक्कवै ॥१०१

इदव छंद
काक-भुसड र मारकडे मुनि, जागिबलक कृपा क्रम जीते।
सेस सभु वुगदालिम लोमच, ध्यांन समाधिहि मैं जुग बीते।
खडांग दिलीप अजौं अजपाल, रिषभदेव अरिहंत उदोते।
राघो कहै चकवै षट ये[3] दस, रांम परांगमुख ते गये रीते ॥१०२

समुदाई टीका

इद्र अगनि गये सत देखन, स्यौर दयो तन काटि र मास[4]।
सुर्त्थ सुधन्वा सुदोष कियो दिज, सख लिखत्त भयो बपु नास।

---

[1] छलिवत। [2] गुरदेवा। [3] षोडस। [4] हस ध्रु पुत्र।

देह[1] दधीच दई सुरपति हि, भर्त सु भागवर्त प्रकास।
बिप्र सुदर्सन है हतहासहि, देत तिया धन और न वास ।।७३

रुक्मांगद की टीका

बाग पहोंपन आइ रह्यौ सुभ देवतिया गहे लैमहि मांहीं।
बैगन कंटक पाव लग्यौ इक बैठि रही सुनि के नृप चांहीं।
दास कही भ्रुरगलोक पठावत, ग्यारसि वास दयें सुख पांहीं।
ग्राम न जानत होत कहा व्रत कालिह रही इकठी कबि नांही ।।७४
ढोल फिरें इक लौंडि बनिक्क हु मारि हुती अन खाइ न जागी।
भूपति के ढिग ल्याइ दयी व्रत बैठि बिमांन सुरग्गहि भागी।
देखि प्रभाव हि भूप बिचारत या दिन अन भखे स अभागी।
यौ नर-नारि करें व्रत आवक आइ पुरी सुरगापुर लागी ।।७५
ग्यारसि को व्रत सत्य करयौं नृप बात सुनौ इक तास सुता की।
सेस पिता पुर आइ सुयबर मांगत भैम क्षुध्या अति पाकी।
देत नहीं हरि वासु र आनत भाखि मरें गति ह्वं मम यांकी।
प्रांन तजे उम बेगि मिले प्रभु, भापि कही पन रीति तिया की ।।७६

मोरध्वज की टीका

रोस भयो ग्रम अर्जुन के अति कृष्ण जु जानि दयो रस भारी।
है मम भक्त सु तोहि दिखावत बालक बृद्ध भये ब्रह्मचारी।
जाइ पहोंचत मोरधुजं ग्रह, बेगि कही नृप बात हमारी।
जाइ कही अब सेव करू हरि बैठ हुयी सुनि भामि प्रजारी ।।७७
ऊठि चले रिस बाइ महे पच जाइ कही नृप दौरत आये।
आप दया करि चाहि कमावत भाग्नि भली दिन ये फल पाये।
मोहि कहो स करौं अबही यह बैन रसाल पिऊं ढिग भाये।
रोस गयो सुनि मोद भयो उर, पारिख सैन सु बैन सुनाये ।।७८
बैन सुने न करी पु करयौ हम जो तुम भावत सो मम भाई।
स्यंघ मिल्यौ इन बालक खावत मोहि भलौ कहियौ सुखदाई।
क्यूं करि छोड़उ भूपति को तन आध मिलै मम बात बनाई।
बोलि उठि तिय मैं अरधंगनि पुत्र कहै मम दौ सुधि माई ।।७९

---

[1] देहु।

वात सुनी नृप गात तिया सुन, चीरहि भोरहि नाहि न भाखै।
सीस करौत धरचौ सु चिरचौ मुख, नीर ढरचौ द्रिग भीर न चाखै।
छोडि चले गहि पाव कहे इम, रोवत है बिन कामहि नाखै।
नैन लये भरि रूप धरचौ हरि, दूरि करचौ दुख है अभिलाखै ॥८०

द्यौस कहा अति मोहि रिझाइहु, रीझि दिये बिन मोउ रसाल।
लेहु चह्यौ बर साटि न चूकत, सूकत है मुख देखि बिहाल।
भूप कहै तुम दीन-दयाल, करै कछु नून लखौ सु विसाल।
देहु यहै बर मागि सिताव, करौ मति पारिप यौं कलिकाल ॥८१

अलरक की टीका

†मैं अलरक्क सु बात वखानत, ग्यान दये नहि जाइ बिषै है।
जन्महि आइ मदालस कै तन, सो अभ वासहि नाहि पिषै है।
पीव कहे लघु छोडि गई वन काढि[1] लयो नृप त्रास दिषै है।
छाप उपाडि र बाचि सिलोकन, दौरि गयो दत देव नखै है ॥८२

रंतदेव की टीका

देवसु रतकुले दुसकतहु,‡ बृत्य अकासहि धारि लई है।
खात नही बिन दीन अभ्यागत, वास करै यह बात नई है।
ह्वै अठचालिस द्यौस मिली रिधि, ब्राह्मन शुद्र सुपाक दई है।
राम बिचारी चहू जनमैं हरि, देन लगे दुख देहु कही है ॥८३

[मूल]

छपै **जन राघो निज नवधा भक्ति, करत मिटै जामरण मरण ॥९०**
श्रवण परीक्षत तरचौ सबद-धुनि सुख मुनि गावै।
चरण पलोट लक्ष आदि, अब गतिहि रिझावै।

---

†सग सर्वात्मना त्याज्यौ, यदि त्यक्तु न शक्यते।
स एव सत्सु कर्त्तव्य, सत ससारभेषज ॥१
काम सर्वात्मना हेयो, यदि हातु ना शक्यते।
स कर्तव्यो मुमुक्षाय, सैव तत्याभिभेषज ॥२
‡सकूली मीता माग कन्या।

---

१. काटि।

भजन सुबिड़ प्रहलाद, सु पवन[1] सुत बदमकारी।
बासातम हनुमत, सखा पारथ पण धारी।
पृथु मर्चा बलिअर्पण महाज, भवस ह्वै गयो हरिचरण।
जन राघो निज नवधा भक्ति, करत मिटै जामण मरण ॥१०३[†]

गोह भीलों को राजा सिंगबेर[2] (पुर) की टीका

गोह किरातन को पति रामहि आइ मिल्यौ बनवास सुन्यौ है।
राज करौ यह मो सुख यौ प्रभु साज तज्यौ पितु बैन सुन्यौ है।
दीरघ दुस्ख बिछोह सहै दग लोह चल्यौ फिर सीस धुन्यौ है।
मांस न खोलत राम बिनां मुख और न देखत प्रेम पुन्यौ है ॥८४
संवत चौदह बीति गये हरि आय कहै घर रामहि देखौ।
मोनस मांहि न राम कहां अब नाथ मिस कहि मोहि परेखौ।
भग पिछानि भये पहिचानि जिमे मनु आनि नही सुख लेखौ।
प्रीति क रीति कही नहि जात हिये अकुलात सु प्रेम बसेषौ ॥८५

प्रह्लादजी कौ मूल

मनहर छंद

धनि प्रहलाद कीन्हौं बाद बिधना कै काज
काहू तन आज मैं न छाडू टेक राम की।
अगनि तपायौ तन जिय माहीं एक पन,
हरि बिन काहू बरि देही कौंन काम की।
देख्यौ कसि जल-थल ऊपरयौ भजन बल
रटत अखंड सरमाई सत्य स्याम की।
असुर का कसर गुरुपथ कौ सक्स भरयौ
राघो कहै जीत्यौ जन बाहु धर धाम की ॥९८

[टीका]

इंदव छंद

संकर आदि डरे न हसो रिधि पासि न आवत भी हु डरी है।
भेज दयो प्रहलाद प्रभु छिम आइ पगौं परनाम करी है।

---

१ पबूर। २ सिंगबेरपु।

[†] यहां संख्या में ६ का अन्तर पड़ने का कारण अन्य प्रति मे ९१ से ९७ तक के मनहर छंदों का न होना है।

गोद उठाइ दयो सिर पै कर, देखि दया उर येह धरी है।
दूरि करौ दुख या जग कौ सब, मौ अब द्यौ तव माय[1] बुरो है ॥८६

अक्रूरजो को टोका

अक्रूर चले मथुरा पुर तै, द्रिग नीर बहै हरि कौ कब देखौं।
सौंण मनावत देखन भावत, लोटत है लखि चिन्ह बसेखौं।
बदन भक्ति प्रबीन महा सुख, देव कही यह जीवन भेखौ।
राम रु कृष्ण मिले सु फले मन, स्वारथ लाख जनमहि लेखौं ॥८७

प्रीक्षत की टोका

प्रीक्षत पीवन श्रुति कथामृत, बाढत है निति कोटि पियासा।
जोगिन कै उर ध्यान न आवत, सो हरि देखि मया[2] अभवासा।
भूप कहै सुखदेव सुनौं यह, चित्त कथा नही तक्षक त्रासा।
पारिष ल्यौ मम बुद्धि रही पगि, जाहु जबै थमि होत उदासा ॥८८

सुकदेवजी की टोका

होत जनम चले भजि आरन, ब्यास पिता हि सभाष न दीयौ।
कान परे सुस-लोक दसमहि, बुद्धि हरी सुनि भागुत लीयौ।
जोगुन रूप करम्म करे हरि, भूप सभा कहिनै भय हीयौ।
बूझत सत उन्हैं करि उत्तर, वाचित है सु जबै झर कीयौ ॥८९

मूल

छपै **हरि बिमुखन दड देत है, जन राघो पाइक[3] रांम के ॥**
नमो नव-गृह देव, आदि अनुचर हरिजी के।
पीडत आज्ञा पाई, रांम अनुग्र तै नीके।
नमो बृहस्पति बुद्ध, नमो सनि सोम सहाइक।
नमो भासकर सुकर, नमो मगल वरदाइक।
नमो राह धड-केत, सिर आज्ञाकारी स्याम के।
हरि बिमुखन दड देत है, जन राघो पाइक राम के ॥९९

---

१ माया। २. उत्तरा। ३ पाई।

भजन सुचित्र प्रहलाद, सु धनक[1] धुव भजनकारी।
दासातन हनुमंत, सखा पारथ पण धारी।
पृथु अर्चा बलिपंद भक्त ह, भयस ह्वै गयो हरिचरण।
जन राघो मिल नवधा भक्ति, करत मिट जामण मरण ॥१०३[1]

गोह भीलां को राजा सिंगबेर[2] (पुर) की टीका

गोह किरातन को पति रामहि आइ मिल्यौ बनवास सुन्यौ है।
राज करौ यह मो सुख द्यो प्रभु साज तज्यौ पितु बैन सुन्यौ है।
दीरघ दुःख बिछोह यहै हग लोहू चल्यौ फिर सीस धुन्यौ है।
आंख न खोलत राम बिनां मुख और न देखत प्रेम पुन्यौ है ॥८४

अवत चौदह बीति गये हरि, आय कहै घर रामहि देखौ।
मानत नांहि न राम कह्यो अब नाथ मिलन कहि मांहि परेखौ।
अंग पिछानि लये पहिचानि लिये मनु आनि मही सुख लेखौ।
प्रीति क रीति कही नहि जात हिये प्रभुलाल सु प्रेम असेषौ ॥८५

प्रहलादजी को मूल

मनहर छंद

धनि प्रहलाद कीन्हीं बाद बिषमां के काज
काहू तन त्रास मैं न छाडू टेक राम की।
अगनि तपायो तन जिय मांहीं एक पन,
हरि बिन काहु जरि बेही कौन काम की।
देख्यौ कसि जल-थल अचरयो भजन बस
रटत अखंड सरनाई सत्य स्याम की।
असुर का कसर गुस्यम को सक्य धरयौ
राघो कहै दीस्यौ जन बांह वर धांम की ॥६८

[टीका]

इंदव छंद
संकर आदि डरे न हसो रिसि पासि न आवत भी हु डरी है।
भेज दयो प्रहलाद प्रभु ढिग आइ पगाँ परनाम करी है।

१ अक्रूर। २ श्रिंगबेरपु।

[1] यहां संख्या में ६ का फरक पड़ने का कारण अन्य प्रति में ६२ से ६७ तक के मनहर छंदों का न होना है।

मन बच क्रम राघो कहै, प्रेम सहित सुणि है करण।
ये अष्टादस पुराण, जे जगत मांहि तारण तिरण ॥१०३

ये अष्टादस समृति भली, तिन सुनत नसै अज्ञांन ॥टे०
बैष्णवी, मनुसमृति†, आत्री, जामी, हारतिक‡।
आग्री, जागिबलकि, सांनी, श्री-नांमी, सांमृतक।
कात्याइन, गौतमी, बसिष्टी, दाखी, साखिल।
आसतापि, सुरगुरी, परासुर, कृत मुनि बहुफल।
आसा पासि उदारमति, हरत परत साधन सधनान[1]।
ये अष्टादस समृति भली, तिन सुनत नसै अज्ञांन ॥१०४

राम सचिव नाम ही लीये, अनन्य भक्ति कौं पाइ है ॥टे०
सुमत पुनि जैयंत सृष्ट, बिजई र सुचिर मति।
राष्ट्रबरधन चतुर, सुराष्ट्र मैं बुधि अति गति।
असोकबरज सुख-क्षेम, सदा रुघुपति मन भाइक।
परम धरम-पालक, प्रजा कौं सर्ब सुखदाइक।
राघो अैसे प्रसन कर, सेवति मन बच काइ है।
राम सचिव नांम हि लीये, अनन्य भक्ति कौं पाइ है ॥१०५

पद्म अठारह जूथपाल, तिनके सुमरू नांम॥
सुग्रीव, बालि, अगद, केसरी बच्छ हनुमांनां।
उलका, दधिमुख, दुब्यंद, बहुत पौरष जबुबांना।
सुभट सुषेण, मयंद, नील, नल, कुंमद, दरीमुख।
गधमादन, गवाक्ष, पणस, सरभांग व हरिरुख।
भीर परें भाजै नहीं, रुघनन्दन कै काम।
पद्म अठारह जूथपाल, तिनके सुमरूं नाम ॥१०६

नाग अष्ट-कुल सुचित ह्वै, राति-दिवस हरि कौ भजै॥
इलापत्र, मुखसहंस, अनंतकीरति निति गावैं।
सकु, पद्म, बासुकी, हृदै मै तालो लावैं।

---

१ स ध्यान।

---

†स्वामूभर।
‡जम।

भगवत आज्ञा मैं रहै ये नक्षत्र अट्ठावीस ॥
अस्वनी, भरनी कृतका, रोहणी मृगसर, आद्रा।
पुनरबसु अरु पुक्ष, असलेखा मघा सु साद्रा।
पुरबा उतरा-फा'गुनी पुनि, हस्त, सु चित्रा।
स्वात, बिसाषा, अनुराधा, जेष्टा अतिमित्रा।
मूल, पूरबाषाढ र उतराषाढ, अभीच हुव।
श्रवन धनिष्टा, सतभिषा पूरबा-भाद्रपद।
उतरा-भाद्रपद रेवती सर्व राघो सुमरै ईस।
भगवत आज्ञा मैं रहै ये नक्षत्र अट्ठावीस ॥१००
खग राघो रचना राम की, ते त अर्णं पक्ष गुर ॥टे०
गरुड़ासरण गोविंद अरध के अरण[1]-सारथी।
हंस बसा[2] सारस हेत हुलास आरथी।
चाहृण जस्म चकोर सुवा लगि हरि हरि करि है।
मोर कंठ-कोकिला, पीव पीव चातिक ठरि है।
काक-भुसंड रटि नीम निधि जलतटांग उपगार उर।
खग राघव रचना राम की ये ते अर्णक पंक्ष गुर ॥१०१
राम कृपा राघो कहै इतने पसुपती प्रबा ॥टे०
कामदुघा नदनी कामना पूरण करि हैं।
कपिला बड़ी कृपाल सुरह्[3] लांगुल सिर धरि है।
अरापति गज इन्द्र, नदीसुर सिव को वाहन।
गौरी-वाहन स्यंघ राम बिमुखन अरपावन।
मृग चंद वाहन भलो आदित के उचीश्रवा।
राम कृपा राघो कहै इतने पसुपती प्रबा ॥१०२
पै अट्ठारस पुराण, पे जगत माँहि तारण तिरण ॥टे०
बिष्णु भागवत मीन बराह कूरम बांवन धर।
सिव सकंध लिंग पदम भवख बेवरत कथाधर।
ब्रह्म भारती अगनि गरुड़ मारकंड ब्रह्म डा।
धरम थापि अधरम मारि करि है सतखंडा।

---

1 अरुण। 2 बसा। 3 सुरह्।

मन वच क्रम राघो कहै, प्रेम सहित सुणि है करण।
ये अष्टादस पुराण, जे जगत माहि तारण तिरण॥१०३

ये अष्टादस समृति भली, तिन सुनत नसै अज्ञांन॥टे०
वैष्णवी, मनुसमृति†, आत्री, जामी, हारतिक‡।
आग्री, जागिवलकि, सानी, श्री-नांमी, सामृतक।
कात्याइन, गौतमी, वसिष्ठी, दाखी, साखिल।
आसतापि, सुरगुरी, परासुर, कृत मुनि वहुफल।
आसा पासि उदारमति, हरत परत साधन सधनांन[1]।
ये अष्टादस समृति भली, तिन सुनत नसै अज्ञांन॥१०४

राम सचिव नाम ही लीये, अनन्य भक्ति कौं पाइ है॥टे०
सुमत पुनि जैयंत सृष्ट, विजई र सुचिर मति।
राष्ट्रबरधन चतुर, सुराष्ट्र मैं बुधि अति गति।
असोकबरज सुख-क्षेम, सदा रुघुपति मन भाइक।
परम धरम-पालक, प्रजा कौं सर्ब सुखदाइक।
राघो अैसे प्रसन कर, सेवति मन बच काइ है।
रांम सचिव नांम हि लीये, अनन्य भक्ति कौं पाइ है॥१०५

पद्म अठारह जूथपाल, तिनके सुमरूं नांम॥
सुग्रीव, बालि, अंगद, केसरी बच्छ हनुमांना।
उलका, दधिमुख, दुब्यद, बहुत पौरष जबुबांना।
सुभट सुषेण, मयद, नींल, नल, कुमद, दरीमुख।
गधमादन, गवाक्ष, पणस, सरभांग व हरिरुख।
भीर परें भाजै नहीं, रुघनन्दन कै कांम।
पद्म अठारह जूथपाल, तिनके सुमरूं नांम॥१०६

नाग अष्ट-कुल सुचित ह्वै, राति-दिवस हरि कौं भजै॥
इलापत्र, मुखसहंस, अनंतकीरति निति गावै।
सकु, पद्म, बासुकी, हृदै मै तालो लावै।

---

१ स ध्यांन।

---

†स्वामूमर।
‡जम।

अंसु कमल हरि अजित, कहे आइस न निवारे।
तछक, करकोटक, सीस धरि सेवा धारे।
जन राघो रत राम सौं, मन की आसा सब तजें।
नाग अष्टकुल सुचित ह्वै, राति-दिवस हरि कौं भजें ॥१०७
परचम्मि वृद्ध वृज गोप के, नव पुत्र नंद कौं आदि दे ॥
सुठि सुनंद, अभिनन्द, पुनै उपनंद सु आतुर।
धरानन्द ध्रुवनंद, धरम सत-गुन के चातुर।
धर्मों, कर्मानंद, करम काटन अभिनंदन।
गो-वच्छन के वृन्द, गोपिका हरि रग रगन।
कुल-मध्य कृष्ण जू अवतरे, राघव भगत पुराति दे।
परचमि वृद्ध वृज गोप के, नव पुत्र नद कौं आदि दे ॥१०८
वृज के नर-नारी भक्त लघु दीरघ सब जानि हूं ॥
नंद जसोदा, कृष्ण, धरा ध्रुनंद, कीरति दा।
मधु-मंगल, वृखभान-कुंवरि सहचरि विहरत दा।
श्रीदामा पुनि ओक, सुबल, अरजुन सुबाहु गन।
व्यास-वृन्द वृजतानि स्याम कौं सग रमावन[1]।
राघो मन वच काय करि घोष निवासमि राचि हूं।
वृज के नर-नारी भगत, लघु दीरघ सब जानि हूं ॥१०९
बन-धाम संगि श्री कृष्ण के, अनुग सुचित रहवो करें ॥दे०
चंद्रहास मधुवरत व रक्तक, पत्रक वेते।
मधुकंठो, सुबिसाल रसाल, सुपत्रो तेते।
प्रेमकंद संदानि सारदा, बकुल कुसमकर।
पयद सुद्ध मकरंद, प्रीति सू सेवत गिरधर।
राघो समयो देखि करि, चतुर हस्तक आगें धरै।
बन-धाम संग श्री कृष्ण के अनुग सुचित रहवो करें ॥११०
सपत-दीप सातू समुद्र, भक्त तिते सिर-मौर ॥दे०
जंबू खार-समद पलक्ष चहुं फेर ईख रस।
सालमिली सर मधु सुर्यो कुस घृत देख दस।

---

[1] राधा।

क्रौंच पासि सर दुग्ध, साक दधि को नृमलसर।
पहुकर सागर सुधा, पार सोहै कचन-धर।
परबत लोका-लोक मै, बिटवोक चहुवोर।
सपत-दीप सातू समुद्र, भक्त तिते सिर-मौर ॥१११
जबुदीप नवखड के, सेवक सेव्यन कूं भजूं ॥टे०
बीच इलाव्रत राज, सेस सिव अनुग सु जांनय।
भद्रा हयग्रीव भद्रश्रव, हरिबर नृस्यघ प्रहलादय।
कि पुरसुरांम हनुमत, भरथ नारांइन नारद।
केतमाल श्री कांम रभिक, मछ मनुहु बिसारद।
हिरन्यषड कच्छ अरजु मां, कुरु बराह पृथी सजू।
जबुदीप नवखड के, सेवक सेबिन कौं भजूं ॥११२
राघो ततक्षण तीहि सभा, हरि फेरचो नारद गुनी ॥
राति-दिवस उनमन रहैं, हरि ही कूं देखैं।
टगा-टगी धुनि ध्यान, पलक नहीं लगै निमेखैं।
जिनकी उलटी चाल, काल-जित कूरम श्रंगी।
भर्म कर्म सूं रहत सदा, अबगति के सगी।
स्वेतदीप मधि सत-पुरष, सदा नृबर्त निश्चल मुनी।
राघो ततक्षण तीहिं सभा, हरि फेरचौ नारद गुनी ॥११३

टीका

इदव छद
रूप उपासिक स्वेतहि[1] बासिक, नारद देखन कौ चलि आये।
नैन निहारत मो मति पागत, सैन करी हरि जाहु फिराये।
कुठ गये दुख पाइ कही हरि, साथ लये फिरिकै वतलाये।
ताल पिख्यौ खग ध्यान रह्यौ लगि, बूझत है रिष राम जनाये ॥६०
संबत्सहंस वदीत भये उर, भाव फल्यौ न नही जल पीवै।
स्वाद लगै वह खावत पीवत, नाव बिना पल येक न जीवैं।
पाइ दयो जल नाखि दयो उन, फेरि करचौ उसही भरि लीवै।
देखि खुले चक्षुदे परदक्षरण, भाव भयो खग सेव सु कीवै ॥६१
दीप चलौ अब भाव भलौ उन, जाइ रु देखत वै प्रभु गावै।
आवत हौ जन आरति ह्वै गइ, प्रान तजे रु तिया फिर आवै।

१. स्वेतह।

वाहि कह्यौ समयौ न परी घर, स्वास गये भसिया मन भावै।
यौं सुत मादिक माइ परे सब देखि सभौपन फेरि जिवावै ॥६२

च्यारि सम्प्रदा विगति वरनन　मूल

छपै　ये च्यारि महंत चकवै रचे, जन राघो सब कौं प्रेह ॥टे०
मध्वाचारय भृंग, कलपतर कला-बिथारी।
विष्णुस्वामी विरच-पोष, ग्रमृतरस सर भो भारी।
रांमांनुज निहकांम, रांम पद पारस परसे।
नींबादित निधि नृपति, चतुर चिंतामणि बरसे।
बिधि बिधि सुत सिव सक्ति सौं, भक्ति उथापी येह।
यह च्यारि महंत चकवै रचे, जन राघो सब कौं प्रेह ॥११४
राघो रटि गुण होत गमि, भक्ति काज भूपरि भली ॥टे०
हंस सिव बिरंचि लछमी सनकादिक येते सब के परम गुर।
भव इनके सिष सो भक्ती पुत्र मणि,कलिमल काटण धर्मधुर।
महादेव को विष्णु-स्वांमि-मत,पुनि बिरंचि को मध्वाचारिय।
नींबादित के सनकादिक मत, रांमांनुज के रमा जु भारिज।
पधति प्रणाली प्रणम्य इम, सुध संप्रदा यौं चली।
राघो रटि गुण होत गमि भक्ति काज भू-परि भली ॥११५

अथ रांमांनुज संप्रदा वरनन

महाविष्णु तें विष्णु, विष्णु कै लक्ष ग्ररधंगी।
चरण पलोटै निति सदा सर्वदा रहै संगी।
ता सिष बिष्वक्सेन सपुन भव[1] भक्ति चलाई।
सठकोप पुनि बोपदेव, हरि सू ल्यौ लाई।
मंगलमुनि श्रीनाथ गुरु, पुंडरीकाख धर्म की धुजा।
रांम-मिश्र[2] अरु परांकुस जांमुन-मुनि रांमांनुजा ॥११६
इम रमा पधति परताप रहणि रांमानुज पाई।
रांम-रीति परतीति, सबनि कौं भीति मिटाई।
उपजे सिष सिरदार बहुतरि भये उजागर।
तांन गिर के पुंज सील सुमरणं के सागर।

---
१ पुत्र। २ मिश्र।

रामानुज निज तत[1] कथ्यौ, नृगुण त्रिवृति निरबान पद।
जन राघो रत राम सू, ज्यौं दत सगति मुक्ति जद ॥११७

टीका

मत- राम अनुज्जु सु है लखमन्नहि, तास सरूप यहै उर आई।
गयंद मत्र दयो गुर अतर राखन, जाप करें हरि दीन्ह दिखाई।
छंद आइ दया सबही प्रभु पावहि, गोपुर पै चढि टेरि सुनाई।
जागि परे तिन सीखि लयो वह, भैतरि मुक्ति भये सिधि पाई ॥६३
जात भये जगनाथहि देखन, जान असोच पुजारि उठाये।
साथि हजारन लै सिष सेवत, पूजन विजन भाव दिखाये।
श्री जगनाथ कहै वह भावत, प्रीति खुसी सब और बहाये।
बात न मानत वैसहि ठानत, आगम और निगम सुनाये ॥६४
जब्बर सतहि जोर न चालत, सौक कही फिर खेल पिखायौ।
बाहन सू कहि जाइ धरौ इन, ले सब कौं धरि द्राविड आयौ।
आखि खुली जब देसहि देखत, गोपि मतौ प्रभु कौ किन पायौ।
पूजन[2] वैहि करै अजहू निति, रीझत भावहि और न भायौ ॥६५

मूल

छपै **सत च्यारि द्रिगपाल, चहु भोमि भक्ति चार्पे भलै ॥**
श्रुति-धामा श्रुति-वेद, पराजित पहुकर जानू।
श्रुति-प्रज्ञा श्रुति-उदधि, ऋषभ गज बावन मानूं।
रामानुज गुर-भ्रात, प्रगट आनद के दाता।
सनकादिक सम ज्ञान, सक्र सधिता सु राता।
वुधि उदार इद्रा पधित, सत्रु चलायें ना चलै।
सत च्यारि द्रिगपाल चहु, भोमि भक्ति चार्पे भलै ॥११८
रामानुज जा-मात की, बात सुनत हरि भक्ति ह्वै ॥८०
सत रूप सब कोइ, चल्यौ पार्णों मैं आवै।
दग्ध कीयौ ज्यू भ्रात, कुटब दल देइ बुलावै।
भू-सुर करी गलानि, सुरग सुर लीये बुलाई।
देखे जीमत सबनि, जात नहीं दिई दिखाई।

---
१ नितन। २ पूजन।

याहि कह्यौ समयौ न परी घर, स्वाद गये चलिया मन भावै।
यौ सुत मानिक भाइ परे सब देखि सचोपन फेरि जिवावै॥९२

च्यारि सम्प्रदा बिगति बरनन　मूल

छपै　ये च्यारि महंत चकवै रचे जन राघौ सब कौं मेह॥टे०
मध्वाचारय मूल, कलपतर कला-बिथारी।
बिष्णुस्वामी बिस्व-पोष, अमृतरस सर यो भारी।
रामांनुज निहु कांम, रांम धन पारस परसे।
नींबादित निधि नृपि, चतुर चिंतामणि बरसे।
बिधि बिधि सुत सिव सक्ति सौं, भक्ति ब्यापी येह।
यह च्यारि महंत चकवै रचे, जन राघौ सब कौं मेह॥११४
राघौ रहि गुण होत गमि, भक्ति काज भूधरि भली॥टे०
हंस सिव बिरंचि लछमी सनकादिक, येते सब के परम गुर।
अब इनके सिष सो भक्ती पुंज मणि कलिमल काटण धर्मधुर।
महादेव को बिष्णु-स्वामि-मत,पुनि बिरंचि को मध्वाचारिय।
नींबादित कै सनकादिक मत, रांमानुज के रमानु धारिज।
पधति प्रणाली प्रणम्य हम, गुण संप्रदा यौं चली।
राघौ रहि गुण होत गमि, भक्ति काज भू-धरि भली॥११५

अथ रांमानुज संप्रदा बरनन

महाबिष्णु तैं बिमल, बिष्णु कै भक्त अरधंगी।
चरण पलोटै निति सदा सर्बदा रहै संगी।
ता सिष बिष्वकसेन सगुन मत[1] भक्ति चलाई।
सठकोप पुनि बोपदेव हरि सू ल्यौ लाई।
मंगलमुनि श्रीनाथ सुठ पुंडरीकाक्ष धर्म की धुजा।
रांम-मिश्र[2] अरु परांकुस जांमुन-मुनि रांमानुजा॥११६
इम रमा पधति परताप, रहस्य रांमानुज पाई।
रांम-रीति परतीति सबनि कौं नीति दिढाई।
उपजे सिष सिरदार बहुतरि भये उजागर।
ग्यान-गिर के पुंज, सील गुनगुण के सागर।

१ गुण। २ मिश्र।

सिष पट तारयौ सुर धुनी, गुर मजन करत टेरयौ मधर।
जन राघो राखे रामजी, जन के पग जल तैं अधर ॥१२०

टीका

इदव छंद
सत रहै बहु देव धुनि तटि, है गुर-भक्त जुदौ न रहावै।
जात गुरु परदक्षरा देवन, मो मति छाडहु गग वतावै।
कूप करै सब न्हावन धोवन, गग गुरू मनि ध्यान करावै।
दे परदक्षरा ग्रात भये जन, पाइ सबै दुख साध सुनावै ॥१०१
जानि चले सिष लै करि गगहि, धारहि पैठि अगोछ मगायौ।
सोच करै नहि पाव धरै जब, गगहि बोलि उपाइ बतायौ।
अबुज-पत्रनि पाव धरे, अधरे चलि जाइ तबै पकरायौ।
भीग हुती तटि बाहरि आवत, पाइ परे सबही गुन गायौ ॥१०२

[मूल]

छपै
इम रामानुज के पाटि, पटतर देवाचारिय।
देवाचारिय कै दिप्यौ, हस हरियानद आरिय।
हरियान्द करि हेत, राघवानंद निवाजे।
ताकै रामानद महत, महिपुर मै बाजे।
अब राघौ रामानद कै है, अनतानद सिष बडौ।
येकादस सिष और है, आदिपधित अनुक्रम पढौ ॥१२१
इम रामानद प्रताप तैं, इतनें दिग द्वादस महत ॥टे०
अनतानद, कबीर, सुखानद, सुख मैं भूलै।
सुमरि सुरसुरानद, रांम, रैदास न भूलै।
धना, सेन, पद्मावति, पीपा पुनि नरहरदासा।
भावानद, सुरसुरी, कीयौ हरि घर मै बासा।
परमार्थ कौं अवतरे, राघो मिलि राम रहत।
इम रामानद प्रताप तैं, इतने दिग द्वादस महत ॥१२२

घनाक्षरी छंद
रामानद राम काम सावधान आठौ जाम,
कायागढ़ करि तमाम जीत्यौ मन घेरि कै।
जाति-पाति ऊच-नीच मेटिकै अकाल-मीच,
सार बस्त सार गहि लीन्हौं हरि हेरि कै।

सिष पट तारयौ सुर धुनो, गुर मंजन करत टेरयौ मधर।
जन राघो राखे रामजी, जन के पग जल तैं अधर ॥१२०

टोका

इदव छंद
सत रहै बहु देव धुनि तटि, है गुर-भक्त जुदौ न रहावै।
जात गुरु परदक्षरण देवन, मो मति छाडहु गग बतावै।
कूप करैं सव न्हावन धोवन, गग गुरू मनि ध्यान करावै।
दे परदक्षरण आत भये जन, पाइ सबै दुख साव सुनावै ॥१०१
जानि चले सिष लै करि गगहि, धारहि पैठि अगोछ मगायौ।
सोच करै नहि पाव धरे जब, गगहि बोलि उपाइ बतायौ।
अबुज-पत्रनि पाव धरे, अधरे चलि जाइ तबै पकरायौ।
भीर हुती तटि बाहरि आवत, पाइ परे सबही गुन गायौ ॥१०२

[मूल]

छपै
इम रांमानुज के पाटि, पटतर देवाचारिय।
देवाचारिय कै दिप्यौ, हस हरियानद आरिय।
हरियान्द करि हेत, राघवानद निवाजे।
ताकैं रामानद महत, महिपुर मैं बाजे।
अब राघौ रामानद कै है, अनतानंद सिष बडौ।
येकादस सिष और है, आदिपधित अनुक्रम पढौ ॥१२१
इम रामानद प्रताप तैं, इतनें दिग द्वादस महत ॥टे०
अनतानद, कबीर, सुखानंद, सुख मैं भूलै।
सुमरि सुरसुरानद, राम, रैंदास न भूलै।
धना, सेन, पद्मावति, पीपा पुनि नरहरदासा।
भावानद, सुरसुरी, कीयौ हरि घर मैं बासा।
परमार्थ कौं अवतरे, राघो मिलि रांम रहत।
इम रामानद प्रताप तैं, इतने दिग द्वादस महत ॥१२२

घनाक्षरी छंद
रामानद रांम काम सावधांन आठौ जांम,
कायागढ करि तमाम जीत्यौ मन घेरि कै।
जाति-पाति ऊच-नीच मेटिकै अकाल-मीच,
सार वस्त सार गहि लीन्हौं हरि हेरि कै।

ऊपजे सपूत सिष द्वादस भूमी मैं दीप,
    चवन सू चवन कपूर जैसे केरि के।
राघो कहै पध पाय पाषिके भगत राज
    पूरौ गुर पूरौ साम सिर तपै सुमेर कै ॥१२३

स्वामी रांमानंदजी के आनंद के दव सिष
    तहां दस दीरघ अनंतानंद पाट कौ।
मन बच क्रम धर्म धारयौ सेवा आप¹ पन
    कांम क्रोध छोड्यौ मन मुमस निराट कौ।
बड़ेम की रीति अति प्रीति परमेसुर सूं
    गुर ज्यौं पहूच्यौ पुर आंनी बाही घाट कौ।
राघो कहै राति दिन रांम न बिसारयौ छिन
    सारिक त्रिलोक-मधि धरण विराट कौ ॥१२४

कबीरजी कौ मूल

छपै   अगाह थाह पाऊं नहीं, ज्यौं जस कहू कबीर कौ॥
    श्रीरांमानंद कौ सिष जाति जग कहै जुलाही।
    कासी करि बिसरांम सोधो हरि भक्ति सु ताही।
    हिंदू तुरक प्रमोधि कीये अज्ञानी तैं ग्यांनी।
    सबद रमैंणी साखि सत्य सगलां करि मांनी।
    अनंत प्रभु कारनै सुख सब तज्यौ सरीर कौ।
    अगाह थाह पाऊं नहीं ज्यौं जस कहूं कबीर कौ ॥१२५

मनहर   भरम करम तजि अते गुर रांमानंद
छंद   उपज्यौ आनंद क्रम जन्यौ यौं कबीर कौं।
    कांम क्रोध लोभ मोह मारिकै बजायो लोह,
        सूर-बीर समर्थ भरोसौ तेग तीर कौ।
    साषी सबदी ग्रंथ रमैंणी पद प्रगट है
        सोहै सबही कंठि हार जैसे हीर कौ।
    राघो कहै रांम भजि जगत उधारयौ जिन
        माया-मधि मोख भयो मोतो जैसे नीर कौ ॥१२६

---
१ पूजा।

टीका

इदव छंद
मानि अकासहि वोल भये सिप, जाइ परे मग न्हावन जावै।
लागत ठोकर राम कह्यौ सिर, हाथ धरचौ इतनौ यह चावै।
भक्ति करै गुर-भाव धरै जन, पूछत है उन नाव वतावै।
स्वामि सुनि[1] तव वेगि वुलावत, सिप्प करचौ कव[2] भाति वतावै ॥१०३
पाव लग्यौ जव राम कह्यौ तुम, मत्र वही तिम वेदहि गावै।
खोलि मिले पट मानि सचौ मत, भक्ति करौ तत यौ समझावै।
जाइ वुनै दुवटी हि भजै हरि, येक करै घर काम चलावै।
वेचत आइ मगी अध फारत, द्यौ सव ही सवलै मन भावै ॥१०४
मात तिया सुत भूख मरै घरि, आप लुके कहू धाम न धानै।
सोच परचौ प्रभु भक्ति करै जन, खाड गहू घृत वाल-दि आनै।
तीनि दिना जव वीति गये उन, केसव नाखि दई घर जानै।
मात कहै पकरै दरवारहि, लेत नही सुत येक न मानै ॥१०५
च्यारि गये जन ढूढि र ल्यावत, आइ सुनी हरि जानत पीरा।
वैठि विचारत आप विसभर, न्यौति जिमावत सतन भीरा।
छोडि दयौ वुनवौ प्रभु गावत, विप्रन क्रोध करचौ तजि धीरा।
पाइ विभो निति सूद्र जिमावत, जानत नै हम कौन कवीरा ॥१०६
जात रहौ कित जाउ कहौ किम, राम भजौ अब वाट न मारी।
मान करचौ उन मोडन कौ, अपमान करचौ हम देत जिवारी।
जात वजार लगै अब हाथि र, हौ तुम ह्याहि उपाधि निवारी।
ल्याइ हरी रिधि दै सब बिप्रन, होत खुसी जन कीरति कारी ॥१०७
रूप करचौ हरि बाह्मन कौ तुम, जाहु कबीरहि बाटत भाई।
भूख मरै मति ढील करै जिन, जात घरा सिर देत अढाई।
धाम गये जब देखि खुसी मन, नौतम खेल दिखावत राई।
लै गनिका सब देखत कीडत, भीर मिटावन हासि कराई ॥१०८
साध दुखी लखि साख तहा सत, फेरि बिवेक करचौ कछु औरै।
जात सभा नृप मान करचौ न, तबै इक ख्याल करै जल ढौरै।
पूछत भूपति कारन कौनस, पड[3] जरचौ जगनाथहि ठौरै।
भूपति मानस भेजि दयौ उन, आइ कही सब साचहि चौरै ॥१०९

---

१ मुनि। २ कच्छ। ३. पडा।

भूप कहै त्रिय सौ हुइ साचहि सोच भयो उर पाव गहीजै।
भासि परे सिर भास मरौटहि, डारि कुल्हारी गरे दोउ धीजै।
माजहि डारिव जारहि मारग कीन्ह पुरी हम यौं वपु छीजै।
देखि कबीर गये घसि मीरहि बोझ उतारि कहा हम कीज ॥११०
ब्राह्मन देखि प्रताप उठे जरि स्याह सिकन्दर माइ किनारै।
मात कबीरहि साथि लई सब गाव दुखावत भाइ पुकारे।
वेग बुलावस कौन कबीर स यौं भटकाइस लूट हमारे।
स्याह सखा करि मात कहै सब स्याह सलाम करौ हरि प्यारे ॥१११
सांकल बांधि र गंग बहावत देखि खडे कहि चेटक भावै।
लाकड़ मेलिह र आगि लगावत दीपत देह सु हेम लजावै।
भूमि दये खनि नांहि रहे छिन ऊपरि भाइ र गोविंद गावै।
चालत नांहि उपाइ रहे थकि है उर मांहि भ ग्यांन न भावै ॥११२

मूल

दास कबीर सधीर धर्म्म के, मांमौ सुमेर सहंसक रोपे।
हिंदू तुरक संन्यासी व ब्राह्मण स्याह सिकंदर प्रावि वे कोपे।
झुकायो गयंद मयंद महाबलि स्यघ सरूप सभा बिचि चोपे[1]।
राघो कसा प्रबसा बड़ो बेहद, पैज रही हद के वद लोपे ॥१२७

[टीका]

देखि डरयौ पतिस्याह प्रतापहि माइ रह्यौ पगि भोग न ये है।
गारि हमै हरि तें मति मारिहि स्यौ धन गांवहि मान भये हैं।
भावत राम न भौर कांम रहैं हम धाम न दाम भये है।
धाम पधारत फौज फते करि संत मिले ससनेह छये हैं ॥११३
हारि धुसाद र ब्राह्मन ब्यारहि मुड मुडाइ र साध बनाये।
गायहि मांबहि पूछि महंत न नाम कबीर सु गेर बुलाये।
संतन मावत भाप लुरे बित रांम उचारि बहु विधि मायै।
रूप कबीर बनाइ महंतन भाप गये मिलि भाव रिझाये ॥११४
वेस बनाइ वपू गुर भावत देखि परिहग भसी नही लागी।
विप्णु पधारि दयो जन मानहि भागि गये कुध दौं भइ भागी।

---

[1] चोपे।

फेरि कह्यौ मम धाम चली अव, जौर भजौत रही वुधि पागी।
फूल मगाइ मगेहर सोइ र, भक्ति दिपा इम ले वपु सागी ॥११५

मूल

दास कवी र की तेग तिहू पुरु, है धुर धाक पुकारत माया।
काम र क्रोध से जोध जुगति सू, मारि मरद नै गरद्द मिलाया।
रामहि राम रट्यौ न घट्यौ पन, त्यागि तिरग्गुण नृगुण गाया।
ज्ञान गदा श्रबदा उर श्रायुध, राघो कहै भुव भार मिटाया ॥१२८
दास कवीर धर्म की सीर, तिहू पुर पीर गभीर गभीरौ।
जरणा जल रूप श्रनूप घणी, सु वणी कलि क्रांति ज्यू हेम मै हीरौ।
विधनां विधि सू रधि दै रिझयौ, दिज कौं सव दोवटी दै पर पीरौ[1]।
राघो कहै सव लोक[2] के धोक देहि,श्रैसौ तप्यौ कलि-कालि कवीरौ ॥१२९

घनाक्षरी छंद
श्रजर जराइ कै बजाइ कै विग्यान तेग,
कलि मैं कवीर श्रैसे धीर भये धर्म के।
मारचौ मन-मदन सो सदन सरीर सुख,
काटे माया मोह फंध वधन भरम के।
निडर निसक राव रक सम तुल्य जाकै,
सुभ न श्रसुभ मांनै भै न काल क्रम के।
जीति लीयौ जनम जिहान मैं न छाडि देह,
राघो कहै राम मिलि कीन्हें काम मर्म के ॥१३०

छप्पै
रैदास नृमल बांणी करी, संसै ग्रंथ बिदार नै॥
श्रागम निगम सुंण[3], सवद सब मिलत उचारन।
पै पाणी भिन्नता, संत हंसा साधारण।
गुर-गोबिंद परसाद, मुकति याही पुजाहीं।
ब्राह्मन क्षत्री चकित, काटि उप नयन बतांही।
श्रष्ट मदादिक त्यागि, या चरन रैंन सिर धार नै।
रैदास नृमल बाणी करी, संसै ग्रथ विदार नै ॥१३१

---

१ वीरौ। २ लोके धोक देहि। ३ पुरांण।

टीका

इंदव रामहि नंद सुसिष्य भलौइ क ब्रह्म सु चारिहु चूनहि ल्यावै ।
छं ६ वैस्य कहै इक चून हमारहु ल्यौ तुम बीस-कबार[1] सुनावै ।
मेह भयो तब बापहि ल्यावत भोग धर्यौ हरि ध्यान न आवै ।
रे किम ल्यावत बूझि मगावत वैठ दिसाहुत आप बतावै ॥११६
नीच भयो सिसु छीर न पीवत या दिसु पूरब मात रहाई ।
अवर बन सुन्यौ रमनन्हि दद भयो मनि यौं घसि आई ।
देखत पाइ परे पित-मातहि सीस धर्यौ कर पाप नसाई ।
चोखन पीवत यौ पन जीवत ईसुर जानत फेरि मुसाई ॥११७
साधहि सेव लगे रयदास जु, मात-पिता स जुदा करि दीया ।
सपति ठांव दिया न हुता महु पाहु तिया पति नांव न लीया ।
जूतिन गांठि निबाहु करै तन और उपांनत संतन कीया ।
सालगरांमहि ध्यानि धरावत आप सखा हरि बांटहि धीया ॥११८
पावत कष्ट गनै न भजै हरि सत सरूप धरे प्रभु आये ।
भोजन पांन कराइ रिझावत मेहू करौ सुख पारस ल्याये ।
पाथरकौं मन सु महि कांम भज इक रांम कही समझाये ।
हेम दिखाइ दयो घसि रांपि न हाथि दया धरि छांनि पिछाये ॥११९
मास तियौं दस बीति गये हरि, पूछत है जन पारस रीत ।
ल्यौ कहि ठौर समोइ र धीरस यौ किहि और स पावत भीत ।
मैं फिर जात सुनौं मथ बात महीरहु पांच दई निति मीत ।
पूजन हू करते मय मांगत राखि कही प्रभु राखत चीत ॥१२
आय समानि चणावत मंदिर, साधन राखि भली बिधि चीन्हीं ।
तांमि बितांनहु ठौरन ठौरन भाव अमति सु कोरति कीन्ही ।
राग र भोग करै बिधि भिन्नि भाह्मन बैर धरै बुधि दीन्ही ।
आप सिखावत बिप्रन कौं हरि भीच तिया महलाइत भीन्हीं ॥१२१
प्रेम सहेत करै निति पूजन यौ रयदास झिम्यौहि लड़ावै ।
तीहु सिखावत भूपति कौं दिज होइ खमा मुखि मारि सुनावै ।
राम बुलाइ कहै नृप जोर न न्याव करै हरि मैम सुहावै ।
राखि सिंघासन रोचन कै बिधि तेउ बड़े जिन पै प्रभु आवै ॥१२२

---

१ कबीर ।

मूल

दास रैदास की पैज रही निवही, सर्ब लोक सिरै मधि कासी।
बिप्रन बाद कियो यह जानिकें, सूद्र क्यूँ सालिगराम उपासी।
टेक यहै बटवा बिचि राखहु, जाहिकै प्रीति है ताहिक आसी।
राघो कहै गये दास रयदास पै[1], प्रीति खुसी हरि जाति न जासी ॥१३२

टीका

गढ चितोर हि भूप तिया सिषि, आइ हुई उस नाम मुझाली[2]।
साथि कई द्विज देखि उठे दझि, भूपति पै स सभा मिलि चाली।
भाति उही धरि है बिचि ठाकुर, पाठ करै द्विज है सब खाली।
गावत है पद हौ अघ-मोचन, आइ लगे उर प्रीति सु पाली ॥१२३
देसि गई फिरि कागज भेजत, आइ दया करि पावन कीजै।
आप चितौर गये धन वारत, व्राह्मन आवत पाहू जिमीजै।
जीमन कोज लगे जबहि दिज, दोइन मैं रयदास लखीजै।
आम्हनि साम्हनि पेषि भये सिष, काटि र कध जनेउ दिखीजै ॥१२४

पीपाजी कौ मूल

छपै [पीपै सिंध प्रमोधियो, जगत बात बिख्यात है॥]
देबी द्वादस बरष, सेय करि मांगत मुक्ति।
सक्ति साच कहि दई, लाइ मन करि हरि-भक्ति।
श्रीरांमांनद गुर धारि, करचौ अति भजन अनूप।
परचा पद परसिधि, धरे उर सत सरूप।
परस पछौपै सरस पुनि, जन राघो आक्षात है।
पीपै स्यध प्रमोधियो, जगत बात बिख्यात है ॥१३३

इदव छद देवी दयाल भई दत दैन कौं, मागि जितो मन भावत पीपा।
जन के मुख तें यह जाब भयो, मोहि मोक्ष करौ जननी सत दीपा।
दीन भई दुरगा मुख भाखत, मोक्ष र मोहि नहीं छल छीपा।
राघो कहै गछि ज्ञांन कै मारग, राम भजौ रामानद समीपा ॥१३४
दक्षिन देस नरेस वडै कुल, रांम कै कांम कौं रावत पीपा।
रज कौ रज मां प्रगट्यौ अज मा, अजबस को छाप कौ अस उदीपा।
काम कलेस प्रवेस न पाखड, सीतार है दिन राति समीपा।
राघो कहै भजनीक भलौ भड, नाव की तेग सूं नौखड जीपा ॥१३५

---

१ कै। २ सुझाली।

टीका

मत्त गयंद

भूप गयो गढ गागुन को पुनि सेवत देविहि रंग लग्यो है।
चक्र हुतो पुर संत पधारत धून दयो हरि भोग पग्यो है।
सन करयौ रजनी सुपनै महि भूप पछारत रोइ भग्यो है।
भापन कौं न सुहात फिरयौ मन देवि परी पगि भाग जग्यो है ॥१२५

जानत है सब स्यांन भई नृप जात बनारसि स्वामिहि पासा।
जांन लग्यो सुगुरू ढिग भदर, द्वार सु रक्षक वर्जत तासा।
जाइ कही प्रभू भूपति भावत ना इक कांम न भाप उदासा।
वेग छुटावत कूप परौ भव, जात परसहि देत हुलासा ॥१२६

दास करयौ कर सीस धरयौ उर, नांव भरयौ कहि जाहु तहांहीं।
साधनि सेवत दे धन धामहि, कीरति भाइ कहै हम मांहीं।
भाइस पाइस भावत स्वे पुर, यैहि करी जन प्रीति करांहीं।
कागद भेजत बोल करौ सति चालिस संत सुसंगि चलांही ॥१२७

साधि कबीर रदास हि यादिक सैर कनै सुखपालहि ल्यायौ।
लागि पगां सब कौं परनांमहि मांहि पधारत मास छुटायो।
सेव करि निति भेव मिठाइन[1] राग करे गुण बीभ न भायो।
देखि भगति मगन भये सब बैठि रह्यो कहि साधिहि ध्यायो ॥१२८

साधि चली त्रिय द्रावत वर्जत मांनत नांहि भणी बर पावै।
फारत कमर ज्यौं[2] गलि मेखलि भूपन दूरि करौं मन भावै।
चांम्हन सांम्हन देखत भोमनि रांय चली इक सीत रहावै।
नांखिहु याहि तबै वहु वारत नागि भई गुर कठि लगावै ॥१२९

मूल

मनहर छंद

ऐसी सूर-बीर न सरीर सक मांनै नैक,
          पीपाजी प्रचंड नवखंड मध्य गाइये।
सीताजो सहत तजि मदन को मारयौ मांन
          नगन ह्वै नाची जिहूं लोक मैं सराहिये।
छाडि बीमहां भोग भजि स्वांमी संगि चली गहि,
          कांमरी कमरि सिर मांगी भिक्षा पाइये।

---
१ मिठाइन। २ ज्यौं।

रघवा रतीक असि पीपोजी पारस अंग,
उधरे हैं ताकै सगि अनत बताइये ॥१३६

टीका

इदव छद
आप दया करि द्यौ अव काहुक, मैं न रखौ इन साच कही है।
सौह कढावत साथि लई जब, चालत ही दिज पात मही है।
भैर लयौ उन ज्याइ पठावत, चालि सबै हरि धाम लही है।
कोउ दिना रहि मागत आइस, सागर डाकि परे सु गही है॥१३०
लैन पठाइ दये हरि स्वै जन, देखि पुरी फिरि कृष्ण मिले है।
कचन म्हैलन म्हैलन क्रीडत, सात दिना सुख पाइ भले है।
देव कहै जइये अब बाहरि, मान तनै हरि रूप झिले हैं।
डूबि रह्यौ जन ह्वै अपकीरति, व्याकुल ह्वै डर मानि चले हैं॥१३१
साथि भये नवडावन कौं हरि, प्रेम वधे जन बाहरि आये।
लेत पिछानि सबै इक आचर्य, अबर भीजत देह सुकाये।
छाप दई जग पातग काटहु, ऊठि चलौ कहि सीत जनाये।
मारग चालत तुर्क मिल्यौ इक, खोसि लई तिय राम छुडाये॥१३२
जाहु अबौं घर नारिहि कौं डर, राम न जानहु यौं उठि बोली।
पारख लेत सुहै हरि हेत, सुनी निहचै तब अतर खोली।
मारग दूसर जात मिल्यौ हरि, दे उपदेस मिटावत रौली।
सेष सज्या हरि देखि घनेर हि, बास हरे करि चीघड छौली॥१३३
भक्तन देखि कहै तिरिया, पति नै घर मैं कछू प्रीति कराई।
बेस उतारि रु बेचि लयो अन, पाक करौ तिय देत छिपाई।
भोग लगाइ रु जीमन बैठत, ल्यौ तुम दपति पीछै रहाई।
जौ तुम पावत तौ हम पावत, सीत गई वत नग्गन सु पाई॥१३४
वेस कहा तुम यौंहि रहै हम, सतन सेव करै इम बाई।
आवत साध अनद अगाधहि, देह रहौ किम बात न भाई।
फारि दियो पट बाधि कह्यौ कटि, हाथहु खैचत बाहरि आई।
भक्त यहै हम भक्त कहावत, होइ इनौ पहि स्वामि सुनाई॥१३५
बारमुखी वणि ल्याइ धरैं घन, चालि गई जित नाजहि ढेरी।
आवत लोग नखै द्रिग रोग रु, चाहत भोग कटाक्षहि फेरि।

ज्ञानहि देवन स्वामि चले किन, जाइ कही अब सेव कराई।
जीन करावत मोचिन कै घरि, आइ परचौ पगि यौ सुनताई ॥१४३
बाझ तिया इक रूपवती गृह, मागत स्वामि न ल्यौ मन नाही।
ल्यान चल्यौ गुर स्यघ बन्यौ लखि, होत खडौ डर दोइ पखाही।
स्यघ मिट्यौ पुनि बाल भयो तिय, देखि प्रभावहि सीस नवाही।
आप खिजे वह भाव कहा, तव दास करौ अब ठेठ निबाही ॥१४४
दे उपदेस कियो सुध भूपति, नेम लयो फिरि धाम गयो है।
नाम भगत्त तिया निसि मागत, लेहु कही भजि है न पयौ है।
लार भगी दिन होत चली नहि, धामन धामन देखि नयो है।
मात चलौ तव धाम धरौ फिरि, काम मिट्यौ गुर-भाव भयो है ॥१४५
च्यारि बिषी नर स्वाग लयो धरि, मागत सीतहि बेगिहि लीजे।
अग बनाइ रही घरि येकल, आवत, आकुल जाहु रमीजे।
जातहि स्यघनि खावन आवत, खात नही प्रभु भेष धरीजे।
रोस करै तुम भाव निहारहु, मानिहु ये सिष राम भनीजे ॥१४६
सतन कौं दल लेरु पुवावत, गूजरि मागत तेर दुगानी।
आवत भेटहि आजि सबै तव, पीपहि साच स बात बखानी।
माल चढावत आइ महाजन, है सत च्यारि हुवो प्रवानी।
देत न लेत दयो समझाइ, बुलाइ मिलाइ जिमाइ सिहानी ॥१४७
ब्राह्मन कै घर चक्र भवानिहि, पीपहि न्यौतत सत सुजानी।
रामहि भोग लगाइ र पावत, ल्याव सबै विधि थोर स आनी।
भोग लगी रिधि ईस्वर कै सब, भूख मरौ द्विज रोस भवानी।
वै किन मारत जोर न चालत, छोडि दई हरि भक्ति करानी ॥१४८
तेलनि रूपवती इक देखि र, स्वामि कहै करि राम उचारा।
जाइ धणी मरि राम कहै जरि, बोलत क्यू न भगत्त विचारा।
तौ जबही करि जात धणी मरि, होत सती तब राम सभारा।
स्वामि कहै अबलै निस-बासुर, तौ रजिवावत ल्यौं रजि वारा ॥१४९
भूपति भैसि दई बन मैं चरि, आपहि आइ रहै घर माही।
दोहि विलोइ र साधन पावत, छाछि रहै फिरि राव रघाही।
चोरि लई उन जान दई फिरि, पाडि न ल्यौ वह सोचि रहाही।
हौ तुम कौन स पीप कहै मुहि, देत भये अर पाइ पराही ॥१५०

गांव गये जित भेट भई बहु म्हौर दई भरि गोहुन गाडी।
चौरन सोधि लये स चले जब दौरि कही तुम म्हौर न छाडी।
पाहन ये पहुचाइ दये फिर, शिष्य भये सब भैंसि र पाडी।
त्यात धर्रा धन सीत सिभ उन भावत है सब संतन माडी ॥१५१
पांचहि गांवन तैं दल भावत मांनि भये धन जाइ रिझाये।
गांवहु ते सिष दोइक केरमि देखि लगी पगि आनन्द पाये।
आप तभ्यौ धन वारि दये उन होइ उदास चलो हरि ध्याये।
दूसर गांव मिलेस तज्यौ तन पांच जर्गा जरते बिसराये ॥१५२
मैंनपुरी चलि टोबहु आवत देखि सियाबर मैंन सिराये।
दास सुनौं बनियां रिधि सेवत सात सतौ समयाह बताये।
कामद हाथि दयो भव जीवत सोग मचावत धांक नसायें।
सोच भयो बनियां मुख सूकम भावत भेट दये सु सिखाये ॥१५३
स्वांमि कहै सिष त्यागि करो गृह ठीक यहै मन मैं सु करीजे।
हूं नृविर्ति जहां तह बैठि र मांग भिक्षा हरि ध्यांन धरीजे।
छोडि चले घर संपति ही बहु तीन बिना मह छूटि परीजै।
आइ रहे इक उज्जड़ गांवही भाइ सन्यास जमाति भरीजै ॥१५४
ब्राह्मन येक हत्या कर भावत स्वांमिन सूं सब बात कही है।
गंगहि न्हाइ र पाक जिमावत ब्राह्मन तौ मम लेत नही हैं।
सामगरी इत ल्याव जिमावहि दूरि करै तब पाप सही है।
विप्र र साध सन्यास बुलावत पांति भई फिरि्यैस सही है ॥१५५
पूरब कौं अबसेर भई नर भेजि बुलावत स्वांमि पधारे।
भेट करी बहु संपत्ति आदिक आप महोछव गांव सिधारे।
पोछहि साध सिया ढिग आवत देहु हमैं धन मीह मधारे।
दे दइ संपति पी घर मैं सब होत खुसी मनि भौतस भारे ॥१५६
कागद भावत श्री रग की ढिग आत भये बिवसा धन हारा।
बैठि सप्यो मन ध्यांन करै हरि, भावहि रूप चढ़ावत हारा।
पांन रह्यो चिन मोम बह्यो तब पीप बह्यो मन स्याव सिगारा।
पूजन छाडि सितावहि भावत पूछन कौ तुम भौम उचारा ॥१५७

---

१ रुपा।

नाव बतावत ज्ञान सुनावत, श्रीरग बोलत बाग चलीजे।
जात भये जन बाजन ले करि, जाइर ल्यावत सत पतीजे।
राखि धरा सब बात बखांनत, स्वामि कही चलि ताल रहीजे।
लेत[1] करि उन आतक डेरनि, रूपवती लखि सिप्य करीजे ॥१५८
भाव भरयौ उर नाव धरयौ उभ, तीरथ जा करि टोडहि आई।
पाचक डारहु बासन ल्यावत, धौर छरी नटि हासि कराई।
बोझ खरा जल पीव न जातस, हाथ अठार बधे रहराई[1]।
ब्राह्मन पथ पुकार रह्यौ तब, पूछत स्वामिन क्या दुख भाई ॥१५९
धीह कवारि नही घर मैं धन, आप कहै चल्नि तोहि दिवाऊ।
भद्र कराइर भेष बनावत, बोलिय ना नृप पासि पुजाऊ।
ले करि जात भये जन म्हैलन, पूजि इन्है सुनि भेद बताऊ।
ये हमरे गुर कै सम जानहु, भेट करी बहु चालि नडाऊ ॥१६०
रैनि उछोहुत द्वारवती महि, लागि चिराक वितान बरै है।
भूपति पासि हुते जन देखि र, लेत बुझाइ सु हाथ मरै है।
मानत नाहि कहै सब लोगन, स्वामिन देखि अचभ करै है।
मानस भेजि र ठीक मगावत, आइ कही सति पाइ परै है ॥१६१
ब्राह्मन आइ कही यक स्वामिन, अन उपावन बैल दिवैयें।
तेलक छोकर-पावन ल्यावत, बैल दयो द्विज जाइ उपैये।
बालक रोवत धाम गयो पित, सूरजसेनहि जाइ कहैये।
भूप पठावत जाहु उनौं पहि, आइ परचौ पगि है घरि जैये ॥१६२
काल परचौ सत पन्द्रह बीसक, द्वन्द मच्यौ मरि है सब लोई।
स्वामिन कैसु दया मन मैं अति, देत सदा व्रत आवत कोई।
पात भयो धन भूमि गड्यौ बह, देत लुटाइ न राखत सोई।
कान सुने जितने परचे कहि, पीपहि के गुन पार न होई ॥१६३

धनांजो कौ मूल

छपै [सतन कै मुख नाखि कैं, धनैं खेत गोहूं लुणे ॥]
बीज बांहरणे लग्यौ, साध मूखे चलि आये।
मगन भयो मनमांहि, सबै गोहूं बरताये।

---
[1]रासवक।

मात पिता त बरस रिकत ऊमरा कढाये।
भक्त भाव सो भजे, और तैं बधे सवाये।
राघो प्रति प्रविरल भयो, बिन बाहें निपजे सुऐ।
सतन को मुक्ति बाहि कै, धने खेत गोहूं सुऐ ॥१६७

मनहर छंद

गाड़ो भरयो बीज बोधि सतन कौं बांटि दयो
ऐसे रह्यौ ध्यान तिहूं लोक धनां जाट कौ।
पारोसी के खेत कौ करार कीन्हौं हारिम सूं,
हाथ मारि भयो भ्रम कौल कीयो काट कौ।
गेहूं लगे ठौर कछू चोरन कौं नाहीं और,
ऊमरा कढाये डर मान्यौं राम हाट कौ।
राघो कहै खेत हरि हेत प्रति नीपज्यौ सु
दिन दिन बढ़त प्रबाह पुनि ठाठ कौ ॥१६८

[टीका]

मत गयंद छंद

खेत कथा कहि दी सब राघव फेरि सुनौं इक पैल भई है।
बैसनु ब्राह्मन सेव करी भरि, देखि ठरयौ मन माँगि भई है।
गोल प्रसन उठाइ दयो वह भ्रत भयो भति बुद्धि दई है।
भोग लगावत भाव करावत गास न खावत चित्त नई है ॥१६४
पाइ परै बिनतीहु करै तजि भूख मर प्रभि के जु पुवायो।
रोटि न स्यावत मित्य जिमावत चोरहि[१] पावत यौ मन लायो।
कोउ जुवावत वाहि रिभावत गाइ चरावत यौं प्रभु भायो।
प्राइ फिरौ द्विज देखत नै कछु, बात कही सब राँम दिखायो ॥१६५
गाइ चरावत देखि खुसी द्विज भाव भयो जल नैन ढरै हैं।
धाम सिधारि सु रांम रिझावत प्राय हुवा जिम रीति करै है।
रीझि कही हरि आहु धनां गुर रांमहि नंद करी सु सिरै है।
आइ भये सिप कठ लगावत काम करै धरि ध्यान धरै है ॥१६६

सेनजी को मूल

छपै

[जगत माँहि यह प्रगट है सेन सरन राखी हरी ॥टे]
सुणि धरि प्राये संत भक्त इक बड़ो हुजांमी।
टहल करी मन लाइ जानि कै अंतर-जामी।

---

१ गौर। २ चोरहि।

लीये रछौंडी काच, भूप पैं प्रभु पधारे।
मरदन कीयो तेल, राइ वहौं भये सुखारे।
सैंन देखि नृप सिष भयो, आज मुक्ति मेरी करी।
जगत माहि यह प्रकट है, सैंन सर्म राखी हरी॥१३९

इदव छंद एक समै जन सैंन कं संत, पधारे हु ते उन प्रीति लगाई।
मंजन बेर भई नृप टेरत, आपन आइ भये तहा नाई।
सैंन सुन्यौ समजो[1] जब बीतिगौ, राजा के रामजी दाखिगौ पाई।
राघो कहै अपनै जन की, महिमा हरि आपन आप बधाई॥१४०

टीका

सैन भगत्त सु बाधू रहै गढ, नापिक जाति रु संतन सेवै।
नेमहि साधि चल्यौ नृप न्हावन, आवन साध फिरचौ मन देवै।
सेव करै जन नाहि डरै हरि, भूप नहावत पाइन भेवै।
सैंन चल्यौ फिरि जाइ मिल्यौ नृप, जानि अचंभ कहा यह टेवै॥१६७
भूप कही फिर क्यू करि आवन, ढील भई घरि संत पधारे।
मैं अब आवत भूप लग्यौ पगि, आप कृपा मम राम सिधारे।
सिष्य भयो उर भाव लयो अर, प्रेम छयो सब पित्र उधारे।
रीति वहि अजहू सुत नातिन, और कुटंब करचौ निरधारे॥१६८

मूल

छपै यम रसन[2] राम रस पीवतै, सही सुखानंद निसतरचौ॥
गौडी राग गंभीर, हेत्र सू हरि जस गायै।
गगन मगन गलतान, नृषि नृभैं पद पायै।
निज तन[3] निगम रसाल, चाखि रस चित दै चोखो।
चौथौ फर फारीक, गहत कछू रहत न धोखो।
जन राघो तर तृभवन-धणी, सर्ब-घट-ब्यापक बिसतरचौ।
यम रसन राम रस पीवतै, सही सुखानंद निसतरचौ॥१४१
यौं रामानंद प्रताप तै, जन राघो भेटे राम कौं॥
बडौ बित त्रिंद भक्ति-कंद भावानंद पायौ।
यौं अखंड निज जाप, अहौं-निसि हरि हरि गायौ।

---

१ समवो। २ रसिक। ३ तत।

त्रिविधि ताप तन दूरि, जीव के प्राये षरणां।
तारिक मंत्र सुनाइ मिटायो जामण-मरणां।
सुख पायो संसौ मिट्यौ, पूजि परम गुर-धांम कौं।
यौं रांमांनंद प्रताप तें, जन राघो भेटे रांम कौं ॥१४२

सुर सुरानंद साचे मतै, महा-प्रसाद सब मांनियौं ॥टे०
षसे ज्ञात मद्य मध्य, जीमिये बरा बाकसुल।
पीछें पाये सिवम, देखि स्वांमी की सुभ चल।
बासू प्रापन कह्यौ, वमन करि नांखि प्रभागे।
उन फिरी कीयो ढेर, तिसे जाये मे प्रागे।
सुपति सुरसुरी उगले, पुसप पतासे जानियौं।
सुर सुरानंद साचे मतै, महा-प्रसाद करि मांनियौं ॥१४३

इंदव साच मतै सुर सुरानंद नाव से, काहू सौं मान गुमांन न जाके।
अ द दोजमी दुष्ट दुसील इसे परि, क्षोभ भरे विष खिन ताके।
वे निरदोष निरपष निरमम, ताहू सौं खेचर खेचरी हाके।
राघो कहै भर भीर परें, प्रगटे परमेसुर बोधि सभा के ॥१४४

छपै यौं निपुन नर-हरियानंद की वा माता सूं महिमां भई ॥
लगी भरन की भींक नंद क महां बरीतौ।
हुतौ दुपा को द्वार सहर में सकल वबीतौ।
राघौं क्ती महंत मात की क्षाति उपारी।
तब कीयो भवांनी कौल भख ग्रह लकरी डारी।
इक पारौसी हरि विमुख सत के भोरे धूको।
फूटे बाइ कपाट जाम पाप करयौ चूको।
माप बरसे की बैठ गहि नित साकत के सिरि दई।
यौं निपुन नरहरियानंद की वा माता सूं महिमां भई ॥१४५

यौं नारि सुर-सुरानंद की, प्रभु राखी प्रहलाद ज्यूं ॥टे०
ध्यांन करत धर्महीन असुर जब भये सकांमी।
स्यघ रूप कौं धारि प्रगत भये अंतरजांमी।
धरि धरि पटके दुष्ट नष्ट दांतन उर फारे।
कछू जीवत गये भाजि महापापी संघारे।

राघो समरथ राम धनि, भक्त-बछल बिद कहत यूं।
यौं नारि सुरसुरानंद की, प्रभु राखी प्रहलाद ज्यूं ॥१४६

मनहर छंद
यह हित रजखानि मिली आनि हित जानि करि,
स्वामी रामानंद गुर सिष पदमावती।
मन कौ उतारयौ मान उरमी उद्यम आन,
बिसरै न राम रांम रहै गुन गावती।
गुर कौ सबद उर भ्रम कौ बलायो पुर,
ज्ञान-ध्यान सील सत और वृति जावती।
राघो यहि कासी मधि हाथी जीयो हाथ देत,
प्रसिधि प्रवीन भई आपौ न जनावती ॥१४७

छपै
जन राघो रटि रांमहि मिले, ये दाता आनंद-कंद के ॥टे०
कर्मचंद क्रमगलित जोग जोगानंद पायो।
पैहांरी परसिधि समझि सारी हरि गायो।
मगन मनोर्थ अल्ह भयो श्रीरंग रांम रत।
कीयो गयेस प्रवेस मैंह[1] मन दीयौ परमेतत।
येते आठौं अटल सिष, स्वांमी अनतानंद के।
जन राघो रामहि मिले, ये दाता आनंद-कंद के ॥१४८
धनि अब गति अचिरज भयो[2], यौं अंब नवायो अल्ह कौं ॥
उपवन उत्तम[3] सुथांन, फूल फल ता मधि भारी।
तहां महत भयो मगन, समझि सेवा बिसतारी।
भवतबिता कै भाइ, असुर अज गैबी आये।
उन लीन्ही छांह छुड़ाइ, सत मुनि मारि उठाये।
तब राघो रांमहि रिषि भई, वै सठ समझाये कलह कौं।
धनि अब गति अचिरज कीयौ, यौं अंब नवायो अल्ह कौं ॥१४९

टीका

मत-गयद
जाइ चले इक बाग निहारत, अल्ह भई मन पूजन कीजे।
आव रह्यौ पचि मालिहि जाचत, लेहु कही अब[4] डार नईंजे।
जाइ कही नृप मौज हुई जिम, प्रीति भई सुनि पाव गहीजे।
आइ पर्यौ पगि आजि भलौ दिन, सीस दयो कर राम भजीजे ॥१६९

१ मेहा। २ कियौ। ३ तमसथांन। ४ तव।

श्री रंगजी की टीका

श्रीरंग नाम सरावग ग्राम हुतौ दिवसा तिन बात बखांनी ।
चाकर ही अम-धाम गयो उत, दूत भयो इन भाइ सखांनी ।
नाइक नें सब जात स देखहु सीम बड़्यो पसु मारि दिखांनी ।
रांम भज बिन ह्वै जग यौ गति भक्त भयो सिर धनत रखांनी ॥१७०
पुत्र दिखावत भूत सरूपहि सूकत आत सु वृक्षि सूतौ ।
मारन ध्यावत रैनि उठे जन मास करी मम मौत बिगूतौ ।
होत सुनाग तिया पर सू रत भूत हुवो तव पाव पहूतौ ।
रांमहि नाम सुनाइ करयो सुध आप कही फिरि होइ न भूतौ ॥१७१

पैहारीजी को मूल

छप्पै
निरवेद दिपायौ कृष्णदास अनत जिक पीयौ जुगध ॥८०
बड़े तेज के पुंज, रांम बल काम सघारे ।
चरणांबुज अलि-मन, राव राजा सिरि धारे ।
जाकौं दसा बई तास तजि कर नहीं कीयो ।
सरण आयो कोइ ताहि शुभ पद दीयो ।
बंस बाहिर्मि रवि प्रगट साध सुनें सुधि है सुगध ।
निरवेद दिपायौ कृष्णदास, अनत जिके पीयौ जुगध ॥१५०
कृष्णदास कलि-कालि मैं, दधीच ज्यू दूजै करी ॥
व्याघ सखि यौं जानि काटि तन मांस खुवायौ ।
भई पहुँन गति भली, जगत जस भयो सवायो ।
महा अपर बैराग काम कंचन ते न्यारे ।
हरि धर्मी सुठ पंथ लेत प्रह निस मतवारे ।
गाथा दिय आगम निगम रीति सनातन उर धरी ।
कृष्णदास कलि-काल मैं दधीच ज्यूं दूजैं करी ॥१५१

इंदव
८८
नांम अनंत दयो अनतानंद यौं प्रगट्यौ कृष्णदास पैहारी ।
जोग उपास्यो जुगति सू तेजसी अंतरवृत्ति पयव्रतधारी ।
आंय परयो नर सीस कृपा करि तास की मेर भौंटी न निहारी ।
राघो बड़ो पहलो[1] मिल्यो राम कौ मोक्ष को पंथ निवाप न भारी ॥१५२

---
१ जन ।

काटि सरीर दयो भक्ष स्यघ कौं, पंज रही कृष्णदास की भारी।
प्यड ब्रह्मण्ड स्थावर जगम है, अब मैं विस्व रूप विहारो।
संतन कौ अबस्स दयो जिन, ज्यौं तन सौंपत नाह कौं नारी।
राघो रह्यौ गलतै गलतान ह्वै, राम अखड रट्यौ इक तारी ॥१५३

टीका

जा मिर हाथ दयो न लयो कछु, राज दयो उन भूप कलू कौ।
डूगर व्यौर मिले सुत मातहि, दे हरि पूजन सत सलू कौ।
थार जले विपरी मु लई सुत, भोग विना दुख पात हलू कौ।
मारन कौ तरवारि लई जन, वोट लई धन देत मलू कौ ॥१७२
भूपति पुत्र भगन्त भयो भल, मत सलाधि नही जन अैसौ।
साघ तिया ग्रभ दे जुग पातलि, वालक है गुर आप कहै सौ।
भेष वरचा इक जूतन वेचत, भूप कहा कर जोरि हरै सौ।
त्याग करौ जग होइ वुरौ धन, देर रिझावत पाइ परौ सौ ॥१७३

मूल

छप्पै पैहारी गुर धारि उर, सिष इते भये पार सब॥
अग्र कील्ह अरु चरण, नराइण पुदमनाभ बर।
केवल पुनि गोपाल, सूरज पुरषा पृथु तिपुर।
टीला हेम कल्याण, देवा गगा सम गंगा।
बिष्णदास चादन, सबीरां कान्हा पुनि रगा।
जन राघो भगवत भजि, सिर तै डारचौ भार अब।
पैहारी गुर धारि उर, सिष इते भये पार सब ॥१५४
स्वइछा भीषम गवन, त्यूं कील्ह करण त्याग्यौ सरीर ॥टे०
राति दिवस हरि भजै, पलक नहीं अतर पारै।
जेते प्राणी भूत, नाइ सिर पाप निवारै।
नाग डसे त्रिय बार, जहर नहीं चढ्यौ लगारा।
सांखि जोग मजबूत, चले ह्वै दसवें द्वारा।
राघो बल परब्रह्म कै, सुत सुमेर दे सरस धीर।
स्वइछा भीषम गवन, त्यूं कील्ह करण त्याग्यौ सरीर ॥१५५

इदव छद कील्ह करण सरणं सम्रथ कै, यौं परमेसुर पैज सुधारी।
काम न क्रोध न मोह न मंछर, नृमल ह्वै निज आत्म तारी।

मोघ नृदोष उभार कीयो अस दोष मिटे सब देह क भारी।
राघो कहै परचौ भयो प्रतक्ष, गूजरी मैक टर नहीं टारी ॥१५६

टीका

दव सुमर हुते गुजरातहि बैठि विमान सु धामहि चल्ले।
कीन्ह र मान हुते मथुरा महि देखि प्रकास उठे चहि मल्ले।
भूप कहै प्रभु काहि सुनावत मेर[1] पिता हरि माहि सु मिल्ले।
मानि अचम पठावत मानस, आइ कही सति पावहि मिल्ले ॥ ७४
जो हरि प्रीति भई श्रुति भीति सनातन रीति सु पूजन कीजे।
फूलन हार पिटारि मझार बस जन[2] ध्यार स फेर कलीजे।
तीनहि बेर दसाइ पिरे जम भँर बाधी नही राम भजीज।
सत सभा महि चढि मिले प्रभु जोग कला ब्रह्म रंध्र भनीजे ॥*७५

मूल

छप्पै अग्रदास आगर भयो, हरि सुमरण पन प्रेम को ॥८०
बहुत बाग सूं प्रीति रीति, हरि को चित धारणौं।
नींबै गौंदै आप आप परवाहै पारणो।
जो उपज फल फूल, सोई प्रभुजी कों अरपै।
साध-लक्षण सा-पुरष भगत भगवत सु दरप।
राति दिवस राघो कहै उबस करत नित प्रेम को।
अग्रदास आगर भयो हरि सुमरन पन प्रेम को ॥१५७

टीका

इंदव भूपति मान दरस्सण आवत बाग दयोव रहै सु सिपाही।
छंद पात बुहारि गये जन कारन भीरहि देखि र बैसि रहाही।
नाभहि आइ प्रनाम करी जल नैन भरे परवाह बहाही।
देखि रह्यो भूप हारि गयौ ढिग कीजत चाकर आप कहाही ॥१७६

मूल

छप्पै मन बच क्रम धर्म धारि उर जन राघो उधरे राम कहि ॥
दिप्यौ दमोदरदास सिमक गुर की महा पाई।
चतुरदास भगवान जप मत मह्यो सु भाई।

1 मोर। 2 जल

लाखा छीतर देवकरन, देवासु सुघड़ अति।
खेम राइमल गौड, करी ग्रह भगति-भाव मति।
अदभुत राइमल नीपजे, गुर कील्ह करन कौ सरण गहि।
मन बच क्रम धर्म धारि उर, जन राघो उधरे राम कहि ॥१५८

जन के कारिज करत है, अनबछित हरि आइ ॥
ये नाभा जगी प्राग, बिनोदि पूरण पूरे।
बनवारी भगवान, दिवाकर नाहि न दूरे।
नृस्यंध खेम किसोर, लघु ऊधौ जगनाथहि।
ये तेरह सिष अग्र के, सीझे मुनि गुर कै साथहि।
जन राघो रुचि प्रीति पन, जे मन सधत सुभाइ।
जन के कारिज करत है, अनबछित हरि आइ ॥१५९

नाभाजी कौ मूल

मनहर छंद

नाभै नभ सेती कीन्हौं खीर-नीर भिन भिन,
ग्रथन कौ सार सरबगी हरि गायौ है।
भक्ति भगत भगवत गुर धारि उर,
बिच र बखांणि सबही कौं सिर नायौ है।
सत-जुग त्रेता अर द्वापर कलू के भक्त,
नाव क्रितमाला कीनी नीकौ भेद पायौ है।
राघो गुर अगर कूं अर्पि गिरा गगजल,
पुरे पतिब्रत बलरांम यौं रिझायौ है ॥१६०

मूल

छपै

अघेर अज्ञता नासनै, उदित दिवाकर दूसरौ ॥
परमोधे भूराज, नहीं को आज्ञा मोटै।
पक-पादप की न्याइ, सत पोषन ले मेटै।
अव पै छाया कृपा, गिरा भोला यौं बोलै।
सुमरै रघुपति निति, साध के अघ्री खोलै।
कसिप करमचद सुत, सुहृद बरखै ऊसर सूसरौ।
अघेर अग्यता नासनै, उदित दिवाकर दूसरौ ॥१६१

परवत साघ सरोवहीं, मनों दिवाकर यहु दुती ॥
उत्म भजन प्रकासि किरिणि, करणी करि पोषे।
सीयावर गुण नाम गाइ मांम न संतोषे।
जनक-सुता आधार धींग्र ग्रहि मधुपम धरियो।
गुर नरहर की कृपा, पुञ्ज मांतीयौ करियो।
रघुनाथ इष्ट निहचल सदा, मांन बात को ना दुती।
परवत साघ सरोवहीं मनों दिवाकर यहु दुति ॥१६२

१८५ पर की प्रभुता कर आप अमानज, ऐसो भयो दिम्य देव दिवाकर।
छंद सत सुभाव प्रसंगी सिरोमनि मांनूं मिली दुरि दूध में साकर।
जीवत मुक्ति दिप वसन दिसि, ज्यूं नव-खंड उद्योत प्रभाकर।
राघो कहै परमारथ सु बचि स्वारथ के सिर दे गयो ठाकर ॥१६३

छप्पै श्री सौरभ स्वांमि प्रसाद सौं पण व्रत रह्यौ प्रियाग कौ ॥
मन बच क्रम भगवत उभै भंध्री उर भायें।
सीसा मैं सिर-जांम माब तन दोइ बिकाये।
सतन सरस सनेह मांगि दोऊ बल लीया।
पंच वसौ दे धांड़ि महोछा पूरण कीया।
बोली[1] वुबीं बजावहीं बधारे कलस भाग को।
श्रीसौरंभ गुर प्रसाद तै पण व्रत रह्यौ प्रियाग कौ ॥१६४
हृठ जोग समाधिक साधिक द्वारिकादास हरि सौं मिल्यौ ॥८०
कूकस की नदिका नीर मैं नयी समाधी।
प्रभु पद सुं रति अचल येक आत्म आराधी।
धांम जांम धर बित बंध कुल जगत निरासा।
कांम क्रोध मद मोह करम की काटी पासा।
गुर कील्ह करुणा प्रसाद तै भक्ति सक्ति भ्रम कौं गिल्यौ।
हृठ-जोग समाधिक साधिकै द्वारिकादास हरि सु मिल्यौ ॥१६५
परम धरम धन धारि उर पूरण बैराठी प्रसन ॥
ऊर्णी अधूरण सैस बिधि मदी बहांनी।
जम-नैमा प्राणायामसन बहां साधे ध्यांनी।

[1] बाली।

सीह बघेरा गरिजि रहे, मन सक्या नांहीं।
बाइ तलै सचरै, तास कौं ऊचै लाहीं।
पद साखी उजल करे, रांम नाम उचरचौ रसन।
परम धरम धन धारि उर, पूरण बैराठी प्रसन ॥१६६
पूरण पूरा ग्यांन सूं, बैराठी गुर-गम लयौ ॥टे०
अष्टाग-जोग अभ्यास, गुफा कदर के बासी।
कनक कांमनी रहत सदा, हरि नाम उपासी।
बाचा छले मलेछ, कपट करि ब्याह करायो।
त्यागी तिरिया रहत नहीं, तन कलक लगायो।
अनल पख के पुत्र ज्यूं, उलटि अपूठौ बन गयो।
पूरण पूरा ग्यांन सौं, बैराठी गुर-गम लयो ॥१६७
सिंध-सुता सप्रदाइ मैं, लक्षमन भट भारी भगत ॥
धर्म सनातन धारि, भक्ति करि जग मैं जांन्यौं।
सतन सेती हेत, नेम प्रेमां मन मांन्यौं।
जथा-लाभ संतुष्ट, सुह्रिद परमारथ कीन्हौं।
उत्म इष्ट थापि, साध मारग कहि दीन्हौं।
सारा-सार बिचार उर, सदा कथन श्रीभागवत।
सिंधु-सुता सप्रदाइ मैं, लक्षमन भट भारी भगत ॥१६८
खेम गुसाई राम पन, राम रासि गुर सीस धरि ॥टे०
रांमचद्र कौ अनुग, जगत मैं नांहीं छानै।
उर मैं और न ध्यान, येक सीयारामहि जानै।
कारमुक बामैं हाथि, दाहिनै साईक राजै।
यह प्रीय लागै रूप, दरस तै सर्ब दुख भाजै।
हनुमत समां सो साहिसी, गद गद बाणीं प्रेम करि।
खेम गुसाईं रांम पन, राम रासि गुर सीस धरि ॥१६९
तुलसी राम उपास की, रांमचरित बरनन करयौ ॥टे०
बालमोक कीयो सहस, कृत श्रीफल सम जानौं।
भाषा दाष समान, पात परिश्रम मति मांनौं।
नर नारी सुख भयो, प्रेम सूं गावै निस दिन।
पातक सब कटि जात, सुनत निर्मल तन मन जन।

परसत साध सरांवहीं, मनौं दिवाकर यहु दुती ॥
उरम भजन प्रकासि किरिणि, करणी करि पोषे।
सीयावर गुण नाम गाइ प्रांन म संतोषे।
जनक-सुता आधार अंघ्रि गहि, महुधन भरियो।
गुर नरहर की कृपा, दुख संतोषी करियो।
रघुनाथ इष्ट निहचल सदा आन बात को ना दुती।
परसत साध सरांवहीं मनौं दिवाकर यहु दुति ॥१६२

४८७ पर की प्रभुता कर आप प्रमाणक, ऐसो भयो दिव्य देव दिवाकर।
छं० संत सुभाव भयेगी सिरोमनि मांनू मिली दुरि दूध मैं साकर।
कीयत मुक्ति दिप दसहूं दिसि, ज्यूं नव-खंड उद्योत प्रभाकर।
राघो कहै परमारथ सूं रुचि, स्वारथ कै सिर दे गयो टाकर ॥१६३

मन० श्री सोरंभ स्वामि प्रसाद सौं पण बत रह्यौ प्रियाग कौ ॥
मन बच क्रम भगवंत उभै अंघ्री उर भायें।
सीता मैं निर-भ्रांन, भाव सम दोइ दिखाये।
सतन सरस सनेह भांति दोऊ बल लीया।
अंकू बसो दे मांहि, महोछा पूरण कीया।
दोसो[1] पूजा चढावहीं दयारे कलस भाग को।
श्रीसौरभ गुर प्रसाद तें पण व्रत रह्यौ प्रियाग कौ ॥१६४
हठ जोग समाधिक साधिकै द्वारिकादास हरि सौं मिल्यौ ॥८०
कूकस की नविका नीर मैं लगी समाधी।
प्रभु पद सुं रति अचल येक आतम आराधी।
धांम जोम धर बित बंध कुल जगत निरासा।
काम क्रोध मद मोह करम की काटी पासा।
गुर कील्ह करण प्रसाद तें भक्ति सक्ति भ्रम सौं गिल्यो।
हठ-जोग समाधि साधिकै द्वारिकादास हरि सू मिल्यौ ॥१६५
करम धरम मन धारि उर पूरण वैराठी प्रसन ॥
ज्यूंणी आंपूरण सस बिधि भयो बहांनो।
जम-नेमा प्राणायामासन जहां साधे ध्यांनी।

---

[1] दासी।

वाचत पुस्तक नाम हरै अघ, सत्य सबै परमान कहीजे।
ह्वै परतीति कहो तुम ही जिम, खाइ नदी सुर पातिहि लीजे।
भोजन ले करि मदिर आवत, भक्त कहै यह न्याव करीजे।
जानत हौ तुम नाम प्रतापहिं, पाइ लयो जय सब्द भनीजे ॥१८१

रैनि निसाचर चोर न आवत, स्याम सरूप खडे सर लीया।
आत तबैं तब साधि डरावत, प्रात लगैं हरि आन न दीया।
बूझत संतहि स्याम सिपाहिन, बोलत नाहि न नैन भरीया।
राय लुटावत यौ न सुहावत, चोर भये सिप राम भजीया[1] ॥१८२

मृत्यु भयो द्विज नारि सती हुत, जोरि करौ दुय सीस नवायो।
राम सुहागनि बैन कह्यौ पति, मौति भई उठि है हरि भायो।
स्याम भजौ सवही कुल सौ कहि, मानि लई उन बेगि जिवायौ।
भक्त भये सब साखत ता तजि, लेस[2] रहै मन लोक न पायौ ॥१८३

लैन खनाइ दये पतिस्या भृति, ज्याइ दयौ दिज यौं कहि सूबा।
चाहत देखन ल्याव(त) भली बिधि, जात बिनै करि[3] यौ पग छूवा।
भूप मिले चलि ऊपरि लेवत दे बहुमान कहै तुम खूवा।
च्यौ अजमत्ति सुनी अति गत्तिहि, राम करै हमसौ नहि हूवा ॥१८४

राम करै सु दिखाइ हमै अब, रोकि दये हनुमान हि ध्याये।
बेगिहि बादर म्हैल चढे बहु, फारत अबर देह लुचाये।
ढाहत है गढ नाखि तलै लढ, दातन तै वढ भूप डराये।
आखि हुई यह कौन दई सु, पुकारि कही अब राखि हराये ॥१८५

पाइ पर्‌यौ हम जीव उबारहु, देखि अजम्मति[4] लाज नयौ है।
सात करे सब भूपहि भाखत, ह्या न रह्यौ गढ राम भयौ है।
त्याग दयो सुनि और करावत, हाजर है नही फेरि पयौ है।
जाइ बनारस आइ बृदावन, नाभहि सूज कवित्त लयो है ॥१८६

काम गुपाल जु को कर दर्सन, राम सरूपहि सीस नवाऊ।
धारि लये कर साइक धन्नुक, देखि छवी कहियौ गुन गाऊ।
कोउ सुनावत कृष्ण सुय हरि, राम कला कहि मैं न भुलाऊ।
जानत हौ दसरत्थ लला अब, ईसुर आप कहे मन लाऊ ॥१८७

---

१ भलीया। २ लैस। ३. कर्यां। ४. अजन्मति।

भक्त भक्त निसतार न नांम रूप बोहिथ धरयौ।
तुलसी रांम उपास की, रांम चरित बरनन करयौ ॥१७०

मनहर ६९

कासी मधि कांमजित तपोधन जोग जित,
अति उग्र तेज तप भयो तुलसीदास को।
मगन महंत गति बांणी की विचित्र अति,
रांम रांम रांम रत्य रत सासौ-सास को॥
सत सत सावधान अमृत कथा को धांम,
हरि की कृपा सू वे हजूरी भयो पास को।
राघो कहै रांम कांम धरयौ तन मन[1] धांम,
गह्यो मत घन पेरू प्रगट प्रकास को॥१७१

टीका तुलसीदासजी की

प्रीति तियाहि गई उठि पूछिन पीहरि गवेस गई वहि ठौरा।
लाज भरी कहि रीस भरी धिक रांम भजौनि तिमा सब चोरा।
ग्यांन भयो सुनि सोचि विचारत आत बनारसि धांमहु छोरा।
रांम भजै हरि पूजन धारत मारत है मन है यह चोरा ॥१७७
बाहरि जात रहै कछु नीरहि भूत पिवै हनुमांन बताये।
पावत मन्दिर रांम चरित्र सुनें उठि आतस पेम पिछाये।
जात लगे चलि प्रारनि हू लगि पाइ परे धुरि दूरि सुनाये।
जान न देत करी किरपा अब जानत मंत्र मून बताये ॥१७८
लहु कछु बर रांम मिलावहु कामतनाथ मिल प्रभु प्यारे।
कौन करयो नवमी सुदि चत्रहु प्रीति लगी वह दौस निहारे।
आवत वा दिन रांम सगम्मन धाव चढे पट रत हत्यारे।
पाइ कही हनुमंत लगे प्रभु मैं न निहारत फेरि दिखाये ॥१७९
ब्राह्मन एक हत्या करि आवत रांम कहै कछु देहु हत्यारे।
नाम सुन्यौ घर माहि बुलावत भोजन कै गुरु नाम तुम्हारे।
विप्र जुरे सब जाइ कहै इन पाप गये किम भोजन सारे।
बांचत हौ तुम वेद पुरानन गाथ न पावत धन्य पुकारे ॥१८

[1] बन।

वाचत पुस्तक नाम हरै अघ, सत्य सबै परमान कहीजे।
ह्वै परतीति कहो तुम ही जिम, खाइ नदी सुर पातिहि लीजे।
भोजन ले करि मदिर आवत, भक्त कहै यह न्याव करीजे।
जानत हौ तुम नाम प्रतापहि, पाइ लयो जय सब्द भनीजे ॥१८१

रैनि निसाचर चोर न आवत, स्याम सरूप खडे सर लीया।
आत तवै तव साधि डरावत, प्रात लगै हरि आन न दीया।
बूझत सतहि स्याम सिपाहिन, वोलत नाहि न नैन भरीया।
राय लुटावत यौ न सुहावत, चोर भये सिष राम भजीया[1] ॥१८२

मृत्यु भयो द्विज नारि सती हुत, जोरि करौ दुय सीस नवायो।
राम सुहागनि बैन कह्यौ पति, मौति भई उठि है हरि भायो।
स्याम भजौ सबही कुल सौं कहि, मानि लई उन वेगि जिवायौ।
भक्त भये सब साखत ता तजि, लेस[2] रहै मन लोक न पायौ ॥१८३

लैन खनाइ दये पतिस्या भृति, ज्याइ दयौ दिज यौं कहि सूवा।
चाहत देखन ल्याव(त) भली विधि, जात बिनै करि[3] यौं पग धूवा।
भूप मिले चलि ऊपरि लेवत दे बहुमान कहै तुम खूबा।
द्यौ अजमत्ति सुनी अति गत्तिहि, राम करै हमसौ नहि हूबा ॥१८४

राम करै सु दिखाइ हमै अब, रोकि दये हनुमान हि ध्याये।
बेगिहि बादर म्हैल चढे बहु, फारत अबर देह लुचाये।
ढाहत है गढ नाखि तलै लढ, दातन तै वढ भूप डराये।
आखि हुई यह कौंन दई सु, पुकारि कही अब राखि हराये ॥१८५

पाइ परयौ हम जीव उबारहु, देखि अजम्मति[4] लाज नयौ है।
सात करे सब भूपहि भाखत, ह्या न रहौ गढ राम भयौ है।
त्याग दयो सुनि औौर करावत, हाजर है नही फेरि पयौ है।
जाइ वनारस आइ बृदाबन, नाभहि सूज कबित्त लयो है ॥१८६

काम गुपाल जु को कर दर्सन, राम सरूपहि सीस नवाऊ।
धारि लये कर साइक धन्नुक, देखि छबी कहियौं गुन गाऊ।
कोउ सुनावत कृष्ण सुय हरि, राम कला कहि मैं न भुलाऊ।
जांनत हो दसरत्थ लला अब, ईसुर आप कहे मन लाऊ ॥१८७

---

१ भलीया। २ लैस। ३. कर्यौ। ४. अजन्मति।

टीका

केवल नामहि सतन सेवत, बस उधार करचौ जग जानै।
साध पधारत हेत करचौ बहु, नाज नही घर मैं कछु पानै।
लैंन उधारि गये जन वैसिहि, कूप खुदाइ तलै मन मानै।
कोल करचौ अब तो लि सिताब ही, रोल चढावत यौ घर आनै ॥१८८
खोदत कूपहि राम कहै मुख, काम भयो मनि वौ सुख पायो।
धूरि परी धसि माहि गये दबि, दूरि करै थल होइ सवायो।
होत उदास घरावह आवत, नाव सुनी धुनि मास बितायो।
कूप गये फिरि होत सुनै रव, काढन लागत धीर कहायो ॥१८९
रेत निकारिक जाइ लये पग, देखि सबै अति अचरज[1] आयौ।
ब्यौर लख्यौ जल कुम्भ पिख्यौ तन, कूब नख्यौ हरि कौ इम भायौ।
ध्यावत[2] धाम कहै धनि राम, पुमा नर बाम भलै जस गायौ।
आइ जुरचौ बहु लोग उमगिर, भाव भयौ उर माल चढायौ ॥१९०
मूरति ल्या करि सत पधारत, केवल कै वह रैनि रहे है।
देखि सरूप भई मन मैं यह, नाहि चलै सु अचल्ल भये हैं।
जोर करै मन माहि डरै जन, हारि चले जब दाम दये हैं।
जानि[3] गये उर अतर की हरि, नाव सुजानहि राइ कहे हैं ॥१९१
द्वारवती चलि छाप धरे भुज, जान न दे प्रभु धाम फिराये।
सतन की निति टैल करौ, उर भाव धरौ करिहू तब भाये।
धामहि सखरु चक्र गदाबुज, चिन्ह भये भुज देखि रिझाये।
सागर गोमति सग रह्यौ सुनि, मालहि मेल्हिर दोइ मिलाये ॥१९२
सिष्य प्रसिष्य हुये तिनसू कहि, सतन सेव करौ चितलाई।
साध पधारत पाक करै तिय, आपन भ्रातहि खीर कराई।
केवल देखिर बुद्धि उपावत, दो घरि दे करि कूप चलाई।
सोचत जावत सत बुलावत, खीर परूसि-र वेगि जिमाई ॥१९३
नीर सिताबहि ल्याइ निहारित, देखि उठी जरि भ्रातहु देखै।
केवल काढि दई यह साखत, और करचौ भरता दुख पेखै[4]।
काल परचौ स पलै नहि टावर, जाइ रहौ कहु यौं करि लेखै।
साथि लिये भरतारहि बालक, केवल द्वारि परी सव सेखै ॥१९४

---

१ आश्चर्ज, आचर्ज। २ ल्यावत। ३ जौंनि। ४. देखं।

भोजन-की परकार करावत संत समूह चलि आवत द्वार।
बैन सुने तिय माहि खिजै दुख होइ दयालहि राखत थारे।
मोर धणी लखि तोर धणी पिधि कष्ट पर अब कौन निवारै।
लेपन भारन टल करो रहि अन मिलै द्रिग वासत धारे ॥१६५

बास[1] कटाहर सीस दई तब, त्रास भई पछितात घणी है।
पैस समै फिरि पीछे न आवत रीति अभो सतसंग तणी है।
सिष्य करैं अम सैव दिखावत रांम मिलैं इम बात भणी है।
मोलि लयो कवि मास छपा महि रीति दिखाइ दई सु घणी है ॥१६६

खोजीजी को मूल

छपै भाव भगति हित प्रेम सूं, खोजी खोजे रांम कौं॥
काम क्रोध अरु लोभ मोह की काटी पासं।
मुरधर देस निवास, पालड़ी गांव प्रकासं।
समद्रिष्टी सुहृद, साध की सेव कराहीं।
अगुणी सुगुणी भक्त, काहू सूं अंतर मांहीं।
अनहद बाजा बाजिया राघो पायत धांम कौं।
भाव भगति हित प्रेम करि खोजी खोजे रांम कौं ॥१७६

इंदव छंद ज्यौं पित मात कै मोहन बालक, रांम समीप यौं खेलत खोजी।
धे प्रभु के चरण धारि विचारीक ताहि कहीव बुलावत खोजी।
जिनके हिरदै हरि नाम सुमन्त्र जाहि फुरै बसहू दिसि रोजी।
रांम सूं रत तजे अविहृतहि राघो कहै सतवादी इसोजी ॥१७७

टीका

चातुरदास गुरु-जन खोजहि मृत्यु समैं उन घंट बंधानी।
राम मिलै हम बाजत है यह चाहत बाजिन चित बखानी।
अंत समैं न हुवे फिरि आवत सोइ बड़ा मति अंध रहानी।
स करि धीरज सूक्षम शीघ्रस तात[2] भयो अब घट बजानी ॥१६७
जोगि अभे मिथ यौं सब मानत है गुर संभ्रम पूंन सवाई।
धपस है मम पौन[3] समागन रीति भगो उन हूं सरसाई।

---

१ काम। २ तांत। ३ पौन समागम।

लीन भये परमेशुर पैलहि, देखि पक्यौ फुल[1] बुद्धि चलाई।
प्रीति फली जन राम लई मनि, वात रही दुरमत्ति बिलाई ॥१६८

मूल

छपै अल्हरांम[†] रावल दया, राघो कलिजुग जीतियो ॥
मोह क्रोध मद कांम, लोभ नीरौ नहिं आयो।
सग्रह जो कछु कीयो, सोई साधन वरतायौ।
आठ मास जल लेत, सूर चौमासै वरसै।
सिष सेवग मरजाद, चन्नावत गुर नहीं परसै।
गुर धरमसील सत पुनि टहल, करत काल इम बीतियो।
अल्हराम रावल दया, राघो कलिजुग जीतियो ॥१७८
हरिदास बावनौ भगति करि, बावन सम ऊचौ बढ्यौ ॥
सतन सूं निरदोष रह्यौ, सुपनै अर जागत।
स्याम स्वाग सू प्रीति रीति, यम गुर जिम पागत।
भवन मधि निरबेद, जनक ज्यूं लिपता नाही।
चरन-कवल भगवान, वास ले मनमत माहीं।
कुल जोगानन्द परगट्ट कर, रैनि दिवस रामहि रढ्यौ।
हरिदास बांवनौं भक्ति करि, बावन सम ऊचौ बढचौ ॥१७६
जन राघो रघुनाथ की, भ्रथ सिर धारी पावरी।
दक्षन दरावड देस, तहां के भक्त बखानौं।
नरनारी गुरमुखी, जथामति जो हू जानौं।
सतवादी प्रम-हस, पुनह औसत सरूप।
दास-दास री नमो नमो, ब्रह्मचर रथ सूपं।
आदि भक्ति अनुक्रम धरम, करहि बेद बिधि द्रावडी।
जन राघो रघुनाथ की (ज्यूं), भ्रथ सिर धारी पावड़ी ॥१८०
कबीर कृपा कों धारि उर, पदमनाभ परचै भयौ ॥
राम मत्र निज मत्र, जाप हिरदै मैं राख्यौ।
जप तप तीरथ नाम, नाव बिन और न भाख्यौ।

---

[1] फल।

[†] गुरु।

बाम्हिण की सी टेर, कहि गवगव मुंं वांणीं।
रांम मंत्र निज जाप, देह उधरे बहु प्रांणी।
श्रम राघो समभै उमंगि जस, आप पीयौ औरन पयौ।
कबीर कृपा कौं धारि उर पदमनाभ प्रभु भयौ ॥१८१

टीका

इंदव साहु बनारसि कोढ हुतौ उन लट्ट परीतन बूडन चाल्यौ।
छंद भावत हूस पदम्महि बूझत बात कही कस खोलि न हाल्यौ[1]।
रांम कहावत तीन बिरधा जन कोढ गयो गुरदेवहु काल्यौ।
नाव प्रभावन आनद मै बहु सेस करै सुष जो श्रुति चाल्यौ ॥१९९

मूल

छपै जीवा तत्वा[2] बखरण बिसि, प्रगट उधारक बंस के ॥
भक्ति अमृत की नदी शुद्धता की बिड पाला।
और बडन की रीति, प्रीति सोंही बहि चाला।
पूरण बंस सुभाव, बहुत गुण धर्म-सील सत।
भये सूर दातार, दया परबीन परम मत।
राघो जम अंकुश सुमें, रवि ससि जोभा बंस के।
जीव तत्वा बखरण बिसि, प्रगट उधारक बंस के ॥१८२

टीका

भ्रात उभै द्विज जीवहि ततहि[3] सेवत संतन सिष्य भये हैं।
रोपत ठूठ हर्यो यह होइस साधन होइ सु नांखि भये हैं।
श्राइ कबीर दिखाइ हर्यो तर नेम हुयो सिषि पाय लये हैं।
नाम दयो तिनि[4] धाम बसे कठि आइ कही हम बोलि गये हैं ॥२००
हैं इकठे द्विज बात गई मिल दूरि करे सु सुता नहिं लेवै।
येक बनारस जात कबीर हि बात कही सब धीरज[5] देवै।
आप उभै मनवंच करौं न करी चित मैं समझी यह भेवै।
आइ करी बहि कानि करी उन मूंग धरी नहि यो पग सेवै ॥२०१
यौहि करै हम धाम न भावन संत बिणी सुप टेक तजोज।
फरि बनारस आ करि बूझत ब्याहु करी सिरन्द सतोज।

१ हाल्यौ। २ तत्व। ३ तत्वहि। ४ ठूंठ, ठूठ। ५ तिंहि। ६ धारज।

भक्ति करौ जन भाव धरौ तव, देत तुमैं सुनि लेत करीजे।
साखत भक्त भयेरु सराहत, पच कहै तुम्हरे पन रीझे॥२०२

मूल

छपै करणीं जित कबीर-सुत, अदभुत कला कमाल की॥
प्रगट पिता समाज रहे, कछु इक दिन द्वारै।
सतवादी सत-सूर, भजन सौं कवहूं न हारै।
सुक सनकादिक जेम, नेम सू निरगुण गायौ।
मन वच क्रम भयो मगन, भेव काहू नहीं पायौ।
जन राघो वलि (बलि[1]) रहणि की, पहुचै राल न कालकी।
करणीं जित कबीर-सुत, अदभुत कला कमाल की॥१८३
श्रीनद-कुवर सन नददास, हित चित बांध्यौ भाइकें॥८०
समैं समैं के सबद, कहे रस ग्रथ वनाये।
उक्ति चोज प्रसताव, भजन हरि गान रिझाये।
महिमांसर परजंत, रामपुर नग्र बिराजे।
सत चरन रज इष्ट, सुकल सरबोपरि राजे।
भ्राता राघो चद्रहास है, सो सब गुण लाइकं।
श्रीनद-कुवर सन नंददास, हित चित बाध्यौ भाइकें॥१८४
अति प्रतीति उर बचन की, गुर गदित सिष सति मानियो॥
सीष पाइकैं चल्यौ, कहूं कारिज कै ताईं।
मेरे मन को बात, कहूगो सीघ्र आईं।
रामसरनि भये स्वामि, दगध करनै लै जाहीं।
मनि गुर-गिर बिसवास, फेरि लीये अस तल माहीं।
बिभू बरसहि यह कही हरि-जन गुर इक जानियो।
अति प्रतीति उर बचन की, गुर गदित सिष सति मांनियौ॥१८५

टीका

इदव है गुर भक्तस नून गिनै जन, पूजि मनै गुर क्यू समभावै।
छद कै न करै परि नाहि कहै निति, रामति चालत बेगि बुलावै।
छूटि गयौ तन बारन देतन, ल्यावत फेरिस वात जनावै।
भाव लखै सति यौ जिय बोलत, सेव करो जन वर्ष दिखावै॥२०३

---

1 छलि।

मनहर छंद

परस कूं पारस मिले हैं गुर पीपा आइ,
आपसौ कीयो बनाइ बारबार कसिकै।
खोयौ है कन्या को कोढ़[1] धोवती दई वोट,
सकति की सेवा मेटी ताकै गृह वसिकै।
खाती को खलास करि रीझे हैं परसपरि,
माथै हाथ धरचौ स्वामी हेत सेती हसिकै।
राघो कहै प्रास[2] प्रसिधि भये तीनू लोक,
संतन की सेवा कीन्ही पूठी हरि असिकै ॥१९०

छपै

कूरम-कुलि दुती बलि विक्रम यम, निबह्यौ पन पृथीराज कौ ॥
दया द्वारिकानाथ, करैं तौ दरसन जाजे।
परे कुदरती चक्र, आइ आवेर निवाजे।
धरि-धर नीबा ईस, आप राजा रुति गामी।
सुत उपजे षट[3] दोइ, भये नौ-खंड मधि नामी।
हुवो हरि भगतन कौ भगत, जन राघो बड़ कुल काज कौ।
कूरम-कुल दुती बलि विक्रम यम, निबह्यौ पन पृथीराज कौ ॥१९१

टीका

इंदव छंद

संग चल्यौ गुर कै पृथिराजन, प्रीति घणी रनछोडहि पाऊ।
बात सुनी स दिवान गयो निसि, भक्ति हुई गुर संतन गाऊ।
लेहु विचारि करौ तब भावस, संगि न लेवत बात दुराऊ।
प्रात भये नृप आवत चाहत, आप कही रहिये सुख पाऊ ॥२०४
गोमति न्हाइर लेवत छापहि, देखत हौ रणछोड पुरी कौं।
तीनहु बात इहाहि लहौ[4] तुम, सोच करौ मति देखि हरी कौं।
मानि लई पहुचावन जावत, आई घरा नृप जानि खरी कौं।
दोइ गये दिन सोवत हौ निसि, आइ कही उठि लेहु करी कौं ॥२०५
बोलि गुरू जिम आप कहै प्रभु, आइ गयो उठि सीस नवायो।
गोमति माहि सनान करौ कहि, न्हाइ लयो सुनि आप न पायो।
छाप भई भुज सख चक्रादिक, ढील लगी त्रिय आइ चितायौ।
सेस रह्यौ जल सुद्ध करौ तन, राम धरौ उर भूप सुनायौ ॥२०६

---

[1] पक्क हेढ़। [2] पारस, परस। [3] घट। [4] लहैं।

मूल

छप्पै
दीठलदास हरि भक्ति करि कुगल पाँनि मोदक चढ़े ॥टे०
सदा प्रेम परस रहत संत रज सीस चढाई।
सरकि तज्यौ संसार, मेक हरि भक्ति दिढाई।
संप्रदाइ सिष[1] आदि पत, दीपक ज्यौं मांनों।
जन परपस सतकार, करै रज सो जांनों।
लोक जगै हरि गुर दये सबद साखि निसि दिन रढ़े।
दीठलदास प्रभु भजन करि, कुगल पाँनि मोदक चढ़े ॥१८६
परसोतम गुर की कृपा, जगंनाथ जग जस कर्‌यौ ॥टे०
प्रेम भक्ति कौ पुंज, सिधु सा पधित संभारी।
श्रीरामानुज पन प्रीति, रीति उर अतर-धारी।
संसकार सतकार, सनातन धरम सुहावै।
समध-आदि मुनि वृत्ति बिसद हरि के जन भावै।
पारासुर कुलकौ चढ्यौ, रांमदास धरि तन अर्‌यौ।
परसोतम गुर की कृपा, जगनाथ जग जस कर्‌यौ ॥१८७
दातार अनन्यन उर भली ऐसौ भक्त कल्यान है ॥
सीतावत पति भूति चतुर हरि कौ चित चाह्यौ।
उत्तम भक्त पिछांनि भांति अपनौ निरबाह्यौ।
देह त्यागती बेरि हेत सीता-बर कीन्हीं।
धांम कांम घर बित्त काढ़ि मन रांमहि दीन्हौं।
विद्युत-प्रभा परकास सम चढ्यौ ध्यांन घन ध्यांन है।
दातार अनन्यन उर भली, ऐसौ भक्त कल्यान है ॥१८८
ये भरथ-खंड मधि भूप है टीला लाहा भक्ति के ॥टे०
मंगल परमानंद परम भक्तीक उजागर।
जोगीदास र खेम बिपत बसधा के आगर।
स्यांमदास के सीस धरी गुर चरन की टेका।
हरीदास हरि भक्ति करी अति भरम की पेका।
जन राघौ रति रांमसी काटे बंधन सक्ति के।
ये भरथ-खंड मधि भूप है टीला लाहा भक्ति के ॥१८९

---
१ सिषु।

मनहर छंद

परस कूं पारस मिले हैं गुर पीपा आइ,
आपसौ कीयो वनाइ बारंबार कसिकै।
खोयौ है कन्या को कोढ़[1] धोवती दई वोट,
सकति की सेवा मेटी ताकै गृह बसिकै।
खाती को खलास करि रीझे हैं परसपरि,
माथै हाथ धरचौ स्वामी हेत सेती हसिकै।
राघो कहै प्रास[2] प्रसिधि भये तीनू लोक,
सतन की सेवा कीन्ही पूठी हरि असिकै ॥१९०

छपै

कूरम-कुलि दुती बलि बिक्रम यम, निबह्यौ पन पृथीराज कौ ॥
दया द्वारिकानाथ, करै तौ दरसन जाजे।
परे कुदरती चक्र, आइ आवेर निवाजे।
घरि-घर नीवा ईस, आप राजा रति गामी।
सुत उपजे षट[3] दोइ, भये नौ-खड मधि नामी।
हुवो हरि भगतन कौ भगत, जन राघो बड कुल काज कौ।
कूरम-कुल दुती बलि बिक्रम यम, निबह्यौ पन पृथीराज कौ ॥१९१

टीका

इंदव छंद

सग चल्यौ गुर कै पृथिराजन, प्रीति घणी रनछोडहि पाऊ।
बात सुनी स दिवान गयो निसि, भक्ति हुई गुर सतन गाऊ।
लेहु बिचारि करौ तव भावस, सगि न लेवत बात दुराऊ।
प्रात भये नृप आवत चाहत, आप कही रहिये सुख पाऊ ॥२०४
गोमति न्हाइर लेवत छापहि, देखत हौ रणछोड पुरी कौ।
तीनहु बात इहाहि लहौ[4] तुम, सोच करौ मति देखि हरी कौं।
मानि लई पहुचावन जावत, आई घरा नृप जानि खरी कौ।
दोइ गये दिन सौवत ही निसि, आइ कही उठि लेहु करी कौं ॥२०५
वोलि गुरू जिम आप कहै प्रभु, आइ गयो उठि सीस नवायो।
गोमति माहि सनान करौ कहि, न्हाइ लयो सुनि आप न पायो।
छाप भई भुज सख चक्रादिक, ढील लगी त्रिय आइ चितायौ।
सेस रह्यौ जल सुद्ध करौ तन, राम धरौ उर भूप सुनायौ ॥२०६

---

१ पक हेढ़। २ पारस, परस। ३ घट। ४ लहैं।

मूल

छप्पै

बीठलदास हरि भक्ति करि जुगल पानि मोदक बढ़े ॥टी०

सदा प्रेम पण रहत, संत रज सीस चढ़ाई।

तरकि तज्यौ संसार, येक हरि भक्ति दिढ़ाई।

संप्रदाइ सिष[1] आदि पत, दीपक ज्यौं मांनौं।

जन परचस सतकार, कर रैदासी जांनौं।

लीक उभै हरि गुर दये, सबद साखि निसि दिन रढ़े।

बीठलदास प्रभु भजन करि, जुगल पांनि मोदक बढ़े ॥१८६

परसोतम गुर की कृपा, जगंनाथ जग जस कर्‌यौ ॥टी०

प्रेम भक्ति को पुंज, सिधु ज्यौं थपित सभारी।

श्रीरामांनुज पन प्रीति रीति उर अंतर-धारी।

ससकार सतकार, सनातन धरम सुहावै।

समद-आदि मुनि बृत्ति, बिसद हरि के जन भावै।

पारासुर कुलकौ पदम्यौ, रांमदास घरि तन धर्‌यौ।

परसोतम गुर की कृपा, जगनाथ जग जस कर्‌यौ ॥१८७

दातार अनप्पम उर अली ऐसौ भक्त कल्यांन है॥

सीताचरन पति भुक्ति, चतुर हरि को चित चाह्यौ।

उत्तम भक्त पिछांनि मांसि अपनौ सिरवाह्यौ।

देह त्यागती बेरि हेत सीता-वर कीन्हौं।

दांम जांम धर वित्त काढ़ि सब रांमहि दीन्हौं।

बिद्युत-प्रभा परकास सम धर्‌यौ स्यांम-घन ध्यांन है।

दातार अनप्पम उर अली ऐसौ भक्त कल्यांन है॥१८८

ये भरथ-खंड मधि भूप है टीला लाहा भक्ति के ॥टी०

धंमड परमांनंद, परम भक्तनीक उजागर।

जोगीदास र खेम बिमल बसधा के आगर।

ध्यांनदास के सोज गही गुर धरम की टेका।

हरीदास हरि भक्ति करी अति धरम की येका।

जन राघो रटि रांमजी काटे बंधन सक्ति के।

ये भरथ-खंड मधि भूप है टीला लाहा भक्ति के ॥१८९

---

1 सिधु।

मूल

छपै सतन कौ सरबस दीयो, जन राघो हरि की प्रीति कौं ।।
कुर सारत करतार सूं, भक्ति जिहाज के खेवा।
राम काम सरखरू, पोता पृथीराज के येवा।
भगवांनदास भगवत भज्यौ, करि भक्ति अनूप।
छाप छहूं दरसन बिषै, भयो वैरागी रूपं।
काछ बाच निकलक है, महा-निपुन धर्म-नीति कौं।
संतन कौं सबंस दीयो, जन राघो हरि की प्रीति कौं ॥१९३

इदव भजनीक भलौ सत सूर सदा, हरदास की तेग महा अति सारी।
छद भोग की भावना नारि कै ऊपनी, बालक ऐक ह्वै तौ भलौ भारी।
जेहरि लै जल कै मिसि नीसरी, बाधि कै पाव कूवा मैं उसारी।
राघो कहै बढी मानि महंत की, चित्र के दीप ज्यौं सो जिहि टारी ॥१९४
मालि करी बनमालि की बदगी, भक्ति की वाड़ी निपा गयो नापो।
ध्यांन को धोरो कियो उर अंतर, पाणी पताल सूं काढ्यौ अमापो।
यौं निज नीर परेर्यौ निरंजन, राम रट्यौ रसना निहपायो।
राघो रसाल बिसाल बयारौ लै, यौं हरि कौं मिल्यौ मेटिकै आपो ॥१९५
काच तणै कुलि कचन देखहु, कीर तै हीर भयौ कलि कालू।
ऊसर सूसर भूमि ह्वै ज्यूं, उपजै अन-ईष अनंत उन्हालू।
गोधूम ज्यूं सुद्धक अग कीयो गुर, दूरि करे कुल-क्रम के सालू।
राघो कहै गुण गोबिंद के पढ़, तै कहु जीभ लगी नहीं तालू ॥१९६

इति श्री रांमानुज सप्रदा

अथ विष्णु स्वांमि संप्रदा लिखतं

छपै क्यूं करि बरनौं आदि घर, खबर न येकौ अंक की ॥
छद विष्णु स्वामि स्यंभू मतौं, मनौं बच क्रम करि धार्यौ।
भाव भगति भगवंत भज, जसै जग मधि बिसतार्यौ।
पैड़ी[1] बंध प्रवाह घणो, घट सौं घट सीझै।
खुली मुकति[2] की पौरि, जास गुर गोबिंद रीझै।

---

१ पडी। २ मुकति।

प्रात भयो सब लोग सुनी चलि आवत देखन भीर भई है।
साध महंत भले पुनि आवत छाप सरीरहि देखि लई है।
भेट धरी बहुमान करे नृप लाज भरे सुति बात गई है।
देवल ओनरस्यंघ मनावत होत सबै जत साखि दई है॥२०७
नैन बिना द्विज द्वार परयौ शिव चाहत है द्रिग मास बदीते।
नाथ कहै यह फेर न होवत जात नही मन माहि प्रतीते।
ले पृथिराज अगोछ छुवावहु आनि कहीं दिज सो भय भीते।
नौतम लाइ दयौ तन क छुय आखि खुली द्विज हूं चित चीते॥२०८

मूल

छप्पय आसकरन के आस यह, मन मे मोहनलाल हरि॥
भींव पिता गुर कील्ह, भक्त भगवत सम बेखै।
जो कछु घर मधि माल, जितौ साधन कै लेखै।
अज महोछव रास, दास हरिजी के पूजे।
भरम करम कुल रीति आंन धर्म छाड़े दूजे।
राघो रांम रच्यौ भलौ, कूरम-कुल पृथीराज धरि।
आसकरन कै आस यह मन मे मोहनलाल हरि॥१६२

टीका

इन्दव छंद कोट नरब्बर को वह भूपति मोहनलालहि सेव करै ही।
मदरि मैं रहि बैर सबा इक चौकस काम न पात भरे ही।
काम भयौ नृप बेगि बुलावत भोग कहै नहि कान धरे ही।
फौज चढी पतिस्या चलि आवत आइ कही सठ माहि डरै ही॥२०९
फेरि पठावत रारि सुनावत चित्त न आवत साहि गयो है।
चित भई प्रतिहार कही इक आप पधारहु जात भयो है।
पूजन ह्वै परनाम कर नृप सीस नगो पग संग दयो है।
ऐखि बडी मुजिसी न कबी मिति नेम सच्यौ तब द्वार लयो है॥२१०
मांगि लई चिग देखत पीछहि साहि सलाम करी बहु रीझे।
साध सनेह भरयौ फिर बूझत भाव कह्यौ सुनिकै नृप भीजे।
भक्त तज्यौ तन भूप भयौ दुख आप सुनी प्रभु भोग न कीजे।
सेव करै द्विज गांव दये चिग नाइ करी उनके प्रभु धीजे॥२११

मूल

छपै सतन कौ सरवस दीयो, जन राघो हरि की प्रीति कौं ।।
कुर सारत करतार सूं, भक्ति जिहाज के खेवा ।
रांम काम सरखरू, पोता पृथीराज के येवा ।
भगवानदास भगवंत भज्यौ, करि भक्ति अनूप ।
छाप छहू दरसन विषै, भयो वैरागी रूप ।
काछ बाच निकलक है, महा-निपुन धर्म-नीति कौं ।
सतन कौं सर्वस दीयो, जन राघो हरि की प्रीति कौं ॥१६३

इंदव छंद भजनीक भलौ सत सूर सदा, हरदास की तेग महा अति सारी ।
भोग की भावना नारि कै ऊपनी, बालक ऐक ह्वै तौ भलौ भारी ।
जेहरि लै जल कै मिसि नीसरी, बाधि कै पाव कूवा मैं उसारी ।
राघो कहै वढी मानि महत की, चित्र के दीप ज्यौं सो जिहि टारी ॥१६४
मालि करी बनमालि की वंदगी, भक्ति की वाडी निपा गयो नापो ।
ध्यान को धोरो कियो उर अंतर, पांणी पताल सूं काढ्यौ अमापो ।
यौं निज नीर परेरयौ निरजन, राम रट्यौ रसना निहपायो ।
राघो रसाल बिसाल बयारौ लै, यौं हरि कौं मिल्यौ मेटिकै आपो ॥१६५
काच तणे कुलि कचन देखहु, कीर तै हीर भयौ कलि कालू ।
ऊसर सूसर भूमि ह्वै ज्यू, उपजै अन-ईष अनत उन्हालू ।
गोधूम ज्यू सुद्धक अग कीयो गुर, दूरि करे कुल-क्रम के सालू ।
राघो कहै गुण गोबिंद के पढ, तै कहु जीभ लगी नहीं तालू ॥१६६

इति श्री रांमानुज सप्रदा

अथ विष्णु स्वांमि संप्रदा लिखतं

छपै छद क्यूं करि बरनौं आदि घर, खबर न येकौ अंक की ॥
विष्णु स्वामि स्यंभू मतौ, मनौं बच क्रम करि धारयौ ।
भाव भगति भगवंत भज, जसै जग मधि बिसतारयौ ।
पैड़ी[1] बंध प्रवाह घणो, घट सौं घट सीझे ।
खुली सुकति[2] की पौरि, जास गुर गोबिंद रीझे ।

---

१ पडी । २ मुकति ।

प्रात भयो सब लोग सुनी जसि आवत देखन भीर भई है।
साध महंत भले पुनि आवत छाप सरीरहि देखि लई है।
भेट धरै बहुमान करै नृप, लाज भरै सुनि बात नई है।
देवल श्रीनरस्यंघ बनावत होत खड़े जत साखि दई है ॥२०७
नैन बिना द्विज द्वार पर्यौ सिव चाहत है द्रिग मास बदीते।
नाथ कहै यह फेर न होवत जात नही मम माहि प्रतीते।
ले पृथिराज भगोद्य छुवावहु आनि कहीं द्विज सौ भय भीते।
नीरज लाइ दयौ तन के छुय आंखि खुली द्विज ह्वै चित चीते ॥२०८

मूल

छपै आसकरन के आस यहु, मन मै मोहनलाल हरि ॥
भींव पिता गुर कील्हु, भक्त भगवत सम देखै।
जो कछु घर मधि माल जितो साधन कै लेखै।
जन महोछव रास दास हरिजी कौं पूजै।
भरम करम कुल रीति, आंन धर्म सारे दूजै।
राघो रांम रच्यौ भलौ कूरम-कुल पृथीराज घरि।
आसकरन के आस यहु मन मै मोहनलाल, हरि ॥१८२

टीका

इंदव छंद
कोट नरब्बर को वह भूपति मोहनलालहि सेव करै ही।
मंदरि मैं रहि पैर सदा इक चौकस कांम न पात धरै ही।
कांम भयौ नृप बेगि बुलावत लोग कहै नहि कांम धरै ही।
फौज चढी पतिस्या चलि आवत आइ कही तउ नांहि डरै ही ॥२०९
फिरि पठावत रारि सुनावत चित्त न आवत साहि गयो है।
चित भई प्रतिहार कही इक आप पधारहु जात भयो है।
पूजन ह्वै परनांम करै नृप सीस लगी पग खग वयो है।
ऐहि वडो मुजिसी न कडी मिति नेम लख्यौ तब द्वार भयो है ॥२१०
मांखि दई चिग देखत पीछहि साहि सलांम करी बहु रीझे।
साध सनेह लख्यौ फिर बूझत भाव कह्यौ सुनिकै नृप भीजे।
भक्त तज्यौ तन भूप भयौ दुख आप सुनी प्रभु भोग न कीजे।
सेव करै द्विज भाव दये सिर लाइ करी उसके प्रभु भीजे ॥२११

पैज रही पतिस्याह द्रवार मैं, गाइ जिवाइ कै वच्छ मिलायौ।
राघो कहै परचौं परचे पर, देहुरौ फेरि दुनी दिखरायौ ॥२००
नामदेव नाम नृदोष रटै रुचि, पाप भजे कुचि देह तैं दूरी।
उर थैं अपराध उठाइ धरे दस, राम भये बस पात ज्यूं पूरी।
जाप जपै निह[1] पाप नृम्मल, भीर परैं गहि साच सबूरी।
राघो कहै जल मै थल मै, स चराचर मैं हरि देखै हजूरी ॥२०१

टीका

वामसदेव भगत्त वडो हरि, तास सुता पति-हीन भई है।
सवत वारह माहि भई तव, ताताहि ठाकुर सेव दई है।
तोर मनोरथ सिद्धि करै प्रभु, प्रीति लगाइ रहो तम ईहै।
सेव करी अति वेगि भये खुसि, भोग चहै अपनाई लई है ॥२१४
भ्यौ गरभादिक वात करै सव, साखत लौगन कै चित भाई।
कानि परी यह वामसु देवहि, ठीक करी हरि की किरपाई।
वाल भयो तव नामस देवहि, राइ हुतौ सव देत वधाई।
होत वडो हरि सौ हित लागत, रीति जगत्तहु नाहि सुहाई ॥२१५
खेलत है निति पूजन ज्यू करि, घट वजाइर भोग लगावै।
घ्यान धरै परनाम करै जव, सभ्फ परै तव सैन करावै।
नाम कहै निति वामहि देवस, पूजन देहु भलै मन भावै।
गावहि जावत आत दिना त्रिय, दूध पिवाइन पीय सुहावै ॥२१६
ह्वै बिरिया कब आवत है दिन, बारहिबार कहै नहि आई।
वार हुई तव दूध चढावत, सेर उभै अवटात कडाई।
प्रीति लगी अवसेर घणी उर, कंठ घुटै द्रिग नीर बहाई।
ढील लगी बहु मात खिजै अव, बेर करै जिन लै करि जाई ॥२१७
ले तवला हरि पासि चल्यौ मधि, दूध निवात सुगध मिलाई।
है चित चाव डरै अगि ता करि, दास करै मम है सुखदाई।
मद हसै अतिकात लसै उर, भाव बसै सिसु वुद्धि लगाई।
पावन[2] मैं मन आड करै जन, देखि परथौ कहि पीहरि राई ॥२१८

---
[1] तिह। [2] पांचन।

दे तन प्रान धनादिक पावत, आनहु बात न चाहत भाई।
साह तुला तुलि बाटत है धन, लै स[1] गये सब नाम न जाई।
लेन खिनावत फेरि दये जुग, तीसर कै चलि साथि भनाई।
लीजिये हाथि कछू हमरौ भल, चाहि नही द्विज देहु लुटाई ॥२२६
साह करै हठ ले तुलसी-दल, रामहि नाम लिख्यौ अध दीजे।
हासि करौ मति ल्यौ हमरी गति, तौलि बरोबरि तौ किम लीजे।
काटहि मेल्हि चढावत कचन, होइ बरोबरि नाहिस खीजे।
वौत चढै इक ताक धर्यौ धन, जातिहु पातिहु कौ न नईजे ॥२२७
चिंत भई सबही नर नागर, नाम कहै इक और करीजे।
तीरथ न्हान व्रतादिक दान, किया सब आन सु माहि धरीजे।
हारि रहे सु पला नहि ऊठत, साह कहै इतनू इ लईजे।
लेरि करै किम नाहि भयो सम, नाम यहै अधिकार सुनीजे ॥२२८
रूप धर्यौ हरि ब्राह्मन कौ, अति-दूबल सो पर्चो व्रत देखै।
ग्यारस कै दिन जाचत अनहि, आज न द्यौ परभाति बसेखै।
वाद करै दहु सोर भयौ वहु, नाम बचन्न कहेस अलेखै।
अस्त भयो दिन प्रान तजे द्विज, नाम-प्रभाव स ग्यारिस पेखै ॥२२९
लाकड ल्याइ चिताहि बनावत, गोद लयो द्विज साथि जरौंगो।
राम हसे तब पारिष लेत सु, छोडि करै मति नाहि करौगो।
भक्तन प्यास लगी जल ल्यावत, भूत बध्यौ अति मैं न डरौंगो।
लै पद गावत भीझ बजावत, रूप करचौ हरि यौंही तिरौंगो ॥२३०
जात चले मग खभ खरौ इक, पूछत मारग बोलत नाही।
गात भये पद ताल बजावत, काढि हरी कर बोलि बताही।
सकट बैल जुप्यौ स गयौ मरि, रोइक नामक पाइ पराही।
लै कर भीझ बजावत गावत, वैल उठ्यौ जुपि कै घरि जाही ॥२३१

जैदेवजी को बरनन—मूल

छपै **यम जैदेव सम कलि मैं न कवि, दुज-कुल-दिनकर औतरचौ ॥**
श्रवन गीत गोविंद, अष्ट-पद दई[2] असतोतर।
हरि अक्षर दीये बनाइ, आइ प्रगटेस प्रांणवर।

---

१ लैसु। २ ई।

बीति गये दिन दोइ न पीवत सोइ रह्यौ निसि नींद न आवै।
प्रात भयौ अवटाइ लयौ फिरि आ भरयौ अब पी मम भावै।
जोड़ि कह्यौं कर जो नहिं पीवत खजर खाइ मरौ गरि लावै।
हाथ गह्यौ लखि पीवत हौं सब पीवत देखि सु आप खुसावै ॥२१९
आइर पूछत बालक सूं हित दूधहि बात कह्यौ कहि मांनां।
मौसु करी तब दोइ दिनां नहिं पीवत खजर लै गर-ठांनां।
पीत भयौ तब जोसि लयौ कछु होत खुसी सुनि साखि भरांनां।
आइ धरयौ पय पीवत नांहि न लेत छुरी अब पीवत मांनां ॥२२
भूप तुरक्क कहै बसि साहिब यौ अजमत्तिक मोहि मिलावौ।
हूं अजमत्ति भरे दिन क्यौं हम साधन कौ रिझवे उर भावौ।
या परभाव बुलाइ यहां लग गाइ जिवाइ धरां तुम आवौ।
रांमहि ध्याइर गाइ जिवावत देखि परयौ पग गांव रखावौ¹ ॥२२१
नाम करौ हम हू सुख पावत चाहि नहीं किम सेज दई है।
सोस भरी अब भोग दये करि मांहि करी पस मांहि भई है।
आइ कही पतिस्याह बुलावत आवस मांगि करात नई है।
काढ़ि दिखावत उत्तम उत्तम लेहु पिछांनि सु आंखि भई है ॥२२२
पाइ परयौ फिरि रास हरी पहि नांम कहै मति संत दुखावै।
मांनि लई फिरि नांहि बुलावत गावत रांमहि देव लजावै।
बाहरि भीर निहारि उपानत बांधि लई कटि आ पद गावै।
देखि लई चिनि चोट दई उन देत धका चित मैं नहि आवै ॥२२३
ऊठि गये पिछ-वार भयौ पद झांझ बजावत रांम रिझावै।
चोट दिखावत मोहि सुहावत ठौरहु भावत निति रहावै।
आप सुनी हरि है करुनामय देवल होइ दयास फिरावै।
मंदिर मांहि हुते सु जिते नर, भाव गई अन पाइ परावै ॥२२४
लाइ लगी घर मांहि जरयौ सब जो अवसेष रह्यौ बहु नाख्यौ।
नाम कहै यहु स्यौ नगरी तब आप हसे हरि मो सनि राख्यौ।
है तुमरी घर छानन हाजर, छांन छवाय खुसी प्रभु भाख्यौ।
पूछत हैं नर छान दई किन देहु छवाई स देवन दाख्यौ ॥२२५

---

१ रखायौ।

दे तन प्रान धनादिक पावत, आनहु बात न चाहत भाई।
साह तुला तुलि बाटत है धन, लै स[1] गये सब नाम न जाई।
लेन खिनावत फेरि दये जुग, तीसर कै चलि साथि भनाई।
लीजिये हाथि कछू हमरौ भल, चाहि नही द्विज देहु लुटाई ॥२२६
साह करै हठ ले तुलसी-दल, रामहि नाम लिख्यौ अध दीजे।
हासि करौ मति ल्यौ हमरी गति, तोलि बरोबरि तौ किम लीजे।
काटहि मेल्हि चढावत कचन, होइ बरोबरि नाहिस खीजे।
वौत चढै इक ताक धरयौ धन, जातिहु पा तिहु कौं न नईजे ॥२२७
चिंत भई सबही नर नागर, नाम कहै इक और करीजे।
तीरथ न्हान व्रतादिक दान, किया सब आन सु माहि धरीजे।
हारि रहे सु पला नहि ऊठत, साह कहै इतनू इ लईजे।
लेरि करै किम नाहि भयो सम, नाम यहै अधिकार सुनीजे ॥२२८
रूप धरयौ हरि ब्राह्मन कौ, अति-दूबल सो पर्चो व्रत देखै।
ग्यारस कै दिन जाचत अनहि, आज न द्यौं परभाति बसेखै।
वाद करै दहु सोर भयौ वहु, नाम बचन्न कहेस अलेखै।
अस्त भयो दिन प्रान तजे द्विज, नाम-प्रभाव स ग्यारसि पेखै ॥२२९
लाकड ल्याइ चिताहि बनावत, गोद लयो द्विज साथि जरौंगो।
राम हसे तव पारिख लेत सु, छोडि करै मति नाहि करौंगो।
भक्तन प्यास लगी जल ल्यावत, भूत वध्यौ अति मैं न डरौंगो।
लै पद गावत झीझ वजावत, रूप करयौ हरि यौंही तिरौंगो ॥२३०
जात चले मग खभ खरौ इक, पूछत मारग बोलत नाही।
गात भये पद ताल बजावत, काढि हरी कर बोलि बताही।
सकट बैल जुप्यौ स गयौ मरि, रोइक नामक पाइ पराही।
लै कर झीझ वजावत गावत, बैल उठ्यौ जुपि कै घरि जाही ॥२३१

जैदेवजी को बरनन—मूल

छपै **यम जैदेव सम कलि मैं न कबि, दुज-कुल-दिनकर औतरयौ ॥**
श्रवन गीत गोविंद, अष्ट-पद दई[2] असतोतर।
हरि अक्षर दीये बनाइ, आइ प्रगटेस प्राणवर।

---

१ लैसु। २ ई।

भूप उदास भयो अति सोचित, जात भयो सर बूडि मरौगो।
मो अपमान कर्यौ सुधर्यौ वह, बात छिपै कत नाहि टरौगो।
आप कहै हरि बूडि मरै मति, ग्रथन और सु ताप हरौगो।
द्वादस सर्ग्ग सलोकहि द्वादस, माहि धरा बिख्यात करौगो ॥२३७

बैंगन कै बन-मालिन गावत, पचम सर्ग कथा बनमाली।
लार फिरै जगनाथ भगो तन, घूमत लागत प्रेम सु झाली।
दौर फटे लखि बूझत हैं नृप, सेवक देखि बजावत ताली।
श्री जगनाथ कहै सर्ग पचम, चालि गयो बन गावत आली ॥२३८

भूप कहाइ दयो सगरे यह, गीत-गुबिंद भली धर गावो।
बाचत गावत है मधुरै सुर, आइ सुनै हरि है बहु चावो।
येक मुगल्ल सुनी यह ठानत, वाज चढ्यौ पढि है प्रभु भावो।
गीत-गुवीद हि गावत है सुर, स्याम धर्यौ पद आप सुहावो ॥२३९

काबि कथा बरनीस सुनी जिम, और सुनौं अधिकाइ महा हैं।
म्हौर कनै मग माहि मिले ठग, जात कहा तुम जात जहा है।
जानि गये पकराइ दई सब, चाहत लैं हम बात कहा है।
दुष्ट कहै चतुराइ करी इन, ग्रामहि मैं पकराइ लहा है ॥२४०

मारि नखो इक यौं उठि बोलत, दूसर कै जिनि मारहु भाई।
लेहि पिछानि वहू त करै किम, काटि करौ पग[1] भेरन खाई।
भूपति आइ गयो उन देखत, भेर उजासर मोद लखाई।
काढि लये तब पूछत कारन, भक्त कहै हरि यौह कराई ॥२४१

सत भले बड भाग मिले मम, सेव करौं निति यौ सुख लीजै।
लै सुखपाल बढाइ चले पुर, भूप कहै कछु आइस कीजै।
सतन सेव करौ नित मेवन, आवत जो जन आदर दीजै।
स्वाग बनाइ र आवत वैठग, आप कहै बड भक्त लहीजै ॥२४२

भूप बुलाइ कहै तुम भागहि, आत वडे जन सेव करीजै।
मदरि मै पधराइ रिझावत, होत सुभोग डरै वप छीजै।
आइस मागत है दिन ही दिन, आप कहै इनको द्रिव दीजै।
माल दयो वहु लार करे भृत, द्यो पहुचाय सु-वेन भनीजै ॥२४३

---

१ फेर।

बूझत चाकर नांहि क्षमा तव काहु कि नांहि भई मम सेवा।
स्वामिन ये तुम हो लगते कछु, सांच कहे हम जानत भेवा।
चाकर थे ठग नृप के बिगरी इन सू हम मारन देवा।
जीवत राखहु[1] काटि करो पगु, या गुन को अवहू करि लेवा॥२४४

भूमि फटीस समाइ गये ठग देखि भगे धनि स्वामिप आये।
बात सुनी सब कांपि उठ्यो तन हाथ र पाव भये निकसाये।
होइ अचंभ कहे नृप पें भृत्य स्वामिन पासि गयो सुख पाये।
सीस धरयौ पग बूझत आनि र बात कही सत सो मन भाये॥२४५

टेक गही नृप सत्य कही जन जानि अमोलिक धारि लई है।
औगुन को गुन मांनत जो जन सो सबही बिधि जीति भई है।
सत सुभाव तजे न सहै दुख छाडत नीच न नीच भई है।
गांव लख्यो जयदेव बिंदूबल नाथ रह्यो इत भक्त छई है॥२४६

जा करि ब्यात भयो पदमावति स्वामि मिलावत भावत रांनी।
भ्रात मुवो तिय होत सती किन भग कटे इक जाकि परांनी।
भूप तिया अचरिज्ज करे यह नांहि कर फिरि वा समझानी।
या परकार कि प्रीति म मांनत देह तजे पति प्रान तजांनी॥२४७

भाप दयी इक भूपति सू कहि स्वामि छिपावहु प्रातिहि देखो।
नीच बिचारत अतर पारत मानि तिया हठ सो अवरेखो।
स्वामि मिले हरि धाम कही इक सोच करत मैं महि लेखो।
व पदमावति क्यू तुम रोवत वे सुख सू अपने मन पेखो॥२४८

बात बनी न तिया सरमावत बीति गये दिन फेरि करी है।
आनि गई पन्मावति पारिय लेत कही सुनिकें-न मरी है।
स्वेत हुवो मुख भूपति देखत भागि धरों भर यह पकरी है।
ठीक भई तब स्वामि पधारत देखि मुई कहि हम्भ हरी है॥२४९

भूप कहे बरिहौ अनि बातन ज्ञान सबै मम छार मिलायो।
स्वामि कहै बहु मानत नांहि न अष्टपदी धुर देव पुज्यायो।
भूप कही[2] सरमावत चावत घात करी कछु भाव न आयो।
भाप करयो सनमान पधारत बिंदुबिलै परचा हु सुनायो॥२५०

१ राखत। २ कहीं।

गग अठारह कोस सथानत, न्हांवन जात सदा मन भाई।
प्रौढ भये तउ नेम न छाडत, पेम लख्यौ निसि आवत लाई।
खेद करौ मति मानत नाहि न, आइ रही इतकै सलखाई।
अवुज फूलत मोहि निहारिहु, भांति भई वह जानि सु आई ॥२५१

तिलोचनजी कौ मूल

इदव संत इसो[1] सद-रूप ह्वै साहिव, आप तिलोचन सूं गुदराई।
छंद मैं हू अनाथ रहू वृति काहूं कै, जो कोइ प्रीति निवाहै रे भाई।
दास तिलोचन लै ग्रह आये हैं, रांमको पै तव रोटी कराई।
राघो कहै जन के हित को अन, सुद्ध मैं रामोटी सोलक पाई ॥२०४

टीका

नाम तिलोचन दोइ ससो रिव, नाम वखांन करचौ जग मांहि।
नांम कथा चर पीछ कही हम, दूसर की सुनियौ चित लाही।
बस महाजन कै प्रगटे जन, पूजत है तिय गोढिक[2] न रहांही।
चाकर नाहि न सत लखै मन, सेव करै उर मैं हरखाहीं ॥२५२
रूप धरचौ भृति कौ हरि आपन, जीरन कवल टूटी पन्हैया।
बाहरि आय र वूझत है जन, मात पिता नहि गांव जन्नैया।
तात न मात न भ्रात न गाव न, चाकर रौं-ज सुभाव मिल्लैया।
बात अमिल्ल सुनाइ कहौ सव, खाउ घणौ अन नारि रसैया ॥२५३
च्यारि वरन्नहु रैसि सबै कर, लार न चाहत एक कराऊ।
सतन सेवत बीति गये तन, नौतम नांहि न बरष बताऊ।
नाम हमार सु अतरजांमे हि, दास तुम्हार-स तोहि घपांऊ।
पाहनि कंबलि नौतम देवत, आप नुहावत मैल छुटाऊ ॥२५४
दास कहै तिथ दासि रहौ इन, ह्वै न उदास-स पासि रहावै।
जीम सु याहि जिमांइ निसकहि, जीवत है स मिले हरि गावै।
संतहि आवत त्यांह रिझावत, दावत पावस वाहि लडावै।
मास बदीत भये सु तियोदस, ऊठ गये कछु बात कहावै ॥२५५
जात भईस परोसनि कै तिय, बूझत गात मलीनस क्यू है।
हसि कहै इक चाकर राखत, धापत नांहि डरू सुनि यौ है।

१ असो। २ गोटि।

बूझत चाकर नांहि समा तब काहु कि मांहि भई यम सेवा।
स्वामिन के तुम हौ भगते कछु, साच कहौ हुम आंनत भेवा।
चाकर वे इकठे नृप के विगरी इन सू हम मारन देवा।
जीवत राखहु[1] काटि करौ पगु, या गुन कौ अबहू भरि लेवा ॥२४४

भूमि फटीस समाइ गये ठग देखि भगे चलि स्वामिप आये।
बात सुनी तब कांपि उठ्यौ तन हाथ र पाव भले निकसाये।
होइ अधम कहे नृप पै भृत्य स्वामिन पासि गयौ सुख पाये।
सीस धरयौ पग बूझत आनि र बात कही सत मो मन भाये ॥२४५

टेक गही नृप सत्य कही जम जानि अमोलिक धारि मई है।
औगुन को गुन मानत जो जन सो समझी विधि जीति भई है।
संत सुभाव तजै न सहै दुख छांडत नीच न नीच मई है।
नाव लख्यौ जयदेव किंदूबल नाथ रह्यो इत भक्त छई है ॥२४६

जा करि ब्याह भयौ पदमावति स्वामि मिलावत आवत रांनी।
भ्रात मुवो तिय होत सती किन अंग कटे इक राखि परांनी।
भूप तिया अचरिज्ज करै यह नाहि बर फिरि वा समझांनी।
या परवार कि प्रीति न मानत देह तजै पति प्रांन तजांनी ॥२४७

आप रसी इक भूपति सू कहि स्वामि छिपावहु प्रातिहि देखौ।
नीच विचारत अंतर पारख मानि लिया हठ यौं अवरेखौ।
स्वामि मिले हरि आइ कही इक सोच करै मति मैं नहि लेखो।
क पदमावति क्यू तुम रोवत व सुख सू अपन मम पेखो ॥२४८

बात धमी न तिया सरमावत धीति गये दिन फेरि करी है।
जानि गई पदमावति पारिख सेत कही मुनिकें-ज मरी है।
स्वेत हुवो मुख भूपति देखत आगि जरौं धर यह पकरी है।
टीक भई तब स्वामि पधारत देखि मुई कहि इच्छ हरी है ॥२४९

भूप कहै अरिहौं अनि धावन आंन सबै मम छार मिलायो।
स्वामि कहै बहु मानत नाहि म भ्रष्ट भयो मुर देव पुज्यायो।
भूप वहो सरमावत चावत प्रान करी कछु भाव न आयो।
आप कर्यौ गनमान पधारत किंदुबिलै परचा हु सुनायो ॥२५०

---

१ राखत। २ छयौं।

तास पछौपै सुत सरस, गिरधर गोकलनाथ निधि।
पण प्रातज्ञा कौं भले, जन राघो पुरवै राम रिधि ॥२०७

बल्लभाचारय को बरनन • टीका

इदव छंद मूरति-पूजन भाव घनू उर, यौं मन मैं सब ही जन दीजे।
वैहि करी हरि धामन धामन, सेवत है सुख आखित लीजे।
है सुघुराइ अवद्धि महा निति, राग रु भोग वहौ बिधि कीजे।
नाव सुबल्लभ रीति सबै प्रभु, गोकल गाव-स देख तरीजे ॥२५९
देखन गोकल सतहि आवत, होत मुदित्त-स रीति हि न्यारी।
रूख सु खेजर रूप भुलावत, देखि दरस्स भयो सुख भारी।
आइ निहारत पूजन नाहि न, फेरि गयो कहि जाहु तयारी।
देखि घणे वत भूलत ठाकर, जाइ कही तव लेहु सभारी ॥२६०
आखि हुई फिरि तौ नहि भूलत, देहु दिखाई अबै मम रूप।
आप कहै अबकै फिरि देखहु, हेत लगाइ सुजानि अनूप।
जातहि पावत कठ लगावत, नैन भरावत पाइ सरूप।
राति रह्यौ स भजे र ज-जै हरि, होत प्रकास दया अनुरूप ॥२६१

मूल

छपै **श्रीवल्लभ सुत बिठलेस नै, लाल लडाये नद ज्यूं॥**
परचर्ज्या मैं निपुन, राग अर भोग बिविध कर।
गहणां बसतर सेज, रचत रचनां रचसुदर।
बृजपति उहै गोकलज, धाम सोहै दीछत को।
घोष चद तहां बिदत, भिभौ वासव ईछत को।
राघो भक्ति परताप तै, दीपत राका चद ज्यूं।
श्रीबल्लभ-सुत बिठलेस नै, लाल लडाये नद ज्यूं ॥२०८

टीका

इंदव छंद कायथ हौ तिपुरा हरि भक्त सु, सीत समैं दगली पहुचावै।
मोल घणौं पट लेवत हौ अट, नाथ चढावत यौं मन भावै।
आइ गयो सम यौ नृप लूटत, खावन धाम सु अन न पावै।
सीतहु आवत दैन उभावत, द्वाति हुती इक वेचन जावै ॥२६२
एक रुपैया मिल्यौ पट ल्यावत, रग सुरग धरयौ घर माही।
हेत घणौं द्रिग धार वहै जल, देहि घणौ प्रभु और मगाही।

नांहि कह्यौ जिनि राखि मनो-मन कान परे उठि आवत त्यूं है।
जांनि गये रमि आन भये दुख पात नये दिन पेंसि-सु ज्यूं है ॥२५६
नीर अनादिक त्याग दये दिन तीन भये फिरि पाइ न वैसी।
भाग बिना तिय क्यूं र कही किम संतन सेव न ह्वौ भृत्य कैसी।
अम्बर बोलि कहै हरि मैं दुख भूख मरौ मत मांनि अदेसी।
प्रेम तुम्हार करयौ बसि है मम सेव करूं फिरि मैं धरि वैसी ॥२५७
चौंक परयौ सुनि भक्ति करी किम आप हरी पहि सेव कराई।
भक्त कहै मम संत बडे बड भक्ति करी नहि लोक दिखाई।
आप दयाल निहाल करे धन रच करे तिन भौत मनाई।
धांम बिराजत मैं नहि जांनत आइ मिलै मम पाद पराई ॥२५८

मूल

छपै भाव सहित भागवत कौं निरांमदास नीकै कह्यौ ॥
अवस्था-कुल परसिधि, जिष्म संज्ञा सत्य पाई।
स्रुति सुम्रुति अतिहास, अष आगम बिधि गाई।
ब्रह्मा नारद व्यास, बृहसपति सुक सनकादिक।
इन सम है सरबज्ञ सोत ज्यूं चले गंगादिक।
सत समागम होत निति, प्रेम-पुंज राघौ लह्यौ।
भाव सहित भागवत कौं, निरांमदास नीकै कह्यौ ॥२०५
बिष्णु-स्वामि पुर सारि मधि, लाहौरी लाहौ लीयौ ॥
नांम निरायनदास मिश्र मिथत भ्रम भास्यौ।
भक्ति भेद भागवत सार सुक मुनि ज्यौं चास्यौ।
व्यास-बचन बिसतार कही गद-गद ह्वै वांणीं।
साध संगति गुर-धर्म अनंत अमोघे प्रांणीं।
जन राघौ नाम कृपा भई खीर-नीर निरनै कीयौ।
विष्णु-स्वामि पुर सार मधि, लाहौरी लाहौ लीयौ ॥२०६
पत्त परतंम्या कौं भले जन राघौ पुरवै राम विधि ॥
बल्लभ गुसांई हरिबल्लभ ताहि हरि गोकल थाप्यौ।
सदा भाय रसरास, आप अपणौ करि थाप्यौ।
ता सुत बिठलेसुर भली बिधि भक्ति सु साही।
धरणी मत मजबूत थप्यौ हरि पैंज निबाही।

भजन प्रवल जल विठल[1]-नाथ को जाकी वेला।
प्रभु प्रसाद तन तेज, चरन चरचित नृप चेला[2]।
श्री वल्लभ-कुल मै प्रेम-पुज, नृविलीक अैसो खभीर।
श्रीगोकलनाथ अनाथ पै, दया करत अति गुन-गभीर॥२११

टीका

इंदव छंद
आनि कही इक मोहि करौ सिप, भेट चढावन लाख न ल्यायो।
आप कह्यौ तव हेत इसौ कहु, जाहि विना तन जाइ छुटायो।
वोलि कह्यौ मम नाहि कहू हित, मैं न करी सिप और सुनायो।
प्रेम कथा इत और न दूसर, वैन अचाइ सुन्यौ दुख पायो॥२६२
भगिह कान्ह भजै भगवान, नही उर आन-स लालहि भावै।
रैनि सुपनहि नाथ कही यह, भीति हुई मम नाहि सुहावै।
गोकल-नाथहि जाइ कहौ तुम्ह, बागन वोट ढवाइ नखावै।
प्रात भयो उरि सोच नयो किम, जाइ गयो सुनि मोहि मरावै॥२६३
वीति गये दिन तीन कहै निति, मोर कहा वस जाइ कहैगो।
द्वारहि पालहि जाइ चितावत, रोस करचौ सुनि पास लहैगो।
जाइ कही किन वेग बुलावत, वात कहौ यह डौल ढहैगो।
कठ लगावत जाति वहावत, येक कह्यौ हरि को सु रहैगो॥२६४

मूल

छपै **कृष्णदास पै करि कृपा, गिरधरन सीर दियो नाम मैं॥**
श्री बल्लभ गुर पाइ, भयो हरि गुण कौ आलै।
नौख चोज मधि काबि, नाथ सेवा निति पालै।
सेवत बाणीं सुजन, ज्ञान गोपाल भाल भर।
सर्बस बृज मैं गनत, अवर नाहीं जानत बर।
प्रभुदास बरज नेरौ रहै, मन सो स्यामा स्यांम मैं।
यम कृष्णदास पै करि कृपा, गिरधरन सीर दियो नाम मैं॥२१२

टीका

इंदव छंद
दास जु कृष्ण करचौ रसरास सु, प्रेम धरचौं उह नाथ वरचौ[3] है।
होत बजार जलेवि दिली, अरपी प्रभु आपहि भोज करचौ है।

---

१ बिललनाथ। २. लेला। ३ करचौ।

आइ 'मिल्यौ हरिदास सुभावहि देत भयौ मन मैं सरमांहीं ।
दासन कै यह काज न आवत मोर गुसांई लिने करवांहीं ॥२६३
आइ दयो धरि रावत है पट नाथ सनेह सवेगि बुलाये ।
सीत लगै हम वेग निवारहु औत उढ़ावत कंप उठाये ।
फेरि कही तब आगिहु बारत जात नहीं सुमिरै सरमाये ।
दास बुलाइ जड़ावलि पूछत दंत बताइ सबै न बताये ॥२६४
नांहि सुनी तिपुरा कहि दारिद[1] मोटहु थान बिछाइ सु राख्यौ ।
वेग मंगावत ज्यौत सिवावत ठौड नसावत बीठल भाख्यौ ।
धारि भयो तन सुक्ख भयो मन, ठंडि गई प्रभु आप न दाख्यौ ।
हेत दिखावत भक्त हु भावत प्रेम रसाइन को रस चाख्यौ ॥२६५

मूल

छप्पै

श्रीवल्लभ-सुत बिठलेस के सपत-पुत्र हरि भक्ति पर ॥
गिरधर गोकुलनाथ, प्रेमसर सुभर भरिया ।
गोबिंद पुनि बलबीर, पीव गोबरधन धरिया ।
बालकृष्ण रघुनाथ नाथ श्रीनाथ उपासी ।
श्री कृष्ण पगे घनस्याम रति बिन करत उदासी ।
ये गादीपति राघो कहै जग मैं मांने नारि-नर ।
श्रीवल्लभ-सुत बिठलेस के सपत पुत्र हरि भक्ति-पर ॥२०९
सोभित बल्लभ-बंस मैं गिरधर श्री बिठलेस-सुत ॥
च्यारि पदारथ भक्ति वेद उरम अनपाइन ।
सास्त्र वेद पुरांन ग्यांन सब ग्रंथ पराइन ।
सेवा पूजा निपुन, नव-नंदन मन मोहै ।
गृपत परम पवित्र धर्मी बरषत सम सोहै ।
राघव सरस सुभाव अति दूजो कोई नांहि धुव ।
सोभित बल्लभ बंस मैं गिरधर श्री बिठलेस-सुत ॥२१०
श्री गोकुलनाथ प्रमाथ पै कथा करत अति गुन गंभीर ॥
दीप रहत मति धीर मनौं रत्नाकर नांई ।
सुजस सकल संसार प्रकत-पति सम परचाई ।

---
१ दारिद ।

भजन प्रवल जल बिठल[1]-नाथ को जाकी वेला।
प्रभु प्रसाद तन तेज, चरन चरचित नृप चेला[2]।
श्री वल्लभ-कुल मै प्रेम-पुज, नृविलीक श्रैसो खभीर।
श्रीगोकलनाथ श्रनाथ पै, दया करत श्रति गुन-गभीर ॥२११

टीका

इदव श्रानि कही इक मोहि करौ सिष, भेट चढावन लाख न ल्यायो।
छद श्राप कह्यौ तव हेत इसौ कहु, जाहि विना तन जाइ छुटायो।
वोलि कह्यौ मम नाहि कहू हित, मैं न करौ सिप श्रौर सुनायो।
प्रेम कथा इत श्रौर न दूसर, वैन श्रचाइ सुन्यौ दुख पायो ॥२६२
भगिह कान्ह भजै भगवान, नही उर श्रान-स लालहि भावै।
रैनि सुपनहि नाथ कही यह, भीति हुई मम नाहि सुहावै।
गोकल-नाथहि जाइ कहौ तुम्ह, वागन वोट ढवाइ नखावै।
प्रात भयो उरि सोच नयो किम, जाइ गयो सुनि मोहि मरावै ॥२६३
बीति गये दिन तीन कहै निति, मोर कहा वस जाइ कहैगौ।
द्वारहि पालहि जाइ चितावत, रोस करचौ सुनि पास लहैगो।
जाइ कही किन वेग बुलावत, वात कहौ यह डौल ढहैगो।
कठ लगावत जाति वहावत, येक कह्यौ हरि को सु रहैगो ॥२६४

मूल

छपै कृष्णदास पै करि कृपा, गिरधरन सीर दियो नाम मै ॥
श्री बल्लभ गुर पाइ, भयो हरि गुण को श्रालै।
नौख चोज मधि कावि, नाथ सेवा निति पालै।
सेवत बांणीं सुजन, ज्ञांन गोपाल भाल भर।
सर्बस बृज मैं गनत, श्रवर नांहीं जानत बर।
प्रभुदास बरज नेरौ रहै, मन सो स्यामा स्याम मै।
यम कृष्णदास पै करि कृपा, गिरधरन सीर दियो नाम मैं ॥२१२

टीका

इदव दास जु कृष्ण करचौ रसरास सु, प्रेम धरचौं उह नाथ बरचौ[3] है।
छद होत बजार जलेवि दिली, श्ररपी प्रभु श्रापहि भोज करचौ है।

---

१ विललनाय। २. लेला। ३ करचौ।

नौबति को मति राग सुन्यौ यह नाथ सुनै सुर चित्त धरयौ है।
रीझि गये उन पासि बुलावत साथि चलावत साथ सरयौ है ॥२६५
भजन भवन भौं करवाइ सुमास लगाइ र देवल ल्याये।
देखि हुई मत सैत भई गति साल कहै मसि मोहि सुहाये।
नाचत गावत भाव दिखावत नाथ रिझावत नैन लगाये।
ह्वास भई तदकार तज्यौ तन आप मिलाइ भई सु रिझाये ॥२६६
सूरहु सागर माइ कहै पद गाइ इसे सम[1] धाइ न आवै।
सातक आठक गाइ सुनावत सूर इसे परभात बतावै।
चित भई हरि आनि भई पद मस बनाइ र सेव रखावै।
फेरि सुनावत मै सुख पावत पच्छि बतावत सो सब गावै ॥२६७
पाव खिग्यौ तब कूप परे तन छूटि गयौ जब नौतम पायौ।
दास दुखी सुमि नाथ लखी मनि झापटि ग्वाल सरूप दिखायौ।
आत भये गिर-गोवर पासिक वल्लभ कौ परनाम कहायौ।
म्हौर बतावत खोदत पावत संक नसावत यौ प्रभु पायौ ॥२६८

मूल

छप्पै हरदास रसिक अैसो भयो आस धीर कीयो उचित ॥
कुंज बिहारी भजस नांम निमत पृथ लागै।
निरखत रंग बिहार, बात सुख सौं अनुरागै।
पवन क्यूं करि गांन, जुगल सरदार रिझावै।
मैवेदन अरपाइ मोर मक्षा कपि क्यावै।
नृप खरे रहै बारनै करि दरसन होवै मुदित।
हरदास रसिक अैसो भयो आस धीर कीयो उचित ॥२१३

टीका

इंदव छंद है हरदासहि आप रसिक्क सही रस केर[2] हरी बुधि भाई।
अतर ल्याइ दयो कि निचौइन मांझि पुलीनि गयो उर भाई।
देखि चदासहि साल दिखावत खोलि दये पट गंध छुमाई।
धीर न आवत पारस कौं पथरा कहि कैं जब सिष्य कराई ॥२६९

१ सम। २ केर।

मीरा बाई का बरनन [मूल]

छपै लोक वेद कुल जगत सुख, मुचि मीरा श्री हरि भजे ॥
गोपिन की सी प्रीति, रीति कलि-कालि दिखाई।
रसिकराइ जस गाइ, निडर रही सत समाई।
रानै रोस उपाइ, जहर कौ प्यालो दीन्हौं।
रोम खुस्यौ नही येक, मानि चरनामृत लीन्हौ।
नौवलि भक्ति धुराई कै, पति सो गिरधर ही सजे।
लोक वेद कुल जगत सुख, मुचि मीरा श्री हरि भजे ॥२१४

मनहर छद रामजी की भग्ति न भावै काहू दुष्टन कों,
मीरा भई वैरनु जहैर दीन्हौ जानि कै।
रानौं कहै मारै लाज, मारि डारौ याहि आज,
आप करै कीरतन सत बैठै आनि कै।
प्रेम मधि पीयो विस पद गाये अह निस,
भै न व्याप्यौ नेक हू न लीन्हौं दुख मानि कै।
राघो कहै रानौं मुखि वंरी अब राजलोक,
मीरा बाई मगन, भरोसे चक्रपानि कै ॥२१५

टीका

इदव छद मात पिता जनमी पुर मेडत, प्रीति लगी हरि पीहर माही।
रानहि जाइ सगाइ करावत, ब्याहन आवत भावत नाही।
फेर फिरावत वा न सुहावत, यौं मन मैं पति साथि न जाही।
देन लगे पित मात अभूषन, नैन भरे जल, मोहि न चाही ॥२७०
द्यौ गिरधारिहि लाल निहारन, वेस अभूषन वेग उठावौ।
मात पिता-स सुता अति है पृय, रोय दये प्रभु लेहु लडावौ।
पाइ महासुख देखत है मुख, डोलहि मैं बयठाइ चलावौ।
धामहि पौंचत मात पुजावत, सास करावत गठि-जुरावौ ॥२७१
मात पुजाइ लई सुत पै पुनि, पूजि बहू अब सास कही है।
सीस नवं मम श्री गिरधारिहि, आन न मानत नाथ वही है।
होत सुहागणि याहिक पूजन, टेकत जौ सिर नाइ मही है।
येक नवं हरि और न नावत, मानत क्यू नहि बुद्धि वही है ॥२७२

होइ उदास भरे उर सास गई पति पास वहु नहिं भाखी।
मान तजे सब फेरि गिने कब केनि कह्यौ फिरि भ्रात न पाखी।
रोस करयौ नृप ठोर जुदी दइ, गेभि लई यह नाच न काखी।
मृत्य करे उर लाल करे[1] संत-संग बरे सब है अम साखी ॥२७३
भाइ मराव कहै सुनि भामिहि शासन संग निवारि भजीजे।
लाजत है नृप तास बडौ कुल लाजत है पख बेगि तजीजे।
संत हमारहि जीवन प्रान-स तारन ह कुल सत्य मनीजे।
आइ कही तब झैर पठावत लै चरनामृत पान करीजे ॥२७४
सीस नवाइ र पीत भई विष संतन भोजन है दुख भारी।
भूप कहै मुति चोकस रावहु भाइ कमे अन बोलत मारो।
स्यामहि सौं बतलात सुनी तब जाइ कही भय हैस तयारी।
सो सुनिक तरवारि लई कर दौरि गयो पट खोलि निहारी ॥२७५
बोलत ही स गयो कत मानस वेहु सकाइ न भारत सोही।
मेह सरे कछु नांहि डरे चित सेत हरे किन याहुत मोही।
भूप लजाइ रह्यौ अरु होर र ऊठि गयो तबि के उर छोही।
देखि प्रताप म मानत भाप रहै उर ताप कर हरि वोही ॥२७६
संतन भेष करयौ विपई नर भाइ कही मम संग करीजे।
लाल दई यह भाइस आवहु मांनि लई सब भोजन लीजे।
सेज बिछावत साथ सभा बिचि टेरि लियौ तब कारिज कीजे।
देखत ही मुख सेत भयो पगि आइ म यौ भव सिष्य मनीज ॥२७७
भूप अकब्बर रूप सुन्यौ मति तांनहि-सेन लिये चलि भायौ।
देखि कुस्याल भयो छबि लालहि ऐक सबद्द यनाइ सुनायौ।
आ कृत चोज मिली पनही तिय देखत मै मुख ताहि छुड़ायौ।
कजन कुज निहारि बिहारिहि भाइ-स देख बने बन गायौ ॥२७८
भूपति बुद्धि असुद्ध भयो मति द्वारवती चलि लाल सहाये।
पेठि पलंघर हाम भयौ नृप जांनि महादुख विप्र पिनाये।
लै वरि भावहु मोहि जिवावहु बेगि गये समचार सुनाये।
हो(त)म खिन्न चलि ठाकुर प मुख मांहि लई गुप चीर रहाय ॥२७९

---

[1] करें।

नरसीजी कौ बरनन · [मूल]

छपै गुर्जर धर नरसी प्रगट, नागर-कुल पावन करचौ ॥
सर्वं सुसारत मनिख, बिष्णु की भक्ति न मानै।
उर्धपुंडर गलि माल, देखि ता बहुत हसानै।
आप भयो हरिभक्त, देस कौ दोष निवारचौ।
तन मन धन करि प्रेम, भक्त भगवत पर वारचौ।
हुंडी सकरी सावरैं, बेटी-कै माहिरौ भरचौ।
गुर्जर धर नरसी प्रगट, नागर-कुल पावन करचौ ॥२१६

मनहर छंद
मन वच क्रम करि नरसी सुम्रत हरि,
माँहै पूजी प्राननाथ हरिजी नौं नाव रै।
जन के वचन जगदीस वांचै वारबार,
जात्रिन कौं दीन्हे दाम 'हूंडी' लैकै सावरै।
नृप नै कीयौ अठाव जन कै न आई बाव,
आप्यौ हरि हार ततकार वलि जाव रै।
राघो कहै रामजी दयाल नरसी सौं निति,
पूत्री नै माहिरै करतार वूठौ ठाव रै ॥२१७

टीका

इंदव छंद
मात पिता मरि जात जुनागढ, आप र भ्रात तियास रहे हैं।
खेलत आइ कही जल पावहु, भाभि जरी कुट वैन कहे हैं।
ल्याइ कुमाइ कहावत है जल, पी भरिकै स जबाव लहे हैं।
ऊठि गये यह त्याग करौं तन, जाइ सिवालय चिन्ह गहे हैं ॥२८०
सात भये दिन जात न बाहर, द्वार गहै तुछ सो सुधि लेवै।
भूख र प्यास तजी र भजे सिव, रूप धरचौ जन दर्सन देवै।
भागि कहै कछु मागि न जानत, जो तुम कौं प्रिय द्यौ मम तेवै।
सोच परचौ यह आइ अरचौ तिय, कैंत डरचौ निति मो हित सेवै ॥२८१
मैं-ज दयौ बिरकासुर कौं बर, होत भयौ डर या परवारे।
पालक है जग बालक नै यह, द्यौंस कहाइ न राम पियारे।
द्यौं र नही मम बैन नसावत, आप बहू बपु नारि न धारे।
आत भये बृज रास दिखावत, भौत तिया मधि कान्ह निहारे ॥२८२

होइ उदास भरे उर सास गई पसि पास कहु नहिं भाखी।
मान तजे अब फेरि गिनें कब बेगि कह्यौ फिरि आस न पाखी।
रोस करयौ नृप ठौर जुगी दइ रीझि लई यह नांच न काछी।
नृत्य करे उर सास करे[1] सत-संग थर सब है जन साछी ॥२७३
आइ नराय कहै सुनि भाभिहि साधन संग निवारि भजीजे।
लाजत है नृप तात बडौ कुल लाजत है पख बेगि तजीजे।
संत हमारहि जीवन प्रांन-स तारन है कुल सत्य मनीजे।
जाइ कही तब झर पठावत ले चरनामृत पांन करीजे ॥२७४
सीस नवाइ र पीत भई बिष संतन छोडन है दुख भारी।
भूप कहै मुसि चौकस राखहु आइ कनै जन बोलत मारी।
स्वांमिहि सौ बतलात सुनी तब जाइ कही अब हैस तयारी।
सो सुनिके तरवारि गई कर दौरि गयो पट खोलि निहारी ॥२७५
बोलत हौ स गयो कव मांनस देहु बताइ न मारत सोही।
येह खरे कछु नांहि डरे चित सेत हुरे किन चाहत मोही।
भूप लजाइ रह्यौ यह होर र ऊठि गयो तजि के उर छोही।
देखि प्रताप न मानत आप रहै उर ताप करे हरि बोही ॥२७६
संतन भेष करयौ विषई नर, आइ कही मम संग करीजे।
साख दई यह आइस आमहु मांनि लई अब भोजन लीजे।
सेज बिछावत साध सभा बिचि टेरि लियौ तब कारिज कीजे।
देखित ही मुख सेत भयो पगि जाइ न यौ अब सिष्य ममीजे ॥२७७
भूप अकब्बर रूप सुन्यो अति तांनहि-सेन लिये चलि आयौ।
देखि कुस्याल भयो छबि लालहि ऐक सबद् बनाइ सुनायौ।
जा बृज जोउ मिली पनही तिय दमत मै मुख ताहि छुवायौ।
बजन बज निहारि बिहारिहि आइ-स देस घने बन गायौ ॥२७८
भूपति बुद्धि असुद्ध भरी अति द्रारवती करि लाज सजाये।
पेठि जमपर होत भयौ नृप जांनि महाद्रुत बिप्र पिमाये।
लै करि आवहु मोहि जिवावहु बेगि गये समचार सुनाये।
हा(त)म चिन्त चलि ठाकुर पै मुख मोहि लई सुख धीर रहाये ॥२७९

---

१ धर।

सोच करै मति सास कहै, यह कागद मैं लिखि दे मन भाये।
जाइ कही समझाइ रिसावत, स्वैपुर के सब लोग लिखाये ।।२९०
कागद ल्यावत फेर पठावत, चूकत नै दुय पाथर[1] माडे।
ठौर बतावत जाइ रहावत, छानि छ ीद रहै घर खाडे।
नीरहि न्हान अठाइ खिनावत, मेह भयो ठिरिये जल भाडे।
साल सवारि करयौ परदा कर, झीझ[2] वजी बहु अबर छाडे ।।२९१
दे पहरावनि गाव समूहहि, कचन रूपक पाथर आये।
येक रही उन भूलि लिखी नहि, भौत लिखै जित भूलहु जाये।
जाइ सुता बिनवै पित दै इन, देत उन हरि पे मगवाये।
मात नही तन माहि सुता लखि, तातहि ख्याल सबे बिसराये ।।२९२
दोइ सुता इक धाम न ब्याहत, येक सुता तजि कै पति आई।
गाइन दोइ फिरै पुर गावत, पावत नाहि कछू दुख पाई।
कोइ बतावत आइ र गावत, आप कहावत राम सहाई।
जो हरि चावहु बाल मुडावहु, लाल लडावहु यौं मनि भाई ।।२९३
दोउ सुता मिलि गाइन हू जुग, नाचत है चहु भाव दिखावै।
मामहि सालग भूप दिवानहि, बात निषिद्धहि आप लखावै।
पडित दीरघ और जुरे सब, भाड करे इनको समझाव।
भूप बुलावत भृत्य पठावत, आइ कही दरबार बुलाव ।।२९४
जावत है नृप पासि रहो, चहु साथि चल हम हू न डर है।
लार भई गति लेत नई रस, भीजि गई वह नृत्य करै है।
वैसहि आवत पच छिपावत, तौउ कहै तिय क्यू र धर हैं।
भक्ति न जानत बेद बखानत, नारि कहो सुकदेव बर हैं ।।२९५
येक कही द्विज भात भरयौ हद, ठाव दये अगनत सुता कै।
भूप लगे पग भक्ति करो जगि, कुजर लागत नाहि कुता क।
और सुनौ इक ठाकुर देवल, गावत राग किदारउ ताकै।
माल हुती हरि के गलि मैं उर, आइ गई नरसी महता कै ।।२९६
ब्राह्मन जाइ सिलावत भूपहि, हार पुयौ कच तागस टूट्यौ।
मात कहै सुत कान धरौ मति, राज स वांनि बुरी चलि छूट्यौ।

---

१. मायर। २ झाँक।

रास करै मनि हीर जरै नग माल धरै मुनि गांन र ताल।
रूप प्रकास मयंक उजासज चीय हुलास नई गति चाल।
कंठ बर भगुरी सु फुरै, मधुर सु सुर सुनिकै रति पाल।
ताल बजै मृदंग सजै मुहचंग र जै दरियावजु हाल ॥२८३

हाथि चिराक दई गति देखत कान्ह लई भक्ति येह नई है।
सकर-सभरि आनत है हरि मंद हसे त्रिग सैन दई है।
टारन चाहत स्यौ नहि भावत भाइ कही त्रिग मांगि सई है।
भाई भजौ धरि टेरत भाषत देस गये जन ध्यानमई है ॥२८४

पाम जुदौ करि बिप्र-कन्यां बरि दोइ सुता इक पुत्र भयौ है।
साध पधारत लै धन वारत ये धन पारत स्यांम भयो है।
बाह्मन बस भये सब कसन जानत भ्रम सदोष लयो है।
ये हरि लीन रहे जस मीन महा परवीन न पार दयौ है ॥२८५

संत पधारत तीरथ या पुर पूछत है स लखी लिखि देवै।
बिप्र कही इक सा भरसी बड़ जाइ धरौ रुपया पग सेवै।
बारहि बार कहौ र रह्यौ गिरि भ्रात पछे उनकी यहे टेवै।
धाम मनावत ये भलि भावत माहि करी उठि पंक भरे वै ॥२८६

सात सतै रुपया गन देखत मागत है पग बेगि लिखीजै।
जांन लये बहकाइ दये इन हुंडि लिखी मह सांवल दीजै।
जात भये धाम द्वारवती फिरि पूछत चौटन पा तन छीजै।
हेरत हारि रहे मरि भूखन प्यास लगी जल माहरि पीजै ॥२८७

सांवल साह बन हरि आवत ल्यौ रुपया बहु कागद ल्यावौ।
हेरत हारत भूख मरे कहि मै सुनि दौरत लाज मरावो।
दास इकन्त लख हरि संत लिखौ अब कागद दयौ उन आवो।
है रुपया बहु फेरि लिखी मधु आइ दयो उरका सिर नावो ॥२८८

ऊठि मिले हम सांवल देखत नेह छके सतसंग पगी है।
व रुपया सब साध भुवावत कोम भये सिधि रोम पगी है।
पूछक को समयो-स सुता धरि साख बुलावत भाव पगौ है।
बाप सिखावत मोहि जरावत यौं बहु भाइ र तौहु र सौहै ॥२८९

मस पुरातन बाप पुरातन बंस पुरातन चोइ र स्याय।
भेम्न की पुतरी हु गई पुनि माहि बहु लिय बसु तुम भाये।

सोच करै मति सास कहै, यह कागद मैं लिखि दे मन भाये।
जाइ कही समझाइ रिसावत, स्वैपुर के सब लोग लिखाये ॥२९०
कागद ल्यावत फेर पठावत, चूकत ने दुय पाथर[1] माडे।
ठौर बतावत जाइ रहावत, छानि छ ीद रहै घर खाडे।
नीरहि न्हान अठाइ खिनावत, मेह भयो ठिरिये जल भाडे।
साल सवारि करयौ परदा कर, झीझ[2] बजी बहु अबर छाडे ॥२९१
दे पहरावनि गाव समूहहि, कचन रूपक पाथर आये।
येक रही उन भूलि लिखी नहि, भौत लिखै जित भूलहु जाये।
जाइ सुता बिनवै पित दै इन, देत उन हरि प मगवाये।
मात नही तन माहि सुता लखि, ताहि ख्याल सबे बिसराये ॥२९२
दोइ सुता इक धाम न व्याहत, येक सुता तजि कै पति आई।
गाइन दोइ फिरै पुर गावत, पावत नाहि कछू दुख पाई।
कोइ बतावत आइ र गावत, आप कहावत राम सहाई।
जो हरि चावहु बाल मुडावहु, लाल लडावहु यौं मनि भाई ॥२९३
दोउ सुता मिलि गाइन हू जुग, नाचत है चहु भाव दिखावै।
मामहि सालग भूप दिवानहि, वात निषिद्धहि आप लखावै।
पडित दीरघ और जुरे सब, भाड करे इनको समझाव।
भूप बुलावत भृत्य पठावत, आइ कही दरबार बुलाव ॥२९४
जावत हैं नृप पासि रहो, चहु साथि चल हम हू न डर है।
लार भई गति लेत नई रम, भीजि गई वह नृत्य करै है।
वैसहि आवत पच छिपावत, तौउ कहै तिय क्यू र धर है।
भक्ति न जानत बेद वखानत, नारि कही सुकदेव वर है ॥२९५
येक कही द्विज भात भरयौ हद, ठाव दये अगनत सुता कै।
भूप लगे पग भक्ति करो जगि, कुजर लागत नाहि कुता के।
और सुनौ इक ठाकुर देवल, गावत राग किदारउ ताकै।
माल हुती हरि के गलि मैं उर, आइ गई नरसी महता कै ॥२९६
ब्राह्मन जाइ सिलावत्त भूपहि, हार पुयौ कच तागस टूट्यौ।
मात कहै सुत कान धरौ मति, राज स वांनि बुरी चलि छूट्यौ।

---

१. माथर। २ झाँक।

देवस जाइ रु पाट मंगावत फाटि गुह्यौ गसि नावत घूट्यौ।
गाइ दिखावहु स्यास हमैं अब गावत राग दुती नहिं छूट्यौ ॥२९७
देखि सुखी सस देत उराहन मौस नई हरि कौ बहु भाखै।
आखिर[1] ग्वाल गही चरमास सुहावत सास कह्यौ किन साखै।
रांम भले सु सर्यौ अभ पावत, कौन मिटावत है अभिलाखै।
जाइ कह्या मम सोहि कहै धिक आहु यहै तन भक्ति न नाखै ॥२९८
साह रहै धुग मारि विवाहुत भक्त इकै हग्देव दिखायो।
आप कही सति जांनि गये प्रभु, त्यौ रुपया वह राग दिवायो।
देखि निहाल भई प्रभु कौ मुख आइ अगो रुपया गिनवायो।
दांम लिये र दयौ वह कागद मोजम देत भई प्रभु पायो ॥२९९
धाहुक राग धर्यौ गहनै नरसी करि रूप सजाइ छुडायो।
गोदहि नांखि दयौ वह कागद, आइ हरी धन हार गहायो।
सब्द हुवो जयकार सभा मधि भूप पर्यौ पगि भाव सवायो।
दुष्ट गये मुरझाइ भये महि रांम दया बिन पंथ न पायो ॥३००
ब्राह्मन हेरत डोल भमौ बर पायौ नहिं नरसीहु बतायो।
धूमत भाई सु पुत्र दिखावत देत तिलक्कहि देखि सुभायो।
मांहि बरोबरि हौ सब सौ बर, वेगि गयो द्विज नांव धनायो।
सीस धुनै सुनि ता लकुटा मनि धोरि सुता फिर आहु कहायो ॥३०१
डारहु काटि मगूल्हि कौं अब जाइ कहू बर कौं कमसायो।
माग सुता लखि बैठि रहे कहि ब्याहन आवत व यहुरायो।
देत लगन सु ब्राह्मन भेजत आई दयौ कर लैर करायो।
तास बजावत ध्यारि रहे दिन सोच मही मन सावस आयो ॥३०२
मैं धमधांन बजहु निसांम सुनै नहिं कांन-स उच्छव भारी।
मांडत है मुग कृष्ण भष्ठ रूप चोढि तुरी निसि गात सु भारी।
मैं जिवनार अपार भये मर, मोट न बांधत विप्र बिचारी।
हाथिन मोरन ऊंन्न हु रथ बैरा किसोर जनै तपधारी ॥३०३
कृष्ण बनै मरमी चलिये तुम आवत हूं अभ मार्ग मांनौ।
आपहि जामहु मैं उर आनहु मैं मुग पैन्हि तास रगांमौ।

---
[1] आंगिर।

लेइ उठाइस वोभ सवै, हरि जाइ रहे समधी पुर जानौ।
भेजत है नर आइ र देखत, फौज किसी यम पूछि बखानीं ॥३०४
येह जनैत मनौ नरसी जन-नैन रसी नरसी इन ध्यावै।
आनि कहु[1] यहु बुद्धि गई वह, साच कहै हमही डहकावै।
ये तहि आत सगाइ करी द्विज, मात नहि तनि बात सुनावै।
तो धन सौ इक फूस सरै नहि, देखहु ता लकुटा परभावै ॥३०५
देखन कौ चलि जात बरातहि, मान मरयौ द्विज सू कहि राखौ।
पाइ परै किरपा करि है जब, जाइ परे हम चूकहि नाखौ।
भक्ति[2] मिले उठि कृष्ण मिलावत, सौंपि सुता इन बीनति भाखौ।
भेजि दई लखमी उतहू हरि, आत भये परणाइ र पाखौ ॥३०६

इति श्री विष्णुस्वांमि संप्रदा

अथ माध्वाचारिज सप्रदा [मूल]

छपै **रघवा प्रणवत रामजी, मम दोषो नहीं दीयते ॥२०**
आदि वृक्ष विधि नमो, निगम नृमल रस छाते।
मध्वाचारय मधुर पीवत, अमृत रस माते।
तास पथित भू प्रगट, संत अरु महंत निसतरे।
हरि पूजें हरि भजै, तिनहि संग बहुत निसतरे।
मैं बपुरो वरनौं कहा, जांणों जाइ न जीय ते।
रघवा प्रणवत रांमजी, मम दोषो नही दीयते ॥२१७
ये पांच महत परसिध भये, ज्ञांनी गौड़ बंगाल मधि ॥
नित्यानंद श्रीकृष्ण-चैतन्य, भजि लाहो लीयो।
रूप सनातन रांम रटत, उमग्यौ अति हीयौ।
जीउ-गुसांई खीर-नीर, निति निरनौं कीयौ।
जै जै जै त्रिलोक ध्यांन, ध्रुव ज्यूं नहीं बीयौ।
राघो रीति बडेन की, सब जानै बोलै न बधि।
ये पाच महंत परसिध भये, ज्ञांनी गौड़ बंगाल मधि ॥२१८

---

१. कहि यह। २. भक्त।

देवल जाइ र पाट भगावत भाटि गुह्यौ गसि नावत घूट्यौ।
गाइ दिखावहु स्यास हमैं अब गावत राग सुनी नहि सूट्यौ ॥२९७
देखि खुसी खस देत उराहन नौख नई हरि की यह भाखै।
भाखिर[1] ब्यास गही उरमास सुहावस लाल कही बिन साखै।
रांम भसे सु भस्यौ क्रम पावत कौन मिटावत है अभिलाखै।
जाइ कहा मम तोहि कहै धिक आहु मई तन भक्ति न नाखै ॥२९८
साह रहै पुग नारि विवाहत भक्त इकै हरदेव दिखायो।
आप कही सति आनि गये प्रभु, त्यौ रुपया यह राग दिवायो।
देखि निहाल भई प्रभु को मुस आइ कगो रुपया गिनवायो।
दांम लिये र दयो यह कागद भोजन देत भई प्रभु पायो ॥२९९
साहक राग धरयौ गहने नरसी करि रूप सजाइ छुडायौ।
गोदहि नांखि दयौ वह कागद आइ हरी जन द्वार गहायौ।
सब्द हुवो जयकार सभा मधि भूप परयौ पगि भाव सवायौ।
दुष्ट गये मुरझाइ भये नहि रांम दया बिन पंथ न पायौ ॥३००
ब्राह्मन हेरत डोल भलौ बर पायौ नहिं नरसीहु बतायौ।
बूझत भाई सु पुत्र दिखावत देत तिलककहि देखि लुभायौ।
नांहि बरोबरि ह्यौ सब सो घर, बेगि गयो द्विज नांव पनायौ।
सीस धुन सुनि सा भकुटा भनि बोरि सुता फिर आहु कहायौ ॥३०१
तारहु काटि अगूठहि कौं जब आइ कहूं कर कौं नमसायौ।
भाग सुता लखि बैठि रहे कहि ब्याहन आवत वे महरायौ।
देत लगंन सु ब्राह्मण भेजत आई दयौ कर संर करायौ।
ताल बजावत ब्यारि रहे दिन सोच नही मन सावस भायौ ॥३०२
हूं पकवान अनेहु मिलांन सुनै नहि कामन्स उच्छव भारी।
मोहन है मुस कृष्ण बधू रुख बौदि धुरी मिसि गात सु मारी।
हूं जिवनार अपार भये मग मोट म बांधत विप्र बिचारी।
हाथिन धारन ऊंन्न हूं रथ बैस किसोर जनै तपधारी ॥३ ३
कृष्ण कहै नरसी अभिये तुम आवत हू मम मारग मांनीं।
आपहि जांनहु मैं उर मांनहु ह्वै मुग फटहि ताम रगांनीं।

---

[1] भांगिर।

लेइ उठाइस वोझ सवै, हरि जाइ रहे समधी पुर जानी।
भेजत है नर आइ र देखत, फौज किसी यम पूछि वखानी ॥३०४
येह जनैत मनौं नरसी जन-नैन रसी नरसी इन ध्यावै।
आनि कहु[1] यहु बुद्धि गई वह, साच कहैं हमही डहकावै।
ये तहि आत सगाइ करी द्विज, मात नहिं तनि वात सुनावै।
तो धन सौ इक फूस सरै नहि, देखहु ता लकुटा परभावै ॥३०५
देखन कौ चलि जात वरातहि, मान मरयौ द्विज सू कहि राखौ।
पाइ परै किरपा करि है जव, जाइ परे हम चूकहि नाखौ।
भक्ति[2] मिले उठि कृष्ण मिलावत, सौंपि सुता इन बीनति भाखौ।
भेजि दई लखमी उतहू हरि, आत भये परणाइ र पाखौ ॥३०६

इति श्री विष्णुस्वांमि संप्रदा

अथ माध्वाचारिज संप्रदा [मूल]

छपै रघवा प्रणवत रांमजी, मम दोषो नहीं दीयते ॥६०
आदि बृक्ष विधि नमो, निगम नृमल रस छाते।
मध्वाचारय मधुर पीवत, अमृत रस माते।
तास पथित भू प्रगट, संत अरु महंत निसतरे।
हरि पूजैं हरि भजैं, तिनहि संग बहुत निसतरे।
मैं बपुरौ बरनौं कहा, जांणौं जाइ न जीय ते।
रघवा प्रणवत रांमजी, मम दोषो नही दीयते ॥२१७
ये पांच महत परसिध भये, ज्ञानी गौड़ बगाल मधि ॥
नित्यानंद श्रीकृष्ण-चैतन्य, भजि लाहो लीयो।
रूप सनातन रांम रटत, उमग्यौ अति हीयौ।
जीउ-गुसांई खीर-नीर, निति निरनौं कीयौ।
जै जै जै त्रिलोक ध्यांन, ध्रुव ज्यूं नहीं बीयौ।
राघो रीति बड़ेन की, सब जानै बोलै न वधि।
ये पांच महंत परसिध भये, ज्ञानी गौड़ बंगाल मधि ॥२१८

---

१. कहि यह। २. भक्त।

देवल जाइ स पाट मगावत वारि गुस्यौ गसि नावत घूट्यौ।
गाइ दिखावहु स्याम हमैं अब गावत राग वृती नहिं छूट्यौ ॥२९७

देखि सुखी सब देत उराहन नौख नई हरि कौं यहु भाखै।
भासिर[1] ग्यास गही उरमास मुहावत लाल कह्यौ किन राखै।
राम भजे सु भरयौ क्रम पावत कौन मिटावत है अभिलाखै।
भाइ कह्या मम साहि कहै पिक आहु यहै तन भक्ति न नांख ॥२९८

साह रहै पुग मारि बिवाहत भक्त इके हरदेव दिखावौ।
आप कही सति जांनि गये प्रभु, स्यौ रुपया यह राग दिवावौ।
देखि निहाल भई प्रभु को मुख, आइ कगो रुपया गिनवावौ।
दाम लिये र दयो यह कागद भोजन देत भई प्रभु पावो ॥२९९

साहुक राग धरयौ गहनै नरसी करि रूप सजाइ छुड़ायौ।
गोवहि नांखि दयौ वह कागद आइ हरी जन द्वार गहायौ।
सब्ब हुवो जयकार सभा मधि भूप परयौ पगि भाग सवायौ।
दुष्ट गये मुरझाइ नये महि रांम दया बिन पंथ न पायौ ॥३००

ब्राह्मन हेरत डोल भसी बर, पायौ नहिं नरसीहु बतायौ।
बूझत भाई सु पुत्र दिखावत देत तिसनकहि देखि सुभायौ।
मांहि बरोबरि ह्वै सब सो भर, बेगि गयो द्विज नांव पनायौ।
सीस धुनै सुनि ता सकुटा मनि बोरि सुता फिर आइ कहायौ ॥३०१

तास्हु काटि अगूठहि कौं अब जाइ कहू कर कौं कमलायौ।
भाग सुता लखि बैठि रहे कहि ब्याहन आवत दे बहुरायौ।
देत लगन सु ब्राह्मन भेजत आई दयौ कर सैर करायौ।
ताल बजावत ब्यारि रहे दिन सोच नहीं मन छावत भायौ ॥३०२

हूं धन धांम धर्यौहु निर्धांम सुने नहि कान-स उच्छव भारी।
मोंडत है मुख कृष्ण बधू दस चौकि तुरो निसि गात सु मारी।
ह्वै बिवभार अपार भये नर, मोट न बांधत बिप्र बिचारी।
हाथिन घोग्ग ऊंग्ग हु रथ बैस किसोर जनै तपधारी ॥३०३

कृष्ण कहै नरसी चलिये तुम आवत हूं मम मारग मांमौं।
आपहि आंमहु मैं उर धांनहु मैं मुख फेन्हि साम ग्वांनौं।

---
1 भ्रांमिर।

लेइ उठाइस बोझ सबै, हरि जाइ रहे समधी पुर जानौ।
भेजत है नर आइ र देखत, फौज किसी यम पूछि बखानौ ॥३०४
येह जनैत मनौ नरसी जन-नैन रसी नरसी इन ध्यावै।
आनि कहु[1] यहु बुद्धि गई वह, साच कहै हमही डहकावै।
ये तहि आत सगाइ करो द्विज, मात नहि तनि बात सुनावै।
तो धन सौ इक फूस सरै नहि, देखहु ता लकुटा परभावै ॥३०५
देखन कौ चलि जात बरातहि, मान मरयौ द्विज सू कहि राखौ।
पाइ परै किरपा करि है जब, जाइ परे हम चूकहि नाखौ।
भक्ति[2] मिले उठि कृष्ण मिलावत, सौंपि सुता इन बीनति भाखौ।
भेजि दई लखमी उतहू हरि, आत भये परणाइ र पाखौ ॥३०६

इति श्री विष्णुस्वामि संप्रदा

अथ माध्वाचारिज सप्रदा [मूल]

छपै रघवा प्रणवत रामजी, मम दोषो नहीं दीयते ॥ट०
आदि वृक्ष विधि नमो, निगम नृमल रस छाते।
मध्वाचारय मधुर पीवत, अमृत रस माते।
तास पथित भू प्रगट, संत अरु महंत निसतरे।
हरि पूजै हरि भजै, तिनहि संग बहुत निसतरे।
मैं बपुरौ बरनौं कहा, जाणौं जाइ न जीय ते।
रघवा प्रणवत रांमजी, मम दोषो नही दीयते ॥२१७
ये पांच महत परसिध भये, ज्ञांनी गौड़ बंगाल मधि ॥
नित्यानद श्रीकृष्ण-चैतन्य, भजि लाहो लीयो।
रूप सनातन रांम रटत, उमग्यौ अति हीयौ।
जीउ-गुसाई खीर-नीर, निति निरनौं कीयौ।
जै जै जै त्रिलोक ध्यांन, ध्रुव ज्यू नहीं बीयौ।
राघो रीति बड़ेन की, सब जानै बोलै न बधि।
ये पांच महंत परसिध भये, ज्ञानी गौड़ बंगाल मधि ॥२१८

---

१. कहि यह। २. भक्त।

उभै भ्रात कलिजुग प्रगट, भक्ति सथापन कारने ॥६०
नित्यानंद मसिभइ, कृष्णचैतन्य कृष्णाघन।
कीयो दूरि अधर्म्म, धरम वर पच्यौ भजन-धन।
प्रेम रसांइन मत बड़े, मन उभ्रौ सेवत।
जो नर नेम नांव, ताहि उत्तम गति देवत।
पूरब गौड़ बंगाल के, तारे जम औतार न।
उभै भ्रात कलिजुग प्रगट, भक्ति सथापन कारन ॥२११

नित्यानन्द महाप्रभु को टीका

मत्त आप सदा मदमत्त रहे भक्तिदेव चहै पुनि प्रेम मताई।
गयद वै निति आनन्द रूप धरयौ प्रभु, आइ भरी तऊ है चित चाई।
छंद भार भयौ न सभार सरीर हु पारस सौं महि रासि धराई।
कंत हु तें सुनि कांम परे मन छोड़ गई मतवारि सभाई ॥३००

श्री कृष्ण चैतन्य प्रभु को टीका

गोपिन की रति देखि चक्रे हरि, या तन मैं स्यम भास ससाई।
गौर तमी सब और रह्यो बनि रंग कुल्यौ अम अंग न मांई।
कृष्ण सरीरहि लालप भावत जानत हू फिरि यौं मनि भाई।
पुत्र यसोमति होत सची सुत गौर भये गन मांझ मचाई ॥३०८
प्रेम द्रवै कब हेम दरौ तन अंग कुलैं कबहू बधि जावे।
और गई भ्रम बा पिचकारनि लाल भ्रियाजु ग भाव समावै।
ईस्वरता परमांन करी जगनाथ हु भेतर देखनां[1] भावै।
च्यारि भुजा पट बाहु दिखावत बात अनूपम अमहु गावै ॥३०९
चैतनि स्याम सु मांम भयी जुग[1] स्यात महत जु देह धरी है।
गौड़ जितौ नर भक्ति न जानत प्रेम समुद्र सुडाय हरी है।
सत सिरोमनि होत भये सब तारन को पग बाव धरी है।
कोटि अजामिल तारत दुष्टन भक्ति मगम करे सुभरी है ॥३१०

---

१ चप।

1क्रि. रोहली दूंद।

मूल

छपै श्री रूपां सनातन तज्ञ दुहु, बिषै स्वाद कीयो बवन ॥
पूरब गौड़ बंगाल, तहा कौ सूबौ होई।
बिभौ भूप परमान, खजांनां असु गज जोई।
मिथा सब सुख मानि, चालि बृन्दावन आये।
प्रापति मैं संतोष कुंज, करवां मन भाये।
सत तोष राघो रिदै, भक्ति करी राधा-रवन।
श्रीरूप सनातन तज्ञ दुहु, विषै स्वाद कीयो बवन ॥२२०

टीका

पाच तुका निरवेद निरूपण, जानि करचौ मन माहि डरे हैं।
येक रही तुक माझ निरंतर, लाख कवित्त अरत्थ धरे है।
स्याम प्रिया रस बात कही बड, जीव सु नाथ छपैहि करे हैं।
है अनुराग कहा बरनू गति, जास दया करि प्रेम भरे हैं ॥३११
भू बृज की बन की बडिता जन, जानत नाहि न देत दिखाई।
रीति उपासन की सु पुरानहु, कै अनुसार सिंगार लखाई।
आइस पाइ सु स्याम प्रभू करि, आइ लगे सु गुपेस्वर भाई।
ग्रथ करे तिनकी इक बात, सुनै पुलकै अखिया झर लाई ॥३१२
रूप रहै नद-गाव सनातन, आतहु खीर सु भोग लगावै।
आत प्रिया सुखदाइक बालक, रूप लिये सब सौंज धरावै।
पाइस पावत नैन घुलावत, पूछि जितावत सो पछितावै।
फेरि करौ जिन बात धरौ मन, चाल चलौ निज आखि भरावे ॥३१३
रूप गुनागुन गान सुनै, अकुलान तिते उन मूरछ आई।
आप बडे धरि धीर रहे न, सरीर सुधी इम बात दिखाई।
श्री क्रणपूर गुसाई गये ढिग, स्वास लग्यौ तन कै सुधि पाई।
आगि छुये छिलका हुय जात, सप्रेम नयो यह कौंन सगाई ॥३१४
गोबिंदचद जु आइ निसा, सुपनै महि भेद सबैहि जनायो।
मैं जु रहौं खिरका बिचि गोइक[1], साझ र भोरहु दूध सिचायौ।

---

१ गारक।

---

[1]शिष कृष्ण चैतन को।

रूप अनूप प्रगट्ट करयौ छवि को बरणै कवि जास लखामी।
सागर गागर माहिं न मावत नागर की मति पार न पायौ ॥३१५

पावन पथ रहैत सनातन तीन दिनो पय ल्यास पियारौ[1]।
सांवर रूप किसोर रह्यौं कत भ्रातहु प्यारि पिवाहि बिचारौ।
ग्रामहि बूझन पातक हूं महि देखि चहुं दिसि नैन भरारौ।
भाइ मिलै अबकै कबहू फिरि आन न द्यो सिर साल पगारौ ॥३१६

सांपनि रूप मिला द्रिग देखि र, बामि सनातन नामि[2] बिचारौ।
भूलस फूलत है द्रुम डारनि, सो सर तीर हुलास निहारौ।
भाइ र भ्रातक दे परदक्षण आप करै सिर लै पग धारौ।
भ्रात उभै सु अपार बिरिभनि देखि जगे जग[3] बात उचारौ ॥३१७

मूल

छपै श्रीजीव गुसांई अग्य बड़, श्री रूप सनातन भजन जल ॥२८०
प्रेम पालि परपक्व, ग्राम बिधि फूले माहीं।
जुगल-रूप सूं प्रीति, बसत बृन्दाबन माहीं।
अखंड अक्षर मन लग्यौ, कलम पुस्तक कर राजै।
सास्त्र बेद पुरान सार, उर भयो बिराजै।
राघो रसिक उपासना, संसा काटन अति सबल।
श्रीजीव गुसांई अग्य बड़ श्री रूप सनातन भजन जल ॥२२१

टीका

अप रचे बहु ग्रंथनि छेदक भ्रात बितौ मन मे जब धारै।
सेव करै जब पाय न दीसत मैं सु करो कछु कोप उचारै।
गौरव संत बड़ाई सिखावत बोलत मिष्ट निसा-दिन सारै।
कौन करै निरबेद निरूपण भक्ति चरित्र करै सु अपारै ॥३१८

मूल

छपै गोबिंद इष्ट सिर भक्त भूप मधुर बचन श्रीनाथ भट ॥२८०
श्रुति संमृत सास्त्र पुराण भारथ ही खोली।
सब ग्रंथन को सार आप धारा ज्यूं खोलै।

1 लखामी। 2 नामि। 3 जग।

पूरब जा जिम कह्यौ, आदि श्री रूप सनातन।
नाराइन भट जीव, हीव धारयौ सोही पन।
गोपाल[1] अपति कुल नाग कै, दास भाव प्रेमां अघट।
गोविंद इष्ट सिर भक्त भूप, मधुर बचन श्रीनाथ भट ॥२२२
श्री नाराइन भट प्रभु, बृज-बल्लभ बल्लभ लगैं ॥टे०
नांचन गांवन सरस, रास मडल रस बरखै।
ललितादिकन बिहार, देखि दंपति मन हरखै।
महिमां बहु बृज भई, देस उधारक जीय की।
उच्छव प्रचुर प्रमाण, चाहि इक है प्रिया पीय की।
राघव संत समाज मैं, प्रेम मगन निस-दिन जगैं।
श्री नाराइण भट प्रभु, बृज-बल्लभ बल्लभ लगैं ॥२२३
भट्ट नराइन बृज धरा, गुह्य धाम प्रगट करे ॥
इष्ट येक श्रीकृष्ण और उर मैं नहीं आवत।
भजन अमृत कौ अबध, सत जन सरस लडावत।
स्वांमि बिलास हुलास, आंन सूं रहत रसज्ञ-जन।
पक्ष सु भारत बोध, तांन कौं करै निखंडन।
तह तह प्रभु लीला करी, जो जो तीरथ उर धरे।
भट्ट नराइन बृज धरा, गुह्य धांम प्रगट करे ॥२२४

टीका

इंदव छंद
भट्ट नराइन ब्रजु परांइन, ग्रामहु आत करे व्रत ध्यावै।
आप कहै इत है अमुकौ प्रभु, कुड र धाम प्रतक्ष दिखावै।
जागिहि जागि बिलास बतावत, जीत भये रिस की सुख पावै।
बेगि चल्यौ मथुरात कहैं जन, गाव उचे त्रिय सोत लखावै ॥३१९

मूल

छपै
मध्वाचारिज मधुपुरी, दुती कवलाकर भट भयौ ॥
अति पंडित परबीन, भागवत कंठ बसेखै।
पैंतालीस हजार हृदै, दिज दीपक देखै।

---
१. गोयल।

रूप अनूप प्रगट्ट करयौ छबि को बरणै थकि जात सवायौ।
सागर गागर माँहि न मावत आगर कौं भजि पार न पायौ ॥३१५
पावन पैज रहैत सनातन तीन दिना पय स्यात पिआरौ[1]।
साँवर रूप किसोर रह्यौ कत आवहु ल्यारि पिताहि बिचारौ।
आमहि बूझत पातक हूं नहि, देखि चहुं दिसि नैन भरारौ।
आइ मिले अबकैं कबहू फिरि, ध्यान न ध्यौ सिर लाल पगारौ ॥३१६
साँपनि रूप सिखा द्रिग देखि र, जानि सनातन काबि[2] बिचारौ।
झूलत फूलत है द्रुम डारनि सो सर तीर हुलास निहारौ।
आइ र आतक दे परदक्षण आप करै सिर मैं पग धारौ।
भाव उमै सु अपार चरित्रनि पेखि जगे जग[3] बात उचारौ ॥३१७

मूल

छप्पै　श्रीजीव गुसाँई अग्र बड़, श्री रूप सनातन भजन बल ॥९०
प्रेम पालि परपक्क, आन बिधि छूटे नाहीं।
जुगल-रूप सूं प्रीति, बसत बृन्दावन माँहीं।
अखंड अभर मन लग्यौ, कनम पुस्तक कर राखे।
सास्त्र बेद पुरान सार, उर अभौ बिराजे।
राघौ रसिक उपासना, संसा काटन अति सबल।
श्रीजीव गुसाँई अग्र बड़ श्री रूप सनातन भजन बल ॥२२१

टीका

अब रचे बहु ग्रंथनि खेन्क आप जितौ धन मैं अब डारै।
सेव करे धन पाय न दीसत मैं जु करो कटु कोप उचारै।
गौरव संत बड़ाई सिखावत बोलत मिष्ट निसा दिन सारै।
कौन करै निरबेद निरूपण भक्ति चरित्र करै जु अपारै ॥३१८

मूल

छप्पै　गोबिंद इष्ट सिर भक्त भूप मधुर बचन श्रीनाथ भट ॥९०
स्रुति संमृत सास्त्र पुराण भारथ ही सोधै।
अब प्रपंच को सार, आप पारा ज्यूं बोलै।

---

१ सवायौ।　२ कालि।　३ बात।

छाडि दयौ गृह पालत है वह, मानत हू कर तास गवारा।
आइ परे जगनाथ पुरी तटि, धीरज भूखन प्यास बिचारा ॥३२१
तीन दिनास भये न नही खुत, लीन रहै हरि सोच परचौ है।
सैन सु भोग पठात भये, कवलाकर हाथ क थार धरचौ है।
वैठि कुटी मधि पीठ दई मग, दामनि सी दमकी न फिरचौ है।
देखि प्रसाद वडे मन मोदत, मानत भाग सुपात्र परचौ है ॥३२२
खोलि किवार निहारत थारन, सोच परचौ उत ढूढत पायौ।
बाधि र वेत दई सु लई प्रभु, जानत पीठि चिह्न दिखायौ।
आप कही हम देत लयौ इन, पाव गहे अपराध खिमायो।
बात विख्यात नमावत कीरति, साध लजावत सील बतायौ ॥३२३
रूप निहारत सुद्धि बिसारत, मदिर मैं रह जात न जानै।
सीत लग्यौ जन कापि उठे हरि, देसि कला तउ हैं दुख भानै।
बेग लगे तटि सिंध गये चलि, चाहत नीर तबै प्रभु आनै।
जानि लये हरि दूरि करौ दुख, ईस्वरता तुम खोवत क्यानैं ॥३२४
नाथ कही सब काम करौ तव, देत मिटाइ बिथा यह भारी।
भोग रहे तन फेरि धरौ नहि, मेटत हू प्रभुता हम हारी।
बात वहै सति गास सुनौ इक, साधन कू न हसै सु बिचारी।
देखत ही दुख दूरि गयौ सब, नौतम भक्ति कथा बिसतारी ॥३२५
कीरति देखि अभगहि मागत, खीजि तिया रु चलावत पोता।
देण लयौ गुण सो कर धोवत[1], बाति बनाइ करी दिव जोता।
मदिर माहि उजास भयो, तम नास गयौ उर देखत नौता।
साध दयाल निहाल करैं, दुख देत उनै सुख सेवत होता ॥३२६
पडित जीतत आत भयो वत, बात करौ हम सौं नही हारौ।
हारि लिखि पुनि बाचि बनारस, माधव जीतत खुवार जमारौ।
आय कही फिरि माधव सौं अब, हारि गधै चढितौ पतियारौ।
बाधि उपानत कानन हू, जगनाथह राय खराहि चढारौ ॥३२७
गावत है बृज की रचना, गिर नील सबै चलि नैंन निहारै।
चालि परे इक गाव तिया जन, ल्यावत भोजन चाव पियारै।

---
१. धावत।

मतर मति की प्रीति, प्रभुओ प्रगट पिछानी।
दोऊ भुवन ह्व भक्त, मात सर्व ही जग जामी।
राघो अति रुचि स्याम सूं, भक्त भावना सू भयौ।
मम्माधारित्र मधुपुरी, कुती कमलाकर भट भयौ ॥२२५
सपतदीप नवखंड मैं भक्त भक्त की नाव ॥
मथुरा सदन सुथान, पुरी पूरण श्रुति गावे।
सुकृत बिना सथान बसै, कोई मुक्ति न पावे।
सत सुकिरती दरसि, काम-क्रम जिन ते डरपै।
तन मन धन सरबस, साध साहिब कौं अरपै।
राघो रहबे रामजी, जहां जहां धारै पाव।
सपतदीप नवखंड मैं भक्त भक्त की नाव ॥२२६
ब्यास द्विती माधो प्रगट सर्व को भलौ बिचारियौ ॥६०
श्रुति समृति पौराण, अगम भारथ मथि लीयौ।
ग्रंथ सबै पुनि देखि, अरथ रस भाषा कीयौ।
गाई लीला कीति कृतम ब लै उचरयौ।
भवनां पुमि करि कंठ, जीव जग निरभै बिचरयौ।
निरबैर अवधि सिर धर्मनाथ, रस करुणा उर धारियौ।
ब्यास द्विती माधो प्रगट, सर्व को भलौ बिचारियौ ॥२२७

इंदव सारहु में ततसार सिरोतर ओम्हों महा मधि माधो गुसाईं।
छंद लीला र कीति कथै कुल कूरि ह्वै काम सरे महामंत्र की नांई।
भरथ भूत निरंतर पाखंड, ब्याधि हरै बपु त सब बाई।
राघो कहै निति नेम निरंतर ऐसे मिले कुरि सेवग सांई ॥२२८[1]

टीका

माधवदास तिया तन त्यागत यौं दिज जानि मिथ्या बिवहारा।
पुत्र बडौ हुइ चाह तजौ गृह और भई दिखई करतारा।

---

१ धाई।

---

[1]इति सिवाय मै इसे टीकाकार का पद मानकर १२ की संख्या दी है पर 'राघो' की छाप होने से मूल छप्पयकार का ही है।

मदिर द्वार सुरूप निहारत, सीत लगें सिकलात डर्यौ है।
सोचहु रीति प्रमान उहै जिम, माधवदास उधार धर्यौ है ॥३३३
चैतनिकृष्ण सु आइस पाइ र, आइ बृदाबन कुंड बसे हैं।
रूप चहनि कहै न सकै तन, भाव सरूप कर्यौ जु लसे हैं।
चावर दूध खवाय मनौमय, नारि लये रस बैंद हसे हैं।
सतन की महिमा न सकौ कहि, देहु वहै गति भक्त रसे है ॥३३४

मूल

छपै बृधमान गग लगहर जन, राघो नारद ज्यूं नचे ॥
पीवत रस भागवत भक्ति, भू परि बिसतारी।
परमारथ के पुज, उभै भ्राता ब्रह्मचारी।
सतन सू लेलीन, दीन देखें कछू दीजे।
राम राम् रामेति, राति दिन सुमरन कीजे।
भट भीखम सुत सातकी, भक्ति काज भू पर रचे।
बृद्धमान गग लगहर, जन राघो नारद ज्यू नचे ॥२२६
मिश्र गदाधर ग्यान पक्ष, जिन भ्रम बिध्वसे भीव ज्यूं ॥
बसत बृदाबन बास, भजत हरि सुख कौ आलै।
करै हस ज्यूं अस, खीर नीरहि निरवालै।
पीवत रस भागौत अनि न निज धरम दिढायौ।
आन धर्म सब त्यागि, गर्भ[1] गहि अधर उडायौ।
राघो धरनि धमाल की, धरचौ निगम मत नीव ज्यू।
मिश्र गदाधर ग्यान पक्ष, जिन भ्रम बिध्वसे भींव ज्यू ॥२३०

टीका

इदव स्याम रगी रग जीव सुन्यौं पद, साध उभै लिखि पत्र पठायौ।
छद रैंणि बिना चढियो रग क्यौं करि, प्रेम-मढ्यौ उरका उत आयौ।
कूप तहा पुर के ढिग बैठक, पूछत हे उन नाव बतायौ।
कौन जगा बसिहौ जु बृदाबन, धाम सुन्यौं मुरछा गिर पायौ ॥३३५
कोउ कह्यौ भट येह गदाधर, बेगि उठे पतियाहि जिवाये।
हाथि दयौ उरका सिर लावत, वाचि र चालि बृदाबन आये।
जीउ मिले द्रिग तैं जल ढारत, वेह गई सुधिवै फिर गाये।
ग्रथ पढे सब स्याम कवादिव[2], प्रेम उमग न अग सु छाये ॥३३६

---

१. मरम। २. कथादिव।

धठि प्रसाद करै सु भरै द्रिग, है किम मात कही जु उचारै।
सांवर धाल भुराइ पसावत मात न जीवत देह बिसारै।।३२९
गांव चले भनि भक्त महाजन ही मनमैं बिनतीहु करी है।
जात भये घर वो जु गयौ धनि भाव भरी तिय पाइ परी है।
म्हत रहै इक कूमक्ष भासम नाटि गयौ मन मांहि डरी है।
ल्यौ परसाद सु कूबहि पीवत माधव नांव सु भास भरी है।।३२९
भाप गये तब मात महाजन नाम सुन्यौ पुनि म्हत भगता।
धाइ परे पगि भाप मिले मिलि हौ धनि संपति धांम छपता।
म्हत कहै भपराध करयौ हम सेव करी हरि संत महता।
भात मिलाप बनें सुभरौ मन जात बृदाबन है प्रभु सता।।३३०
देखि बृदाबन मोद भयो मन जात बिहारी चमां कु छपाये।
ल्यौं परसाद कही प्रतिहार, गये जमना तटि भोग लगाये।
भोजन कौं भरपात भये जन पाप नहीं हरि मैं हि बतायै।
कूमक्ष भाप बनाइ पयो फिरि, ल्याइ कही रस हास गहाये।।३३१
देखन कौं बृज जात भये पुरि, प्रेम मसे निसि कूम दिखाये।
पैठ गये गुनिवे हरियानहु गोवर पाथि निसागिर भाये।
भाइ परो पृठ मात मिले मग मैं सुपनां कहि बैसि मिलाये।
या विधि मांति भनेक चरित्रहु कांन परे हम भाइ सुनाये।।३३२

मूल

कपै　　रघुनाथ गुसांई की रहुसि श्रीजगनाथ के मनि बसी।।
स्यंघ पौरि सत धुर, रहै गरुडासन ठाढौ।
भति भीरज भति भ्यान माहि भति पण कौ गाढौ।
सीत समैं सफलात जगतपति भांनि उढाई।
भब कूं भचिरज भयौ महंत की मांमि बडाई।
ज्यूं जननी सुत सुधि करै जन राघो रीति करी इसी।
रघुनाथ गुसांई की रहुसि श्रीजगनाथ कै मनि बसी।।२२८

टीका

संपति सूं घर पागि रह्यौ जन त्यागि निभाजन बास करयौ है।
बाप पठावत है धनकू, नहि लेत महाप्रभु पास परयौ है।

५रिषीकेस ६भगवान, ७महामुनि ८मधु ९श्रीरगा।
१०घमंडी ११जुगलकिसोर, १२जीव १३भूगरभ उतगा।
१४कृष्णदास १५पडित उभै, हरि-सेवा व्रत राखियो।
श्री बृन्दाबन कौ मधुर रस, इन सबहिन मिलि चाखियो ॥२३१

गोपाल भट की टीका

भट्ट गुपाल वसें उर लाल, लसे प्रिय पीव विख्यात सरूपा।
भोग धरे अर राग करे, अनुराग पगे जग बात अनूपा।
स्वाद लयौ वन माधुरता जिन, सीत चख्यौ सु भये रस रूपा।
औगुन त्यागत जीवन के गुन, लेत भले जन मैं बड भूपा ॥३४३

अली भगवान की टीका

रामहि पूजि अली भगवान, बृदावन आइ र और भई है।
रास बिलास निहारि बिहारिहि, प्यास बढी रसरासि नई है।
चाहि सु रास बिहारीहि पूजन, बात सुनी गुर रीति गई है।
आत भये वन जाइ परे पग, ईस तुमै सिर कैसु दई है ॥३४४

बीठल बिपुल की टीका

बीठलदास बरे हरिदास जु, दाह उठी गुर कै स बिवोगा।
रास समाज बिराज बडे जन, बोलि लये सुनि आवत जोगा।
देखि बिहार जुगल्लकिसोरहु, गान र तान सुने मन सोगा।
जाइ मिले उस[1] भाव धरचौ तन, और गये सब देखत लोगा ॥३४५

लोकनाथ गुसाईं की टीका

कृष्ण जु चैतनि के भृति उत्तम, लोकहु नाथ सबै सुखदाई।
कृष्ण प्रिया सु विहार रहै मन, ज्यं जल मीन निसा दिन जाई।
भागवत रस गान सु प्रान हि, गावत है तिन सूं मितराई।
माग चलै पगि लागि रसिक्कनि, नेह सु रीति दया तजि ताई ॥३४६

गुसाईं मधु की टीका

श्री मधु आइ बृदावन मै इन, नैननि सौं कब देखहु रूप।
हेरत है बन कुज लता द्रुम, भूख न प्यास गिणै नहि धूप।

१ उन।

नींव कल्यान हुवो रजपूत सु भ्रात कथा सुनिबे मन लाग्यो।
गांव नजीकहि चौरहरा उन भोग सजे तिय को दुख पाग्यो।
सीस लिवाय दयो भट मा पति ब्यार करी इन कामहि भाग्यो।
मांगत ही धुकनी प्रभवंतहु बीस दये रुपये कहि राग्यो ॥३३७

भट्ट गदाधर की जु कथा कहि है सुमरो किरपा मुनि कीजे।
लोभ करयो मन भग गई वत यौहि कही मम काम करीजे।
आप कहै सब ध्यान करौं निति दोष नहा हुम मांगत दीजे।
श्रोतन क दुख होत भयो सुनि मूठ कही इन मार नखीज ॥३३८

भूमि फटै बरि जाहि कहै सिष नीर बहै द्रिग बुद्धि गई है।
मल्लमदास प्रकास भयो दुख राम सुनी स सुनाइ लई है।
साध कहो तन मांच करे बहु मार करी सब कंत भई है।
मारन कौं जु कस्यान गयो तिय भट्ट कही मम सीस दई है ॥३३९

देस महंत कथा महि आवत पासि पठात सब जन भीजे।
आसु न आंवहि साध मुखे[१] लस आवत लाल मिरच्चि[३] हु खीजे।
साध सबे भटजूहि बनावत ऊठि गये सब ले मिलि रीझे।
याहि हसी उर होइ घब मम रोइ मरें द्रिग प्रेम सु भीजे ॥३४०

चोर घस्यौ घर सपति बांधत, चोर कर नही ऊठत भारी।
आद चठाई दई सु लई सखि नांम सुन्यौ हुम भूमि बिचारी।
लै धन जाहु उजास कर रवि भ्रात गुनी बस सेरि भिखारी।
सीस उतारि बिचार करी यह कंत भयौ सिप बात निवारी ॥३४१

सेव करें प्रभु की निज हाथनि भक्ति प्रतीति पुरानहु गाई।
देस हुते धवका सिख ले धन आवत ही मृति सैन जनाई।
हाथ पसारि बिराजहु आसन चाय चही खिजिकै समझाई।
हेत हुरो परि आस तजी जग प्रेम गये पग रीति दिखाई ॥३४२

मूल

छपै   श्री वृन्दावन की मधुर रस इन सबहिन मिलि चाखियो ॥
१भट गोपाल रघुनाथ प्रभु मैं सरबस देखे।
घानेभुरो रूपसनातन जितुम भ्योठम रस रेखे।

---

१ उठात। २ मुखे। ३ मिरिच।

आवत दास तिनें सुख दे अति, जीभ कहै न सकै सुबिचारी।
उत्सव यौं गुर कौ सु करैं दिन, मानि र द्वादस राखत ज्यारी ॥३५०
सावन कौ चरणामृत ल्यावहु, भावहि जानन दास पठायौ।
आनि कह्यौ सब सन्तन खोरन, पान करयौ वह स्वाद न आयौ।
भक्ता सभा सबही न चखावत, जानत नैंकि न छोडि सु आयौ।
बूझि कह्यौ तन कोढ रह्यौ फिर, ल्याय दयौ पिय कैं सुख पायौ ॥३५१
राजसभा सु बिराज कहै जन, वैह विवेक कहै न प्रभाऊ।
भोजन साध करैं इकठे वहु, दूर[1] रसोट हु यौ नही भाऊ।
पातरि डारि दई व गुसाई, पगारि दई सुनि देखत दाऊ।
सीतल यौं नहि देत भये मुख, दूरि करयौ भृति सेवन चाऊ ॥३५२
बाग समाज चले जन देखनहू, का दुरावत सोच परयौ है।
साधन मान चहै तन घुमर, वैठि कहो कित ल्याव धरयौ है।
जाइ सुनावत दास तमाखहु, पासि किनें सुनि आनि करयौ है।
झूठहि खैंचि र साच दिखावत, पाइ लये मन दोष हरयौ है ॥३५३
सतन सेवन गाव दयो किन, भूपति दुष्ट उतारि लयौ है।
स्यामहि नद विचारि करयौ जब, दास मुरारिहि पत्र दयौ है।
जा विधि होइ सु ता विधि आवहु, आवत वेगिअ चैन लयौ है।
प्रिष्टि करी परनाम निबेदन, भोजन मैं चलि प्रेम भयो है ॥३५४
आइस सौ अचवन्न लयौ उन, दुष्टन मैं मुखि तापहि आये।
माग मिले सचिवै सिष बोलत, प्रात पधारहु नीच बताये।
काम करै हम सौ समझावत, आत नही मन नेह डराये।
चिंत करौ जिन धीर धरौ उर, भूप कही दिन तीन लगाये ॥३५५
आत भये गुर ल्याव कह्यौ बर, देत करामति येह सुनाई।
जाहु अभू उन मानष देखहि, जोर चले गज धूम मचाई।
भाजिक हार गये नहि देखत, बोलि कही सु गिरा सुध भाई।
कृष्ण हि कृष्ण कहौ तभ छाड हु, पेम सन्यौं सुनि देह नवाई ॥३५६
नीर बहै द्रिग होत न धीरज, आप दया करि भक्ति हु दीन्ही।
दास गुपाल गरे धरि माल, सुनावत नाव सु यौं बुधि कीन्ही।

---

१. दूसर सोटउ।

कातस ही जमुना स किरारनि बसिवत तटि देखि अनूप।
दौरि लगे पगि र[1] आप भये बड है मजहु गोपिनाथ सरूप ॥३४७

कृष्णदास ब्रह्मचारी की टीका

मोहन काम सरूप सनातन सीस धरे मन पूजन कीजै।
कृष्ण सुदास मनुं ब्रह्मचारिहु भट्ट नरोत्तन सिष्य सु भीजै।
चारु सिंगार करहु निहारत चेत गहि नहि यौं मन दीजै।
राग रु भोग बखान करूं किम है मजहु उन देखि र जीजे ॥३४८

कृष्णदास पंडित की टीका

गोविंद देव सरूप सिरोमनि पंडित कृष्ण सुदास प्रमानी।
सेवन सूं अनुराग सु अगनि पागि रही मति है मन चानीं।
प्रीत करे हरि भक्तन सौं बहु, दे परसाद सुपंडित मानीं।
रीति सु तैं प्रतीति बिमी विहु चाल चलें नहि और न मानीं ॥३४८

भूगर्भ गुसांई की टीका

भूगर्भ सु बसिकें र वृंदावन, कुंजन को सुख गोविंद लीयो।
है विरक्तहि रूप सुमाधुर स्वाद भयो मिलि भक्तन जीयो।
मानसि भोग लगाइ निहारत सबैं हि जुगल सरूप सु पीयो।
बुद्धि समान बखान करयौ बहु रंग भरयौ रस जानि र कीयो ॥३४९

मूल

छप्पै राघो रसिक मुरारि धनि अति अमोघ पूरब कीयो ॥
राजा जस संवेत इसत करि करम छुडाया।
भाव भगति धन धर्यो भरम गहि ब्रपर उडाया।
तन मन धन सर्बस अरपि साधन कौं दीजै।
भनित चरन फल येहु देहु धरि लाहा लीजै।
करहि कीरतन रैनि दिन प्रम प्रीति उमगे हीयो।
राघो रसिक मुरारि धनि अति अमोघ पूरब कीयो ॥२१२

टीका

इंदव सतम सेव बिचारि करी विधि पार न पावत कौन मुरारी।
६० साधन के चरणांमृत के धरि माट भरे रहि पूजन भारी।

---

१ लरि।

सूर सट्टलि कहि, काव्य मरम कोऊ नहीं पायौ।
रहसि भक्ति गुन रूप, जनन कर्मादिक भायौ।
छदन भोग पद राग तें, पृथु नाई दुलराई है।
सत दास की सेव हरि, आइ निवाई पाई है ॥२३५

टीका

इदव छंद
बाम निवाइ सु गाव हरो मन, भोग छतीस प्रकार लगाये।
प्रीति सची जग माहि दिखावत, सेव भले जगनाथजु पाये।
भूपहि रैनि कह्यौ जन नाम स, सतहि के घर जेवत भाये।
भक्ति अधीन प्रवोन महाजन, लाल रगील जहा तहा गाये ॥३६०

मूल

छपै
सूर मदनमोहन की, नाम शृखला अति मिली ॥
स्यामा स्याम उपास, गोपि रस ही को रसिया।
राग रग गुन टेर हुतौ, अगिलौ वृज वसिया।
वरन्यौं मुक्षि सिंगार, सबद मैं अठ रस नाहीं।
मुखि निकसत ही चल्यौ, गयौ द्वारावती मांहीं।
जुमला अर्जुन द्रुमन ज्यूं, अजसुत की आग्या पिली।
सूर मदनमोहन की, नाम शृखला अति मिली ॥२३६

मूल

मनहर छद
मदनमोहन सूरदास पासि राख्यौ हरि आप,
थाप्यौ नाम धरि ताको जस गाइये।
जैसे मिसरी मै बस विकत महगे मोल,
राम होन राम बोले जो पै भेद पाइये ॥
जैसे छूत कागद मैं उतम श्लोक होत,
ताहि सुनि देखि सनमुख सिर नाइये।
राघो कहै राज मधि राम जस गायौ नीके,
धनि करतार कवि छाप न छिपाइये ॥२३७

टीका

नाम सु सूर खुले द्रिग कजहु, रग भिले पिय जीय ज्यवाये।
भामिल आप सडोल लख्यौ, गुर बीस गुने दमरा पुरि लाये।

भूप लख्यौ परभाव परयौ पग कुम्पराग्री तजि यौ मति भींनीं।
गौतम गांव दयौ उन केतक भाग फल्यौ मम भावहि चीन्हीं ॥३५७
भक्त भयौ गज सतन सेवत देखि प्रनांम करै जननी क।
स्यावत गौनि उठाइ र मार न नाइक आइ पुकारत पोक।
भावत उच्छव सीतहि पावन भाप चुयें कहि मिन कही कैं।
छोडि दई गति भक्तन सू मति सग समूह रहै सुख जीकें ॥३५८
सग रहै मन पांच सलक्ष्य भाइ जहां नर स्यावत सीधा।
बात भई न्मह्रु विसि को यह सूरज चाहि न भावत गीधा।
संत गयौ इक भानि दयौ गहि नीर न पीवत सीतहि बीघा।
बीति गये दिन तीन र प्यारिहु गग गये तन त्यागन कीधा ॥३५९

मूल

छपै चकरी बन गोपाल की जगत मांहि पर्वत भई॥
मरहठ सहर न्याबन्धि[1] बेस बागड़ बर कीयौ।
नवधा भक्ति वखांनि, येक दासत्व धर्म लीयौ।
बरका बड़ भागोत साध परसत मैं सोहै।
सेवक संसय गृन्थि भक्ति बल सब कौं मोहै।
संत दया जर मिलि चहै भावत स्यांमां स्याम है।
चकरी बन गोपाल की जगत मांहि परमत भई॥२१३
कृष्णदास की चरचरी[2] सकल जगत मैं बिसतरी॥
बालक कीयौ चरित्र कोप बासव को मोकौ।
पद्माध्याई पाठ प्रगट प्यारो प्रिया पीको।
केलि रुकमनी कृष्ण कहौ भोजन सचराई[3]।
परबतधरकी छाप चाबि मैं जहां तहां लाई।
जाकी संग्या पाइ कें जग की सब जड़ता हरी।
कृष्णदास की चरचरी सकल जगत मैं बिसतरी॥२१४
सतदास को सेव हरि भाइ निवाई पाइ है॥
बिमलानंद प्रबोध बंस उपज्यौ धर्म सींवा।
प्रभु जन जांनि समान दोइ यस गाये सींवा।

---
१ निवास। २ की राम। ३ सुनुराई।

१८विमलानंद राघौ कहै, १९रामदास परमानियौ।
ससार सलित निसतारनें, नवका ये जन जानियौं ॥२३८

सधनाजी की टीका

इंदव छंद
है सधना सु कसाई बनी अति, हेम कसोटी भली कस आई।
जीव हतै न करै कुलचारहि, वेचत मास हरी मति लाई।
मालिगराम न जानत तोलत, सत भरै द्रिग सेन कराई।
राति कही धरि आव वही[1] मम, गान[2] सुनौं उर रीझ्य[3] सचाई ॥३६६
आइ दये अपराध करयौ हम, सेव करी हरि कौ नही भाई।
रीझि रहे तुमपं सु करौ मन, नेंन भरे सुनि सुद्धि गमाई।
धारि लये उर छोडि दयौ सव, श्री जगनाथ चले उपजाई।
सग चल्यौ इक सग भये जन, देखि सुगात स दूरि रहाई ॥३६७
मागन गाव गये सु तिया इक, रूपहि देखि र रीझि परी है।
राखि लये परसाद करावन, सोइ रहे निस आइ खरी है।
सग करौ गर काटि न होवत, कठ कट्यौ पति तौ न डरी है।
पागि कही अव काम नही मम, रोइ उठी इन नारि हरी है ॥३६८
आमिल बूझत याहि हत्यौ हम, सोच परयौ कर काटिहि डारयौ।
हाथ कटें उठि पथ चले हरि, पूरव पाप लख्यौ उर धारयौ।
श्री जगनाथ पठी सुखपालहि, लै सधनान चढौ[4] सु बिचारयौ।
नीठि चढे प्रभु पासि गये, सुपना सम त्रास मिटी पन पारयौ ॥३६९

कासोस्वर अवधूत की टीका

कासिस्वरै अवधूत बरै करि, प्रीति निलाचल माहि बसे हैं।
कृष्ण जु चैतनि आयस पाय र, आय बृदावन देखि लसे हैं।
सेव लही प्रभु गोविंद देवहि, चाहत है मुख जीव नसे हैं।
नित्य लडावत प्रेम बुडावत, पारहि पावत कौंन असे हैं ॥३७०

मूल

छपै
भक्त भागवत धर्मरत, इते सन्यासी सर्व सिरै॥
१रामचन्द्र कासुष्ट, दमोदर तीरथ गाई।
२चितसुख टीकाकरी, भक्ति प्रधान बताई।

१. उही। २ ग्यांन। ३. रीझि। ४. चढ।

श्रीजगन्नाथ रणछोड गदि, नर-नाराइण धांमजी।
ये मुक्ति भये माठा-पती, जन राघो जपि रामजी ॥२४१

श्री प्रतापरुद्र गजपति जु की टीका

इंदव छंद
रुद्रप्रताप कह्यौ गजपत्तिहि, भक्ति लई प्रभु तौहु न देखै।
कोटि उपाइ करे लस न्यासहु, हौ अकुलात किहू मम पेखै।
नृत्य करै जगनाथ रथै मुख, पाय पर्‌यौ नृप भाग बसेखै।
लाय लयौ उर प्रेम बुडे सर, भाव भयौ दुख देत निमेखै ॥३७३

॥ इति श्री मध्वाचार्य सम्प्रदा ॥

मूल

छपै
श्री १नाराइण तै २हस, तिनै ३सनकादिक बोधे ॥
उनकै ४नारद-रिषी, ५निवासाचार्य सोधे।
६विष्णाचार्य ७परसोतमां, ८विलास ९सरूपा।
१०माधव कै ११बलिभद्र, १२कदमा १३स्याम अनूपा।
पुनि १४गोपाल १५कृपाचार्य, १६देवाचारिय भन।
१७सुन्दरभट कै १८वावनभट, जिनकै १९ब्रह्मभट गन।
२०पद्माकर जग पद्मवत, २१श्रवनभट कौ जग श्रवस।
२२नींबादित आदित समा, राघो ये द्वादस दस ॥२४२

छपै
जन राघो रत राम सू, यौं हरिजन दीनदयाल है ॥
यम १सनक २सनदन सुमरि, ३सनातन ४सनतकुमारा।
नींबादित बड़ महत, सु तौ उनका मत धारा।
सुरति बिरति हरि भज्यौं, करी नीकी बिधि सेवा।
इष्ट येक गोपाल, बडौ देवन कौ देवा।
सप्रदाइ बिधि सुतन की, सत[1] महत द्रिगपाल है।
जन राघो रत रांम सू, यौं हरिजन दीनदयाल है ॥२४३

टीका

इंदव छंद
नाम निवारक ख्यात भयौ यम, ग्राम जती यकता दल दीयौ।
भोजन वेर लगी[2] निसि आवत, जीमत नै पद वेद सु लीयौ।

१ सत। २ लली।

३नरसिंघ आरम अजौवय, हरिभक्ति बखांनी।
४माधौ ५मधसूदन-सरस्वती गीता गांनी।
६जगदानन्द ७प्रबोधानन्द, रांमभद्र भव-जल तिरे।
भगत भागवत धमरत, इते सन्यासी सब सिर ॥२३९

प्रबोधानन्दजी की टीका

इंदव श्री परबोध अनन्द बड़े अन चैतनिजू प्रति होत पिआरे।
छंद कृष्ण प्रिया निज केलि सु कुंजन केत भये र करे द्रिग तारे।
बास वृन्दावन से परकासत दे सुख मर्म र कर्म निवारे।
ताहि सुने मुनि कोटि हजारन रंग छयो मन प' तन वारे ॥३७१

मूल

छप्पै भागवत धर्मके रतन कै बिष्णुपुरी संग्रह कीया ॥
भक्ति धर्म कहि मुक्ति धाम भ्रम गवन बताया।
कहां पीतर कहां हेम निपक परिकल जब आया।
सुमन प्रेम फल संग, बेलि हरि कृपा दिखाई।
सकल ग्रंथ करि मथन रतनआवली बनाई।
राघो तेरह विरचन मैं, द्वादस स्कंध दिखावीया।
भागवत धर्मके रतन कै बिष्णुपुरी संग्रह कीया ॥२४०

बिष्णपुराजी की टीका

इंदव होत निलाचल माहि महाप्रभु, यौं विधि भक्त भीर भई है।
छंद बिष्णपुरी कहि बास बनारस हो न मुकतिहु चाहि भई है।
पत्र लिख्यौ प्रभु मास अमोलिक दे पठवौ मन प्रीति नई है।
भागवत मथि काढ रतनहि दांम दई पठि मुक्ति दई है ॥३७२

मूल

छप्पै ये मुक्ति भये माठा-पती मन राघो जपि रांमजी ॥
१बालकृष्ण २बड़भरथ ३पोखिन्दो ४सोठी लिसी।
५मुकन्द ६खेम ७हरिनाथ ८भीम हरि धरि परवेसी।
९प्रागदास १० गजपत्य ११बैबाजू १२गोपीनाथहि।
१३गजगोपाल भजाम तज्यौ १४ केता हरि साथहि।

---

१ मैं

खोलि कह्यौ इस दूषन भूपन, मानि कही दुख दोष कहा हैं।
कावि प्रवन्ध रहै कित लेसहु, आयस द्यौसु दिखाइ जहा हैं।
भाखि बतावत औगुन सौगुन, धाम गये कहि आत पहा हैं।
सारद ध्यान कर्‌यौ तव आवत, जोति करी जग वाल वहा हैं ॥३७७

सारद बोलि कही वह ईसुर, मान कितौ उन सू बतराऊ।
ईस मिले तव होत सुखी सुनि, आत महाप्रभु कै चलि पाऊ।
आपस मैं अरिदासि करी जुग, भक्ति करौ अब नाहि हराऊ।
धारि लई उर भीरहु छाडत, होत नई इक ह्वा फिर जाऊ ॥३७८

भट्ट सुनी विसरा तजि[1] वनहि, द्वार परे इक जत्र धर्‌यौ हैं।
तास तरै निकसै नर भूलि र, जाइ गहै खतना हु कर्‌यौ है।
साथि स हस लये सिष आवत, तुर्कन को पट जोर हर्‌यौ है।
आमिल सौ कहि सो नति[2] नाहि न, देखि दये जल क्रोध भर्‌यौ है ॥३७९

मूल

छपै प्रगट्यौ परमात्म परस हरि, भक्ति करन श्रीभट सुभट ॥
सतन कौं सुख-करन, हरन सदेह मधुर सुर।
सुन्दर भाव सुसील, देखि परसन्न प्रेम उर।
सम्रथ कबि उदार हेत, निति भजन करावत।
उदै भयौ ससि[3] सुजस, तास तम ताप नसावत।
सिर राखे राधारवन, दूरि कीये दुबध्या कपट।
प्रगट्यौ परमात्म परसि हरि, भक्ति करन श्रीभट सुभट ॥२४६

श्रीभट गुर परसाद तें, दुरगा कू दक्षत करी ॥
धर चर की सिख भई, खेचरी अदभूत मानें।
कथा सकल विख्यात, साध सर्व महिमा जानें।
सतन के समूह, सदा ही साथि रहावें।
ज्यौं जोगेसुर बीचि, जनक सोभा अति पावें।
हरि ब्यास तेजस्वि जानि कै, परिजा सर्व पावन परी।
श्रीभट गुर परसाद तें, दुरगा कौ दक्षत करी ॥२४७

---

१ तहि। २. नसि। ३ समि।

सोभूरामजी की—मूल

मनहर छद
मिलत कमाल प्रतिपाल भये पायो भेद,
पल मे सकल सांसौ मेट्यौ सोभूरांम कौ।
रोम रोम लागी धुनि यौं भयौ थकित मुनि,
ऐसौ प्यालौ दयौ उन ऐन आठौं जांम कौ।
गगन मगन चित पायौ हैं विग्यान वित,
ऐसै भयौ निपट करतार जी के कांम कौ।
राघो कहै ऐसे रग लागि गयौ जाकै अग,
ह्वै गयौ पटल दूरि चक्षन सू चांम कौ ॥२५०

छपै
चतरौ नागौ निस दिवस, भक्ति करत पन पेम सौं॥
मथुरा मडल अटन, भक्त धामन के दरसन।
दे तन धन घर वाम, कीये गुरदेवहि परसन।
मिष्ट-वचन सुठ सील, सत महतन कौं सेवत।
उत्म धर्म आराध, जुक्ति करि हरि गुन लेवत।
महिमा साध सवै करै, मगन भयो निति नेम सौं।
चतुरौ नागौ निसि दिवस, भक्ति करत पन प्रेम सौं ॥२५१

इदव छद
बृजभूमि सू नेह रमै निहचै, चतरौ मग रूप अनूप है नागौ।
सनकादिक भाव चुकै नहि दाव भक्ति की नाव रहै चढियौं सुख स्यध समागौ।
हरि सार अपार जपै रसना दिन-राति अखड रहै लिव लागौ।
राघो कहै घर आदि गह्यौ जिनि, छाड्यौ नहीं अति ही बडभागौ ॥२५२

टीका

इदव छंद
ग्रेह पधार रहे गुरदेवहि, सेव करै अति साच दिखावै।
रूपवती तिय टैल लगावत, स्वामि कहै स करौ हु सिखावै।
देखि सनेह र भोग लख्यौ निति, देत वधू घर सपति भावै।
धाम चढाय प्रणाम करी सुख, पाय चले बृजकू उर चावै ॥३८३
गोबिंदचद प्रभात नवै पुनि, केसव भोग समै नद ग्रामैं।
गोवर्धन्न प्रियादह ह्वै करि, आत बृंदावन चातुर जामैं।
पावन कुण्ड रहे दिन तीन स, भूख सही पय ल्यावत स्यामैं।
मागत है जल पात नहि पल, राति कही यह मैं करि कामैं ॥३८४

हरि व्यासजी की टीका

इंदव हौ चट पावस गांव उपेवन राग भयौ इत पाक बनांवै।
छंद मंढ मुगाव कराकिनि मारिहु, देखि गलानि भई नहि पावै।
भूख सही निसि मास हुई बसि देह धरी नइ भाइ सलांवैं।
भोग करौ हरि कौंन कर परि माफ करौ कर सीस धरांवे ॥२८०
सिष करी र बरी नगरो झट पाप करयौ सिरदार बड़े हैं।
बैठि कही उर दास भई हरि व्यास परौ पग मारि गड़े हैं।
भृत्य भये सब पाय नये तन पाप गये भव पार कढे हैं।
बौस रहे बहु भाइ सु पद्धहि है सरधा हरि भक्ति बढे हैं ॥२८१

मूल

छपै अजमेरा के भावमी, श्री परसरांम पांवन कीया॥
मलियागिर बहु वृक्ष बास सु चंदन कीनां।
है हरि नांव मसाल अंधेरा अघ हरि लीन्हां।
भक्ति भारती भजन कथा सुनते मन राचौ।
श्रीभट पुनि हरिव्यास कृपा संत सगति साचौ।
भगवत नांम औषधि पिवाय रोग दोष गत करि दीया।
अजमेरा के भाविमी भो परसरांम पांवन कीया ॥२४८

मूल

इंदव कस्सी बरस्सी सत तीन दया प्रसरांम यौं रांम रजा[1] मैं रह्यौ।
छंद कहणी रहणी सरसौ परसौं निस दिन-राति यौं रांम कह्यौ।
ममता तजि कै समता संग लै भ्रम छाड़ि सबै दृढ ध्यांन गह्यौ।
लीन्ही महा भक्ति नांव मुम्मस राघो तब्यौ कुल काव मह्यौ ॥२४९

टीका

इंदव राज महल गयौ इक देवम बोसि कह्यौ यह सालि बिचारौ।
छंद ऊठि चले मग आठ पवै जुग[2] बैठि गुफा हरि नांव उचारौ।
मादन धाइ चढावत संपति, भौर दई सुखपाल निहारौ।
धाइ परयौ पगि भाव न जांनत भाव भयौ इन कौनहि धारौ ॥२८८

---

१ रजो। २. जुग।

सेवत महाप्रसाद, सदा ब्रत तप नहीं मानें।
बिधि निषेध भ्रम सकल, छाडि उत्तम धर्म ठानें।
राघो व्यास बिचित्र सुत करनी पालत हंस की।
भक्ति सीर सकृत कोउ, जानत हितहरिबस की ॥२५२

टीका हरिबंसजी की

इंदव छंद
आत भये तजि धाम भजे जुग, विप्र भलै हरि आइस दीनी।
तेरि सुता जुग दै हरिवसहि, नांम कहौ मम बस ग्रधीनी।
संतन सेव बनै इनकै घर, दुष्ट न ह्वै गति यौं सुनि लीनो।
मांन गह्यौ ग्रह आप लह्यौ सुख, जाइ कही किम सो रस भीनी ॥३

लाल कही मम पूजन धारहु, कुंज बिलास कहीं रस नीकौ।
सो बिसतारत नैन लख्यौ सुख, बाम लयौ पक्ष जीवनि जी कौ।
गांन[1] करै रसपांन बरै उर, ध्यान धरै सु सदा प्रिया पी कौ।
है गुन चौत सरूप कहै किम, मोद लहै मन और नही कौ ॥३

रीति लहै हितजू कि बड़ौ पट, कृष्ण पछैरू कहै मुखि राधा।
भाव विकट्ट सुभाव न होवत, आप दया करि देत अराधा।
दूरि करे बिधि और निषेघहि, दंपति है उर कै उह साधा।
दैन सबै सुख दास चरित्रहु, जानत है उनकै नहि बाधा ॥३

मूल

छपै
यौं नांव न बिसरै नेक हू, हरिबस गुसांई हरि ह्रिदै ॥
ता सुत व्यास विचित्र, बड़ौ परमारथ कीन्हौ।
भरम करम सू रहत, भक्ति कौं स्वारथ लीन्हौं।
पद गावत पापी हसे, करमिष्टी छिरके कांन।
नांम कबीर रैदास कौं, व्यास दीयौ तहा मांन।
जन राघो कारनि रांम कै, जन पन तजे न अपनौ ह्रिदै।
यौं नाव न विसरै नेक हू, हरिबस गुसाई हरि ह्रिदै ॥२५६

व्यास गुसांई विमल चित, बांनां सू अतिस बिनै ॥
चौबीसौं अवतार, अधिक करि साध बिसेखे।
सपतदीप मधि सत, तिते सर्ब गुर करि लेखे।

[1] ग्यांन।

काम नहीं जस दूध पिवौ भल स्यौ कृष्ण मैं प्रभु आइस दीनी।
ये धृत के जन भेद न देत न सौ बरजैं नहि यौं सुनि लीन्ही।
स्यावत धामन धामन सौ फिरि, स्याम कही परिछीतहु चीन्हीं।
जाइ छिपावत हेरहि स्यावत बात सबै जन की रसभीनी ॥३८५

मनहर

४९ सोभा सोभूराम का भ्राता की सुनि यौं सब ॥
माधौदास महंत भक्ति जग सक्ति दिखाई।
अइस सु सबाबि अगिन प बहरि मगाई।
संतदास सुठ सील, साध सुमरण को सागर।
साध सेव करि निपुन कर्म भ्रम छेके कागर।
भगवत भजन बधावने आसत माहि कीयौ कबै।
सोभा सोभूराम का भ्राता की सुनियौं सब ॥२५२
आत्माराम कम्हू र ब्यास बूडे बिजुल बिराजही ॥
रहत सहमता गहर, बिहर धुन सुभ के आगर।
अटिप रूजन गोपाल धारि कुजकुल मैं नागर।
संत ऽभू म सकल मांगि उर प्रीति हुलास।
बसतर भोजन पान मांन दै सब आस्वास।
सिष सुठ सोभूराम का, आप बम्या पुनि पावहीं।
आत्माराम कम्हू र ब्यास बूडे बिजुल बिराजहीं ॥२५३
वृंदावन बसि बसि कीयो जिन, जिन जन मन आपणौं ॥
सोई सबै संत बखोणिए धौणिए अतरगत मन मौं।
तम बम सोंपि सरीर, गिरा पूछहु गुरजन कौं।
आचारिज मुनि मिश्र भट्ट हरिबंस ब्यास मणि।
मंगल गदाधर चत्रभुज अबर सतम सबंस गिणि।
राघो रटि बिरक्त गृही उर हरि भक्ति उथापणौं।
वृंदावन बसि बसि कीयो जिन जिन जन मन आपणौं ॥२५४
यौं भक्ति सीर सहूत कोउ जानत हित-हरिबंस की ॥
रासत बरण प्रधान धार श्रीराधाजी के।
स्यामा स्याम स्यहार कुंज मध तापे[1] नीके।

---

१ पौ। २ सोंपे।

मूल

छपै दास गदाधर गिरधरन, गाये ग्यानी विसद गिर ॥
लाल बिहारी स्यांम, सुमरि निसबासुर राजी।
पूजा प्रेम दियास, भक्ति सुख सागर सांजी।
सतन सेती हेत, देत तन मन धन सरवस।
उर अंतर अति गूझ, वदन बरनत निरमल जस।
इकतार ऐक हरि-भक्ति कौ, और नवावत नांहि सिर।
दास गदाधर गिरधरन, गाये ग्यानी विसद गिर ॥२५८

गदाधरदासजी की टीका

इंदव छंद वाग बुरहानपुरे ढिग वैठिक, त्यागि धरे हरि सू अनुरागे।
जात नही पुर लोग निहोरत, मानि लयौ सुख और न पागे।
मेह भयौ तन भीजि गये कफ, स्यांम कहैन स आय न लागे।
साहि कही प्रभु ल्याव उन्है इत, मन्दिर दे करवाय सभागे ॥३६५
ल्यावत नीठि कही हरि आइस, मन्दिर ऊँच कराय उदारै।
लाल विहारिहु स्याम सथापन, रूप मनौहर आप निहारै।
सतन सेवत प्रीति लगाय र, अन न राखत पान सवारै।
सामगरी कुछि राखि रसोयहु, आत भये जन ज्याय पियारै ॥३६६
दास कहै प्रभु लोग[1] रख्यौ कछु, काढ करौ परभातिहि आवैं।
सत जिमाइ दये करि भोजन, पाय सुखी सब वै जस गावैं।
भूख लगी हरि जाम गई मुरि, कोप करै हम गैल छुटावैं।
आय धरे सत दो रुपया किन, लै सिरि मारि कही गुर तावैं ॥३६७
साह डरयौ मति मो परि कोपत, भक्त खुसी करि बात जनाई।
होइ मगन्न जितौ धन लागत, देत भयौ जन प्रीति बधाई।
जात भये मथुरा दिन रै करि, पीत रसै बृज माधुरताई।
लाल लडावत साध रिझावत, गाय कहे गुन बुधि लगाई ॥३६८

मूल

छपै यों हूवो हरिबस प्रताप तें, चहु दिसि परगट चतुरभुज ॥
भिन भिन भक्ति प्रताप, भक्तबछल जस गायौ।

---

१ भोग।

मूल

छपै दास गदाधर गिरधरन, गाये ग्यानी बिसद गिर ॥
लाल बिहारी स्यांम, सुमरि निसबासुर राजी।
पूजा प्रेम पियास, भक्ति सुख सागर साजी।
सतन सेती हेत, देत तन मन धन सरबस।
उर अंतर अति गूझ, बदन बरनत निरमल जस।
इकतार ऐक हरि-भक्ति कौ, और नवावत नाहि सिर।
दास गदाधर गिरधरन, गाये ग्यानी बिसद गिर ॥२५८

गदाधरदासजी की टीका

इंदव छंद
वाग बुरहानपुरे ढिग बैठिक, त्यागि घरे हरि सू अनुरागे।
जात नही पुर लोग निहौरत, मांनि लयौ सुख और न पागे।
मेह भयौ तन भीजि गये कफ, स्यांम कहैन स आय न लागे।
साहि कही प्रभु ल्याव उन्है इत, मन्दिर दे करवाय सभागे ॥३६५
ल्यावत नीठि कही हरि आइस, मन्दिर ऊँच कराय उदारै।
लाल बिहारिहु स्याम सथापन, रूप मनौहर आप निहारै।
सतन सेवत प्रीति लगाय र, अन न राखत पान सवारै।
सामगरी कुछि राखि रसोयहु, आत भये जन ज्याय पियारै ॥३६६
दास कहै प्रभु लोग[1] रख्यौ कछु, काढ करौ परभातिहि आवै।
सत जिमाइ दये करि भोजन, पाय सुखी सब वै जस गावै।
भूख लगी हरि जाम गई मुरि, कोप करै हम गैल छुटावै।
आय धरे सत दो रुपया किन, लै सिरि मारि कही गुर तावै ॥३६७
साह डरचौ मति मो परि कोपत, भक्त खुसी करि वात जनाई।
होइ मगन्न जितौ अन लागत, देत भयौ जन प्रीति बधाई।
जात भये मथुरा दिन रै करि, पीत रसै बृज माधुरताई।
लाल लडावत साध रिझावत, गाय कहे गुन वुधि लगाई ॥३६८

मूल

छपै यौं हूवो हरिबस प्रताप ते, चहु दिसि परगट चतुरभुज ॥
भिन भिन भक्ति प्रताप, भक्तबछल जस गायौ।

---

१ भोग।

खीर नीर निरवारि सुगम करि सब कौं पायौ।
अनन्य धर्म के कवित, प्रेम अमृत के प्याले।
मुरलीधर की छाप, छिप नहीं भगत चाले।
जन राघव कल भजन के गौड़ देस कियौ धर्म धुज।
यौं हूवो हरिवंस प्रताप ते, चहुं दिसि परगट चतुरभुज ॥२५६

टीका

इंदव गौंड़हु देस भगति नहीं भणु, मारण मारि र मात चढाव।
छंद जाइ जहां[1] उन मंत्र सुनावत दे सुधर्मों सब गांव जगावें।
भाय करौ तुम चतुरभुजें गुर नां करिहौ भरिहौ पुर भावें।
सिष्य किये धरि स्याम जिये उन पाव लिये बहुत सुख पावें ॥३९९
भोग लगावत साध जवावत भागवत कहि भक्ति जमावें।
मे मन चार धस्यौ उन सगहि मात धनी बन मैं छिपि जाव।
बकसत भूसर जोनि भई सुनि स्वांमिन पै करि कांन फुकावें।
आनि गह्यौ कहि मैं न लयौ अब हाथि दई दिवि मांहीं जरावे ॥४००
भूपति भूठ लखी कहि मारहु संतन आय कलक दयौ है।
मारन जात भये न सकै सहि नीर बहै भ्रिम चेत भयौ है।
भूप कहै तुम साच तजौ जिन[2] स्वांमिन कौ परताप भयौ है।
राज सुनी महिमां सु हुवो सिष पेम-सन्यौ उर भीजि गयौ है ॥४०१
खेत चरयौ सबि साध सु खोरत सुकि सुखें रखवार पुकारें।
नांव कह्यौ सुनियौ सु हमारहि आप सुनी अब होत सुखारे।
मै परसाद गये जन सांम्हन मो अपनाइ र भाव उधारे।
धाम सु मोक्षम भांतिन भांतिन क्यांत भये चरचा सु उचारे ॥४०२

मूल

छपै   लग्यौ[3] खरेरा खटिकि क केसो केवल रांम सौं ॥
कवित सवैया गीत भाखि भगवंत रिझायौ।
सुरसुरानन्द परताप आप हरि हिरदै आयौ।
कथा-कीर्तन जस गाय, लोक परलोक सुधारयौ।
परसरांम-सुत सरस सकल घट ब्रह्म विचारयौ।

---
1 तहां। 2 जन। 3 लगी लग्यौ।

राति दिवस राघौ कहै, धरम न चूकौ धाम सूं।
लग्यौ लटेरा लटिकि कै, केसौ केवल राम सू ॥२६०

गोपी कलि मनु अवतरी, प्रमानद भयौ प्रेम पर ॥
बालि अवसथा तीन, गोपि गुण परगट गाये।
नहीं अचम्भा कोइ, आदि को सखा सुहाये।
राति दिवस सब रोम उठै, जल बहै द्रिगन तै।
कृष्ण सोभि तन गलित गिरा, गद-गद सुमगन तै।
सग्या सारगी कह्यौ[1], सुनत कान आवे सकर।
गोपि कलि मनु अवतरी, प्रमानद भयो प्रेम पर ॥२६१

मनहर छद

प्रेम कौ प्रवाह सुण[2] सागर गिरा कौ पुज,
चोज कौं चतुर प्रमानंद प्रबीन है।
गावत गुनानबाद गोंविद गोपाल हरि,
राम नांम हिरदै धरि भयौ लिवलीन है।
बीनती बिकट नट नृति करै राति-दिन,
नाचत निराट दीनानाथ आगैं दीन है।
राघौ कहै बिरहै मिलाप सू मिलाप कीन्हौं,
बिधना सूं बेध्यौ प्रान जैसे जल मींन है ॥२६२

छपै

सुणत सूर की काबि कबि, सिर धुनै र धनि धनि करै ॥
रामाइण भागवत, भक्ति दसधा सुणि सारी।
परसताव को पुंज, चोज चुणि काढी न्यारी।
सकल पराकृत ससकृत, सिंध सम मथ्यौ सवायौ।
करूणा प्रेम बिवोग, आदि अनुक्रम सौं गायौ।
बालमीक-कृत ब्यास-कृत, जन राघो पद पटतर धरै।
सुनत सूर की काबि कबि, सिर धुनै र धनि धनि करै ॥२६३

इदव छद

सागर सूर भई सलिता बुधि, बोध निरोध लीयो जिन पांणी।
प्रेम कौ प्रेम बढ्यौ उर अन्तर, यौं[3] उभली मुख ह्वै अति बाणी।
जैसे सुण्यौ समयौ तहा तैसोई, सोई निबाह कीयौ जहा जांणी।
राघो कहै सुरसति बर बारि ज्यू, यौं सबं चोज सबद मैं आणी ॥२६४

---

१ कहे। २ गुण। ३ ज्यौं।

येक बरस्स रहे रस-सागर, लीन भये सु सिलोक पढे हैं।
जात बृदावन देखन कू मन, मारग मैं इक ठौर रढे हैं।
सोर सुन्यौ बड आप गये सर, न्हात तिया लखि नैन गडे हैं।
ऊठि चली वह लार लगे यह, खैंर धसी घर द्वार खडे है ॥४०८
आत भयो पति देखि वडे जन, क्यू र खडे तिरिया सु जनाई।
आप कही घर पावन कीजिय, लै चरणामृत यौ मन आई।
माहि गये मन आरति मेटन, गावन रीति जु देत चिताई।
अग बनाइ कही तिय सु पति, सत रिझाइ हरी सुखदाई ॥४०९
अग बनाइ चली कर थारहु, ऊँच अटा जित है अनुरागी।
झझन जाइ खरी कर जोरि रु, देखत ही मति नू न दु भागी।
सूइ मगावत वै फिरि ल्यावत, फेरि[1] दई अखिया यह लागी।
आनि कही पति सूं सब बातन, जाइ परचौ पगि सो बडभागी ॥४१०
पाप करचौ हम सत दुखावत, हौ तुम सत हमैं अपराधी।
व्याज रहौ हम सेव करै तुम, सेव करी सबही बिधि साधी।
ऊठि चले द्विग भूत छुडाइ र, खेम भयौ उर आखि न लाधी।
जाइ बसे बनि भूख लगी पनि, आप जिमावत जानि अराधी ॥४११
हाथ गहाइ चले तर कै तरि, जोर छुडात न छोडत नीकौ।
जोर करै नहि वोउ हरै कर, लेत छुडाइ न छूटत ही कौ।
यौं करि आइ लयौ सु बृदाबन, पीतर सौं जग लागत फीकौ।
लाल बिहारिहु आइ मिले, मुरली बजई यह भावत जी कौ ॥४११
नैन खुले रवि ऊगत अबुज, देखि सरूपहि चाहि भई है।
बसि सुनि रस मिष्ट सुरै मद, कान भरचौ मुख भास लई है।
जानि प्रताप चितामनि कौ मन, जैति[2] चितामनि आदि दई है।
गृथ करचौ करणामृत पथज, जुगल्ल कह्यौ रसरासि-मई है ॥४१२
लाल मिले बन माहि सुनी चलि, आत चितामनि हेत जनायौ।
मान दयो उठि दूध रु भातहि, देत भयो हरि ताहि पठायौ।
लेत नही तुम कौं पठयौ प्रभु, नाथ हमैं कर दे तब भायौ।
पात नही जुग देखत कौतुग, स्याम जबै इक और खिनायौ[3] ॥४१३

इति नींवादति सप्रदा सपूरण

---

१. फौरि। २ जौति। ३ सिनायौ।

अथ षट-दरसन बरनन

प्रथम सन्यासी बरनन

छपै	मम दत्तात्रे मत धारि उर, संकाचार्य प्रति दिये ॥
तिनके सिष भये चतुर, सरुपा पद्माचारय।
गिरा टोटका सुमरि, गाइ पुनि[1] उबरा प्रारय।
इमतैं है दस नाम तीरथ आश्रम वन आरन।
सागर परबत गिरी सरस्वती भारथ कारन।
पुरी जतो अर जोति गहिए अब राघव कतहु न छिपे।
दत्तात्रे मत धारि उर, संकाचार्य प्रति दिये ॥२६६

इंदव	मोह न द्रोह ममत्त न माया रम्मत सुमाया,
छंद		सु भसे भये दत्त-भेख दिगंबर।
अजोगी असंग नहीं तन मगन,
प्रान तरंग सु सोभत है तप तेज को संबर।
सीमो तत प्राणि महाबल जाणि
मारे परबारिण सु मारे पचीस गुरू पर अंबर।
राघो कहै अब आइ मिले जबि
यों बदि साहि है व्यांम कथबर ॥२६७

छपै	धरम धर्म सथापने संकाचारय परगटे ॥
पाखंडी अनीसुरी अरू जैन कुतरकी।
बोधमतो चव-सु सखी बिमुखी नर नरकी।
अमरादिक सबै जीति[2] के सति-मारग साथे।
ईस्वर को औतार जानि हरि जस हरषाये।
राघो भक्ति दृढ़ै किरणि अन्यांनी तम भ्रम घटे।
धरम धरम सथापने संकाचारय परगटे ॥२६८

इंदव	पर को रूप अनूप महा जनम्यौं गुजरात मैं संकराचारिय।
छंद	दत्त सु मिलिस के मत ले इत मौं नृप प्रमोधि कीये कुसि मारय।
जैन सौं जीते हैं बल बिद्या भइ राम भगति चली बिसतारय।
राघो कहै तत तारिण मत्त सु दूरि कीयौ सब को भ्रम भारय ॥२६९

---

१ पुनि उबरी। २ जातिके।

टीका सकराचार्य जू की

राम समुख्य किये विमुखी नर, लै जग मैं प्रभुता बिसतारी।
जैन-जती सब फलि रहे जग, हाथि न आवत वात विचारी।
देह तजी नृप कै तन पैसत, ग्रथ दयौ करि मोह निवारी।
सिष्यन सू कही देह अवेसहि, देखि सुनावहु आत तआरी ॥४१४
जानि अवेसहि सिख्य गये महि, मोहमुदग्गर ग्रथ उचारचौ।
कान परचौ तन त्यागि बरे निज, दास नये अपनौ पन पारचौ।
जीति जती नृप पै चढि जावत, बैठि कनै च जमायक डारचौ।
नीर चढ्यौ वहु नाव दिखावत, बेगि चढौ नही वूडत धारचौ ॥४१५
सकर कैत चढाइ जती इन, भूप चढात गिरे स मरे हैं।
पाइ परचौ नृप होत खुसी मन, जौउ कहे ध्रम सोउ धरे हैं।
भक्ति सथापि र ज्ञान प्रकासत, तदै निरबेद हि भाव भरे हैं।
रीति भली करि साध लही उर, हेत हरी गुन रूप करे हैं ॥४१६

मूल

छुपै उतकष्ट-धर्म्म भागवत मैं, श्रीधर नै बरनन करचौ ॥
अज्ञानी तृय काड मिले, सब कोई भाखै।
ज्ञांनी अर करमिष्ट, अरथ को अनरथ दाखै।
राखी भक्ति प्रधांन, करी टीका विसतीरन।
अगम निगम अबिरूद्ध, बहुरि भारत की सीरन।
किरपा परमानद की, माधोजी ऊपरि धरचौ।
उतकष्ट-धरम भागवत मै, श्रीधर नै वरनन करचौ ॥२७०

श्रीधरजू की टीका

इदव पडित व्आज रहे सु बडे बड, भागवत करि टिप्पण रीजै।
छद होत बिचार पुरी हु बनारस, जो सबकै मन भाइ लिखीजै।
तो परमान करै विंद्र माधव, बात भली धरि मदिर दीजै।
जाइ धरे हरि हाथन सू करि, दै सरवोपर चालत धीजै ॥४१७

मूल

छपै ये भक्त भागवत धरम रत, इते सन्यासी सर्व सिरै ॥
रामचद्रिका सृष्ट, १दमोदर तीरथ गाई।
२चितसुख टीका करी, भक्ति प्रधान दिखाई।

१नरस्यंघ आरन अग्रोदय, भूरि भक्ति बनासी।
४माधव ५मधसूदन-सरस्वती पीता गांमी।
६भगवानंद ७प्रबोधानंद ८रांमभद्र भवजल तिरे।
ये मस्त मानवत धरम रत इते सन्यासी सब सिरे ॥२७१

पै सरस सिरोमनि सुधर्मी इते सन्यासी भक्ति पखि ॥
माया मोह अवेक कीयो, भिन भिन करि न्यारो।
मधुसूदनसरस्वती, मोर्भ मद तज्यो पसारो।
प्रबोधानन्द रत ब्रह्म, रामभद्र रांम रच्यो है।
भगवानद भगधीस भजि, जे जनम मरणादि बच्यो है।
श्रीधर बिष्णुपुरी बिचित्र धन राघो मन तजि कुगथ भखि।
ये सरस सिरोमनि सुधरमी इते सन्यासी भगति पखि ॥२७२

इम मन बच क्रम राघो कहै परगट परमातम भजै॥
१पुरुषोत्तमभारती ग्यांन, ध्यान मुनि भलो बिचारी।
२मुकंदभारथी भक्ति करी, बड़ परचाधारी।
है ३सुमेरगिर साध सील मैं बाहुरयांमी[1]।
४प्रमानंद गिर गिरा, सपूरण पूरो ग्यांनी।
५रामाश्रम जग-जोति ६श्रम मन कीरयो माया तजै।
इम मन बच क्रम राघो कहै परगट परमातम भजै ॥२७३

॥ इति सन्यासी दरसन ॥

अथ जोगी दरसन

मनहर छंद

ॐकारे आदिनाथ उदैनाथ उतपति
ऊमापति स्यंभू सति तन मन चित है।
संतनाथ बिरंचि सतोषनाथ बिष्णुजी
गजनाथ गणपति गिरा को दाता नित है।
प्रथम अचमिनाथ मगन मछिंद्रनाथ
गोरख अनंत ग्यान मूरति सु बित है।
राघो रजपास मर्दे नाथ रटि राति दिन
तिनकी अतीत अबिनासी मधि बित है ॥२७४

[1] बाहुरनंमी।

छपै छंद अब १आदिनाथ २मांछिद्र (नाथ), ३गोरख ४चरपढ[1]नाथय।
५धर्मनाथ ६वुद्धिनाथ, ७सिद्धजी कथड ८साथय।
९विदनाथ १चौरग, २जलध्री ३सतीकणेरी।
४भडग ५मींडकीपाव, ६धूंधलीमल धर फेरी।
७घोडाचोली ८बाल्गुदाई, सबकौं नाऊ माथ।
पहल कबित सिध अष्ट है, प्रथम जानि नव नाथ ॥२७५
१चूणकर २नेतीनाथ, ३बिप्र ४हाली ५हरताली।
६बालनाथ ७औघड, ८आई ९नरवै कौं न्हाली।
१०सुरतिनाथ ११भरथरी,१२गोपीचद १३आजू १४बाजू।
१५कान्हिपाव १६अजैपाल, कियो सब काजू।
१७सिधगरीब १८देवलबैराग, १९चत्रनाथ २०प्रथीनाथ अब।
२१सुकलहस २२रावल २३पगल, राघव के सिरताज सब ॥२७६
महादेव मन जीत तैं, नाथ मछिंदर अवतरे ॥
अष्टाग जोग अधपत्ति, प्रथम जम-नियमन साधे।
आसन प्राणायाम प्रत्याहार, धारणा ध्यान समाधि।
षष्टचक्र वेधिया, अष्ट कुभक सौ कीया।
मुद्रा दसम लगाइ, बध त्रिय ता मधि दीया।
भक्ति सहित हठजोग करि, जन राघौ यौं निसतरे।
महादेव मन जीत तैं, नाथ मछिंदर अवतरे ॥२७७
यम जोग जलध्री को सिरै, गुफा कूप करि मानियौं ॥
दक्षा लेणै काज, मात गोपीचंद मेल्यौ।
गुर कही बिप्र जै साखि, समभि बिन कूपहि ठेल्यौ।
उहा ही लगी समाधि, अलख अभिअतर घ्यायो।
सपत धात फूतला भसम करि बाहरे आयौ।
जन राघौ गोपीचन्द कौं, अमर कीयो सिख रानियौं।
यम जोग जलध्री कौ सिरै, गुफा कूप करि मानियौं ॥२७८
संसार अध्व निसतारनै, करनधार गोरख-जती ॥
भूप भरथरी आदि, कोड़ि तेती तीउ धारा।
सबद श्रवण जा धरचौ, प्रजा का अत न पारा।

१. चरपट।

इंदव भर भार तज्यौ भ्रथरी सगरौ, अगरौ पिछरौ वनहीं कछु सासौ।
छंद गह्यौ अनुराग दुती न सभाग जु, क्षीन सरीर स लोही न मासौ।
मनसा मन जीति करी हरि प्रीति,बैराग की रीति सु मागि भिक्षा करही कीयौ कासौ
राघो कहै गुर गोरख सु मिलि, यौं कीयो माया मोह कौ नासौ ॥२८४

छपै गोपीचद मा ग्यान सू, त्यागौ देस बगाल ॥
राणी सोला-सत्त, बहुरि बारा-सै कन्या।
हय गय नर कुल बध, जात कापै सो गन्या।
हीरा कचन लाल, जडित माणिक अर मोती।
सिघासहन हर्म्यादि दिपत, बोलत धुनि सोती।
पाव जलध्री परस तै, राघो जानि जजाल।
गोपीचद मा ग्यान सूं, त्यागौ देस बगाल ॥२८५

मनहर मात देखि गात अश्रु पात उर फाटि रोइ,
छद सूरति सहारी न परत गोपीचद की।
आकुत करत जल बूद परी पीठ परि,
मात आई रोवती निजरि वा नरचंद[1] की।
हाइ हाइ करत हजूरि गयौ हाथ जोरि,
कौन चूक मात मेरी बात कहौ ज्यद की।
बात यह तात तेरौ गात अैसौ हौ तौ सुनि,
राघो कहै राम बिन देही भई गद्द की ॥२८६

छपै चरपट कै चरचा रहै, येक निरजन नाथ की ॥
छद अलख आदि अनादि भजत, सौ सुख के[2] आलै।
काम क्रोध अर लोभ, मोह दुबध्या निरवालै।
जत सत ग्यान बबेक, जोग समाधि पराइन।
कुभक अष्ट ही साधि, भिदिया षट-चकराइन।
गुर गोरख सिर धारिकै, सभा सुधारी साध की।
चरपट कै चरचा रहै, येक निरजन नाथ की ॥२८७

इंदव ग्यांन को पुज मिल्यौ गुर गोरख, यौं प्रिथीनाथ त्रिलोकी तिरे हैं।
छंद अैड अकब्बर सू भइ आगरै, दे अजमत्ति यौं साहि डरे हैं।

१ निरद की। २ को।

परमारथ के काज, आप ग्यारह घर बीका।
सिष कीये पार्वाण, तीर गोबार नबी का।
नाव बमाये बिप्रपुर परचा दीया बरकती।
ससार अबध निसतारन, करमभार गोरख-जती ॥२७९

इंदव छंद　इब ज्यू सिष की जीवनि गोरख ध्यान घटा बरस्यो घट भारी।
नृप निम्याणवे कोड़ि कीये सिष आतम[१] और अनंतन तारी।
बिचरे तिहुलोक नहीं कहूं रोक हो माया कहा बपुरी पचिहारी।
स्वादम सप्रस यौं रह्यो अपरस, राघो कहै मनसा मन मारी ॥२८०

छपै छंद　धर्म सील सत राख तें चौरंगी कारिज सरे॥
अदभुत रूप निहारि बीर कर भाई पकरयो।
बांवण लीयो फारि कोरि करि बाहरि निकरयो।
रांणी करी पुकार पुत्र अच्छपा ही आया।
राजा मन पछिताइ, हाथ पग दूरि कराया।
राघो प्रगटे परमगुर कर-पद ज्यू के त्यू करे।
धर्म सील सत राख तें चौरंगी कारिज सरे ॥२८१

धुनि ध्यांन सहित मन धूंधली पुर पट्टण परवत रहे॥
आप पासि इक सिष सु तौ अति आग्याकारी।
भिक्षा मांगन काज, फिरत सो नगरी सारी।
करे मसकरी लोग लेचरी भीख न पावै।
आप लकरी ढोइ बेचि रोटी करि ल्यावै।
राघो चांबी बूझि सिर, पट्टण सब दट्टण कहे।
धुनि ध्यांन सहित मन धूंधली पुर पट्टण प्रवत रहे ॥२८२

भोगराज भ्रम जानि कै भक्ति करि है भरथरी॥
तर तीबर-बैराग त्रिलोकी त्रिणकर लेखी।
परम भजन के मांहि ग्यान सम आतम देखी।
कंचन आभारित तिजारे रहि करि कीया।
सुनी देवी सभ्यां हरषा अंकुर सु लीया।
गुर गोरख किरपा करी अमर जहां लौ धरत री।
भोगराज भ्रम जानि कै, भक्ति करी है भरथरी ॥२८३

---
[१] आतमां।

काढि लयो खग मारन ऊठत, सागर बाज दयो सुभ्र वेसा।
रावन मारि बिहाल करौं खल, सीत ही ल्याइ धरौं द्दग पेंसा।
राम र ज्यानकि आय मिले कहि, नीचहि मारि पठ्यौ दिबि देसा।
सोच गयो सुनि खेम भयो मनि, रूप निहारत फेरि निवेसा[1] ॥४१६

लीला अनुकरन तथा रनवंतबाई की टीका

इंदव नीलचल सु भयो अनुकरन हु, ह्वै नरस्यघ हिनाकुस मारचौ।
छद दोष कहै जन कैत अवेसहि, सौ दसरत्थ करचौ पन पारचौ।
बाम हुती इक स्याम लगी मति, आप सुन्यौ न कह्यौ सुत धारचौ।
दाम जसोमति वाधि दये सुनि, प्रान तज्यौ मनु ऊपरि वारचौ ॥४२०

छपै **प्रसाद अवगि इक भूप नैं, सू हस्त काटि पठयो चरन ॥१८०**
छंद **टेर सुनी सिलपिले, प्रीति लगी प्रभूजी आयो।**
सत रखे दिन च्यारि, मात सुत कूं बिष पायो।
क मा केरौ खीच लयौ, हरि आइ सवारे।
साह श्रीधर बचे, धनुष धर दै रखबारे।
रघवा जै जै जगत गुर, भक्तबछल असरन-सरनं।
प्रसाद अवगि इक भूपनै, सू हस्त काटि पठयो चरन ॥२६१

पुरषोतमपुरबासी राजा की टीका

इदव जाजि[2] अवज्ञ सु भूप प्रसाद हि, हाथ कटावत यौं जू भई है।
छंद चौपरि खेलत हौ हरि भुक्तहु[3], दै जन लै कर बाम छई है[4]।
जात रिसाइ र लै परसादहि, भूप गयो गृह देखि नई है।
पात नही अन काटि डरौ इन, पडित बोलि र बूझि लई है ॥४२१
हाथ सु काटत कौंन अबै मम, पूछत है सचिवै दुख को जू।
भूत डरावत मोहि झरोखन, दै कर सौर करै निसि सो जू।
मैं ढिग सोवत आपन गौवत, पानिहि दूरि करौ न डरो जू।
भूप कहै भल चौकस राखत, ऊघ तज[5] नृप काढि करो जू ॥४२२
काटि डरचौ कर सो पछितावत, भूप कही वृत यौंह बिगारी।
भेज दये जगनाथ पुजारिन, हाथहि ल्याइ बुवो गुलक्यारी।

---
१ जिवेसा। २ जानि। ३ भक्तिहु। ४ छुई है। ५ विजा।

दें हम कौ कहि कौन बिथा उहि, वेगि इलाज करै सुख कीजै।
चाहत हौ सुख भक्ति करो मुख, भक्ति विना मम देह न छीजै।
क्रोध भयो मन माहि विचारि, पिटारिहु मैं कछु दूरि करीजै।
वैह करी मुसि नोर धरी तन, आगि वरी मन मैं वहु खोजै ॥४३०
त्यागो दयौ जल अनु खुसी हुन, चाहत खुसी नहि ह्वै सव लीयौ।
आइ लयो पुर वान कही धुर, क्षीन लख्यौ तन क्यू हठ कीयौ।
सास कहैं सव नाहि चहैं अब, वात सुहात न कपत हीयौ।
कैस करै तव पाइ परे कहि, ल्याइ धरै वह ह्वै तब जोयौ ॥४३१
आत भये उहि ठौर परी लखि, नीर वहै द्रग ऊच पुकारी।
स्याम सुन्यौ गुर भक्तन कै वसि, आइ लगै उर सैत पिटारी।
सास धणी जन देखि भये खुसि, वादि गए दिन आपन धारी।
भक्त करे सव सेवत सतन, भाग वडे घर मैं अस नारी ॥४३२

भक्तन हित सुत विष दीयौ, येहु उभै वाई

सतन कै हित भ्रैर दयो सुत, वाम उभै यह वात जितावै।
भक्त भलौ नृप आन घणे जन, आइ रहे इक म्हत सुभावै।
ऊठत है निति जान न दे नृप, वीति गयो व्रष भोर खिनावै।
टूटत आस लख्यौ तन छूटत, बूझत है तिय वात जनावै ॥४३३
भूप न जीवहि भ्रैर दयो सुत, साध सु ततर क्यू करि राखै।
भौर भये विन रोई उठी तिय, रावल के जन सतन भाखै।
खौलि दयी कटि माहि गये भ्फटि, बाल पिख्यौ वप नीलक दाखै।
बूझत भूपति या कहि साचहि, चालत हे हमरे अभिलाखै ॥४३४
रोइ उठे सुनि महत न बोलत, भक्तिहु की कछु रीति नियारी।
जाति न पाति विचार कहा रस, सागर लीन भये सुखकारी।
गाय हरी गुन साखि कही जन, वाल जिवाई र ठौर सुधारी।
सीख दई सब साधन कौ र, हियै वह सो जन प्रीति पियारी ॥४३५
दूसर बात सुनौं मन लाइ र, जीवत लौं सतसग करीजै।
भूप सुता हरि-भक्त[1] दई घर, साख तकै जन नाव न लीजै।
सीत पल्यौ तन रूपहि ले द्रग, जीभ चरणांमृत स्वादहि भीजै।
सो अकुलाइ रह्यौ नहि जाइ, वसाइ नही सुत कौ विष दीजै ॥४३६

---

१ भक्ति।

दूहा कर कटे अरु धन लुट्यौ, छुटे सहरु को वास।
बल्लभबाई यों कहै, राम तुम्हासी आस ॥१

छपै कर काटत सारे भये, जगन राघो अचिरज कथा ॥
सुत माग्यौ जब नीर, तबै सरवर दिस्य धाई।
कर मुंहेडा दिसि कीयो, हाथ ज्यू के त्यू भाई।
पड्यौ नग्र मै सोर, बृतात नृपतिही सुनायो।
राजा नागे पाई, दोरि चरनौं सि[र]नायो।
महमा भगत भगवत की, नर-नारी नावै माथा।
कर काटत सारे भये, जन राघौ अचरज कथा ॥३

प्रभु प्रष्ण ह्वै भक्त मन, गोपि मतौ को जानि है ॥टे०
श्रीरगनाथ को धाम बनै सौ करै उपावं।
भयो सेव राजा इद, रबि हित सिर कटवावं।
बधिक भेष धरि चले, हस या बिधि करि आवै।
पति बाना को रखौ, समझि दोऊ बंधवावै।
पुत्र हत्यो जन जानिकैं, पुत्री दै बहु मानि है।
प्रभु प्रष्ण ह्वै भक्त मन, गोपि मतौ को जानि है ॥२६२

मामा भानेज की टीका

गोपि मतौ अति माम भानेजहु, ताष दयो हरि कौ चित धारो।
दौउ चले घर तै बन मैं इक, मूरति देवल रैत निहारैं।
रग सुनाथ बिराजत दक्षन, धाम बनावहि काम निवारौ।
वै धन कौ फिरि हैं नहि पावत, हेरि थके सुनि यौ सुबिचारौ ॥४४०
देवल जैन सु मूरति पारस, आरस नै श्रुति नून बतायौ।
होइ सुखी हरि तौ श्रक तै किम, नाहि डरै इक कान फुकायौ।
सेव करी मन लाइ हरी मति, जैन-समाज सबैहि रिझायौ।
सौंपि दयौ सबलै अब क्यू करि, भेद सिलावट पै भल पायौ ॥४४१
भीतर माम भनेज स ऊपरि, भौंर कली कल साह फिरायौ।
मूरति बाधत खैंचि लई उन, दूसर बेर उहू चढि आयौ।

साध पधारि रहे पुर मैं तब घेरि कही सुत कौं बिष दीयौ।
छूटि गयो तन रोइ उठी धन भाइ परे सब फाटत हीयौ।
जीवन को सु उपाइ कहै सिय जीवन[1] मात पिता मम जीयौ।
सो करि हैं धरि संतन ल्यावहु संत जिसे सखि नांम सु लीयौ ॥४९७

संगि लये सब के न सिखावत देखि परो धर पाव गहीजे।
रीत करी यह नीर बहै द्रग धांम पधारि रु पावन कीजे।
साध चले ध्रमि घेरि जनावत, पौरि रही पुरि देखि र रीझे।
बात कही हरवै मम पिभउ जानत हौ यह रीति सधीजे ॥४९८

साध मगन्न भये पन देखि र, होत नहीं नृप तें जु कही है।
जानि भयो सिसु चेत भई बिसु, न्याय दयौ सुख मौत नही है।
साधत पाय परे सबही भखि सिष्य करे भर सेब कही है।
भूप तिया पति राखि दई जुग साखि सबै जन मांनि मही है ॥४९९

मूल

छपै
छंद

†कमलभबाई हरि सरणि, देखो न्यन्य कैसी करी॥
नृपस्य बीनी भाइ, साध कोइ रहण न पावै।
मुकि धुरि पूछे कोइ तास के हाथ कटावै।
डंक न चले काढ़ि चित वाको स्व मीजै।
धुरे बसों-बसि भक्त कहौ अब कसे कीजै।
जन राघो बाई तबै तन मन की संका धरी।
कमलभबाई हरि सरणि देखो जन कैसी करी ॥१
साध न आवै नगर मैं तब बाई मन-जस तज्या॥
दिन मधेउ भैद न्यारि, तबै सुतरै सुधि पाई।
कही वहु मन बाई पुनि तीरथ करि आई।
चरणांमृत लौ सीत प्रसंमा देसाई।
तबही रि कीयौं बिचार, बिड्व मेरा समझाऊ।
जन राघो हरि संत हूं, ससम के मो बन भज्या।
साध न आवै मग्र में तब बाई मन-जस तज्या ॥२

---

1 जीवनि।

†यहां से लेकर मूल छप्पै नं० ५१२ के बीच के इतने पद्य नं० १ और २ प्रति में नहीं हैं।

दूहा

कर कटे अरु धन लुट्यौ, छुटे सहरु को बास।
बलभबाई यौं कहै, राम तुम्हारी आस ॥१

छपै

कर काटत सारे भये, जगन राघो अचिरज कथा ॥
सुत माग्यौ जब नीर, तबै सरवर दिस्य धाई।
कर मुंहेडा दिसि कीयो, हाथ ज्यू के त्यू भाई।
पड्यौ नग्र मैं सोर, बृतात नृपतिहीं सुनायो।
राजा नागे पाई, दोरि चरनौं सि[र]नायो।
महमा भगत भगवत की, नर-नारी नावै माथा।
कर काटत सारे भये, जन राघौ अचरज कथा ॥३

प्रभु प्रष्ण ह्वै भक्त मन, गोपि मतौ को जानि है ॥टे०
श्रीरंगनाथ को धांम बनै सौ करै उपावं।
भयो सेव राजा इद, रबि हित सिर कटवाव।
वधिक भेष धरि चले, हस या विधि करि आवै।
पति बाना की रखौ, समझि दोऊ बंधवावै।
पुत्र हत्यो जन जानिकैं, पुत्री दै बहु मानि है।
प्रभु प्रष्ण ह्वै भक्त मन, गोपि मतौ कौ जांनि है ॥२६२

मामा भानेज की टीका

गोपि मतौ अति माम भानेजहु, ताष दयौ हरि कौं चित धारौ।
दोउ चले घर तै बन मैं इक, मूरति देवल रैत निहारै।
रग सुनाथ बिराजत दक्षन, धाम बनावहि काम निवारौ।
वै धन कौ फिरि हैं नहि पावत, हेरि थके सुनि यौ सुबिचारौ ॥४४०
देवल जैन सु मूरति पारस, आरस नै श्रुति नून बतायौ।
होइ सुखी हरि तौ व्रक तै किम, नाहि डरै इक कान फुकायौ।
सेव करी मन लाइ हरी मति, जैन-समाज सबैहि रिझायौ।
सौपि दयौ सबलै अब क्यू करि, भेद सिलावट पै भल पायौ ॥४४१
भीतर माम भनेज स ऊपरि, भौंर कली कल साह फिरायौ।
मूरति बाघत खैंचि लई उन, दूसर बेर उहू चढि आयौ।

फूलि गयो तन छेद रह्यौ फसि हाइ सुती पति मन सुनायो।
लै सिर काटि जु स्वांगन निंदत काम भयो सिधि यों समझायो ।।४४२

काटि लयो सिर ज्यों प्रभु भावत जीवत नं परिचाहि पगी है।
देह तजौं मम भास न पूजत भात उहां हरि मीच लगी है।
सोच भयौ लखि चोर बनावत देखि लयो यह चित्त भगी है।
दोउ मिले हरि धाम करावत होत सुखी मम बुधि अगी है ।।४४३

हंस प्रसंग की टीका

कोट भयो नृप कै नहिं आवत काहु कह्यौ सुम हंस मगावौ।
वेगि बुलाइ बधिक्कन सू कहि होइ जहां फिरि दू ढ र ल्यावौ।
ल्यावहि क्यू करि मान-सरोवर छुटहुगे कब ल्यारि लिनावौ।
बाति पिछांनत वेखि उडे उह साधन भीजत भेष बनावौ ।।४४४

स्वांग बनाइ गये जित हंसहि देखि भये नृप पासिहु आये।
सार मस्यौ मत वैद भये हरि, पूछन रै नृप कै ढिग ल्याये।
पंखिन कूं[1] पकड़ाइ भये हम दूरि करैं दुख कोढि[2] मगाये।
बोषधि पोंछि लगाइ दई तन कोढ गुमाय र हंस छुडाये ।।४४५

लौ[3] सुम भूमि र गांव दयाल जु, लाग बडे उनके घर आवौ।
पाइ लयो सब संतन सेवहु दे[ह]धरी नर रांम रिझावौ।
मानि लई पुर देस भगत्ति सु मैं विसतारत हंस प्रभावौं।
भय भमौ प्रभु पंखिहु मानस मांहि उतारत माच[4] लखावौ ।।४४६

माहाजन सदावती स्यार[5] सेठ की टीका

इंदव छंद
सेठ सदाव्रति भक्तन कौ पन सेव करी मन भाइ विचारी।
संत अनंत पधारत हैं जिम भाइ परै तिम सेव सुधारी।
साम रह्यौ मरि मानि भयौ सुत पुत्र सनेह सु लागि लिसारी।
ईस इच्छा मुखि सामच गौंनहु मारि धरयौ धरनी पछितारी ।।४४७

मात निहारत पुत्र कहां मम बीति गयो दिन भोंन न आयो।
ढौंढि दिखावत दंपति संत र ढेरि कहीं सुत कौ बिरमायो।
देइ बताइ उमै सब भाजन साम कह्यौ सु सम्याधि धमायो।
देह दिखावत बाप करावत पुत्र हत्यौ हम रोई न पायो ।।४४८

---
1 क्यों। 2 ढूंढि। 3 ल्यौ। 4 भील। 5 स्वार।

मैं स बताइ दयो न बिगारत[1], मोहि छुडावहु झूठ न भाख्यौ।
नाव न लै जन जौ सुख चाहृत, जा अनतै भल छोड न दाख्यौ।
सत उदास बिचारत दपति, दै पुतरी जन कौ घरि राख्यौ।
पाइ परचौ तिय कै पति बोलत, है पन मैं सुत कौ दुख नाख्यौ ॥४४६
साघ बुलाइ कही तुम ल्यौ बरि, मोर सुता नहि साखत ब्याहै।
मैं हतियौ सुत रोइ कही जन, नाव न ल्यौ मम जीवन क्या है।
साघ पनौं सुनि यौं धरि है सिर, नाहि रती मल मेर कह्यौ[2] है।
ब्याहि दई पुतरी उर दाहन, जीवत लौं घर माहि रह्यौ[3] है ॥४५०
आत भये गुर है प्रचै सिध, संतन सेवइ नाहि बताई।
पुत्र कहा तव पाय गयौ सब, भाति किसी जग मीच लगाई।
पारस लै हरि मोहि कही खुलि[4], ले चलिये जित देह जराई।
ठौर गये उहि ध्यान करचौ हरि, जीत भयो जग कीरति गाई ॥४५१

मूल

छपै छंद

सर्ब जुग मांहीं रांमजी, संत-बचन साचौ करै ॥

भवन काठ तरवारि, सारकी काढि दिखाई।
बाल स्वेत हरि करे, दास देवो सरनाई।
काष्ट कंमधुज काज, च्यारि कपि चिता सवारी।
जैमल ह्वै जुध कीयौ, भक्त की बिपति निवारी।
भैसि चतुरगुन घृत लीयें, सगि श्रीधर धनुधरै।
सर्ब जुग मांहीं रांमजी, सत-बचन साचौ करै ॥२६४

मनहर छंद

रानां जू कै कांन लागि काहू नै कही पुकारि,
भवन की कमरि देख्यौ खाडौ बाध्यौ काठ कौ।
अब के बहानै सिरि मागि लयो हाथि करि,
पलटि ह्वै गयौ सार रुपैया सै आठ कौ।
भवनन[5] पवन खैंचि अतर आराध कीनौं,
रांम रांम राम धुनि पार नहीं पाठ कौ।
राघौ कहै राणै दौरि पाव गहे हाथ जोरि,
साचौ खाडौ तेरौ भवन औरि झूठ-माठ कौ ॥२६५

---

१ विगारस। २. कह्या। ३. रह्या। ४ पुलि। ५. मन।

चाकर हैं जिनके उन सेवत, जारत कौन व वोह जराही।
देह छुटी हनु राम पठावत, दाहत घूम सु भूत तिराही ।।४५८

जैमलजी की टीका

जैमल मेरत पैल हुतौ नृप, पूजन सू हित और न भावै।
है घटिका दस की वृत वोलन, आइ कहै कछु ठौर मरावै।
भ्रात मडोवर कै यह भेद, लह्यौ चढि आवत मात सुनावै।
स्याम करै भल वाज चढे हरि, मारि दयौ दल सै सुख पावै ।।४५९
हाफि रह्यौ हय आय र देखत, वाहरि देखहि भ्रात पर्यौ है।
कौ तुम्हरै इक स्याम सिरोमनि, मारि दयौ दल चित्त हर्यौ है।
तौहि मिलै हमतौ अति तरसत, जानि लयो प्रभु आप ढर्यौ है।
वूझि खिनावत वै पन वारत, कष्ट दयौ कहि सोच कर्यौ है ।।४६०

ग्वाल-भक्त की टीका

ग्वाल भयौ इक सतन सेवत, हाथि चढै सव साधन देवै।
आय गयौ पकवान धयो वन, ढील लगी इक भैसि न लेवै।
जानि लइ घरि मात कही फिरि, है घृत लै करि व्राह्मन सेवै।
द्यौं स दिवारिहु हास धरे गरि, जाम लये घर आतह सेवै ।।४६१

श्रीधर-स्वामी की टीका अवसथा बरनन

टिप्पण भागवत्त करि है वह, जानिहु श्रीधर हे बिवहारी।
जात चले मग चौर लगे कहि, कौन सहाइक, औधिबिहारी।
कोइ नही बन मारि डरौ इन, है कर आयुध आत खरारो।
आय कही घर स्याम स को हुत, हे प्रभू त्यागि दई बिधि सारी ।।४६२

मूल

छपै छद

भगवंत भक्त पोछे फिरै, ज्यौं बच्छा सग गाइ है ॥
दरबि रहत इक भक्त, तास कै सत पधारे।
प्रभु बटाऊ होइ, खुसे हरिजन पै हारे।
भरन साखि गोपाल, साथि खुरदहा सिघाये।
रांमदास कै धाम, द्वारिकानाथ लुभाये।
छेक सेल को अनुगतन, बलि बघन बपु खाइ है।
भगवत भक्त पीछै फिरै, ज्यूं बच्छा सगि गाइ है ॥२९४

निहकंचन की टीका

इंदव छंद

भक्तन लार[1] फिरे भगवतहि ज्यों बछ संगि फिरै निति गाई।
है हरिपाल सु ब्राह्मन नांमहि संतन हेत सिरीस लगाई।
द्रैइ हजार भण्डार लुटावत नांहि मिले जब चोर न आई।
साखत स्यात न दास दुखावत भावत साध तिया मखसाई ॥४६३
कृष्ण रुक्मनि मंदिर है प्रभु सोच पर्यौ हरि साह बने हैं।
आप चले जित भक्त समो जित मैं हू चलू कहि भाव ठने हैं।
पूछत मारग चले उतपातहि, लै रुपया पहुचाय मने हैं।
साथ बिमावहु संगि चल्यौ बन देखि लये रुपया स घने हैं ॥४६४
स्वांग महो सदधार न देखत है भनवो इतनो हत ल्यायो।
यो रुपया गहनो महीं मारत देत सबै खगुनी घस छायो।
काढि लयो खगुनि सु मरोरि र दुष्ट बडी जन कोमत पायो।
रूप दिखावत यो अपनो हुत भक्त सराहि र कंठि लगायो ॥४६५

साखीगोपाल जू की टीका

गौडहु के विज दोइ सुनौं गति जाति बडो लघु इक छोटो।
धांम फिरे सब आये रहे बन प्रेमति भावत बांनहु मोटो।
सेव करी लघु [बु] रीझि कही बृध दीन्ह सुता तब भेवत मोटो।
साखिगुपाल करै प्रतिपालहि गांव गयें तिय पूछत टोटा ॥४६६
विप्र कही लघु यों तुम्ह दीन्ही सु पुत्र तिया पुतरी नहि देवै।
बृध कहै अब नांहि करौं जिम ही जु बिमा नहीं जामत भेवै।
होत पंचाइत साखि भरावहु, साखिगुपाल भरै बन सेवै।
ल्यौ सिखावइ जु साखि भरावहि दै परनाई सुता सुख सवै ॥४६७
आवन मैं सु गुपाल जगावत साखि भरो चलि कै जु सिखाई।
रीति गयो विनि बोल कही हरि मूरति चालत क्यूं स कहाई।
संगि चले उठि भोग लगावत पाठ[2] चले छिम छिम्म कराई।
कान सुनै छिम पीछ न देखहु देखत ही रहि है उन ठाई ॥४६८
गांव निजीक रह्यो फिरि देखत होत खरे यहि ठौर हुसे हैं।
ल्याव इहां कहि मात चलो हरि, गांव चल्यौ सुनि देखि लसे हैं।

---

१ संगि। २ चरण।

पूछत साखि भरी सुख पावत, व्याहि दई उन गाँव बसे है।
मूरत राखि लई नृप आत न, है अजहू उत प्रीति फसे हैं ।।४६६

रामदासजी को टीका

गाव डकोर बसै दुज[1] भक्त सु, राम सु दास भगत्ति पियारी।
ग्यारसि जाग्रन ह्वै रणछोडहि, जाइ सदा वृध देह निहारी।
आप कही इत आव मतै धरि, चालि रहो रथ ल्यावउ चारी।
आनि धरौ खिरको पिछवारहि, बाथ धरौ भरि हाकि सवारी ।।४७०
जाग्रन आत भयौ चढिकै रथ, जानि सबै गति पाव थकी है।
बारसि रैनि अरद्ध चल्यौ धरि, भूषन ले तन प्रीति पकी है।
मदिर खोलिरू देखत ना प्रभु, गैल लगे चढि जाइ हकी है।
बाइ धरौ मम बेगि टरौ तुम, पौंचि र मारत चौट जकी है ।।४७१
ढूंढ लयो रथ पाइ नही हरि, सोच कर्यौ जन भूमि[2] लगाई।
येक कही इन वोर पयोहुत[3], बाइ निहारत हैं रकताई।
सेल दयो जन धारि लयो हम, नाहि चलौं बिज रूप बताई।
मो सम कचन ल्यौ धरि तोलहु, नाह मरै तिय कान जिताई ।।४७२
तोलत बारिहु डारि पछै हरि, नाहि उठै पलरौ जित बारी।
हौइ उदास चले घर कौ सुख, होत किमे मन नाहि[4] मुरारी।
धाम बिराजत है दिज कै प्रभु, भक्ति करै सुख दैन तयारी।
बाधि लयो बलि यौं बलि बधन, आयुध कौ छिन चोट बिचारी ।।४७३

मूल

छपै छद

अबं राजा परिजा थकित ह्वै, हरि-जस सुनि हरिदास कौं ।।
जसू-स्वामि कौ जस बढ्यौ, वृषभ हरि आप बनाये।
ता पीछै चलि चोर, लै गये सो पुनि ल्याये।
नददास निज धेन, जिवाई नामा पीछै।
श्रीरगनाथजी सीस, नयो वेस्या कै इछै।
यम आसाजित आसू सुवन, जन राघो रटि गुन जास कौ।
अब राजा परिजा थकित ह्वै, हरि-जस सुनि हरिदास कौ ।।२९५

---

१ हरि। २ भूलि। ३ गयो। ४ मनेजि।

पूछत कौ तुम जाति बतावहु, मौन करी सुनि चित्त धरी है।
साच कहो मन सक धरौ मति, बारमुखी कहि पाय परी है।
कौस भरयौ धन ल्यौ किरपा करि नाहि करै तब तौ समरी है।
रग सु नाथ मुक्ट्ट घराइ, इसौ लखि कै सुख पाई हरी है ।।४७८
विप्र न छूवत ले किम सग[1], जु दै हम बाह रहै इत कीजे।
द्रिव्य लगाइ सबै करवावत, लै कर चालत थाल धरीजै।
मदर माहि गई जन आइस, ससकि फिरीस तिया भ्रम भीजै।
आपु बुलात हमैं पहरायहु, सीस नयौं पहराय र रीजै ।।४७९

मूल

छपै छद
यम भक्ति पैज कलिकाल मैं, तिहु जुग सू राखी अधिक ॥
ठग ठाकुर दै बीचि, भक्त सूं सौगंध कीन्ही।
बहुरि हत्यौ बन माहि, लूटि गहि नारी लीन्ही।
घरनी करी पुकार, त्राहि बाबा बिसटारी[2]।
चोर न कीन्हौं जोर, रामजी रजा तुम्हारी।
राघौ राम रतीक मधि, भृति जिवाइ मारे बधिक।
यम भक्ति पैज कलिकाल मैं, तिहुं जुग सूं राखी अधिक ॥२९७

बिप्र हरि भक्त की टीका

इदव छद
ब्राह्मन लै मुकलाव[3] चल्यौ तिय, है भगती जुग वात जनावै।
मारग मैं ठग भेटत पूछहि, जात कहा ज्यतही तुम जावै।
वाग छुडावत लै बन जावत, है अति सूधि हु चित्त न आवै।
राम दये बिचि तौहु डरै मन, भाम कहै हरि नाम सुनावै ।।४८०
सग चले मन भीत[4] करौ अव, भक्ति सची पतनी मम जानो।
जा बन मैं दिज क्षिप्रहि मारत, भाग चले सु बधू बिलखानी।
पीछहु देख तबै समुवौ चलि, देखत हू बिचि सो वह प्रानी।
आइ र राम सबै ठग मारत, ज्याय लयो जन रीति वखानी ।।४८१

मूल

छपै छद
गाथ सुनत नृप भक्त की, हरिजी सूं हित होइ है ॥
स्वाग संत को धरै, तास जानै गोविंद गुर।

---
१ रग। २ विसठारी। ३ मुकलाइ। ४ मात।

मूल

छपै छद
माथुर बिठुलदास वर, मान देत परमान नें॥
स्वाग सत सू प्यार, साधु कौ गुणही लेवै।
उत्यम माने भक्त, धाम तन मन धन देवै।
सतोषी सुध ह्रदै, बहुत परमारथ कीन्हों।
दुसह करम को करै, पुत्र उत्सव मे दीन्हों।
जै जै गोव्यद हरि नांम, पण राघो बाणी आननै।
माथुर बिठलदास वर, मान देत परमान नें॥३००

टीका

इदव छद
माथुर भ्रात उभै गुर रानहि, आप मुये लरि त्या इक जीयो।
जा सुत वीठलदास बडौ जन, वै लघु सेवन स्याम सु लीयौ।
भूप कही दिज कौ सुत भ्रात न, ल्यान गये कहि चाह न बीयौ।
फेरि वुलात करौ इत जाग्रन, नाचत प्रेम सु कै इक दीयौ॥४८५
सग गये जन रग रचे हरि, आदर दै उठिकै सु बठाये।
तीन खणा परि नृत्य करावत, प्रेम छके गिरिये तरि आये।
स्वेत भयो नृप दुष्टन खीजत, बाथ भरे जन ता घरि ल्याये।
भेट करी बहु देह परी सव, सुद्धि भई दिन तोसर गाये॥४८६
मात जनाबत वात सबै निसि, कौनि कसे तजिये सुबिचारी।
भ्रात छटी कर मैं गरुडेस्वर, सेवत है प्रतिमा अति प्यारी।
भूपति के चर हेरि थके, तिरिया अरु मातहु आइ पुकारी।
चालि कही बहु मानत नाहि न, बैठि रही उतही कहि हारी॥४८७
कष्ट लख्यौ तब राति कही हरि, जा मथुरा बर तीनक भाख्यौ।
जाति र पाति मिले पुर आवत, साध लख्यौ बढही अभिलाख्यौ।
गर्भवती जुवती घर खोदत, मूरति वोधन पावत दाख्यौ।
वौलि कह्यौ बढहीस न लै तब, वै सु कही तव रूपहि राख्यौ॥४८८
सेवत है हरि भक्ति गई भरि, सिष्य भये बहु है उर भावै।
होत समाज बडे अति आवत, राग बिबद्धि गुनी जन गावै।
आत नटी गुन रूप जटी इक, गात इसी उर बान लगावै।
देत भये पट भूखन भूखहु, दीखत औरन पुत्र गहावै॥४८९

राय रगि छिप भूप सुता दुख दम्पि भयो जलहू नहीं पीजै।
माहि कह्यौ मन माहि सु ले तब, दे हमरौ प्रभु सो तब जीजे।
द्रव्य न चाहत रीझि चहै तन व धन फेरि समाज करीजे।
और गुनीजन कौं धन दे बहु आप कर्‌यौ[1] नृपि देत न लीजे ॥४९०
बोलहि मैं फिरि ल्याइ रगी जन कैसे भई बरियां तब आई।
नृत्य कर्‌यौ अति वो धन वारस भक भरे फिरि द हुलसाई।
मोहि दयो हरि की नवधावरि से मति नै छिप मत रमाइ।
त्यागि दयो तन पात कह्यौ यह यो वरनी मन का रसिकाई ॥४९१

मूल

छपै छंद

हरिराम हठीले भजन से अ[2] रांमा कौ[3] समझाइयौ ॥
बड़े असुर दातार, भक्ति प्रेमा जिन जांनी।
रस-सागर गुन गंभ कठ मैं गदगद बांनी।
सतन कू सुख देत तास को यह फल भाख्यौ।
हरिनकस्यप हति मलन दास प्रहलादहि राख्यौ।
स्फुटबक्ता सभा बिचि काहू सौं न डराइयो।
हरिराम हठील भजन से अ रांमा कौ समझाइयो ॥३०१

टीका

इंदव छंद

रांमहि हेत बिलावत ब्योपरि ल्यासि हसौ धन भूमि छिनाई।
साध[4] पुकारत झारि दयो उन है बिमुखी बसि साच भुठाई।
सौ हरिरामहि बात जनावत चालि भगे हम आवत माई।
पत्र गयौ हरिराम पधारत झारत भूपहि भूमि दिवाई ॥४९२

मूल

छपै छंद

पादप मैह जन जगत मैं, भक्ति सुमन निरबैर फल ॥
सीहा जोगी संत स्यांम बल्हा पुनि रांका।
जती रांम रावल मनोरथ चौगू बांका।
बीहा बाबा गरू, सवाई लाडा बांदा।
चीता माधा लोकनाथ सब मेऱ्या बांदा।
मीर्मागम्भम राघो निपुनि मति सुवर पीप रांम जन।
पादप यह जन जगत मैं भक्ति सु मन निरबैर फल ॥३०२

---

१ कह्यौ। २ तिन। ३ मैं। ४ साध।

श्री राकापति बाका जू को टीका

राकपति पतनी पुनि बाकाहि, रैपुर पडर रीति सु न्यारी।
ल्या लकरी गुदरान करै उर, नाव धरै वह जानि जिवारी।
नाम कहै प्रभुसौं इन द्यौ कछु, लेत नही कहि आप मुरारी।
चालि दिखावहु तौ तव भावहु, मारग मैं सलका हिम डारी ॥४९३
आगय है पति पीछय कौं तिय, आवत सो सलका सु निहारी।
जानि तिया मन माहि भयो भ्रम, धूरि पगा करि ता परि डारी।
बूझत भूमि निहारि कह्यौ[1] किम, कैत भये अजहू लछिधारी।
राक कहै मम बाका भई तुब, आप कही हरि साच हमारी ॥४९४

मूल

इदव छद
एक समै रजनी जन जागत, चोरन आइ चहूँ दिस ढूढा।
माया नहीं सल री तप रेख, लगा रिदै बारह नीकसै मूढा।
आगै परचौ मुख ज्यू भरचौ भंजन, खोलि र देखै तौ नाग फफूढ़ा।
राघौ कहै खिज राँका कै डारत, सरप थै ह्वै गयौ सोनि को कूढा।
लागे मतौ करनै कहा कीजिये, धीजिये नैक न माया बुरी है।
राका कहै काहू रकहि दीजिये, ताही के काज कौं आय जुरी है।
बांका कहै बवरे भये हो, देहुगे किसकौं विष काल छुरी है।
राघो कहै तुछ जानि गये तजि, राकै रु बाका यौ टेक परी है ॥३०३†

टीका

नामहि सौं हरिदेव कहै उर, तौ चलिये लकरीहु सकेरौ।
आत भये जुग वीनन कौं जन, है इकठी कर सूं नहि छेरै।
होइ चतुर्भुज ल्यात भये घरि, रे मुडफोर प्रभु बन फेरै।
दौउ कहै कर जोरि धरौं पट, भार पर्‌यौ इक चोरहि हेरै ॥४९५

मूल

इदव छद
धुनि ध्यान र प्रांन भये परचै, निहचै निराकार के सेवग राका।
कली-काल मैं चालह माइ ज्यूं, छाइ महावितपन्न सबै विधि बाका।

---

१ करचौ।

---

†यह इदव छद प्रति न० १ और २ मे नहीं है।

मन के वन बीम महार कियो खिन पायो है भेद भक्ति को नांका।
राघो कहै धसतांन गरीबो सूं यों मिले जोति में जोति महां का ॥२०४

मूल

इंदव ऐसो लग्यो रंग रांम मन बीसरे भूलि गयो सुख देह को जोगु।
छंद संतन के हम द्वार सदा रहै भाव सूं भोजन देत प्रयोगु।
टेक यहु उर को न कही गुर सेनि बह्यो निति परम को तेगु।
राघो कहै धनि धीरज सूं पर, परचो प्रचंड मिले हरि वेगु ॥२०५

मूल

छप्पै धम हठ करि हरिजी कूं मिले, सोझा सोझी सदन तजि ॥
बालक उभै उपाधि, समझि करि सूते छाडे।
इनकौं करसा रांम, दीये परमेसुर भाडे।
महा मोह वसि कीयौ लोभ को लसकर मार्‌यौ।
क्रोध बोध करि हयो रांम भजि काम संघार्‌यौ।
राघो इक टग रासि दिन, में मेट्‌यौ भगवंत भजि।
धम हठ करि हरिजी कौं मिले, सोझा सोझी सदन तजि ॥२०६

इंदव चाढि खेत पकर्‌यो न पकर्‌यो पछ्यो पग यों जग जीति गयो जन सोझी।
छंद कलप्यो भ्रमप्यो मकल्यो कमि में मन मूठि भजी द्रिढ ग्यान की गोझी।
मनसा मनि पेरि चढाये सुमेरिहु कामधुधा करणी करि बोझी।
राघो सुवास छिपे नहीं साध की चंदन के वन बोधि ज्यूं बोझी ॥१०७
ऐसी लगी हम भेक टरे नहीं रांम की कीरति गावत कीता।
आतम येक मुरे न वसा देह साठ तले वय द्वादस बीता।
रांमजी माइ कही समझाइ करी सिय पाहि ज्यूं होइ पुनीता।
राघो कहै उपदेस दियो पंच तत को सत से आदि प्रतीता ॥१०

मूल

छपै कामधेनु कलिकाल में ऐते जन परमारथी ॥
सुरज सलसम मट्ठ, बिमानी खेम उदासी।
माधव कंभनदास संत सफरा गुन रासी।
हरीदास हरि केस मुटेरा भरतव विरही।
नफर अजोध्या चक्रपानि जाइ सरजू तटि परही।

तिलोक त्यागी जोधपुर, उधव बिज्वली प्रारथी।
कामधेनु कलिकाल मैं, येते जन परमारथी ॥३०६

श्री लड्डू भक्त की टीका

इंदव छंद
साखत देस भगत्त लड्डू हुत, लेस भगत्ति न पापहि पागे।
तोषत है दुरगा नर मारि रु, ले सु गये इन मारन लागे।
मूरति तैं निकसी धरि रूपहि, काटत हैं सबके सिर भागे।
नाचि रही जन के मुख आगर, राखि लये हरि यौं अनुरागे ॥४९६

श्री सत भक्त की टीका

सतन सेव लग्यौ मन सतहि, ल्यावत भीखहुं गावन गावैं।
साधु पधारि घरा तिय पूछत, मत कहा खिजि चूल्हहि आवैं।
साध चले उठि माग मिले जन, हे जु कहा बह बात सुनावैं।
साचि कही तिय आच वही हिय, ल्याइ घरा उन खूब जिमावैं ॥४९७

तिलोक सुनार की टीका

पूरब माहि सुनार तिलोक सु, सतन सेवन की उर धारी।
व्याहत है पुतरी नृप तेहरि, दी घरि बे करि ल्याव सुहारी।
साध पधारत है बहु सेवत, द्यौंस रहे जुग भूप चितारी।
वेगि वुलावत ताहि डरावत, ल्यावति हू कलि नाहि उजारी ॥४९८
आप[1] गयो दिन नाहि घरी जन, भै उपज्यौ बन जाइ छिप्यौ है।
च्यारि रु पाचस आत भये चर, स्याम लयौ घरि भक्ति लिप्यौ है।
जाइ दई नृप देखि भयो चुप, धापत नैनन खूब दिप्यौ है।
मौज दई अति चूक तजी पति, राय लह्यौ हरि धाम थप्यौ है ॥४९९
प्रीत महोच्छव ठानि जिमावत, सतन क वहु भाति मिठाई।
साध सरूप धरयौ सिरनी करि, जाइ कही सु तिलोकहि पाई।
कौंन तिलोक नही हुत दूसर, होइ सुखी निसि कू घर जाई।
देखि भरयौ घर है घन भोजन, जानि लई हरि होत सहाई ॥५००

मूल

छपै छंद
चिंतामनि सम दास ये, मन-बछा-पूरन करन ॥
पुष्कर दी सोमनाथ, भीम बीकौ बी साखा।

---
१ आइ।

सोम सुकल गनेस, महदा रघु अभयू लाखा ।
लछमन छीतर बालमीक, त्रिविक्रम मामा ।
बृद्ध व्यास करपूर, सह बन हरिभूमामा ।
धीठल राघो हरीदास, पूरी धाटम उधव जगन ।
चितामनि सम दास ये, मन-बंछा-पूरन करन ॥११०

ये सूर धीर पारसांपती भक्ति करत दिग्गज भगत ॥८०
छीतम वेदागद, द्वारिकादास महोदधि ।
माधव हरीनंद खेम बीठा बापू सुत ।
विष्णानंद श्रीरंग, मुकंद माधव मन मधुहर ।
दामोदर भगवान, बालकृष्ण केसो प्रभु कामहर ।
संतराम तंबोरी प्रागदास गुपाल सुहृद नागू सुगत ।
ये सूर धीर पारषांपती, भक्ति करत दिग्गज भगत ॥१११

मधुर सुजस जगदीस को करन भक्त संसार ये ॥
प्रिय दयाल गोविंद विद्यापति बहुरन प्यारे ।
चतुरविहारी ब्रह्मदास लाल बरसांना-वारे ।
पूरन गंगा राम नृपति भीषम भगवत रस ।
भासकरन परसराम भगत माई बाटी बत ।
घनस्याम केसो कवित बृजराज-कुंवर की छाप ये ।
मधुर सुजस जगदीस को करन भक्त संसार ये ॥११२

श्रीगोविंदस्वामी की टीका

इंदव छंद

गोबरधन सुनाम सखावत¹ बेसत संग सु गोविंद नाम ।
स्वामि विख्यात सुनो उन बात उने मन² रीति भली मति रामे ।
बेसत है गिरि लास गये भगि दाव हुतो सु गिरी मद स्यामे ।
संत लखी सुख का करि कावत आवत मैंमत है यह बामें ॥५०१
नद रहे भगि भागहिमो वन भाइ दये फल सौ भुगतावें ।
सोच पर्यो प्रभु आइ पर्यो वह भोग पर्यो सु पर्यो नहिं पावें ।
मोहि न भावत कैंत गुसाईंन जाहि सुभावनं वाहि मनावें ।
भो परि दाव हुतो मन की उन भाइ दई नहि फोमत भावें ॥५०२

---

१ सखापुर । २ मन ।

मो बन मैं बिन खेल बनै नहिं, काढत गारिन चोट हु देगी।
चित भई मम ढूंढि र ल्यावहु, आत कनै तब चैन परगैगो।
भोजन भात न ताहि विना कछु, वा रिस जातहि भोग फवैगो।
वेगि गये उन नीठि मनावत, ज्याइ कही अब कठ लगैगो ।।५०३
बाहरि भूमि गयो हरि आवत, आकन डोडन मार मचाई।
देख उठे इनहू वहि मारत, भाव सखा सुख सार कहाई।
बेर लगी बहु माबहु आवत, चालि घरा तजि ये अटपाई।
सौच करयौ सदचार धरयौ मन, प्रेम मढ्यौ सुबिचारि कराई ।।५०४
भोग लगावन मदिर ल्यावत, मागत है पहिलै मम दीजै।
थारहि डारत जाइ पुकारत, कोप करयौ यह सेवन लीजै।
आइ कही जन कौंन बिचारत, खोलि सुनावत कान धरीजै।
जोम रु पैलहि जावत है बन, मोहि न पावत यौ सुनि भीजै ।।५०५

मूल

छपै छंद
मधुपुरी देस जे जन भये, मम कृपा कटाक्ष ही राखियो ॥
रामभद्र रघुनाथ मरहट, बीठल पुनि बेणी।
दासू स्वामी चित उत्म, के सौं दडोतां देणी।
गुजामाली जदुनद, रामानद मुरली।
गोविंद गोपीनाथ मुकद, भगवाना सु धुरली।
हरिदास मिश्र चत्रभुज चरित्र, रघुनाथ विष्ण-रस चाखियो।
मधुपुरी देस जे जन भये, मम कृपा कटाक्ष ही राखियो ॥३१३

श्री गुजामाली की टीका

इदव छंद
सतन कौ परताप बडौ ब्रज, मैं बसि है उन सोभ अपारा।
गुजनमाल धरी जिम नाम सु, बास करयौ सु लहौर मझारा।
पुत्रबधु बिधवाहि सुनावत, लै धन ग्रेकि गुपाल भ्रतारा।
यौ हरि सेवन मागत है तिय, या परि वारतहू जगसारा ।।५०६
पूजन वाहि दयौ धन ग्रे तिय, बास करयौ व्रज रीति सुनीजे।
ठाकुर पै सुत औरन के भरि, डारत खोरहि सौ अति खीजै।
तारि दयो वह भोग न पावत, क्यूस सिखावहि तौ कछु जीजै।
कोपि कही भरि है तब प्रातहि, हा अब खावहु ल्यावत लीजै ।।५०७

मूल

छपै　ये त्रिया कठिन कलिकाल महि, भक्ति करी जग जानि है ॥
छंद　सीता झाली सुमति, गंगा सोभा लाखां ।
प्रभुता मांनमती सुमति, गौरा गंगा ये साखां ।
ऊमां उखिठा सतभामा, कुंवरी गोपाली ।
रामां जमना देवकी, मृगा मग धाली ।
कमला हीरा हरिचेरी, कोली कीकी कुंग जेवा गनेसदे रानि है ।
ये त्रिया कठिन कलि काल महि भक्ति करी जग जानि है ॥३१४

गनेसदे रानी की टीका

इंदव　भूप मधुक्करसाह सु ओड़छ, नारि गनेसदे सुख करी है ।
छंद　साध पधारिहि सेवहिवो विधि संत रह्यौ सुख देत खरी है ।
देखि इकत कही धन है किल होइ चलावहु आनि परी है ।
जांघ छुरी पहराय गयो भगि सोचत है नृप आनि धुरी है ॥५०८
बांधि र सोइ रही न कही किन आवत भूप कही धन मैंसो ।
तीन गये दिन राय लखी भगि जानि कही मम नां दुख दैसो ।
पूछत है नृप बोलि कही तिय संभ्रम छाड़हु है कछु ऐसो ।
दे परिकरमा भूमि परयौ नृप भक्ति करी तजि दंपति ऐसो ॥५०९

मूल

छपै　प्रभु के समत संत जे तिनकै मैं सेवक रहू ॥
छंद　मयांमघ गोब्यंद अनंत गभीरे भरतम ।
जापू नरवाहन गदा ईस्वर सो गरजन ।
भगभई धारा रूप, जनार्दन बतीस जीता ।
खेमल जोधावत रूपा रावत सु बिनीता ।
हेम दमोदर सांपलै गुढलै तुलसी को कहूं ।
प्रभु के संमत संत जे तिनकै मैं सेवक रहू ॥३१५

नरवाहनपू की टीका

इंदव　गाव रहै भय है नरवाहन नाम भई छुटि रोकि स कीयो ।
छंद　भोजन देवन ब्राह्मन दासिहु मार दया सु उपायु जु कीयो ।

१ करी है ।

जै हरिवसहि राघिहु वल्लभ, नांव कहौ सिष पूछत लीयौ।
देत भये सब बात कहौ मति, जाइ हुवो सिष छाडत बीयो ॥५१०

मूल

छपै छद
साधन की सेवा सरस, श्रीमुख आपन सौं कहै॥
बूंदी बनिया रांम, गाव रीदास विराजै।
भाऊ जटिया नै, मडौतै मेह[1] न छाजै।
माडोठी जगदीस, दास पुनि दाऊ वारी।
लक्षमन चढि थार्बलि, गोपाल सलखान उघारी।
सुनि ५ति मै भगवानदास, जोब्नेरि गोपाल रहे।
साधन की सेवा सरस, श्रीमुख आपन सौं कहै॥३१६

गुपालभक्त की टीका

इदव छंद
जोबहिनेरि गुपाल रहैं जन, सतन इष्ट निबाह करयौ है।
बृक्कत होइ गयो कुल मैं, परक्षा करनै घर-द्वारि परयौ है।
आइ कही जन माहि पधारहु, सुदरि देखु न नेम धरयौ है।
दूरि करौ तिय जाइ छिपावत, नैन लखी मुख कौ स जरयौ है॥५११
येक दई इक मानत है रिस, देहु कपोलहि दूसर प्यारी।
नैन भरे सुनि जाइ लये पग, भक्तन की कछु रीति नियारी।
सतन इष्ट सुन्यौ चलि आवत, पारिख लेत भई सिष भारी।
आप कही जन भाव कहा हुत, सत सराहत सो मम ज्यारी॥५१२

मूल

छपै छद
जन राघौ रांमहि मिले, येते बिग भये बादरा॥
इम गरीबदास गुर गोबिंद गायो, दीन भयो नहीं और सू।
मानदास जोरयो मन-वच-क्रम, हित चित जुगलकिसौर सूं।
स्यामदास कै हरिनाराइण, स्यामदीन सर्बंगि भयौ।
खेम रिसकजन हरिया हरि भजि, सर्व सतन कौ मत लयौ।
तजि बृखलीपति कुल करतव्यता, कीयौ भगवत घरि सादरा।
जन राघौ रांमहि मिले, येते बिग भये बादरा॥३१६

---

१ मोह।

व्याहत नाहि सुता सु कुवारिहु, है हरि सन्तन कौ धन भाई।
श्रीजगनाथ कही परनाइहु, मैं वसुदेवत नाम न आई।
होत विदा नहि आत भरे द्रिग, भूप भगत्त लये अटकाई।
सुप्न दयो प्रभु नाहि करौ हठ, हूडि लिखाइ दई सुखदाई ॥५१८

हुडि हजार लिखे घर ल्यावत, सो क ल गाय र नाइ दई है।
साध वुलाइ खुवाइ दये सब, नेम सध्यौ सुख रासि भई है।
वाहि निमत लई लक्षमी वहु, भक्तन कौं भुगतात नई है।
कीरति सत अपार अनतहि, मैं बुधि माहि विचारि लई है ॥५१६

मूल

मनहर छद

छाडि कै निषध कुल नृगुण उपास्यौ नाव,
साधन की सगति भये[1] है विग वादरौ।
त्याग कै जगत आस जाच्यौ है जगतपति,
साई समर्थ घरि जाइ कीन्हौं सादरौ।
प्रानन के नाथ आगे हाथ जोरि गाये गुन,
भक्ति भडार उन दयो मडि मादरौ।
राघौ कहै नीच भये ऊच रटि रांम नाम,
वैसे भये मोक्ष तौ काहै कौं कोई कादरौ ॥३१६

मूल

छपै छद

दिवदास दान दयो बस कौ, हरि सू हठ करि भक्ति कौ ॥
सुत उपज्यौ सिरदार, जसौधरि हरि उर गरजै।
पाटि वैठि पद कीये, घरचो रामाइण नरजै।
ता सुत निज नददास, निगमचारी कवि हारी।
टकसाली पद प्रिय सकल गावै नरनारी।
तीन साखि त्रियलोक मधि, जन राघौ मघ गह्यौ मुक्ति कौ।
दिवदास दान दयो बस कौ, हरि सू हठ करि भक्ति कौ ॥३२०

माधो प्रेमी भूमि परि, लोटत नीकै प्रेम करि ॥
जानत सब को आहि, परचौ ऊचै तै हरिजन।
गावगढागड प्रचुर कीयो, साहिब साचौ पन।

---

१ भयो।

यहि भक्ति की रीति पुत्र पोतां चलि आई।
संतन सू अत प्रीति नीति कबहू न घटाई।
सुधि सरीरहू ना रहै नृति-करत है ध्यान धरि।
माधौ प्रेमी भूमि परि लौटत नौक प्रेम करि ॥३२१

माधौ[1] प्रेमी की टीका

इंदव माधव है पुर नाम गढा गढ नृत्य करै अति प्रेम गिरै है।
छंद सासत भूपति पारिख आनहि, तीसर छाति नचात फिरै है।
घूघर माजि दिखावत साचहि मायक राह बिभेस परै है।
त्रास भयौ नृपदास कह्यौ हित प्रीति लखी दृढ भाव धरै है ॥५२०

मूल

छपै इच्छा अंगद भक्त की श्रीजगनाथ पूरी करी॥
छंद हीरा आयौ हाथि, ताहि राजा मंगवावै।
सांम दांम डंड भेद कहै, मन मैं नहि आवै।
चल्यौ बडांवन काज, धोनि मग मैं सो लीयौ।
मग नारायन सेहु डारि जल मांही दीयो।
कोस सात सत आइकै राखौ वारि लीयौं हरी।
इच्छा अंगद भक्त की श्रीजगनाथ पूरी करी॥३२२

अंगद भक्त की टीका

इंन्दव भूप सलाहिदि-न्द्र गढराय सु सेवक कारहू अगद पापी।
छंद नारि भगत्त सु सतमें सेवत आइ कहै गुर गाथ प्रतापी।
देखि इकन्त न नीम रहो कहि हु, पूछतो इन क्यौ रति पापी।
ऊठि गये गुर नारि तज्यो अन आइ पर्यो पग कांम कलापी ॥५२१
आनन नाहि दिखावत है तिय कौस करौं मुख नेक दिखावौ।
मैं जु तज्यौ अन क्यू करि आवहु जीवन तो कछु जौ तुम पावौ।
बैन लिया जिन बोलहु ना तन प्रान तज्यौ जब क्यू न समावौ।
दौसु करी अब आत रहौ बुधि आइ दया कहि जौ उन ल्यावौ ॥५२२
वेगि गयौ परि कै पग ल्यावत बैन करो गुर सिष्य भयो है।
नाम धरौ गर नीम तिनकहि गीतम यो उर भाव नयो है।

---
[1] माधौदास।

फौज चढी तव आप चढ्यौ पुर, लूटत हीरन टोप लयौ है।
सौ लघु वेचि दये यक राखत, श्रीजगनाथ अरप्पि दयौ है ॥५२३
वात भई पुर भूप लई सुनि, जौ इक दे अनि माफ करे है।
आइ सवै समझाइ न मानत, जाइ कही उन ना अदरे हैं।
अगद की भगनी नृप कैवत, दे विषि तौ तव पाइ परे हैं।
भोजन मैं विप डारि दयो उन, भोग लगाई बुलाइ घरे हैं ॥५२४
ताहि सुता निति संगि जिमावत, वा कित जीमहु ऊठि गई है।
खाइ नही कछु वीत कही उन, रोइ लगी गरि कैंस दई है।
राड जिमाड दये हरि काढत, पात भये जरि वोप नई है।
सोक रह्यौ वह काहि सुनावत, भूप सुनि जिम होत भई है ॥५२५
आप चले जगनाथ चढावन, आई लये नृप फौज चढाई।
द्यौ हमकू नग कै अव झेलहु, चाकर हैं नृप के न वसाई।
नाहि विगारहु न्हाइ र देवत, डारि दयो जल माहि दिखाई।
ल्यौ प्रभुजी यह है तुम्हरौ नग, भक्त गिरा सुनि धारत आई ॥५२६
ये ग्रह आव तवै जल थाहत, ढूंढ रहे कहु खोज न पायो।
भूप गयो सुनि नीर कढावत, पाइ नही उर वौ दुख छायो।
श्रीजगनाथ कही उन द्यौं सुधि, आइ कह्यौ जन देह भूलायो।
जाइ लख्यौ हरि कठ लस्यौ अति, नैन भयौं सुख जाइ न गायौ ॥५२७
भूप भयो दुख छोडि दयो अन, अगद ल्यावन विप्र पठाये।
दे धरनौं नृप वैन कहे सव, आइ दया चलि कै पुर आये।
सामुहि आनि परचौ नृप पाइन, लाइ लयो उर पेम समाये।
भूप दयो सव भक्त करी तव, जीवत लौं हरि के गुन गाये ॥५२८

मूल

छपै छंद
भूप चत्रभुज भक्ति की, कौ नृप करै वरोवरी ॥
सुनै आवतै सत कौस, चहूं साम्हैं जावत।
हरमि आंनि सुख देत, प्रभु सम जांनि लड़ावत।
धोवत दपति चरन, वही चरनांमृत लेवत।
स्यंघासन पधराइ, नृत्य करि है यौं सेवत।
गात रहि करौलीनाथ की, तन माया आगै धरी।
भूप चत्रभुज भक्ति की, को नृप करै वरोवरी ॥३३३

राजा चन्द्रभुज की टीका

इन्दव छंद
सैर चहूं दिसि जोजन बीसहि भाव सुनै चन जाइ र ल्यावै।
दास पधारत है जब यामहि रीति करै सु हर्षे मधि गावै।
भूप मुनी इक बात अनूपम सोलि सुजान सबैहि रिझावै।
पात्र कुपात्र विचार नहीं उर यौं कहि कै नृप सीस भुमावै ॥५२९
भागवती दिज भूप कन हुत, भक्त कही इम चित न धारौं।
आसय पाइ सु कौं नय सौं पढि, हैं हिरिदै महि हेत अपारौ।
पारप सेवन भाट पठावत भेष करयौ कहि दास प्रवारौ।
भूलि गयो कुल जाइ बखानत मांनि भये जिन माहि पधारौ ॥५३०
मासक बात रह्यौ चित भावत दास खरौ धरि भाइ सुनावौ।
जाहु निसंक गयौ नृप भावत वै भर रीति करी हर भावौ।
साम अमसि सुलक्षन नाहिन पारिख मैं न पठ्यौ कि मथावौ।
कोस दिखाइ दयौ द्रबि निर्तत कौडि धरी लपटाइ चलावौ ॥५३१
धाइ कही नृप पर्षत मैं सब, द्रब दिखाइ र वे हु दिखायौ।
खासि खरी भक्ति है मधि कौडिहु भूप विचारत भ्रां चित आयौ।
पंडित भागवती स महापट, रैनि असोकि र आइ सुनायौ।
भेष भगत्ते धरी यह मानहु संपट मांहि सरीर समायौ ॥५३२
पाव लये नृप आप पधारहु, आसय ल्याय भमें समझावौ।
प्रात भये दिज पाइ परयौ मुज पेम भयौ अति ग्यांन सुनावौ।
सीख मग नहि आसन देवत कोस खुलावत लैत न दावौ।
सारहु छीर उभै इक यौ मम देत भई दिज के मन भावौ ॥५३३
प्रात सभा नृप बात चलै बहु राम कहै सब ही जग न्यारे।
भूप सु बूझत बात कहौ मुनि ल्यौ इन पंडित हैं हरि प्यारे।
कोटि मिथ्या सु बखांन करौं वउ पार न भक्ति पगे सिर धारे।
ल्यौ जग कौं मन स्याम रह्यौ समि रीति भली मिलि ये सु पधारे ॥५३४

मूल

छपै
सतन कौ सनमांन बहु भूपति-कुल मैं इन करयौ ॥
सुरजमल अरु रांमचंद डोडै पूजे जन।
साधु सेये मेरतें, खेमल साचें मन।

नीवौ नेमी अभैराम, कान्हर जनभक्ता।
ईस्वर बीरम करमसी, सुरतान सुरक्ता।
भगवांन राइमल अखैराज, मधुकर सतन बसि परचौ।
साधन कौ सनमान बहु, भूपति-कुल मैं इन करचौ ॥३३४

जेमल की टीका

इंदव जैमल भूप रहै पुर मेरतै, जानत भक्ति कथा कहि आये।
छंद सतन सेव करि अति प्रीतिहि, हेत सुनौ हरि फेरि लडाये।
मदिर कौ तलि जानि छता परि, वगलहुं चित राम कराये।
सुदर सेज पिछावन वोढन, पान जरी परदा लगवाये ॥५३५
नीसरनी धरि जाइ सुधारत, दूरि करै फिरि चौकस राखै।
यौ मन धारत स्याम पधारत, पान उगारत पौढन भाखै।
जान तनै तिय जाय चढी धरि, सोत किसौर लखे पति दाखै।
होत सुखी सुनि वाहि डरावत, भाग बडे तिय के हम पाखै ॥५३६

मधुकर साह को टीका

इंदव साह मधुक्कर नाव करचौ सिधि, स्वाग गहै गुन छाडि असारै।
छंद भूप भयौ सुख रूप सु ओडछ, लेत बडौ पन नाहि बिसारै।
माल धरै उनकें पग पीवत, भ्रात दुखी खरकै गरि डारै।
धोइ पिये पग न्हाल करचौ मम, दुष्ट परे पग है द्रिग धारै ॥५३७

मूल

छपै **भक्ति उजागर करन कौं, खेमाल रतन राठौर हुव॥**
निज दासन को दास, सरस सुत रामट राजै।
सेवा सुमर्न ध्यांन, भक्ति दसधा धरि गाजै।
नांती नृमलकिसोर, जेरण जस नीकौ गायौ।
छाजन भोजन अरपि, समझि साधन सिर नायौ।
इम करी जैति जैतारण्या, जन राघो जिम प्रहलाद ध्रुव।
भक्ति उजागर करन कौं, खेमाल रतन राठौर हुव ॥३३५
जक्त भक्ति बाकीक सीस, रामरैंनि रजु करि दई॥
दुसह कर्म उर धरचौ, जहर ज्यूं पर हित सकर।
का जांनै अनिराद्द, भक्ति महिमां निंदाकर।

प्रगट गोप्रवी ब्याह सु, ताको कीयो रास मैं।
सकुतमा कुसकत, पुन भरतादि मास मैं।
मांन नृपति सुनि कुमन ह्वै यह काहूपे नां भई।
भक्त भक्ति बांकीक सीस रांमरैंनि रघु करि दई॥३१५

रांमरैंनि की टीका

इंदव पूनिम सर्द समाजहि निर्तत, रास-बिलास करयौ अति भारी।
छंद मीचि रहे जुग रांम कही तिय दहि कहा विन जो तुम प्यारी।
सोधि बिचारत है पुतरी प्रिय रूपवती अनुरूप निहारी।
सोधि परे सब आइ रु त्यावत कान्ह बने उन देत कुमारी॥५३८

मूल

छपै गुर गोबिंद संतान सूं रांम बांम साचैं मतै॥
साचां कह्यौ सु सबद, ताहि साचैं उर आंन्यौ।
नवमां प्रेमां प्यार, दूसरौ धरम न जांन्यौं।
यह पको पन आहि, गोत्र सन्मुख प्रिय लागै।
छीर-नीर सुबिचार आंन कहू भनइं न पागै।
भक्त सबै राजा कहैं राघो नारोइन नत।
गुर गोबिंद संतान सू रांम बांम साचैं मतै॥३१६

रत्नाबाई की टीका

इंदव राजा रु रांम मधुस्वन भावत धांम रहे नहि संत जिमाये।
छंद मारग को खरची न उदार सु, हाथनि मांहि करा दिढ आये।
मोल हुते रुपया सत पांचक भाभा गये तिन को पहराये।
सोभि कही पति को सखि रीझत ब्याज लये धरि आइ जिमाये॥५३९

मूल

छपै जुगल बास वेमाल की लै किसोर आदर करी॥
पगनि धूघक साजि बाजि, मग बरखैं निरख्यौ।
कृष्ण कलस धरि सीस, न्याय मायन जस बरख्यौ।
गुमस गिरा उद्योत भक्ति की रीति उधारन।
सील सुद्ध रस रासि साप पदरज सिर धारन।

बय छोटी गुन है बडे, जग मै महिमा बिसतरी।
जुगल बात खेमाल की, ते किसौर आदर करी ॥३३७

किसौर की टीका

इदव छाडत देह खिमाल भरे द्रिग, पूछत है सुत खोलि कहीजे।
छद देन कही जु भरयौ घर सपति, बात रही जुग सो सुनि लीजे।
मानि वडाइ समाइ रही बुधि, नाहि बनी मन पै अब खीजे।
सीस धरयौ कलसा जल नावत, नूपर साजि न निर्तत भीजे ॥५४०
होत सबै चुप काम सु डीलहि, नाति किसौर कह्यौ मम दीजे।
बात करौ जुग जोलग जीवत, ऊठि मिलै निहचै यह कीजे।
धाम चले सुख पाइ लयो पन, साधत है निति भाव सु भीजे।
बै लघु भक्ति बडी बिसतारत, साधन सेवत है सब रीझे ॥५४१

मूल

छपै फलत बेलि खेमाल की, मधुर महा अति पोंन फल ॥
पग्यौ प्रेम परपक्क, पथक पक्षी जन पावत।
हरीदास हद करी, हस हरि-भक्त लडावत।
राम रीति वह प्रीति, अनन्य मन बाचक कायक।
हरि प्यारे गुर राम, तिनू कू पूजन लाइक।
राघो साध निहारि कै, प्रफुलत ह्वै हिरदौ कवल।
फलत बेलि खेमाल की, मधुर महा अति पोंन फल ॥३३७
अति उदार कलिकाल मैं, निर्मल नीवा खेतसी ॥
निति ह्वै कथा निकेत, दरस सतन को पावै।
गगन मगन गलतान, उभै भ्राता जस गावै।
छाजन भोजन देइ, भक्ति दसधा के आगर।
रामहि रटि राठौर भये, तिहु लोक उजागर।
जन राघो बढ्यौ अक्रूर उर, हाथि चढी निधि हेतसी।
अति उदार कलिकाल मै, निर्मल नीवा खेतसी ॥३३८
प्रेम मगन कात्याइनी, देत वारि तन के वसन ॥
गोपिन ज्यों आवेस, हो गदगद सुर ग्रीवां।
जगत अजा परपंच, रहत वैरागहु सींवा।

चली बात मग आप, पात ऊधे सुर भगवत।
भींभ मभीरा मृदंग, जानि ये पावप बजवत।
राघो द्रुम-दल पात लगी बोलत सुनि होवै प्रसन।
प्रेम मगन कात्यायनी, देत वारि तन के बसन ॥३३६
गोपाल विरहि गोपी खरी, ज्युं मुरारि देही तजी ॥
मरुत देस मै गांव, बिलूंदा परगट होई।
साध सभा परमांण, महोछव उरम सोइ।
झमी नूंपर साजि, स्याम-सुंदरहि रिझायो।
प्रांन पयानों कीयो, देसी जगदीस बिलायो।
राघो ऐसी को करै प्रीति मांहि भाखों कबी।
गोपाल विरही गोपी बरस, ज्यों मुरारि देही तजी ॥३४०

मुरारिदासजी की टीका

इंदव छंद दास मुरारि जु भूपति के गुर, न्हाइ र आवत कांन परीजे।
पूजन येक चमार करै कहि पाम चर्नांमृत को जग लीजे।
जात भये धरि कापि उठ्यो वह दै हमको अब पांम करीजे।
नीच कहै हम हैं अति ऊपहि, भागत ने तब यौं कहि भीजे ॥५४२
मन बहै चल मो मद है पुस हौ तुम भीर सु मोहि न छाजै।
लेत भये हठ यौं जनता पट जाति न से हरिभक्तिहि काजै।
बात भई सब गांव स निंदत, भूप सुनी यह बाम सुहाजै।
देखन आत भयो प्रभु की वह माप नहीं भक्ति मौ उन राजै ॥५४३
पूजन सू अति हेत गये तजि, भूप दुखी सुनिके यह बातें।
होत समाज समंस्सर मैं निति दीखत नांहि लख्यौ उतपातें।
स्यांन चले जित दास मुरारिहु दडवर्त करि है मसु-पातें।
देखत नां मुख फेरि दई पिठि लोग कहै गुरहु सिष क्यातें ॥५४४
जोरि खरो कर दीन कहै अति दंड करौ सिर यौं मुख भाखी।
नां भटको मम आप कही घटि, मांति करी बहती दुख राखी।
होत खुसी सुनि कै दिसटांतहि मै चरमीक कही वह साखी।
प्रात भये सुनि संत पधारत होत समाज उसी सब वाखी ॥५४५
भौंत गुनी जन गावत गावत साधन के चित स्वामि न देखैं।
आप उठे पग घूंघरु साजि र लाल मुरैं जिम प्रांम बसेख।

आरन जान समैं रघुनाथहि, गात चले तन जीवन लेखै।
होत सवै दुख दास मुरारि न, पासि गये हरि कै अवरेखै ॥५४६

चतुरपथ बिगति बरनन—मूल

छपै वै च्यारि महंत ज्यूं चतुर ब्यूह, त्युं चतुर महंत नृगुनी प्रगट ॥
सगुन रूप गुन नाम, ध्यान उन बिबिधि बतायौ।
इन इक अगुन अरूप, अकल जग सकल जितायौ।
नूर तेज भरपूरि, जोति तहां बुद्धि समाई।
निराकार पद अमिल, अमित आत्मां लगाई।
निरलेप निरजन भजन कौं, सप्रदाइ थापी सुघट।
वै च्यारि महत ज्यूं चतुर ब्यूं, त्यूं चतुर महत त्रिगुनी प्रगट ॥३४१
नानक कवीर दादू जगन, राघो परमात्म जपे ॥
नानक सूरज रूप, भूप सारे परकासे।
मघवा दास कवीर, ऊसर सूसर बरखा-से।
दादू चद सरूप, अमी करि सब कौं पोषे।
†बरन निरजनी मनौं, त्रिषा हरि जीव सतोषे।
ये च्यारि महत चहु चक्क मैं, च्यारि पथ निरगुन थपे।
नानक कवीर दादू जगन, राघो परमात्म जपे ॥३४२
इन च्यारि महत त्रिगुनीन की, पधित सूं निरजन मिली ॥
रामानुज की पधित, चली लक्ष्मी सूं आई।
बिष्णुस्वांमि की पधित, सु तौ सकर तै गाई।
मध्वाचार्य पधित, ग्यांन ब्रह्मा सुबिचारा।
नींबादित की पधित, च्यारि सनकादि कुमारा।
च्यारि संप्रदा की पधित, अवतारन सूं ह्वै चली।
इन च्यारि महत त्रिगुनीन की, पधित निरजन सूं मिली ॥३४३
जन नानक दादूदयाल, राघो रवि ससि ज्यूं दिपै ॥
मध्वाचार्य कै मत ब्रह्मा, बिष्णस्वामि कै पति उमा।
नीबादित कै सनकादिक मत, रांमांनुज कै मत रंमा।
कलपबृक्ष पुनि मध्वाचार्य, बिष्णस्वामि पारस तक्ष।
नीबादित चिंतामनि चहुदिस, रामानुज कलि कामदुघा लक्ष।

†टिप्पणी—बूद

ये च्यारि सम्प्रदा च्यारि मत, सत ऊपरि कसहू न छिपै।
अन नानक दादूदयाल राघो रवि ससि ज्यूं दिपै ॥३४४

श्री नानकजी को पंथ बरनन

उत्तर दिस जन्म भयो, गुगुन भक्त नानक गुरू ॥
खत्रीकुल उतपति ताहि सबही जग जानें।
मिले धाइ प्रबाहु, चराबत पाडी तानें।
कह्यौ पाइ रे दूध कही ये छोटी पाडी।
दूहण को तौ बैठि, दूही तब पाई गाडी।
सीस हाथ धरि यौं कह्यौ, गुगुन भक्ति बिसतार करू।
उत्तर दिस जन्म भयौ गुगुन भक्त नानक गुरू ॥३४५

इंदव जित की वृत्ति खोलि करि हरि प्रीति सु, नाम सु रत भयो मसैं नानक।
ग्यान करै मुख श्रीमुख उच्चरै, राम भजै रस प्रेम को पानक।
केवल येक प्रतीत प्रचम्भत, उत्तर देस मैं ऊपजे मानक।
राघो करारो महाकरणी जित काल करम्म को है गयो चानक ॥३४६

छप्पै श्रीनानक गुरत ऊपजै छमैं प्रकास हरि भक्त ये ॥
लखमीदास प्रहु दास तास के साहिबजादा।
श्रीचंद के बैराग उदासी का परसादा।
श्रीचंद के चतुर सिष, चहुं दिसा धुवाये।
उत्तर पूरब दखिन पछिम धरमसाल बनाये।
अलमस्त फूल साहिब भगत भगवत हुसन दादू प्रिये।
श्रीनानक गुर तैं ऊपजे छमैं प्रकास हरि भक्त ये ॥३४७
श्रीनानक गुर पद्धित चली ताको करौं बखान जू ॥
निराकार निरलेप निरंजन नानक सिसिया।
जनक अंगद भये राम भजि रामहि रसिया।
अमर के पुनि अमरदास, अमरापद पायौ।
रामदास ता पाटि राम कै अर्जुन भायौ।
हरि गोबिंद हरिराइ जन हरि कृष्ण तसो हुव ग्यान सु।
श्रीनानक गुर पद्धित चली ताको करौं बखान जू ॥३४८

इति नानक पंथ

अथ श्रीकवीरजी साहिब को पथ वरनन—मूल

छपै १पूरव महि प्रगट भये, जन कवीर निरगुन भगत ॥
कासी वाहरि निकसि, कहूं कौ जात जुलाहौ।
वृक्ष तरं इक वाल परचौ, सो बोल-वुलाहौ।
ताकौ लै घर गयौ, सौंपि तिरिया कूं दीनौं।
ग्याती सकल बुलाइ, वहुत उछव तिन कीन्हौं।
वडे भये रांमहि भजै, काहू सूं नाहीं सकत।
पूरव महि प्रगट भये, जन कवीर निरगुन भगत ॥३४९
जगत भगत षटदरस सू, रहे कवीर निसक मन ॥
परब्रह्म गुर धारि, भरम सब द्वैत त्यागियौ।
पडो जरत उवारि, राजगृह प्रेम पागियौ।
वालिध द्वै वर पाइ, भक्त षटदरसन पोषे।
ब्राह्मण झूठहि न्यौत्या ये, वह महत सतोषे।
स्याह सिकदर जीतियौ, सभा बीचि नरस्यघ वन।
जगत भगत षटदरस सू, रहे कवीर निसक मन ॥३५०
अथाह थाह पांऊं नहीं, क्यू जस कहू कवीर कौ ॥
श्री राम निरंजन रूप, जाति जग कहै जुलाहौ।
कासी करि बिश्राम, लीयौ हरि भक्ति सु लाहौ।
हींदू तुरक प्रमोधि, कीये अग्यान तं ग्यानी।
सवद रमैंणी साखि, सत्य सगला करि मानी[१]।
प्रमानद प्रभु कारणैं, सुख सब तज्यौ सरी (र) कौ।
अथाह थाह पाऊ नहीं, क्यों जस कहू कवीर कौ ॥३५१

---

१ जांनि।

१'स' प्रति का अतिरिक्त पद—

मोटो भगत कवीर, भगत सव मांहे सीरोमन।
जामन इमृत भाव, पीय रस भगत करौ मन।
इक रांम रांम रस राम, जप मुख इम इमृत रस।
भगतिन हित वैराग, कथ नीत हरि जस।
कुल नीचौ करणी वडी, कव लग बात वखांनिये।
भगतन के सिर सेहरो, असै कवीर जांनिये ॥

मनहर छंद

अखर अराइ क अभाइ न निग्रीम तेग,
कलि मैं कबीर ऐसे धीर भये धर्म के।
मार्यो मन मदन से सदन सरीर सुख,
काटे माया फंदन से बंधन भ्रम के।
निडर निसंक राव रंक सम तुल्य जाके,
सुभ न असुभ जाम मैं न काल-कर्म के।
जोति लीयो जनम जिहांन मैं न छाड़ी देह
राघो कहै राम मिलि कीन्हे काम मर्म के ॥३५२

मूल

छपै

ज्यूं नारद्दम नव निरमये त्यूं श्री कबीर कीये सिष नव ॥
प्रथमहि दास कमाल, द्वितीय है दास कमाली।
पदमनाभ पुनि त्रितीय, चतुरथय राम कृपाली।
पंचम दृष्टम मोर और सप्तम मुनि ज्ञानी।
अष्टम है भ्रमदास नवम हरदास अमानी।
भवका भव भर तिरन कौ जन राघौ कह्यौ पयोध भव।
ज्यूं नारद्दम नव निरमये त्यूं श्री कबीर कीये सिष नव ॥३५३

कबीर कृपा तैं ऊपजी भक्ति कमाली प्रेम पर ॥
सदा रह्यो लैलीन, सीम की अवधि अपारा।
क्षमा दया सतकार झूठ नांख्यौ संसारा।
श्री गोरख सम भई कमाली पारिख लीजै।
अलख जगायो आइ हमारी पत्र भरीजै।
राघो डारघौ धेक पर उमंगि पत्र भरियौ सु दर।
कबीर कृपा तैं ऊपजी भक्ति कमाली प्रेम पर ॥३५४

श्री कबीर साहिब प ज्ञानी पायो ज्ञान कौं ॥
पश्चिम दिसि उपदेस, कीयो परमारथ काजै।
भक्ति ज्ञान बैराग सहित अधोपर राखै।
काम क्रोध मद मोह लोभ मत्सर नहीं काई।
धर्म सील संतोष दया दीनता सुहाई।

राघो रोस रती न उर, दूरि कीयो अभिमान कौ[1]।
श्री कबीर साहिब्ब पै, ज्ञानी पायौ ज्ञान कौं ॥३५५
श्री कबीर कृपा करी, धर्मदास परि धर्म की ॥
करता सति साहिब्ब, और दूसर नहीं जानें।
भक्ति धरी अति गूढ, देखिकै सब हैरानें।
चौकौ अरु आरती, पान परवाना दीजै।
बदी छोडिहि सत, सेव मन बच क्रम कीजै।
गढै मडलै धांम भल, राघो कही सु मरम की।
श्री कबीर कृपा करी, धर्मदास परि धर्म की ॥३५६
गुर धर्मदास कौ धर्म धनि, नींकै धारचौ सिष इन ॥
चूडामनि चित चतुर, पुत्र कुलपती बस के।
सर्बंगि साहिबदास, मूल दल्हण अंस के।
जाग[2] जग सूं तरक, भक्ति भगता कौं प्यारी।
मुर्ति[3] गुपाल श्रुति साधि, सकल सत-सगति प्यारी।
सिष पांच प्रसिध या कबित मै, राघो नाती द्वै कहिन।
गुर धरमदास कौ धर्म धनि, नींकै धारचौ सिष इन ॥३५८

इति कबीर साहिब को पंथ

अथ श्री दादूदयालजी को पंथ बरनन

छपै दादू दीनदयाल के, जन राघो हरि कारिज करे ॥टे०
दल भये सार्भरि सात, सबनि के भोजन पायौ।
अकबर्स्या सूं मिले, तेजमय तखत दिखायौ।
काजी कौ कर गल्यौ, रूई की रासि जराई।
चोरी पलटे अंक, समद मैं भ्याज तिराई।
साहिपुरै साहज मिले, हरि प्रताप हाथी डरे।
दादू दीनदयाल के, जन राघो हरि कारिज करे ॥३५९
दादू जन दिनकर दुती, बिमल बृष्टि बाणी करी ॥
ज्ञांन भक्ति बैराग, भाग भल सबद बतायौ।
कोड़ि गृंथ को मंथ, पंथ सखेप लखायौ।

१ कू। २ जागू। ३ सुर्ति।

बिसुद्ध बुद्ध अविरुद्ध बुद्ध सर्बग्य उजागर।
प्रमोमइ परकास मास निगर्हाम महामर।
बरन बूँद साखी सलिल पद सरिता सागर[1] हरी।
दादू जम बिमकर गुती, बिमस बृष्टि बाखी करी ॥३५०

टीका

मनहर छंद
सामर मैं टापू तामैं तीन सिध ध्यान करैं
यैक कूँ जु माग्या भई जीव निसतारियै।
नभवानी भये ऐक सिध सो गुपत भये
पीछे दोइ रहे उन प्रभु उर धारियै।
धरा गुजरात तहाँ नदी बहै मात येक
ब्राह्मण सु न्हात सौज पूजा की संबारियै।
पुत्र की चाहि प्रति बैठे सावधंती बिधि
पीजरा धायौ तिरत याकौं लौ संभारियै ॥५४७
देख्यौ खोलि ताहि येसैं सरिता सो माहि उन
भयो गरिबाहि यह प्रभु मोहि दयो है।
भई नभबानी येइ उधरैंगे प्रानी घा सो
सति[2] सुनि बानी मन भचभा जु भयो है।
मोधीराम नाम नागर ब्राह्मण जाम,
लखि आवें धाम यह लैकै घर गयो है।
बांटत बधाई पुत्र ही व गही भाई मेरे
मामा भी खुटाई पूरि बानि कों त्यैयो है ॥५४८
बडे भये दादूजू बालकनि माहि बेसै
बृद्ध रूप धारि हरि पीसा मांगि माग्यौ है।
देखि बिकराल रूप बाल सब भाजि गये
रहे येक दादूजु मांपै भाग जाग्यौ है।
कहै मैं जु ल्याऊं पीसा ठाढे रहौ इहां ईसा
बेगि जाइ देख्यौ सीसा पीसा हाथ लाग्यौ है।
दौरि कैं सताब धायौ प्रभु यह पीसा ल्यायौ
कीजियै जु मन भायो मेरो डर भाग्यौ है ॥५४९

---

१ सागर। २ सति।

सूधौ कर कीयो जब प्रभु जानि लीयौ तत्र,
नग्र मैं तू जाहु अब याके पान लाइये।
सुनित सिताव गये तंबोली तै पान लये,
आनि कै हजूरि भये हाथ ले चवाइये।
रीझि कै त्रिलोकनाथ सीस पै जु धरचौ हाथ,
ऊमगि चूंना पान काथ दादू कौं खवाइये।
अतरध्यान भये हरि दादूजू गये घरि,
मन मैं विचारी फिरि ध्यान लै धराइये ॥५५०

मिष्टबानी करी तामैं गायो हरी प्रेम ते जु,
प्रगटे साभरी दादू स्वाग नही धरचौ है।
दिवालै पद गावै असुरन कू न भावै,
कोउ आइकै सतावै तासू रोसहु न करचौ है।
काजी आइ दीन्ही थाप मनमैं न ल्यायो आप,
ताही समैं चढी ताप भुजा दूखि मरचौ है।
येक दिना फिरि गाये पाच सात सुनि आये,
पकरि उठाये लै कै भाखसी मैं जरचौ है ॥५५१

दिवालै भाकसी दोऊ जगा बैठे खुसि सब,
काजी रहे खसी कछु पार नही पायो है।
सुनी सिकदार सब दुनी की पुकार अति,
दादू डारौ मारि हाथी मत्वारौ झुकायो है।
नीरै हू न जाइ पीछे पीछे धरै पाइ बैठौ,
स्यघ गरराइ देखि दूरि तै नसायौ है।
छीत मडवाई कोऊ दादू कै जु जाई दैगौ,
सौं रुपैया भाई अैसौ बाचिकै सुनायो है ॥५५२

येक साहूकार पनधारी द्रसन कौं गयो जब,
दादू अैसे कह्यौ दड छीत बाचि दीजिये।
पकरि लै जाई अक छीत पलटाई कोऊ,
दादू कै न जाई दड ताकै पासि लीजिये।
येक दिना सात नौते येकठे ही आये होते,
बुलाबे कौं आये जेते चालि करि जीजिये।

प्रभु सात देह धरि सबही के जैमें[1] धरि,
हरि येक रूप पीर्थ हू रहीजिये ॥५५३

काजी फिरि कही दादू मारौंगो सही अब,
रूई घर मही बहु बिना आगि बरी है।
बैस बिन बारे उन सबही उधारे प्रभु,
पद सुनि धारे उर बासनां सु अरी है।
साहिपुरे[2] ग्राम तहां रूप द्वै दिखाये हम,
भूले फेटा धरी धरि भावनां सु फरी है।
साद्र[3] मैं भुकायौ हाथी दादू कै है साथी प्रभु
चरन धुवाइ सूंडि सीस परि धरी है ॥५५४

सासस ही साहू सामैं सात कोरि माल भरयौ
गरयौ हैं गरब ब्याज सागर मे भरी है।
अपने को इष्टदेव सबही समारे प्रभु,
पचि पचि हारे बहु बूडे ते जु मरी है।
देसहु ढूंढार तहां मांनस्यंघ राज करै
सहर आमेर जहां गावै दादू हरी है।
उमर सेषन प जु चढि येक साहूकार
दादू दादू कह्यौ टेरि फेरि ब्याज तरी है ॥५५५

सागर के तटि देव नगरनिकटि जहां
सातसै ही साहू सेठ नंद आदि आये हैं।
दादू गुर आये जब बूडत जिवाये बहु
अपरा भटाये अर्ध मास मैं सुधाये हैं।
नांनां पकवांन गिरि मेवा मिष्टांन आमैं
विप्र अरु साध षट-दरसन जिमाये हैं।
राघो कहै सन्यासी हिगोस जु कपिल मुनि
मांमांवती आइ मुनी भजन सुनाये हैं ॥५५६

अकबर महिमा सुनि दादू जु बुलाइ लये
गये बेगि गंम मांहि डीम मां लगाई है।

---

१ बैंवे। २ साहिपुरे। ३ साद।

अकबर बीरबल बुधि के आगर दोऊ,
दादू अनभय के घर चरचा चलाई है।
गोष्टि समझायौ गैवी तखत दिखायौ ताहि,
जाहि तेजवत देखि करत बडाई है।
गऊ छुडवाई कोउ जीव न संताई अरु,
सौगन कढाई अजू साहिब दुहाई है ॥५५७

जुगम[1]-मूल

छपै दादूजी के पथ मैं, ये बावन द्रिग सु महत ॥
प्रथम ग्रीव मसकीन, बाई द्वै सुन्दरदासा।
रज्जब दयालदास, मोहन च्यारयूं प्रकाशा।
जगजीवन जगनाथ, तीन गोपाल बखानूं।
गरीबजन दूजन, घड़सी जैमल द्वै जांनूं।
सादा तेजानद, पुनि प्रमांनंद बनवारि द्वै।
साधूजन हरदासहू, कपिल चतुरभुज पार ह्वै ॥३६१
चत्रदास द्वै चरण, प्राग द्वै चैन प्रहलादा।
बखनों जग्गोलाल, माखू टीला अरु चादा।
हिंगोलगिर[2] हरिस्यघ, निराइण जसौ सकर।
झाझू बाझू सतदास, टीकू स्याम हि बर।
माधव सुदास नागर निजाम, जन राघो बर्णि कहत।
दादूजी के पथ मैं, ये बांवन द्रिग सु महत ॥३६२

श्री स्वामी गरीबदासजी कौ बरनन

छपै दादू दीनदयाल की, गरीबदास गादी तपे॥
भजन सील की अवधि, सेस सिमू सुत जानू।
बींन गांन परबीन, दूसरे अज सुत मांनौं।
रिवसुत सम दातार, सत पर्षत मिथलेस[3]।
सिंध-सुता कर चढी[4], सु तौ सची नहीं लेस।
दिल्लीपति झ्यागीर दत, देत ताहि नांहि न लिपे।
दादू दीनदयाल की, गरीबदास गादी तपे ॥३६३

---

१. जगम। २ हिंगोपालगिर। ३ मथलेस। ४ लगी।

प्रभु सास देह धरि सबही के जयें घरि,
हरि येक रूप पोधै हु रहींजिये ॥५५३

काजी फिरि कही दादू मारौंगो सही मम,
रूई घर मही बहु बिना भागि परी है।
मैस विन वारे उन सबही उभारे प्रभु,
पद सुनि धारे उर बासना सु जरी है।
साहिपुरे[1] आये तहां रूप द्व दिखाये हम,
भूसे फेटा धरी धरि भावना सु फरी है।
साद्[2] मैं भुकायो हाथी दादू के है साथी प्रभु
चरन छुवाइ सूंडि सीस परि धरी है ॥५५४

सातसै ही साह सामैं सात कोरि मास भरयौ
गरयौ है गरब ज्याज सागर मे भरी है।
अपने जो इष्टदेव सबही सभारे प्रभु,
पचि पचि हारे बहु बूडै ते जु तरी है।
देसहु ढूंढार सहां मानस्यंघ राज करै
सहर आंबेर जहां गावै दादू हरी है।
ऊपर सेवन पे जु चढि येक साहूकार
दादू दादू कह्यौ टेरि फेरि ज्याज तरी है ॥५५५

सागर के तटि देव नगनिकटि जहां,
सातसै ही साह सेठ मंद आदि आये हैं।
दादू गुर आये जस पूरस जिवाये बहु
जपरा बटाये भर्म मास मैं सुवाये हैं।
नांनां पकवान गिरि मेवा मिष्टांन जामैं
द्विज भर साध षट-दरसन जिमाये हैं।
राघो कहै सन्यासी हिंगोल जु कपिल मुनि
चांबावती भाइ गुनी बचन सुनाये हैं ॥५५६

अकबर महिमा सुनि दादू जु बुलाइ लये
गये येमि गैस मांहि बोल मां समाई है।

---

१ मैं। २ साहिबपुरै। ३ वाद।

अजमेरि सांभरी सहेत कछु द्रब्य लेहु,
साहिब कै नांइ तुम देहु अर खावई।
राघो कहे गैब के तुरग दिखलाइ दीये,
झागीर पाव लीये ग्रीब मन भावई ॥३६७

स्याह जहागीर जब चले अजमेर पीर,
सुने हैं गरीबदास द्रसन कौं आयो है।
कूवा अरु बावरी तलाव सब सूके परे,
ग्रीषम की रुति सब कटक तिसायौ है।
गायो है मलार मेघ बीनां झुनकार करि,
सावन की घटा जैसे घन बरखायो है।
दोऊ कर जोड़ि लीये सांभरि अजमेरि दीये,
स्वांमीं न कबूल कीये स्याम न भायो है ॥३६८

चेतन चिराक बदा दादूजी दयाल नंदा,
प्रगट प्रचड देग तेग दोऊ चढतौ।
तेजसी त्रिकाल-द्रसि[1] प्रचाधारी गुर प्रसि,
नांवकौ लिहारी भारी रांम रांम रटतौ।
सीलहू सतोष ध्यान ग्यांनवान भागवान,
क्षमा दया ध्रम जांन गुरबांणी पढ़तौ।
रघवा दैदीपमान ब्रह्म मैं समाइ प्रांन,
लोक परलोक जस रह्यौ बोल बढ़तौ ॥३६९

अन्यत

मनहर छंद

भूपनि मैं महा भूप रूप तौ अनूप जाकौ,
चतुरन मै चतुर सु तौ गुनीयन मैं गुनी है।
बुधि कौ बाख्यान ज्ञांन जानिये बासिष्ट जैसौ,
सक्र सौ ध्यान अटल सेस धुंनि सुनीं है।
भक्ति तौ नारदा सी, सारदा सौ शबद जाकौ,
जोग जुगति गोरख सौ मुनियनि मैं मुनी है।
गांऊ तौ गरीबदास और की न करौं आस,
कहत नरस्यध असौ दूसरो न दुनीं है ॥३७०

---

१ द्रसि।

मनहर

दादूजी के पाटि सच्यौ गाइये गरीबदास,
जाकै पासि रिधि सिधि अनबंछी आवई।
गोविंद गुमानदास आदि अनकार-नाद,
छतिसौं छतीस राग पंथन ज्यूं गावई।
नारद ज्यूं बीनकार जग मधि जै-जै-कार,
गुपत गुनदास तान प्रगट बजावई।
राघो कांखी राम रीति हरिदै हरिजी सूं प्रीति,
भगति को पुंज भगवत जी को भावई ॥३६४

दादूजी सुतन सूरवीर धीर सापुरस,
गरीबनिवाज यौं गरीबदास गाइये।
जाको जस कहत सुनत बुधि बुधि बढै
रिजक फराक होत ध्यान ग्यान पाइये।
हिकमति हुंनर हकीम लुकमान के से,
अति ग्यानी गाजी सब मितिही समाइये।
तन मन धन अरपि रामजी रिझायो जिन,
राघो सोचै राति दिन सो' न क्यू' रिझाइये ॥३६५

दादूजी के पाटि दीप गाइये गरीबदास
जाकै पासि रिधि सिधि ध-धै-कार देखिये।
सुका जैसे ब्यास मुनि भजन प्रहलाद पुनि,
गरल मैं नारद ज्यू गुनकौं बसेखिये।
भक्ति को पुंज भगवंत रच्यौ भुव परि
रह्यौ सिषो सारो सनकादिक मैं लेखिये।
राघो मोरी प्रम पुंज प्रसिधि प्रवीण पुंज[2],
गुरकै पछोपे गरवाई अति पेखिये ॥३६६

दादूजी के पाट परि पाइये गरीबदास
जाकै पासि बिस्मीपति प्रसन को आवई।
ग्रीषम की समैं महा तृषा सु सरल लगी,
सब ही की चित भयी घटा बरसावई।

---

१ सौन्दर्य। २ पूत।

खेत मै न पाये सोऊ लै गयो उठाइ कोऊ,
आयो पुर मथुरा मैं सती सुनी नारी[1] है।
राजा मनि आंनो सब छाडी रजधानी कीजे,
गुर ब्रह्मग्यानी मिले दादू मनि-धारी है ॥३७७

रजबजी कौ बरनन

छपै दादू कौ सिष सावधान, रज्जब अज्जब कांम कौ ॥
निराकार निरलेप, निरंजन नृगुन भायौ।
सबंगी तत कथ्यौ, काबि सर्व ही की ल्यायौ।
साखि सबद अर कवित, बिना दिष्टांत न कोई।
जितने जग प्रसताव, रहे कर जोडें दोई।
दिन प्रति दूल्है ही रह्यौ, त्यागी सह्यो सु बाम कौ।
दादू कौ सिष सावधांन, रज्जब अज्जब काम कौ ॥३७८

मनहर दादूजी के पंथ मैं महंत संत सूरबीर,
रजब अजब सोहै उनकै पटतरे।
नारद कै ध्रू प्रहलाद रांमचंद्र कै हनवंत,
कासिब-सुवन जैसै अरक उगत रे।
गोरख कै भर्थरी, रांमानंद के कबीर,
पीपा कै परस भयो धर्म-धारी संत रे।
राघो कहै दत कै दिगंबर संकर सिष,
जासूं भये दस नांम वोपमा अनंत रे ॥३७९
रज्जब अजब राजथांन आबानेरि आये,
गुर कै सबद त्रिया ब्याह संग त्याग्यौ है।
पायो नर देह प्रभु सेवा काज साज येह,
ताकौं भूलि गयो सठ बिषै रस लाग्यौ है।
मौड खोलि डार्‌यौ तन मन धन वार्‌यौ संत,
सीलब्रत धार्‌यौ मन मार्‌यौं काम भाग्यौ है।
भक्ति मौज दीनी गुर दादू दया कीन्ही उर,
लाइ प्रीति लीनी माथै बड़ौ भाग जाग्यौ है ॥३८०

---

१ भारी।

सुन्दरदासजी बड़ा की बरनन

इंदव दादू दयाल की साख सिरोमनि ग्रसे भये घटबोपमी लाइक।
छंद नारद ज्यौं निरखे निरभै भये, ग्यान परापरी बेहद बाइक।
भौंर ज्यूं भ्रम उड़ायौ प्रकासकौं ग्रैसो बनी सिष साष सहाइक।
राघो कहै पुनि वृद्धि पक्षोपा की येक सूं येक अनूप महाइक ॥३७१

इम रांम रसा रसबसी बड़ो, सति सुन्दरदासजी पंथ में पूरो।
गोपि रह्यो पसरघो न पसारे में न्यारे में ऊमग्यो ग्यांन अंकूरो।
निरबोध निरोध[1] कीयौ निज उतरघो पट[2] में पट ह्वै गयो चूरो।
राघो कहै गुर दादू की दौलति मोषि भयो करि मंगल तूरो ॥३७२

उत्तर देस नरेस को बालक आइ मिल्यौ पतिसाहि कै ताँई।
पेलि दयो मजबूत मवासं में जात ही रारि परी परघो घाँई।
चाकर लोग धम्मकि गये भजि, ठाकुर खेत रह्यौ उहि ठाँई।
राघो कहै सति सुंदरदासजि के रखपास भये तहां साँई ॥३७३

देस को लोग मिल्यो मथुरा मधि आइ कहे समचार सती के।
अब तो गृह जाऊं नहीं गृह उपज्यौ, आइ परौं काहू पाइ जती के।
त्यागे हथ्यार छुरी लड़िबो सब आयुध छाड़ि दीये गृहसती के।
राघो कहै सति सुंदरदासजि चालि गये गुरज्ञान पती के ॥३७४

परचा ले मिठाई धरी जब आगम सु नाग कह्यौ सुनि दास रे भाई।
सांभरि में प्रगटे सुगुरू करि दादू के पाइ परो तुम जाई।
मांनि प्रतीति चले चलि आतुर प्रांम की प्रीति मिले सुखदाई।
राघो कहै सति सुंदरदासजि मिले अब चौस हि में सुधि पाई ॥३७५

भगवौं करि भेष रहे अब येकहू जैस रहै मनि-हीन भुजंगा।
काहू मैं आइ पडे पग स्वांमी के मांनौ सुमेर तें उतरी गंगा।
ज्यूं पर सूं समकादिक प्रबर, ग्रैस चले जैसे हस विहंगा।
राघो कहै सति सुंदरदासजी दादूदयाल के सोभित संगा ॥३७६

मनहर बीकानेरि राजा भयु भ्राता नाम सुंदर हो
छंद   बड़ो सूर वीर महा धर्म तेग सारो है।
      पातिसाहि फौज दई काबिल की महुमि भई
            सधुन सों मरे आप मोर्ड परे भारो है।

---

१ निरबोध नरोध। २ मद।

पाव पतिसाहि रा परसि चाकर थवयौ,
अलि थवयौ परसि परजात[1] फल चाड़।
आन रौ ग्यान सुनि थिर न आतम भई,
यौं रजब री कथा सुनि परी अनि आड।
भूख भागी जबै भेटि अन सूं भई,
प्यास भागी तबै नीर पीयौ।
रजब री रहम सू फहम लाधो सबै,
यौं अटल रटि मोह नीर कजीयौ ॥३८४

साखो

रज्जब दोऊ राह बिच, करडी तुझ्झ कांण।
मनमथ राख्यौ मुरड़ि कै, जुरड़ि न दीधो जाण ॥[३८५]

इदव ज्यूं वसि मत्रक आवत बीर, जहा जस योग तहा तम मूझै।
छंद ज्यू धर्मराजक काज करै सब, दूत अनेक रहै ढिग ढूके।
ज्यू नृप के तप तेजत कपत, पास रहैं नर आइ कहू के।
ऐसहि भाति सबै हसटत सु, आग खडे रहि रज्जबजू के ॥३८६
सझ समैं जु सबै सु रहो घरि, आत चली जस बछक रागं।
भूपति कौ भय मानि दुनी जु, अनीति बिसारी सुनीति सु लागं।
मोहन ज्यू बसि मंत्र क बीर, प्रभाति चटा-चट सार कु जागं।
यौंहि कथाक समैं दिसटतस, आइ रहै घिरि रज्जब आगं ॥३८७

मोहनदास मेवाड़ा कौ बरनन

छपै दादू दीनदयाल कै, मोहन मेवाडौ भलौ ॥
कीयौ स्वरोदय ज्ञान, सूर ससि कला बताई।
नाडी त्रिय तत पच, रंग अंगुल मपवाई।
रोगी गरभ प्रदेस, जुद्ध पग बार गणाये।
लगन काल अकाल, असुभ सुभ काज लखायें।
हठ जोग निपुन राघो कहै, समाधिवत गुण कौ गलौ।
दादू दीनदयाल कै, मोहन मेवाडौ भलौ ॥३८८

---

१. परिजात=कल्पवृक्ष।

स्या भ्यांगीर पै मिलाइ परवांनों ल्यायौ,
कंचन को मकुस घड़ायो मढ पीजिये।
हारे कोऊ बरषा मैं पालकी कहार करौं,
बीतें सु लौं पवित्र है ताकौं महू दीजिये।
बांवन अक्षर सुर सप्त छतीस भाषा,
यासूं उपरांति कम कवि सो कहीजिये।
रजब सौं प्रष्ण करी है कवि चारण नै,
सुरसा है मांव ताकौ उत्तर भनीजिये ॥१८१
मुख सूं अक्षर अरु मुख सू सप्त सुर,
मुख सूं छतीस भाषा जग मैं बखांनियें।
व्यापक पुरख उर बचन रहत सोई
सिव अर ब्रह्मा बस लोकन मैं गांनियें।
सुरसा को मर्म भाग्यौ कहै मेरौ भाग जाग्यौ,
गुर उपदेस यही सिष मोहि जांनिये।
पालकी औकुस भले भेट कीये रज्जबको,
मन बच काय सेवा प्रीति सौंज मांनिये ॥१८२

झम्पताल

टंकक तुरकां सिरताज पतिसाही विसो तणौ
ब्रजता/ हिंदवां सीस सिरताज रासौं।
अंर राज सिरताज अमपति जु आंबेर रो
यौं पंथ दादू तणौं रज्जब आंणौं।
अष्ट कुल प्रबतां मेर सबरै सिरै,
नवकुली नाग सिर सेस आंणौं।
नव[1] नखा तार मैं चंद सबरै सिरै
यौं पंथ दादू तणौं[3] रज्जब मांणौ ॥[१८३]
हींदवां हुव भई साखि गीता कही,
तुरक मुसफरां रांखि मूंकी।
ग्यानमैं आरम जिती, भगत भाखा तिती
सठे रज्जब रा सबद सौं मौत चूकी।

---

१ अंबैरै। २ नव नख। ३ तणौं।

पाव पतिसाहि रा परसि चाकर थवयौ,
अलि थवयौ परसि परजात[1] फल चाड़ ।
आन रौ ग्यान सुनि थिर न आतम भई,
यौं रजब री कथा सुनि परी अन्नि आड ।
भूख भागी जबै भेटि अन सूं भई,
प्यास भागी तबै नीर पीयौ ।
रजब री रहम सू फहम लाधो सबै,
यौं अटल रटि मोह नीर कजीयौ ॥३८४

साखी

रज्जब दोऊ राह बिच, करडी तुभझ कांरा ।
मनमथ राख्यौ मुरड़ि कै, जुरड़ि न दीधो जाण ॥[३८५]

इंदव ज्यूं वसि मन्त्रक आवत बीर, जहा जस योग तहा तस मूझे ।
छंद ज्यूं धर्मराजक काज करै सब, दूत अनेक रहै ढिग ढूके ।
ज्यूं नृप के तप तेजत कपत, पास रहैं नर आइ कहू के ।
ऐसहि भांति सबै इसदत सु, आग खड़े रहि रज्जबजू के ॥३८६
सभ समैं जु सबै सु रहो घरि, आत चली जस बछक रागे ।
भूपति कौ भय मानि दुनी जु, अनीति बिसारी सुनीति सु लागे ।
मोहन ज्यू बसि मंत्र क बीर, प्रभाति चटा-चट सार कु जागे ।
यौंहि कथाक समैं दिसदतस, आइ रहे घिरि रज्जब आगे ॥३८७

मोहनदास मेवाड़ा कौ बरनन

छपै दादू दीनदयाल कै, मोहन मेवाडौ भलौ ॥
कीयौ स्वरोदय ज्ञान, सूर ससि कला बताई ।
नाडी त्रिय तत पच, रग अंगुल मपवाई ।
रोगी गरभ प्रदेस, जुद्ध पग वार गणाये ।
लगन काल अकाल, असुभ सुभ काज लखायें ।
हठ जोग निपुन राघो कहै, समाधिवत गुण कौ गलौ ।
दादू दीनदयाल कै, मोहन मेवाडौ भलौ ॥३८८

१ परिजात=कल्पवृक्ष ।

मनहर छंद

दादूजी के पंथ मैं खलेल जाके औरों नाम,
अति ही उदार मम मोहन मेवारे कौं।
आसन भोजन[1] पांणी वांणी अथाह जाकैं,
अबको संतोष दे जिताय ममहारे कौं।
विद्या को बनारस पारस जैसे वेधे आन,
अति मम अकसी उजागर अवारे कौं।
राघो कहै जोग की जुगति करि गाये हरि,
पलटि सरीर सम रूप भरे कारे कौं॥१८८
भांनगढ़ नगर मैं ब्राह्मण को बाल इक,
मृति पाइ गयो सोग भयो उर भारी पे।
मोहन कहत यह हम कौं चढाइ देहु
सर्व ही कह्यो जु लेहु अब या बिचारिये।
बालक मे स्वास भरि वेगिहि उठाइ लीयो,
जोग की जुगति सम गौतम बिचारिये।
मात पिता भईया र कुटंब मन चौंर भयो
कहै सब देहु प्रभु हमहि जु मारिये॥१९०

जगजीवनदासजी को बरनन

दादू को सिष सरस चित जगजीवन जन हरि भज्यौ॥
महा पंडित परबीन ग्यांन गुन कहत न आवै।
वांणी बहु बिसतरी साखि दृष्टांत सुहावै।
सबद कबित मैं राम राम हरि हरि यों करणीं।
गुर गोबिंद जस गाइ मिटायो जामण मरणीं।
दिवसा मैं दिस माइ प्रभु, बरण[2]श्रम कुल बल तज्यौ।
दादू कौ सिष सरस चित, जगजीवन जन हरि भज्यौ॥१९१

इंदव छंद

दादू के[3] पंथ दिप्यौ दिवसा जग मैं जगजीवन यों हरि गायौ।
कीयो बुद्धि बिवेक सु ब्रह्म निरूपन भैसे अहोनिसि राम रिझायौ।
प्रेम प्रवाह कथा उर अंमृत आप पीयो रस औरन पायौ।
राघो कहै रसना रणजीति ज्यूं नांव निसांन निसंक बजायौ॥१९२

---

१ भोजन। २ बहुन। ३ को।

मनहर छंद
टहलड़ी सुथांन तहां मानसिंघ नृप आयौ,
थार भरि ल्यायौ पाक भोजन जिमाइये।
कोऊ भाव धारी ल्यायो रोटी तरकारी वह,
लागी अति प्यारी मन भारी सुख पाइये।
रजो गुनीं दानीं मन राज सब ठानौं होइ,
बुद्धि ही कौ हांनौं ग्यान ध्यान जु गमाइये।
ऊ मूंठी भर रुध्र दुगध की झरी नृप,
देखि चुप करी जगजीवन न खाइये ॥३६३

बाबा बनवारी हरदास कौ बरनन

छपै
बाबौ बनवारी हरदास धनि, जिन गुरद्वारै सर्बस दीयौ ॥
दादू गुर द्रिगपाल, तेज तिहूं लोक उजागर।
सिष चहुं दिसा चिराक, भजन सुमरन के सागर।
तिन मधि बरनौं दोइ, उत्म उतराधा भ्राता।
सब दिन अर सब रैनि, रहैं हरि सुमरन माता।
राघो बलि बलि रहणि की, भजि भगवंत लाहौ लीयौ।
बाबौ बनवारी हरदास धनि, जिन गुर द्वारै सर्बस दीयौ ॥३६४

मनहर छंद
दादूजी के पथ मैं मगन मन माया जीति,
बाबौ बनवारी भारी सर्ब ही कौ भावतौ।
प्रमोध्यौ उत्तरदेस धर्म कीन्हौ परवेस,
निरजन निराकारजी कौ जस गावतौ।
रिधि सिधि लीयें लार भजन रदै देकार,
दरसन कै कारनै गुरू कै द्वारै आवतौ।
राघो बिधि सहित बिसेख पूजि गुर पाट,
छाजन भोजन सर्ब सतौं कौं चढावतौ ॥३६५
गुर चेला रांमति कौं निकसे सहस[1] भाइ,
दिन के अस्ति[2] भये निसा सैन कीयौ है।
निरभै निसक बनवारी सिष प्रमानद,
आनि कें उसीसा रैनि प्रिथी मात दीयौ है।

---
१ सहज। २ मस्त।

मनहर छंद

दादूजी के पंथ मैं बसेत जाके आठौं जाम,
　　अति ही उदार मन मोहन मेवारे कौं।
आगम भोगम[1] पांणी बांणी प्रवाह जाके,
　　भक्तौ संतोष दे जिताई मनहारे कौं।
विद्या को बनारस पारस जैस वेष प्रांन
　　अति मन ऊजली उजागर प्रसारे कौं।
राघो कहै जोग की जुगति करि गाये हरि,
　　पलटि सरीर तन रूप भरे बारे कौं॥३१८

भोलगढ़ नगर मैं ब्राह्मण को बाल इक,
　　मृति पाइ गयो सोग भयो उर भारी ये।
मोहन कहत यह हम कौं चढाइ देहु,
　　सर्व ही कह्यौ जु लेहु अब या जिवारिये।
बालक मे स्वास भरि वेगिहि उठाइ लीयो,
　　जोग की जुगति सम गौतम बिचारिये।
मात पिता भईया र कुटंब मन धीर भयो
　　कहै सब देहु प्रभु हमहि कु मारिये॥३१९

जगजीवनदासजी को वरनन

दादू को सिष सरस चित जगजीवन जन हरि भज्यो॥
महा पंडित परवीन ग्यांन गुन कहत न आवे।
बांणी बहु बिसतरी साखि द्रष्टांत सुहावे।
सबद कबित मैं रांम रांम, हरि हरि यौं करणी।
गुर गोबिंद जस गाइ, मिटायो बामण मरणी।
दिवसा मैं दिन सात प्रभु घण[2]धंम कुल जस लस्यो।
दादू कौ सिष सरस चित, जगजीवन जन हरि भज्यो॥३२१

इंदव छंद

दादू के[3] पंथ दिप्यो दिवसा पग मैं जगजीवन यौं हरि गायौं।
कीयो बुद्धि बिवेक सू बहुत निरपम आस महोनिति रांम रिझायो।
प्रेम प्रवाह चप्या उर अंमृत, आप पोया रस औरन पायौ।
राघो कहै रगमां रणजीति ज्यूं मांव गिराम निसंक बजायो॥३२२

---

[1] जोबन। [2] बहुत। [3] को।

अचिरज की बात सुनी जात बहु संतन पै,
पात पात होत धुनि रांम रांम बाइ कै।
सिषहू बसतदास संतदास रांमदास,
द्वादस महंत पुनि भये हरि गाइ कै।
रांमपुरा ग्राम जहां साधन कौ धांम तहां,
लहै विश्रांम जन बहु सुखदाइकै ॥४००

प्रागदास बिहाणी कौ बरनन

छपै दादू दीनदयाल कै, सिष बिहांणीं प्राग जन॥
कुल कलि करयौ बिख्यात, डीडपुर कीयौ उजागर।
सिष उपजे सिरदार, सील सुमरण के आगर।
साभरि सर जल अधर, चले पद अंबुज नांई।
नाव लेण की माल, रही उर देह जरांईं।
परमारथ हित भजन पन, राघव जीते प्रांन मन।
दादू दीनदयाल के, सिष बिहांणीं प्राग जन ॥४०१

मनहर छंद दादूजी के पथ मैं अतीत अरि इद्रीजित,
बीहै न बिहाणीं प्रागदास परमारथी।
सागोपाग संत सूरबीर धीर धारे तेग,
रामजी के बैठो रथ ग्यान जाके सारथी।
कांम क्रोध लोभ मोह मारिया बजाइ लोह,
भरम करम जीतै भीम जेम भारथी।
राघो कहै रांम कांम सारे जिन आठौं जांम,
भजन की माला रही दगध कीयां रथी ॥४०२

दोऊ जैमलजी कौ बरनन

छपै दादू दीनदयाल के, भजन जुगत जैमल जुगल॥
सूर धीर उदार, सार ग्राहक सतवादी।
दिढ़ गुर इष्ट उपास, भक्त हरि के मरजादी।
पदसाखी निरबान, कथे निरगुन सनबधी।
भक्ति ग्यान बैराग, त्याग सतन श्रुति सधी।
रजबसी राघो उभै, कूरम पुनि चौहाण कुल।
दादू दीनदयाल के, भजन जुगत जैमल जुगल ॥४०३

प्रिथी पतसेव बाइ रच्या करें आग्या पाइ,

तन मन धन अरपि भाव जिन कीयो है।

राघो कहै प्रबनि प्रच्य भई संत देखि,

मुसकत बदन सु हरखत हीयो है ॥३९६

चतुरभुजजी को बरनन

छपै दादू दीनदयाल को पूरब परसिधि चतुरभुज ॥

कीयो रांम पुर धांम, भक्ति निरगुन बिसतारी।

गुरभक्ता हरि भक्त संत भक्ता उपगारी।

तुलसीदास हुलास, तास भुज च्यारि दिखाई।

बटक वृक्ष के पात रांम रटना रटवाई।

राघो हमस सिष्य सरस हारे बोलत सोम फुज।

दादू दीनदयाल कौ पूरब परसिध चतुर भुज ॥३९७

मनहर दादूजी के पंथ मैं बड़ौ बिराक चतुरभुज

छंद भगति भजन पन कौ कीयौ प्रकास है।

भये हैं बिराक सूं बिराक सिस सूरवीर

सबगति कीट भृंग सम ताकी त्रास है।

प्रचापारी प्रसिद्धि प्रगट भयो पूरब मै

जीव की जीवनि जगदीस मार्के पास है।

राघो कहै रांम जपि पायो है सुहाग भाग

सोभा तीनें लोक की सौं धरनि प्रकास है ॥३९८

पोथी करि ल्याये तुलसीदासजी कै आये,

चत्रभुज कह्यो आये बहु चरचा कराइये।

गंगाजी कै तीर चले चत्रभुज कहीं भस,

ध्यांन गयो सोम बार पार क्यौं स आइये।

चत्रभुज नांम तुम काहे यू कहाये चतु

चतुभुज रूप प्रभु जग मैं कहाइये।

धारा मधि पैठि च्यारि भुजाहु दिखाइ दीन्हीं,

चैस मन भई तुलसीदास समझाइये ॥३९९

वृक्ष वेद बड़ को लगायो निज हाथ सौं

मेला के समय पूजा करै संत चाइ कै।

साढ़ा तीन कोड़ि जीव उधरैंगे ताके लार,
ऐसौ परसंग ताहि बरनि सुनायौ है ॥४०७

अहमदाबाद छाडि आये जब साभरि मैं,
परचे भये हैं तब माता सुधि पाई है।
जैमल कौं ल्याई गाथा आदि सो सुनाई सुत,
दिक्षा लै दिवाई सब सतन कौं[1] भाई है।
सुधि न रहाई प्रेम उमगि चलाई आंखि,
नीर भरि आई श्रुति सुख मे समाई है।
जैमल रमाई जाकी भगति लैके गाई जैसै,
सुनी सो सुनाई सीखै भनै सुखदाई है ॥४०८

जनगोपालजी को बर्नन

छपै जनगोपाल दादू तणौं, हरि भगतन जस बिसतर्यौ ॥
ध्रू पहलाद जडभरथ, दत्त चौवीसौं गुर कौ।
मोह बबेक दल बणि, दूरि भ्रम कीयौ उर कौ।
गुर की महिमा करी, जनम गुन परचे गाये।
टकसाली पद ग्रंथ, दयाल की छाप सुहाई[2]।
प्रेम भगति दुविध्या रहत, करी वैसि-कुल निसतर्यौ।
जनगोपाल दादू तणौं, हरि भक्तन जस बिसतर्यौं ॥४०९

मनहर छद दादूजी के पथ मैं चतुर वुधि बातन कौं,
जानिये जनगोपाल सबंही कौं भावतौ।
नींकीं बाणी नृमल मिठास तुक तांनन मैं,
कांनन से होत सुख अर्थ सूं सुनावतौ।
मन बच क्रम हरि हारल की लाकरी ज्यू,
कहना सहित करुणा-निधान गावतौ।
राघो भणि राम नाम आदि ऊंकार करि,
सीस जगदीसजी कौं बारूबार नावतौ ॥४१०
सन्यासी सरूप धारे फिरत जगत मांहि,
विन ग्यान पायें नहीं उर मैं प्रकास जू।

---
१ कू। २ सुमाये।

मनहर छंद

दादूजी के पंथ में प्रचंड जती जोगेस्वर,

खेमदासु हुलासहुल भजन पन की भली।

सालिक सूं खेल्यौ र भरम करम डारे पेलि,

ध्यारथों पम राख्यो है चोहाण ऊजलो पली।

कहूसि रहणि मुनि ध्यान प्रेम धारयो मीके,

भजन भंडारे मैंभि राख्यो भरि के गली।

राघो कीन्हीं रासि गुर गोविंद उपासि करि,

विधि सुं निपायो नीकें रिधि सिधि की डली ॥४०४

खेमदास चोहाण संत रहै बौली ग्राम जहां

बसै भेषधारी इक भगति बसाई है।

भरयो है अग्यान मूढ समझै न ग्यान गूढ,

प्रभु भजे ताकि परि मूंठ भजमाई है।

जैसे प्रहलाद प्राण राखे करतार करी

साखना अपार मारयो दुष्ट नख खाई है।

भये है सहाई गुर मन उजराई रांम,

रक्षा जु कराई हरि सदा ही सहाई है ॥४०५

दादूजी के पंथ मधि बड़ो रजबंसी येक,

कह्यो कछु हायो जोगी जैमल जुगति सुं।

अगम के आगर उजागर गिरा को पुंज

दादू दीप भातर विख्यात र भगति सूं।

तास कै पद्योपै सिष पूरण प्रसधि भयो

निरख निज नांव सीधी सीयो दादू राखे पति सू।

राघो नहि रांम भणि सदा रह्यो येक पणि

दम यम नम करतार गायो सरप सूं ॥४०६

प्रादि कुल पूरम कह्यो है जोगी जुगति सूं

जैमल की माता धनि दाता गुन पायो है।

म्हारि के पहार रहै भारथी मुरंद नांम

कीयो परनाम दसा देह गुन आयो है।

तिप महीं करी मात प्रगटे गुसांई बात,

दादूजी दयाल गुर माद्दी मो बनायो है।

दिलीपति आये तब काजी समझाये सब,
पंडित नवाये और ससै स्याह भानी है ॥४१४

जगाजी कौ वरनन

छपै दादू दीनदयाल के, जगो जोति जगदीस की ॥
भक्ति-भाव दरपवक, साध गुर सेवा बरती।
सहर सीकरी श्रौ र, वधायो जानि सु धरती।
गये सलेमाबाद, परस जु लई परक्षा।
भये रसोई खान, सीरनी कीन्ही भक्षा।
राघो धाये दक्षन[१] दिस, भक्ति वधाई ईस की।
दादू दीनदयाल के, जगो जोति जगदीस की ॥४१५

मनहर छंद दादूजी के पंथ माहि जगा जोति लागि रहो,
जग सू उदास जगो कहूं न लुभायो है।
परसरांम सप्रदाई खेचरी चलाई बहु,
सीरनी जीमाई तऊ खात न अंघायो है।
कहै मुख सेती सर्व दूणी वस्त जेती यह,
होइ मन तेती कछु आपो नहीं आयो है।
कीयौ डील कौं वधाव गुर-सेवा माहै[२] चाव भलौ,
राघो पायो डाव करतार यूं रझायो है ॥४१६

जगंनाथदासजी कौ बर्नन

छपै दादू कौ सिष जगन्नाथ, जुगति जतन जग मैं रह्यौ ॥
प्रेमां भक्ति वसेख ग्यान, गुन बुद्धि समझि अति।
सास्त्रग्य अरु तज्ञ, सील सतवादी मति गति।
गुण-गज नामौ कीयौ, कविता सर्व कीता मधि।
गीता वसिष्टसार ग्रंथ, बहु अवर साध सिधि।
चित्रगुपत कुल मे प्रगट, जो देख्यौ सोई कह्यौ।
दादू कौ सिष जगन्नाथ, जुगति जतन जग मै रह्यौ ॥४१७

मनहर छद दादूजी को मिले हैं कायस्थ कुल निकसि कैं,
जगमग-जोति जगनाथ देखी गुर की।

---

१ मर्डोच। २ मे है।

सीकरी सहर मांहि मिले हैं जनगोपाल
भये सिरपाल गुरदेव दादू दास जू।
सीस परि हाथ दयौ दया परसाद भयौ,
देखि के मुदित भयौ नांव मैं निवास जू।
प्रहलाद चरित्र यथा ध्रुव जड़भर्थ कथा,
करुणा सूं गाये हरि भक्तन हुल्हास जू ॥४११

बखनांजी कौ वरनन

छप्पै
दादू दीनदयाल के, है बखनौं बानैत बड़ ॥
गुर भक्ता जनदास, सील सुठ सुमरण सारौ।
बिरहे लपेट सबद अपत, तिन करत सुमारौ।
हरिरस-मद पीय मत्त, रैनि दिन रहै खुमारी।
परचै बांणी बिसद, सुनत प्रभु बहुत पियारी।
माया ममता मांन मद राघो मन तन मारि छड़।
दादू दीनदयाल के है बखनौं बानैत बड़ ॥४१२

मनहर छंद
दादूजी के पंथ मे है बखनौं बरैत कवि
मतिहि चुटाको' ततबेता तुक तान कौ।
जाकी सरस बाणी कौ बखांण करिए भाव न म,
भारथ मै बान जैसे पारथ के बांन कौ।
जाके पद साखी हद बेहद प्रवेस भये,
जहां लग माया गम होत ससि भांन कौं।
राघो कहै राति-दिन रामजी रिझायौ जिन
गावत न मानी हारि गंधर्ब ही गांन कौ ॥४१३
बखनौं महंत हरि रातौ रस मातौ प्रेम
बोलत सुहातौ मन मोहै जाकी बांनी है।
गंध्रब ज्यूं गावै हरि नैन नीर धार प्रभु
प्रीति सूं मढ़ावै सर्बही कौं सुखदानी है।
सुमरण सासो सास येक नांव कौ अभ्यास,
रहै जगसूं उदास ऐसो गलतानी है।

बैसिकुल जनम बिचित्र बिग बाणी जाकी,
राघो कहे ग्रृथन के अर्थन कौ भान है ॥४२०
दिवसाहे नग्र चोखा बूसर है साहूकार,
सुदर जनम लीयौ ताही घरी आइ कै।
पुत्र को चाहि पति दई है जनाइ तृया,
कह्यौ समझाइ स्वामी कहो सुखदाइ कै।
स्वामी मुख कही सुत जनमैगो सही पै,
बैराग लेगो वही घर रहै नहीं माइ कै।
ऐकादस वरष मै त्याग्यौ घर माल सब,
वेदात पुरान सुने बानरसी जाइ कै ॥४२१
आयौ है नवाव फतेपुर मे लग्यौ है पाइ,
अजमति देहु तुम गुसई (या) रिझायौ है।
पलौ जौ दुलीचा कौ उठाइ करि देख्यौ तब,
फतैपुर बसे नीचै प्रगट दिखायौ है।
येक नीचै सर येक नीचै लसकर बड,
येक नीचे गैर बन देखि भय आयौ है।
राघो घोरे रथि[1] लीये दवते नबाब केर[2],
सुदर ग्यानो कौ कोई पार नहीं पायो है ॥४२२

अन्यात

छपै सतगुर सुंदरदास, जगत मै पर उपगारी।
धन्नि धन्नि अवतार, धन्नि सब कला तुम्हारी।
सदा येक रस रहे, दुख्य द्वद-र को नाहीं।
उतम गुन सो आहि, सकल दीसै तन माहीं।
साखिजोग अरु भक्ति, पुनि सबद ब्रह्म सजुक्ति है।
कहि बालकरांम बबेक, निधि देखे जीवन मुक्ति है ॥४२३
जल सुत प्रीतम जानि, तास सम प्रम प्रकासा।
अहि रिप स्वांमी मध्य, कीयौ जिनि निश्चल वासा।
गिरजापति ता तिलक, तास सम सीतल जानू।
हस भखन तिस पिता, तेम गभीर सु मानूं।

१ राखि। २ केन।

पटपदो भरम-विध्वसन गुरू कृपा स गुर,
दया गुर मैमा सतोतर आनिये।
रामजी नामाष्टक आतमा अचल भाखा,
पजाबी सतोत्र ब्रह्म पीर औदु जानिये।
अष्टक अजव ख्याल ग्यान भूलना है आठ,
सैजानद-ग्रे वैराग बोध परमानिये।
हरि बोल तरक विवेक चितवनि त्रिय,
पम-गम अडिल मडिल सुभ गानिये ॥५४६
बारामासो आयु भेद आत्मा विचार येही,
त्रिबिधि अत करण-भेद उर धारिये।
बरवै पूरवी भाषा चौबोला गूढ़ा अरथ,
छपै छद गरण अरु अगन बिचारिये।
नव-निधि अष्ट-सिधि सात बारहू के नाम,
बारामास हो कै बारै रासि सो उचारिये।
छत्रबध कमल मध्यक्षरा ककरण-बंध,
चौकी-बध जोनपोस बधऊ सभारिये ॥५५०
चौपडि बिरक्ष-बध दोहा आदि अक्षरीस,
आदि-अत-अक्षरी गोमुत्रि काज कीये हैं।
अतर-बहरलापिका निमात हार-बध,
जुगल निगड-बध नाग-बध भी ये हैं।
सिघा-अवलोकनी स प्रतिलोम अनुलोम,
दीरघ अक्षर पंच बिधानी सुनीये हैं।
गजल सलोक और बिबिधि प्रकार भेद,
पंडित कबीर सुरनि मांनि सुख लीये हैं ॥५५१

बाजीदजी की मूल

मनहर छंद
छाड़ि के पठांरण कुल रांम नाम कीनो पाठ[1],
भजन प्रताप सौं बाजीद बाजो जीत्यो है।
हिरणी हतत उर डर भयो भय करि,
सील भाव उपज्यो दुसील भाव बीत्यो है।

---

१ पठ।

उदधितनय वाहन सुनौं, तास सम तुल्य बखानिये।
यौं सुंदर सतगुर गुण अकथ कथत पार नहीं जानिये ॥४२४

बुधि विवेक चातुरी ग्यांन गुरगमि गरवाई।
क्षमां सील सत्य सुहृद सतन सुखदाई।
गाहा गीत कवित, छंद पिंगुल प्रवांनै।
सुंदर सौं सब सुगम, काव्य कोइ कला न छांनै।
विद्या सु चतुरदस माह निधि, भक्तिवंत भगवंत रत।
सयम सु सनर गुरा गण अमर, राज-रिधि नव निधि धत ॥४२५

देवन म ज्यु विष्णु, कृष्ण अवतारन कहये।
गंग माहि नाग¹-सुत, गंग मै तीरथ मै लहिये।
रिखन माहि नारद, जखिन कुबेर भडारी।
सती ज्यौ हनुमंत सती हरिचंद विचारी।
नागन म श्रीसेसजी, बागन सारद मानियौ।
दादूजी क सिषन मे यौं सुंदर सुन्दर जानियौं ॥४२६

तारन मे ज्यूं चंद, इंद देवन मे सोहै।
नरन माहि नरपति सत्ति हरिचंद स जोहै।
भगतन मै प्रह्लाद तास सम और स धोरे।
दानिन मै बलि करनि, सरनि सम सिवर न धोरे।
जगत भगत विख्यात च चातुरजन असे कही।
सब कविजन सिरताज है दादू सिष सुंदर सही ॥४२७

टीका

मनहर   स्वामी श्रीसुंदरजी वाणी मह रसाल करी
छंद   भगत जगत पावै सुणै सब प्रीति सौं।
          साखी अर सबद सवइया अष्टांग जोग
                    ग्यांन को समुद्र पच इंद्रिया उ जीति सौं।
          सुगहु समाधि रचन बोध वेद की विचार
                    उक्त अनूप अदभुत ग्रंथ नीति सौं।
          रूप परभाव गुर संप्रदाद उतिगति
                    निगांनी गुरु को महिमा बावनी गु रीति सौं ॥५४८

---

१ शिव।

स्यांमदास की मूंठि, मडी निरगुण सूं न्यारी।
सिष उपजे सिरदार, भक्ति रसि आई भारी।
ये पचवारै प्रसिधि भये, वडे महत द्रिगपाल ह्वै[1]।
राघो रहणि सराहिये, सुवित सिरोमनि दिपत वै॥४३१

मनहर छंद
आनदास अनन्य अतीत अरि इद्रीजित,
पायौ बित प्रगट प्रकास्यौं हिरदा मैं हरि।
पाच-तत तीन-गुण येक रस कीये जिन[2],
नृगुन उपास्यौ निराकार निहि क्रम करि।
निरवृति सूं नेह धरि देह असैं पारी टेक,
नृबाह्यौ बैराग व्रत जीवत जनम भरि।
राघो कहै भयौ बर उर ऊकार करि,
त्रिगुणी गयौं है तिरि आदि अबिगति घरि॥४३२

स्यामदास को मूल

मनहर छंद
सूरबीर महाधीर दिपत ह्रिदा मैं हीर,
ब्रिकत बैराग मैं सुभाव स्यांमदास कौ।
ऊची दिसा रहणि कहणि ऊची ऊंचौ मन,
गह्यौ मत मगन ह्वै अगम अकास कौ।
रटत रकार बारबार रत रोम रोम,
धारचौ जगि जोग यौं निरोध सासै-सास कौ।
राघो कहै रांम कांम स्यौंप्यौ तन धन धाम,
हरि हरि करत हजूरी भयौ पास कौ॥४३३

कान्हड़दास को मूल

इंदव छंद
कान्हडदास कला लीयें औतरचौ, पथ निरजन के पग धारे।
मांगि भिक्षा र कीयौ भक्ष भोजन, असै अतीत ह्वै स्वाद निवारे।
मांनि धणी पै मढी न बधाई जू, जानि तजे क्रम बंधन सारे।
राघो कहै भजि राम भली बिधि, सगति के सबही निसतारे॥४३४

पूरणदासजी को मूल

मनहर छंद
पूरण प्रसिधि भयौ पिंड ब्रह्मंड खोजि,
कलि मैं कबीर धीर धारचौ गुरम सत कौ।

---

१ है। २. उन।

तोरे हैं कुबांण तीर बालक बींधी सरीर,
दादूजी दयाल गुर मंतर उबीत्यो है।
राघो रत राति-दिन देह दिस मानिक सु,
मानिक सु बेल्यो बस बेसरण सो पीस्यो है ॥४२८

अथ निरंजनी पंथ बरनन

छपै
अब राघहि भाव कबीर की, इम येते महंत निरंजनी ॥
सपटयौ जू १जगनाथ २स्याम ३कान्हड़ ४अनरागी।
५ध्यानदास अरु ६खेमनाथ, ७जगजीवन त्यागी।
८तुरसी पायौ तत ९ध्यान सो भयो उदासा।
१०पूरण ११मोहनदास बांनि १२हरिदास निरासा।
राघो संम्रथ रांम भजि माया मंजन मंजनीं।
अब राघहि भाव कबीर को इम येते महत निरंजनी ॥४२९

मनहर
छं०
सपटयौ जगनाथदास स्यांमदास कान्हड़दास
भये भजनीक अति भिक्षा मांगी पाई है।
पूरण प्रसि भयो हरिदास हरि रत
तुरसीदास पायौ तत नीकी बनि आई है।
ध्यानिदास-नाथ[1] अरु प्रानदास रांम कह्यौ,
जग सूं उदास ह्वै के स्वासोस्वास गाई है।
जगजीवन खेमदास मोहन हिये प्रकास
गुपुत निराट वृति राघो मनि भाई है ॥४३०

जगनाथजी सपटया की टीका

इंदव
छंद
प्रेम निरंतर नांव सुनि प्रहु मी तरसो तन मांझ उठी है।
माडी कियौ भक्ति भारम कौं गहि, पांनी मैं भून ले फेरयौ मुठी है।
स्वाद न सात न भूख न प्यास न, संजम कूं सिरदार हठी है।
राघो सगाई सिरोमनि भक्ति सौं मो जग मैं जगनाथ सठी है ॥४४२

छपै
राघो रहणि सराहिये, सुमिरन सिरोमनि बिपल के।
प्रानदास तत सुर सबल तजि कै हरि परसे।
म० अब क्रम भजनीक दास मोहन सिप सरसे।

१ ध्यानदास। २ सं।

स्यामदास की मूंठि, मडो निरगुण सूं न्यारी।
सिष उपजे सिरदार, भक्ति रसि आई भारी।
ये पचवारै प्रसिधि भये, वडे महत द्रिगपाल ह्वै[1]।
राघो रहणि सराहिये, सुवित सिरोमनि दिपत वै ॥४३१

मनहर छंद
आनदास अनन्य अतीत अरि इद्रीजित,
पायौ वित प्रगट प्रकास्यौं हिरदा मैं हरि।
पांच-तत तीन-गुण येक रस कीये जिन[2],
नृगुन उपास्यौ निराकार निहि क्रम करि।
निरवृति सू नेह धरि देह असै पारी टेक,
नृबाह्यौ बैराग व्रत जीवत जनम भरि।
राघो कहै भयौ वर उर ऊंकार करि,
त्रिगुणी गयौ है तिरि आदि अविगति घरि ॥४३२

स्यामदास को मूल

मनहर छंद
सूरबीर महाधीर दिपत ह्रिदा मैं हीर,
त्रिकत बैराग मैं सुभाव स्यामदास कौ।
ऊची दिसा रहणि कहणि ऊची ऊचौ मन,
गह्यौ मत मगन ह्वै अगम अकास कौ।
रटत रकार बारबार रत रोम रोम,
धारचौ जगि जोग यौं निरोध सासै-सास कौ।
राघो कहै रांम काम स्यौंप्यौ तन धन धाम,
हरि हरि करत हजूरी भयौ पास कौ ॥४३३

कान्हड़दास को मूल

इंदव छंद
कान्हडदास कला लीयें औतरचौ, पथ निरजन कै पग धारे।
मागि भिक्षा र कीयौ भक्ष भोजन, असै अतीत ह्वै स्वाद निवारे।
मांनि धणी पै मढी न बधाई जू, जानि तजे क्रम बंधन सारे।
राघो कहै भजि रांम भलो विधि, सगति के सबही निसतारे ॥४३४

पूरणदासजी को मूल

मनहर छंद
पूरण प्रसिधि भयौ पिंड ब्रह्मंड खोजि,
कलि मै कबीर धीर धारचौ गुरम सत कौ।

---

१ है। २. उन।

गहत अखड मत आत्मा पक्ष भई,
सीसी पर कीरति प्रकास भयौ बस्त कौ।
मन तज्यौ गवन पवन अस्थिर भयो,
भरम करम भाजे वै के हाथ वस्त को।
राघो कहै राम आठौं जाम जपि प्रीति नयी,
होतो अस आगिसो दधीच मुनि मस्त को ॥४१५

हरीदास को मूल

मनहर छंद
जत सत रहिणि कहिणि करतूति बड़ी,
हर न्यू-न हर हरिदास हरि गायो है।
विकत बैरागी अनरागी सिव मागी रहै
अरस परस चित चेतन सूं लायो है।
गुमम मुबाणी निराकार को उपासवान
गुरुमुख उपासि के निरंजनी कहायो है।
राघो कहै राम जपि गगन मगन भयो,
मन बच क्रम करतार यों रिझायो है ॥४१६।

तुरसीदासजी को मूल

इंदव छंद
सीतल नैन बचे बिन बेन महा मन सील अतीव करारी।
माया को त्याग नहीं अन राग, भिक्षा मित भोजन सांझ सवारी।
ब्रह्म अभ्यासी अभ्यासी है नांव को, जोग जुगति सबै बुधि सारी।
राघो कहै करणी मित सोभित, ऐसो हो दास तुरसी को प्रसारो ॥४१७

1'बी' प्रति का अतिरिक्त पद्य —

प्रथम बीसमी प्रसिद्ध तिमा नागोर विसेषो।
बसो नवर अजमेर फुनिम, दोई पड़ि देखो।
फिर नूं नागरि मिटी भीर राखों पर वारी।
देवी को सिव करी ज्यामो जिन जिन उपारी।
जिन प्रभो परीर, राम राजा सब जाले।
अर्धन जिम पंथ चाल्यो साधु गुन बीमो सिखाले।
सिर धरि कर मिमामदास की गोरखनाथ कै मन ल्यौ।
जन हरिदास निरंजनी, और और परखो पीयो ॥४१६

मोहनदास की मूल

है हिरदै सुध हेत सबनि सू, मोहनदास महा सुखदाई।
जो सुख कासी कबीर कथ्यौ मुख, सो अनभै निति नेम सू गाई।
आये कौं आदर आप मिलै उठि, ह्वै तन सीतल सोभ सचाई।
राघो करै हठ चालन दे नहीं, नाम कबीर की देत दुहाई ॥४३८

रामदासजी ध्यानदासजी की मूल

छपै रांमदास अरु ध्यांन की, म्हारि मध्य महिमां भई॥
ग्यांन भक्ति बैराग, त्याग जिन नीकौं कीन्हीं।
भिक्षा खाई मांगि, जागि मन ईश्वर दीन्हौं।
बांणी नृगुण कथी, आंन की आस उठाई।
साखि कबित पद ग्रंथ, मांहि परब्रह्म सगाई।
अंजन छाडि निरजनी, राघो ज्यौं की त्यू कही।
रांमदास अरु ध्यान की, म्हारि मध्य महिमां भई ॥४३९

खेमदासजी की मूल

इंदव छंद खेम खुस्याल भयौ कुल छाडि र, येक निरंजन सूं लिव लाई।
हींदू तुरक्क र ब्राह्मण अतिज, साखत भक्तिहि नाव रटाई।
त्याग समागम सत सु राखत, चाखत प्रेम भगत्ति मिठाई।
राघवदास उपासि निरजन, मांगि भिक्षा निति नेम सू पाई ॥४४०

नाथजू की मूल

नाथ भज्यौ इन नाथ निरजन, और न दूसर देवहि मान्यौ।
ग्यान र ध्यान भगत्ति अखडित, मन्न मगन्न बिरागहि सान्यौ।
मागि भिक्षा गुजरांन कर्यौ निति, कांम र क्रोध अहंकृत भान्यौ।
राघवदास उदास रह्यौ तजि, यौं जग-जाल निराल पिछान्यौ ॥४४१

जगजीवनदासजी की मूल

भादव के जगजीवन दासहु, पचम बर्न तज्यौ हरि गायौ।
सील संतोष सुभाव दया उर, ता हित ईश्वर[1] कै मन भायौ।
त्याग बिराग रु ग्यांन भलै मत, तात भयौ गुर तै जु सवायौ।
राघव सीलहि ग्यान गुरू करि, असौ भयौ फिर पथ चलायौ ॥४४२

---

१ मोश्वर।

सोभावती को मूल

छपै मन बच क्रम सोभावती, सतन कौं सर्बस दयौ ॥
गुपत कसोटी करी, कहि न काहू सूं भाखी ।
हरि द्वारिकाराइ जगदीस, पैज परमेस्वर राखी ।
अन-पांणी अजादि, बस्त्र को नहीं अरेर्यो ।
इक रांणीं के घटि प्रगटि रांमजी रिजक परेर्यो ।
जन राघो रचि प्रसक समे, जो वांछित ह्वौ सो भयौ ।
मन बच क्रम सोभावती, सतन कौं सर्बस दयौ ॥४७३

मनहर छंद मरोली मे जगनाथ स्यामदास संत दास
कान्हड़जु चाटसू मे नीके हरि ध्याये हैं ।
ध्यांनदास दास-सिवाल्ती मोहन देवपुर
सेरपुर हरसोंजु बांणी नीके ल्याये हैं ।
पूरण अमोर रहे षेमदास सिव-हाड़,
टोडा मधि[1] आदिनाथजु परम पद पाये हैं ।
ध्यांनदास म्हारि भये डीडवांणै हरिदास
दास जगजीवन सु भावै सुभाये हैं ॥४७४
राघव निरंजन्यां के नांम गांम गाये हैं ।

इति निरंजनी पंथ

माधौ कांणी की मूल

छपै माधौ कांणी मगन ह्वै मन बच क्रम हरि ध्याइयौ ॥
पावन कीयौ टोंक प्रभु की भक्ति बधाई ।
आसा पंथ सु करत तहां इक बाई आई ।
देवा कौं आरदास, हमारी मोष कहीज्यौ ।
धन न बाई होइ, भजन मैं नारक[2] रहीज्यौ ।
राघो दर चढ़ि पुर गयो परचौ प्रगट दिखाइयौ ।
माधौ कांणी मगन ह्वै मन बच क्रम हरि ध्याइयौ ॥४७५
ततबेता तिहूंलोक को, ततसार संग्रह कीयौ ॥
पंडित प्रम प्रवीण स्रुति सुम्रित पौरांनम ।
भारतादि पुनि और ग्रंथ, सब कथत सु आंनम ।

---
१ आदिनाथ । २ नरक ।

कीये कबित षटपदी, बहुत की संख्या ल्याही।
प्रिथी कोड़ी पचास, जीव चौरासी गांही।
उत्म मध्य कनिष्ट द्रुम, राघो मधुमखि ज्यूं लीयौ।
ततबेता तिहूलोक कौ, ततसार सग्रह कीयौ ॥४४६
ततवेता के सिषन नै, दोऊ देस चिताइयौ ॥
राम दमोदरदास, धाम[1] थौलाई कीन्हौं।
आंबावति के भूप, तास कौं परचौ दीन्हौं।
रामदास बड महत, जैतारणि मुरधर मांहीं।
ऊदावत सिष करे, दुनी सुभ मारग लांहीं।
राघो भक्ति करी इसी, तातैं हरि मन भाइया।
ततबेता के सिषन नै, दोऊ देस चिताइया ॥४४७
जगनाथ जगदीस की, अनन्य भक्ति राखी ह्रिदै ॥टे०
निरबेद ग्यांन मै निपुन, नांब सर्बोपर जाण्यौ।
जप तप साधन सकल, भजन बिन तुछ बखांण्यौं।
छपै कबित सू हेत, तिना मै सख्या आंणी।
मनुख देह के स्वास, गणे अक्षर पौरांणी।
अवर चीज नौखा घणी, राघो हरी भाखे ग्रिदै।
जगनाथ जगदीस की, अनन्य भक्ति राखी ह्रिदै ॥४४८
राघो सिरजनहार सौं, कीयौ मलूक सलूक सति ॥
क्षत्रीकुल उतपत्ति, बसे माणिकपुर माहीं।
अगुनी निरगुनी भक्त, काहू सूं अतर नाहीं।
हींदू तुरक समान, येक ही आत्म देखैं।
तन मन धन सबंस, भक्त भगवत कै लेखै।
साहिब साई राम हरि, नहीं विषमता नाम प्रति।
राघो सिरजनहार सूं, कीयौ मलूक सलूक सति ॥४४९
राघव जो रत रांम सूं, सो मम मस्तक-मंडन ॥
इम मांनदास मो मगन, कीयौ अति कृतनयो है।
जपि नेन्हादास निसि-दिवस, गिरा कौ पुज भयौ है।

---

१ संतधाम।

सोमावती को मूल

छप्पै मन बच क्रम सोमावती, संतन कौं सर्बस दयौ ॥
गुपत कसोटी करी, कहि न काहू सूं भाखी।
हरि नारांइण जगदीस, पैज परमेसर राखी।
मल-मांस्यी बखांनि, बस्त को कहै अरेरयौ।
इक रांणीं के पटि प्रगटि रांमको रिजक परेरयौ।
जन राघो रुचि पंसक समै, जो बांछित ही सो भयौ।
मन बच क्रम सोमावती, संतन कौं सर्बस दयौ ॥४४३

मनहर छंद
घरोसी मैं जगनाथ स्यांमदास दत्त दास
कान्हड़दास बावड़ू मैं मोके हरि ध्याये हैं।
प्रांनदास दास लिखासी मोहन बेवपुर,
सेरपुर तुरसीदास नीके स्याये हैं।
पूरण मभोर रहे खेमदास सिख-हाड
डोडा मधि[1] आदिनाथजू परम पद पाये हैं।
स्यांमदास ल्हारि भये झीझाणै हरिदास,
दास जगजीवन सु भावर्दै सुभाये हैं ॥४४४
द्वादश निरंजन्यां के नांम धांम गाये हैं।

इति निरंजनी पंथ

माधौ कांणी को मूल

छप्पै माधौ कांणी भगत है मन बच क्रम हरि ध्याइयौ ॥
पांवन कीयौ लौक प्रभु की भक्ति बधाई।
आसा बंध सु बरत तहां इक बाई आई।
वैवा कौं आस्वास हमारी नांव कहीज्यौ।
भ्रम न कांई होइ भजन मैं गारक[2] रहीज्यौ।
राघौ नर बढि पुर गयौ परचौ परगट दिखाइयौ।
माधौ कांणी भगत है मन बच क्रम हरि ध्याइयौ ॥४४५
ततबेता तिहूँलोक को, ततसार संग्रह कीयौ ॥
पंडित प्रम प्रबीण, मुनि सुमित पौरांनिम।
भारतादि पुनि और ग्रंथ सब कथत सु आंनम।

---

१ आदिनाथ। २ गरक।

कीये कबित षटपदी, बहुत की संख्या ल्याही।
प्रिथी कोड़ी पचास, जीव चौरासी गांही।
उत्म मध्य कनिष्ट द्रुम, राघो मधुमखि ज्यूं लीयौ।
ततबेता तिहूलोक कौ, ततसार सग्रह कीयौ॥४४६

ततबेता के सिषन नै, दोऊ देस चिताइयौ॥
राम दमोदरदास, धाम[1] थौलाई कीन्हौं।
आंबावति के भूप, तास कौं परचौ दीन्हौं।
रामदास बड़ महत, जैतारणि मुरधर मांहीं।
ऊदावत सिष करे, दुनी सुभ मारग लांहीं।
राघो भक्ति करी इसी, तातै हरि मन भाइया।
ततबेता के सिषन नै, दोऊ देस चिताइया॥४४७

जगनाथ जगदीस की, अनन्य भक्ति राखो ह्रिदै॥टे०
निरबेद ग्यान मै निपुन, नांव सर्बोपर जांण्यौ।
जप तप साधन सकल, भजन बिन तुछ बखांण्यौ।
छपै कबित सू हेत, तिना मै संख्या आंणी।
मनुख देह के स्वास, गणे अक्षर पौरांणी।
अवर चीज नौखा घणी, राघो हरी भाखे ह्रिदै।
जगनाथ जगदीस की, अनन्य भक्ति राखो ह्रिदै॥४४८

राघो सिरजनहार सौं, कीयौ मलूक सलूक सति॥
क्षत्रीकुल उतपत्ति, बसे माणिकपुर मांहीं।
अगुनी निरगुनी भक्त, काहू सूं अंतर नांहीं।
हींदू तुरक समांन, येक ही आत्म देखै।
तन मन धन सर्बंस, भक्त भगवत कै लेखै।
साहिब साई राम हरि, नहीं विषमता नाम प्रति।
राघो सिरजनहार सूं, कीयौ मलूक सलूक सति॥४४९

राघव जो रत रांम सूं, सो मम मस्तक-मंडन॥
इम मानदास मो मगन, कीयौ अति कृतनयौ है।
जपि नंन्हादास निसि-दिवस, गिरा की पुज भयौ है।

---

१ संतधाम।

झैर भयौ सुनि है परमोधत, भक्त भलौ वह गाथ सुनीजै।
है तव भ्रात लघू सुखदाइक, बात कहै तिनकी मन धीजै।
भूपति पुत्र हुतौ वह पूरब, छाडि दयौ सब मो चित भीजै।
आइ परयौ बन मे नृप औरहि, रूप लखे तन दे सुख लीजै ॥५५७
अन र नीर तज्यौ तुमरै हित, जीत नही सुधि बेगिहि लीजै।
देत भये परसाद चल्यौ फिरि, आइ भलै लघू सू हित कीजे।
सग चल्यौ हरि के पुर कौ चलि, पैलहि आनि मिल्यौ वह दीजे।
बात कही सब धाम तज्यौ प्रभु, जाइ बसे बन मैं जुग भीजे ॥५५८

नाराइनदासजो को टीका

बस अलू महि जानहु हसहि, और बडे सु नराइन छोटा।
आन कुमावत येह उडावत, भाभि दयौ करि सीतल रोटा।
दै करि तातहु रीसि करै वह, येहु हुकार भरावहि मोटा।
छोडि गयो घर जाइ भज्यौ हरि, भक्ति भये बसि बोलत धोटा ॥५५९

मूल

छपै **यह बडी रहणि राठौड की, पृथी परि पृथीराज कवि ॥१८०**
अपणी इष्ट बखाणि, मनो क्रम बचन रिझायो।
बरणि बेलि बिसतार, गिरा रुचि गोबिंद गायो।
सरस सवइया गीत, कबित छद गूढा गाहा।
बरन्यो रूप सिंगार, भक्ति करि लीन्हौं लाहा।
जन राघो स्याम प्रताप तैं, यम आगम जांन्यौं मूत भवि।
इह बड़ी रहणि राठौर की, पृथी परि पृथीराज कवि ॥४५२

टीका

इंदव छद बीकहि नेरि नरेस बडौ कबि, पिथियराज सु भक्त भलौ है।
पूजन सौ हित नाहि बिषै चित, नारि पिछानन नाहि तलौ है।
देस गयो अनि सेत मनौ मय, रूप हिदै महि नाहि झलौ है।
तीन भये दिन मुदरि[1] नै हरि, पीछहु देखत चैन रलौ है ॥५६०
कागद देस दयो प्रभु देवल, मै नहि देखत सो दिन तीना।
भेजि दयौ उलटौ उर का लिखि, राज लगे हरि बाहरि लीना।

---

१ मंवरि।

रतनावतीजु की टीका

इंदव छंद मानहु को लघु-भ्रात सु माधव, तास तिया तिन गाथ सुहानी।
पासि खवासनि नाम रटै हरि, प्रेम जटै उर आनत रांनी।
नदकिसोर कबै बृजचदहि, बोलि उठै द्रिग तै वहि पानी।
कान सुनि तब तौ तिय ब्याकुल, चाहि भई कछु प्रीति पिछानी ।।५६४
पूछत तू किम कैत गहै चित, नैन भरै तन भूलि रही है।
चैन करौ कछु बूझहू नाहि न, गात सहै मम सत कही है।
प्रीति लखी अति कैत भई गति, प्रेमनि कीरति कैत सही है।
काम छुडाइ बठाइ सिरै उन, मानि लई गुर पाइ लही है ।।५६५
अै-निसि गाथ सुनै मन देखन, क्यू[1] करि देखहु नैन भरे हैं।
स्याम दिखाइ उपाइ बताइ सु, जीवन तौ हिय आइ अरे हैं।
देखन दूरि मिलै तन धूर स भोग तजै बसि प्रीति करे है।
सेव करौ उर भाव भरौ, पकवान रु मेवन अर्पि खरे हैं ।।५६६
नीलमनी सु सरूप लयो धरि, सेवत भाव सु भाव चली है।
राग र भोग बिबिद्धि लडावत, बीजत[2] जामहि रग रली है।
भूषन बष्त्र अपार बनावत, स्याम छिबो अति देखि पली है।
जोग र जज्ञ अनेक उपाइन, नाहि लहै यह प्रेम गली है ।।५६७
देखन चाहि उपाइ कहा अब, बात अहौ कहि कौन सुनैं ये।
ठौर करावहु म्हैलन कै ढिग, चौकस चौं-दिसि राखि जनै ये।
साध पधार हिवै कहि ल्यावहि, राखहु जागहि पाव धुनै ये।
भोग छतीस धरौ उन आगय, डारि चिगे द्रिग स्याम लखै ये ।।५६८
सत पधारत सेव करै बहु, भ्रात भये जिन कौ बृज प्यारी।
गात किसोरजुगल्ल बहै द्रिग, आप अधीर भई सु निहारी।
को मम अग सु रानिय या तन, है परदा सत-सगति टारी।
ऊठि चली कहि हाथ गह्यौ उन, लाज बडी यह लेहु बिचारी ।।५६९
येह बिचारि सु स्याम निहारन, सार हरी कछु लाज न कानी।
ऊठि गई कहि साधन कै ढिग, पाय लगी बिनती करि रांनी।
हाथि जिमावन की मनमैं जन, लाखन भाति कही नहि मानी।
आइ स देहु करौं सुख है यह, प्रीति लखी करि तौ तव जानी ।।५७०

---

१ क्यू। २ बीतत।

और सुनो इक नेम लयो मथुरा तन त्याग कहूं नहिं दीनों।
गाविल मौम दई पितस्या[1] लखि और हरि मूर्ति कै न भयोनां ॥५६१

आयु रही कुछ मास लगे दिन जाम भरी जुग की सम लागे।
प्रेरि दयौ कवि दै अब बोहर, साथ करै धन यों बड भागे।
सांझि चढे मथुरापुर आवत न्हाइ तज्यौ तन हो अनुरागे।
जै-जयकार भयौ चहुं दिसि फैलि गयो जस जागहि जागै ॥५६२

द्वारिकापति को मूल

छपै कुलवारन द्वारावती ओड़सी वै कीकी धर्म ॥३६०
निधन अधीन अमीश अमल प्रभु पुर मैं बीधी[2]।
साह सम्मति[3] रणछोड़ सहाय सांगरए सुख कीधी।
धन धरणी गढ़ काज सुख बीजापुर सावै।
अटल कुटका भयौ भक्त भगवत दै [illegible]।
कटक बाढ़ कीधी बड़ेस चारि नाम चाल्यो नमै।
कुलवारन द्वारावती ओड़सी व कोको धर्म ॥३६१

टीका

इन्दव छंद सांगन को सुत रावन को पति द्वारिकानाथ कही करि रक्षा।
स्याम सन्नाहि सहाइ करै धन तू हमरी करिये नृप दक्षा।
तुर्क अजीज सु धाम अरावत भाज न भाग लई सुनि सिक्षा।
पापिन मारि दये हरि राखत भोज भये र नई यह पक्षा ॥५६३

मूल

छपै माधौसिंघ कूरम प्रिया भक्त भनी रतनावती ॥
संतन कै समूह सहस सुमनंद रिझावत।
भक्ति नारदी कथा प्रेम उछव करवावत।
भगवत[4] पद मम लीन भक्ति की टेक न छोड़ी।
नृप सौं नेह निवारि बचन सुत तै भई मोड़ी।
सुनता भयौ अब प्रगट करै नाम गहु प्रकाशती।
माधौसिंघ कूरम प्रिया भक्त भनी रतनावती ॥३६२

१ पतिस्या-पतास्या। २ बीधी। ३ सम्मति। ४ भागवत।

रतनावतीजु की टीका

इंदव छंद
मानहु की लघु-भ्रात सु माधव, तास तिया तिन गाथ सुहानी।
पासि खवासनि नाम रटै हरि, प्रेम जटै उर आनत रानी।
नदकिसोर कवै वृजचदहि, वोलि उठै द्रिग ते वहि पानी।
कान सुनि तव तौ तिय व्याकुल, चाहि भई कछु प्रीति पिछानी ।।५६४
पूछत तू किम कैत गहै चित, नैन झरै तन भूलि रही है।
चैन करौ कछु बूझहू नाहि न, गात सहै मम सत कही है।
प्रीति लखी अति कैत भई गति, प्रेमनि कीरति कैत सही है।
काम छुडाइ वठाइ सिरै उन, मानि लई गुर पाइ लही है ।।५६५
अै-निसि गाथ सुनै मन देखन, क्यू[1] करि देखहु नैन भरे है।
स्याम दिखाइ उपाइ वताइ सु, जीवन तौ हिय आइ अरे है।
देखन दूरि मिलै तन घूर स भोग तजै वसि प्रीति करे है।
सेव करी उर भाव भरौ, पकवान रु मेवन अर्पि खरे है ।।५६६
नीलमनी सु सरूप लयो धरि, सेवत भाव सु भाव चली है।
राग र भोग विविद्धि लडावत, वीजत[2] जामहि रग रली है।
भूपन वष्ण अपार बनावत, स्याम छिवी अति देखि पली है।
जोग र जज्ञ अनेक उपाइन, नाहि लहै यह प्रेम गली है ।।५६७
देखन चाहि उपाइ कहा अव, वात अही कहि कौंन सुनैं ये।
ठौर करावहु म्हैलन कै ढिग, चौकस चौ-दिसि राखि जनै ये।
साध पधार हिवै कहि ल्यावहि, राखहु जागहि पाव धुनै ये।
भोग छतीस धरौ उन आगय, डारि चिगै द्रिग स्याम लखै ये ।।५६८
सत पधारत सेव करै वहु, भ्रात भये जिन कौ बृज प्यारी।
गात किसोरजुगल्ल वहै द्रिग, आप अधीर भई सु निहारी।
को मम अग सु रानिय या तन, है परदा सत-सगति टारी।
ऊठि चली कहि हाथ गह्यौ उन, लाज बडी यह लेहु बिचारी ।।५६९
येह बिचारि सु स्याम निहारन, सार हरी कछू लाज न कानी।
ऊठि गई कहि साधन कै ढिग, पाय लगी बिनती करि रांनी।
हाथि जिमावन की मनमैं जन, लाखन भाति कही नहि मानी।
आइ स देहु करौ सुख है यह, प्रीति लखी करि तौ तव जानी ।।५७०

---
१ क्यू। २ बीतत।

कंचन थार धरी कर सौं करि, प्रेम सु खट पकसि जिमाये।
देखि सनेह सु भीजि गये अन नैन निमेख लगे न लगाये।
पान खवाइ र चंदन लेपत, स्याम कथा परसंग चलाये।
बैर सुनी सब देसन आवत पेखि लिख्यौ नृप लोग पठाये ॥५७१
रानिय साज सबी परदा धर, आइ र बैठत मोखम मांहीं।
मानस कागद भेजि दिवानहि भूपति बांचत आगि बरांहीं।
आइ गयौ सुत प्रेम सु ताछिन भाल तिलक्क सुमाल गरांही।
भूपहि आइ सलाम करि चलि मोढिय के सुनि सोच परांहीं ॥५७२
रोस भरयौ नृप भीतरि आवत, पूछत सो नर बात बखांनी।
तौ हम मोढिय मांनि कह्यौ सुत, मात र भक्ति रची उर आंनी।
मातहि कागद देत भयौ करि यो हरि भक्ति तजो मति मांनी।
मोढिय कौ नृप कैस समा मधि हूं अब माढिय औ मुम ठांनी ॥५७३
यौं लिखि भेजत मानस हाथिहि मातहि आइ दया उनि बांच्यौ।
रंग चढ्यौ सुत के परसंगहि बार मुडाइ र भावहि सांच्यौ।
सेवन पाक करैं निसि जागत, आंनि प्रसूतरि गाव न नाच्यौ।
भूपति प्रभि तजे लिखि देखत स्याम निपुत्र भई हित राच्यौ ॥५७४
मानस आइ दयो उर का सुत, बांधि खुसी हुत देत बधाई।
माल बनाइ बटावत है धन काहूक आइ र भूप सुनाई।
भूपति पूछत लोग कही सब मोढिय मात भई सुत भाई।
भूप सुनी दुख पाइ चल्यौ लिखि बैर भयौ उत होत भलाई ॥५७५
राखि लियो नृप कौ समझाइ र लोग भला सुत आइ लखाई।
बैत भयौ तन गात छिपे लगि स्यामहि काम लगे सुखदाई।
मांगि लई परि पाइ दई तुम भूप चल्यौ निसि ज्यौं मन भाई।
धाय गयो गढ आइ मिले नर, बात कही सब चित उपाई ॥५७६
म्हैलनहि बैठि बुलावत मन्त्रिन, मांक कह्यौ अब सोच निवारें।
बाहु मरे र अनंत न मावहि जो मतिवंत विचारि उधारें।
पिंजर मीह छुराबहु मारहि, दावहि बात नहीं यह सारें।
हाल सुनी सब छोड़त दौरत बैठ रावारि गुम्बज निहारें ॥५७७
सेवत ही प्रभु नैन लगे छबि बोल सुण्यौ उत ही द्रिग ढारें।
उठि करयौ धनमान भले मन भाग बड़े गुम्बज पधारें।

फूलन माल गरै पहिरावत, देत तिलक्क लगे अति प्यारे।
धामहु तें निकसे मनु खचहि[1], साखत लोगन मारि पछारे ।।५७८
रानिय की सुधि लेत भयौ नृप, है जु भलै भ्रम होइ गयो है।
राय करै परनाम पर्यौ धर, आय दया उन बैन दयो है।
भूप करै परनाम कही प्रभु, देखहु नैक कलाल लयौ है।
भूप कही द्रिबिराज तुम्हारहि, लोभ नही पति स्याम थयौ है ।।५७९
मान र माधव नाव चढे नृप, सोच भयो जुग डूबन लागी।
भ्रात कहै बड कौंन उपाइ स, छोटहु कैत तिया बडभागी।
ध्यान कर्यौ तब लेत किराडहि, जेठहि देखन चाहि सु लागी।
आइ कर्यौ दरसन्न भयौ खुसि, गाथ अनूप हिये मध पागी ।।५८०

मूल

छपै **करत कीरतन मगन मन, मथुरादास न मगियौ ॥**
हिरदै हरि बेसास, सील सतोष सु आसै।
धर्म सनातन सुह्रिद, ज्ञान रवि करत उजासै।
नंदकुवर सौं नेह, कुंभ धरि मस्तक ल्यावै।
पर्चर्या नैबेदि, आचमन दे जल प्यावै।
श्रीबर्द्धमांन गुर की दया, रिसकराय रग रगियौ।
करत कीरतन मगन मन, मथुरादास न मगियौ ॥४५५

टीका

इदव छंद बासति जारहि भक्ति करी रसि, वात करी इक तेउ सुनावै।
स्वाग धरें चलि आवत सालग-राम सिघासन माहि डुलावै।
स्वामिन के सिष जाइ र देखत, भाव भयौ कहि है परभावै।
आप चलौ वह रीति बिलोकहु, कै सरबज्ञ चलें दुख पावै ।।५८१
लै करि जात भये परि पाइन, फेरि फिरावत नाहि फिरै है।
जानि लयौ इन कौ परतापहि, मारि चलौ मन माहि धरै है।
मूठि चलावत भक्ति फिरावत, वाहि जरावत दुष्ट मरे हैं।
होइ दयालहि जाइ जिवावत, लै समझावत हाथ धरे हैं ।।५८२

---

१ खवहि।

मूल

छप्पै प्रेम बधायो पुंग सम, मृतक नराइनदास प्रति ॥
सबद उचारयौ येह प्रीति को मातौ साचौ।
गावत पद में गरक, मदन मोहन रंग राचौ।
नृत्य मोर ज्यूं करै, यहू गति कोऊ न ल्यावै।
देसी निमग बताइ, लिख्यौ विश्राम सचावै।
प्रगट भई हंडिया-सराइ राघो मिलिया प्रानपति।
प्रेम बधायो पुंग सम, मृतक नराइनदास प्रति ॥४२५

टीका

इंदव नृत्य करै हरि के मुख आगय देखन मैं रमि है मन मोरै।
छंद आइ रहे हडियाइ सरायहु, नाम सुन्यौ सु मलेछहु मोर।
साध महाधन बोलि पठावत, आत गुनी इम ल्यावहु पीर।
आइ कही तुम वेगि बुलावत सोच भयौ वह नीच मचीरै ॥५८३
नृत्य करौं न बिना प्रभु नेमहि सेवन वा ढिग श्यूं बिसतारे।
ऊच सिंहासन स्याम धरी तुलसी सन देखि र गान उचार।
मीरहु बैठि सचे नहि झांकत स्याम लगें द्रिग रूप निहार।
मार न चाहत है कछु मीरन प्रान पड़े कर देत न डारै ॥५८४

मूल

छप्पै लछन उज्जल स्याम के, येते जन बहु देत हैं ॥
१छीत स्याम २गोपाल ३मदामर ४मारद ५रम्ह र।
६बहुर्यतम ७हरिनाभ ८मनतानंद ९कुबर बर।
१०स्यामदास ११जसवंत, १२कृष्णजीवन १३स्यामबिहारी।
१४बोहिथराम १५दीनदास, मिश्र १६भगवान जनभारी।
१७हरिनारांइन गोमु, १८रामदास १९गोबिंद मांडल हेत हैं।
लछन उजल स्याम के, येते जन बहु देत हैं ॥४२६
जगमग जूं प्यारे भये जे जे भजवा जोति हैं ॥
१रामरैन २बीरम ३बिदुर ४जगन ५रघुनाथी।
६दामोदर ७भोड़ा ८बयाल ९गंगा मथुरा थी।
षंडा १०चिरूर ११परसाराम १२परमानंद १३मोहन।

राघो १४गोपानद, १५खेम १६चतुरो नागोहन।
१७द्वै-कृष्णदास १८विश्राम सुनि, सेससाई आरोगि है।
जगभग सू न्यारे भये, जे जे भजिबा जोगि है॥४५७

विदुर वैष्णु की टीका

इदव छंद है विदुर जयतारनि गाव स, सतन सेवन मैं बुद्धि पागी।
मेह भयौ नही सूकत साखहि, स्याम कही जन को वडभागी।
साख कटाइ गहाड उडाइहु, दोइ हजार मन अनुरागी।
वात करी वह लोग न मानत, रासि भये हरि सौ लिव लागी॥५८५

मूल

छपै साधन की सेवा करै, मधुकर वृति करि ये भगत॥
१प्रमानद मधुपुरी, द्वारिका २गोमां आंहीं।
सागावति ३भगवान, दूसरौ काल ४खमाहीं।
५स्यांमसैन कं वस, ६बीठल टोडै टकटारै।
७पीपाहड चौंधड, ८खेम पडा गोनारै।
केवल कूबा ९झींथडै, जैतारणि १०गोपाल रत।
साधन की सेवा करैं, मधुकर वृति करि ये भगत॥४५८
मथुरा महि उछव कीयौ, कान्ह र बहुत उदार मन॥
वर्णाश्रम षट-दरसन, भूप कगाल जिमाये।
सतन कौं सर्वस, देहु अैसे हुलसाये।
चदन अबर पांन, कीरतन करतां दीन्हे।
गहणे दीये उतारि, प्रभु के यौं रंग भींने।
सुत बीठल को सबै सिरै, अैसौ नाहीं आंन जन।
मथुरा महि उछव कीयौ, कांन्ह र बहुत उदार मन॥४५९
चीर बध्यौ दुरपद-सुता, त्यूं रिधि तूंवर भगवांन की॥
अदभुत अैसौ भयौ, खांड मैंदा घृत बढ़िया।
हाटोक[1] रूपा ढेर, देखि परसन मन पढिया।
जीमन लीला रास, कांन की कीरति गाई।
सतन को सनमांन, बहुत सपति सब पाई।

---
१ सोनौ हाटक।

मूल

छपै प्रेम बधायो पुंग सम, मृतक मरायमदास प्रति ॥
सबद उचारयो येह, प्रीति को नातो साचो।
भावत पद मैं गरक, मदन मोहन रंग राचो।
नृत्य और ऊ करैं यह गति कोऊ न ल्यावै।
वैसी त्रिभंग बताइ लिख्यो विश्राम सवावै।
प्रगट भई हंडिया-सराइ, राखो मिसिमा प्रेमपति।
प्रेम बधायो पुंग सम मृतक मराइमदास प्रति ॥५५५

टीका

इंदव नृत्य करै हरि के सुख कारण देसन मे रमि है मन मोरैं।
५८२ जाइ रहे हंडियाइ सरायहु नाच सुन्यौ सु मलेछहु मोरैं।
साथ महाजन मोलि पठावत, भात गुनी हम ल्यावहु पीरं।
आइ यही तुम वेगि बुलावत सोच भयो वह नीच मरोरैं ॥५८३
नृत्य करो न बिना प्रभु नेमहि सेवन या विग क्यूं विसतारे।
कंप सिंहासन राम धरी तुलसी धन देखि रु गान उचारे।
मीरहु बैठि लखै नहि झांकत स्याम लगें द्रिग रूप निहारे।
बार न लागत है कछु धीरज प्रान चढ़े कर देत न डारे ॥५८४

मूल

छपै सरस उज्जल स्याम के येते जन यहु देत हैं ॥
१चीत स्याम २गोपाल ३गदाधर ४नारद ५कान्ह र।
६मद्धपंतस ७हरिनाम, ८अनंतानंद ९कुंभर बर।
१० स्यामदास ११जसवंत,१२कृष्णजीवन१३स्यामबिहारी।
१४बोहिथराम १५बीनदास मिश्र१६भगवान जनभारी।
१७हरिनारायन गोसु १८रामदास १९गोविंद भाडम हेत हैं।
सरस उजल स्याम के येते जन यहु देत हैं ॥५५६
जगमग यूं प्यारे भये, ये दे भजवा जोगि हैं ॥
१रामरेन २जैदेव ३बिदुर ४जयमल ५रघुनाथी।
६दामोदर ७गोरा ८व्यास ९गंगा मथुरा धी।
वृंदा १०किंकर ११परसराम १२परमानंद १३मोहन।

च्यारि सुता हुत साधन देवत, डोलिय बैठत ध्यानहि भूंमैं।
आत सु चेन प्रभू जुग गावत, आश्चर्य मानि परी पुर घूमैं ॥५८८
मारग मैं तन छूटि गयो पन, साच करयौ हरि प्रत्तखि देख्यौ।
इष्ट गुरें परनाम करी चलि, चीरहु घाट सु न्हावत पेख्यौ।
साथ हुते सब आइ भरे द्रिग, बैंन कहै वह जा दिन लेख्यौ।
भक्ति प्रताप लखौ मति आनहि, स्याम दया यह भाव परेख्यौ ॥५८९

मूल

छपै भंल भक्ति प्रभु की जु पे, घोरी उभै बताइ हूं ॥
बिष्णदास दाहिनै, गांव कासीर नांव बल।
बावी दिसि गोपाल गुना, रटि लै लक्षन भल।
गुर भगवत सम सत, जानि निति प्रेति सो सुमरै।
स्याम स्वाग वसि रहत, भक्त बल है उर हुमरै।
केसव कुलपति व्रत सदा, राख्यौ तातें गाइ हूं।
भंल भक्ति प्रभु की जु पे, घोरी उभै बताइ हूं ॥४६३

टीका

इदव छंद है गुर भ्रात उभै उर सतन, सेवन की नव रीति चलाई।
जाहि महोछब जात लियें रिधि, गाडिय साधन देत मिलाई।
सतन की घटती नहि भावत, हेत यहै किनहूं न जनाई।
सिद्ध बडे गुर है परसिद्धि, कहै कर जोरि सुनौं सुखदाई ॥५९०
है मन माँहि महोछव ठानहि, आप कही करि बेगि तयारी।
न्यौति दये चहु वोरहु के जन, आत उनौ हित जागि सवारी।
चौंदिसि तै वह साध पधारत, पाइ परे बिनती स उचारी।
पाच दिना जन ज्याइ दयौ सुख, और दये पट बौ मनुहारी ॥५९१
भोर कही गुर द्यौ परिकर्महि, पैले सु नामहि देव निहारौ।
अबरसे तरु हेत घर्णों जन, जाहि चले सिर पाइन धारौ।
देहि बताइ कबीरहु कौं[1] वह, बंघ चले जुग दैन सवारौ।
'नामहि देव मिले पग लागत', छोडिहि नाहि कहैं सु बिचारौ ॥५९२

---

1 लागन।

च्यारि सुता हुत साधन देवत, डोलिय बैठत ध्यानहि झूंमैं।
आत सु चेन प्रभू जुग गावत, आश्चर्य मानि परी पुर घूमैं ॥५८८
मारग मै तन छूटि गयो पन, साच कर्यौ हरि प्रत्तखि देख्यौ।
इष्ट गुरै परनाम करी चलि, चीरहु घाट सु न्हावत पेख्यौ।
साथ हुते सब आइ भरे द्रिग, बेंन कहै वह जा दिन लेख्यौ।
भक्ति प्रताप लखौ मति आनहि, स्याम दया यह भाव परेख्यौ ॥५८९

मूल

छपै **भेंल भक्ति प्रभु की जु पे, धोरी उभै बताइ हूं ॥**
बिष्णदास दाहिनै, गांव कासीर नांव बल।
बावी दिसि गोपाल गुना, रटि लै लक्षन भल।
गुर भगवत सम सत, जानि निति प्रेति सो सुमरै।
स्याम स्वाग वसि रहत, भक्त बल है उर हुमरै।
केसव कुलपति ब्रत सदा, राख्यौ तातैं गाइ हूं।
भेंल भक्ति प्रभु की जु पे, धोरी उभै बताइ हूं ॥४६३

टीका

इदव छंद
है गुर भ्रात उभै उर सतन, सेवन की नव रीति चलाई।
जाहि महोछब जात लियें रिधि, गाडिय साधन देत मिलाई।
सतन की घटती नहि भावत, हेत यहै किनहूं न जनाई।
सिद्ध बडे गुर है परसिद्धि, कहै कर जोरि सुनौं सुखदाई ॥५९०
है मन मांहि महोछव ठानहि, आप कही करि बेगि तयारी।
न्यौति दये चहु वोरहु के जन, आत उनौ हित जागि सवारी।
चौंदिसि तै वह साध पधारत, पाइ परै बिनती स उचारी।
पाच दिना जन ज्याइ दयौ सुख, और दये पट वौ मनुहारी ॥५९१
भोर कही गुर द्यौ परिकमंहि, पैले सु नामहि देव निहारौ।
अबरसे तरु हेत घणौं जन, जाहि चले सिर पाइन धारौ।
दैहि बताइ कबीरहु कौं वह, बध चले जुग दैन सवारौ।
नामहि देव मिले पग लागत[1], छोडिहि नाहि कहैं सु विचारौ ॥५९२

---

१ लागन।

पाप धर्म जित साधन आवत व सुख सत तहां सब आवै।
प्रीति भली तुमरे हम है सुनि, प्रभु भले सु कबीरहु पावै।
आत मिले अन राज परैं पग, देखि हसे मिलि माथि नवावै।
हां जु कही तुम पै किरपा बड़, सेव प्रताप कहां लुक गावै ॥५९३

मूल

छप्पै करमैती कलिकाल मैं, सील भजन निरबाहियौ॥
मरन धर्म धर छोड़ि अमर बर सूरति लासी।
लोकलाज कुल कानि, काटि हरि मारग वासी।
प्रगट बसी ब्रज जाइ बदम बन कीरति करई।
धनि परसरांम पारीक, सुता प्रसी उर धरई।
बिषै बासना बचन कर बहुरि न ताकौं चाहियो।
करमैती कलिकाल मैं, सील भजन निरबाहियौ ॥५९४

टीका

इंदव भूप बड़े तहि तास पिरोहित तास सुता करमैति बखानैं।
छंद स्याम बसे उर काम सबै तज धाम सु सेव मनोमय ठानै।
आमहु आसन सुधि सरीरहि फूलत अंग छिकी मति सानैं।
गौनहि को पति प्रात पिता तिय चाव भयौ पट भूषन आनै ॥५९८
सोच भयो सु उपाइ कहा अब हाथ र चाम सरीर न आवैं।
छोडि चलौ चित ऊठि मिटै दुख प्यार भयो जग मैं इक स्यामें।
कानि र लाज नहीं कछु काजहि चाहत हु हरिया दिन धामें।
प्रात लिनोमहि मौ मग धावहि आमि बसी प्रभु संग सवामें ॥५९५
नैन भयी निकसी उर सासहु हेत लग्यौ बपुहु बिसराई।
जानि भई परभाति स संपति सोर परयौ सब ढूढत जाई।
दौर गये बहु ओरहि मानस ऊंट करंकहु मांहि दुराई।
भोग बिषै दुरगंध भगी मन ये पुरगंध सुगंध सुहाई ॥५९६
तीन दिनां सु करंक रही मति संक गई रति जात न माई।
संगहि संगि सु गंग गई चलि न्हाइ र भूषन दै मग पाई।
हेरत सो परसापुर आवत पेठ पता इक बिप्र बताई।
ब्रह्महि कुंड न ऊपरि ही वट दगि भई चढि देन दिखाई ॥५९७

---

१ बचन।

जाइ परच्यौ पगि रोड कही पित, नाक कट्यौ मुख काहि दिखावै।
चालि बसो घर हास मिटावहु, सासर जामति सेव करावै।
ब्याघ र सिंघ हतै बन मै डर, मात मरै तव जाइ जिवावै।
साच कही विन भक्ति इसौं तन, त्या इतहो मिलिकै हरि गावै ॥५९८
नाक कट्यौ कहि होइ कटै किन, भक्ति सु नाक तिहू पुर गायो।
खोत पचास बरस्स बिषै लगि, त्यागत नाहि चबेहि चबायो।
भोगन मैं नहि सार पदारथ, कांम तजौं भजि स्यांम सुहायौ।
आख खुली तम जात भयो सुनि, देत सरूप सु लै घरि आयौ ॥५९९
धाम बरचै निसि लाल धरे रसि, राखि भलै चित टैल कराई।
जात नही कहु नाहि मिलै किन, पूछत भूष कहा दिज भाई।
काहु कही घर मै प्रभु सेवत, भूप भयो खुसी सुद्धि मगाई।
जाइ कह्यौ नृप देत्त असीसहि, कैतहि भूप चल्यौ घर जाइ ॥६००
प्रीति लखी नृप पूछत कैत सु, नीर बहै द्रिग स्याम पगी है।
जात भयो नृप ल्याउ इहा उन, पात हमै अति चाहि लगी है।
तीर खडो जमुना-जल नैननि, राय लखी रति बौ उमगी है।
लाख बिसा बरज्यो नृप चा अति, कीन कुटी घरि आत जगी है ॥६०१

मूल

छपै कृष्ण रूप गुन कथन कू, खरगसेन नृमल गिरा ॥
बड़ी भक्ति तन मध्य, बरनई दान केलिका।
तात मात सुत भ्रात, नाम कहि गोपि ग्वालिका।
मोहन मित बिहार, रंग रस मै मन दीन्हौं।
चित्रगुपत कै बंस, बिदत यह लाहा लीन्हौं।
स्मृति गौतमी आंनि उर, रास माहि बपु तजि फिरा।
कृष्ण रूप गुन कथन कौं खरगसेन नृमल गिरा ॥४६५

टीका

इंदव रास करावत ग्वालिर वासहि, पुनिम सदै लग्यौ रस भारी।
छंद पाव चलावनि भाव दिखावनि, थेइ करावन जोरि निहारी।

---

*भगवान मद्राए ग्वाल गोप के है है माराजजा।(?)

दुखदलन मरदन मदन, नेह नेम हरि लाल को।
सतन सेवा कारनं, यहु तन माधो ग्वाल को ॥४६८

विदत बहुत लछि प्रेमनिधि, नम दिज तिन सग्या धरी ॥
उत्तम सहज सुह्रिद, मिष्ट गिर आनद दाता।
सतन कौं सुखकार, प्रेमा नौमांतर राता।
भवन मांहि बैराग, तत्वग्र ही भव न्यारा।
नेम सनांतन धर्म, भक्त निति लगै पियारा।
सहर आगरै करि कृपा, कथा पृथी पावन करी।
बिदत बहुत लछि प्रेमनिधि, नम दिज तिन सग्या धरी ॥४६६

टीका

इंदव छंद
प्रेमनिधी बसि है पुर आगर, सेवन कौ तरकै जल ल्यावै।
चातुरमास जह-तहि कर्दम, सोच करै किम अप्रस आवै।
जो चलि हौं तम मै बिगरै सब, तौ हु चले नर छूत न भावै।
द्वारहु तै सुकुमार लख्यौ इक, हाथि चिराक इनै लगि जावै ॥६०४
मानत यू पहुचाइ चल्यौ किन, जो टलि है सुख को उधरी है।
आत भयो जमुना लग आव्रज, न्हात भये बुद्धि वे सु हरी है।
कुभ धरचौ सिर आइ गयो वह, छोडि गयो कौन करी है।
होत भई चित्त चित गयो बित[1], मित बिना द्रिग होत झरी है ॥६०५
कैत कथा सु हरै चित भाव, भर किरपा करि दुष्ट जरै है।
जाइ कही पतिस्याह रिसावत, लोग बडे तिय धाम भरै है।
चौपहिदार पठाय बुलावत, तोइ धरौ वह सोर करै है।
लेर गयौ नृप बूझत रगहि, नारि करौ परसग बुरौ है ॥६०६
गाथ कही प्रभु कान्हहि की नर, नारिहु आइ रहे उन प्यारो।
ना बरजे न बुलावन जावत, नाहि बिषै तिय है महतारी।
बात भली तुम तौ कहि दीन सु, तो ढिग के नर कैत नियारी।
भूप कही इन राखहु देखहि, रोकि दये तव तौ हरि धारी ॥६०७
पौढत हौ पतिस्याह कही निसि, इष्ट धरचौ वहि को कहि प्यासे।
आव पिवौ कित[2] है सु परै ढिह, पावहि कौंन खिजे पुनि खासे।

---

१. छित। २ किन।

आइ मिले वपु छाडि र भावहि लेत अनंत सुखै सन वारी।
साथ दिखाइ दई हित रोशिहु प्रेमिन कौं अति लागत प्यारी ॥६०२

मूल

छपै गंग ग्वाल गहरौ अधिक, सखा स्यांम चित भांवतौ ॥
राधेजी की सखी हुती यह संज्ञा पाई।
बृज के गांम ब ग्वाल, गाइ भिन भिन्न सुहाई।
स्यांम केलि आगर उविध हिरदा मैं धारी।
मगन रहै रस मांहि मूढ बांणी न उचारी।
राघौ कृष्ण कृष्णदास गुर सत चरन सिर नांवतौ।
गंग ग्वाल गहरौ अधिक सखा स्यांम चित भांवतौ ॥४६६

टीका

इंदव मास भयो पखिस्याह मथुराबन सारंग राग सुनौं हठ त्यावे।
छंद संग सु अक्षम रंग बण्यौ अति मात करे जल नैन बहाये।
हाथ हू जोरि कहै पसिये मम जीवत है बृजभूमि सुनाये।
संग लगे हठ बात दिसी छुट बावत दूबर भाई समाये ॥६०३

मूल

छपै यह लोक प्रलोक सुख, आसकरन दोऊ लह्या ॥
उरऽ[1] आकर प्रभु सुजस प्रीति साधन सूं भिति अति।
अगत कुबस सम बस्यौ महरि आसक्त हू निरवृति।
प्रीखत ज्यूं वपु मुख्यौ बघेरै मांहि बनेती।
बींद बण्यौ भक्ति रांम संत समूह जनेती।
हरख भयो हरखापुरै गुण गाया त्यूं गुर कह्या।
इहलोक परलोक सुख सासकास दोऊ लह्या ॥४६७
संतन सेवा कारने, यहु तन माधव ग्वाल कौ ॥
अहनिसि करै उपाव साध का बिधि ह्वै परसन।
स्यांम स्यांम ते हित दास कौ चाहै दरसन।
बरतै पर उपगार और आसा नहीं मन मै।
प्रेमा मगन महंत, पाइ है गुन-धन जन मै।

---

१ कहीं लिखये।

---

†टि —वाग।
‡टि —भगवान्।

सब सूं रह्यौ निराल, इदु द्रुम साखा नांईं।
भारी गुन-गंभीर, सकल जीवन सम ग्रांईं।
सत[1] सुजस ग्रानन सदा, ग्रपजस कबहूं ना कीयौ।
साध दया उर धारि प्रभु, कान्हरदास लाहौ लीयौ ॥४७३

पापी कलि के जंत जे, केवलरांम कीये बिसद ॥
गुर संतन सौं बिमुख, नाव जगदीस न गांवै।
बहुत इसे नर-नारी, खैंचि मारग सति लावै।
उज्जल प्रीति ग्रकांम, कनक ग्ररु कांमनि त्यागी।
सार-द्रिष्टि ग्रज्ञान नसन, रहति करुणा के भागी।
स्याम स्वाग नवमा भक्ति, देत नांहि बोलै ग्रसिद।
पापी कलि के जत जे, केवलराम कीये बिसद ॥४७४

टीका

इंदव छंद

धामहि धाम कहै मम देवहु, ल्यौ हरि नावहि सेव बतावै।
स्वाग धरे लखिये न ग्रचारहि, पूजन की प्रभु रीति सिखावै।
सागर है करुणा न सुने ग्रनि, बैलहि चोट दई सु लुटावै।
ऊपरिई मगरा बिचि देखत, है सब ये कहि कै समझावै ॥६१०

मूल

छप्पै

हरि-बस संत सेवा करै, द्रिब्य रहत बिस्वास हरि ॥
गान गाथ सूं हेत, साधन पूजन ग्रति राजी।
खुरपा जाली न्याई, देत सर्बस ले बाजी।
करै नहीं बकबाद, सील सुमरन संतोषी।
भजे ग्रखडत स्याम, ग्रातमि या बिधि पोखी।
श्रीरग सीस गुर धारि कै, प्रभू मिल्यौ भव सिंध तरि।
हरिबंस सत सेवा करै, द्रिबि रहत बिस्वास हरि ॥४७५

कल्यांन लयो कन वीन कै, सुजस सुगन हरि भजन जग ॥
ग्रान रहत पतिब्रत, सीस गोबिंदहि धारे।
बैन मिष्ट सुख दैन, जगत चित[2]हरन उचारे।
करुणा के वड ढेर, दया उपगार विवेकी।
संत चरन रज ध्यान, काय मन बच क्रम येकी।

---

१ सब। २ (नहीं)।

खात भरी कहि नांहि सुनी हम आप कह्यौ वह पांवहि हासे ।
रोकि दियौ वह कांपि उठ्यौ सुनि भाव भयौ उर सौ दुख नासे ।।६०८
मानस भेजि बुलावत साधिन आवत पाइ लगे नृप भीजे ।
साहिब कौं तिस जा जल पावहु नांहि पिवैं अनिवैं तुम रीझे ।
त्यौं बस गांव रह्यौ तुम पावन मांहि गह्यौ द्विजि रासत छीजे ।
साधि भिराक दई पहुंचावत नीर पिवावत है प्रभु धीजे ।।६०९

मूल

८५ राघो सम करि कूबलौ, भक्ति भाव मोटो महा ॥
परंपरा सिख गरू छोकरौं विदत बतायो ।
माहौ बारे गुमन कछू कामौ नहीं नामौ ।
सुंदर सहज सुसील गिरा मृदा न सुहाई ।
साधन्सग मैं जाइ, कीरतन कथा कराई ।
कहसी सु वार्न नहीं जा जन की महिमा कहा ।
राघो सम करि कूबलौ भक्ति भाव मोटो महा ॥४७०
संतन की सेवा कीयें नित नित भक्त विराजहीं ॥
पदमबेरछे रहै मठ स्याव सेवकस्यौरव ।
हरिनारायन नृप विग बोहिथ बर मांने ।
मोव सुहैमें रामदास तुलसीहू मेलैं ।
सहर हुसगाबाद माहि उभय भक्त भेलै ।
प्रमानंद योगी विदै ध्वजा धरम की साजहीं ।
संतन की सेवा कीयें नित नित भक्त विराजहीं ॥४७१
कीयो भजन साधन सबल अबला तन इन बाईयन ॥
१बीरां २हीरांमनि ३धनां ४लाल धमां प्रगट जग ।
५केसी जीवनी ६रांमबाई, ७साखी धाली मग ।
८मीरां ९जमनां रैदासनि १०गंगा पुनि ११सेवा ।
संत उपासनि १२गोमती उभैं १३पारबती सेवा ।
१४जादर १५रामी कुंवरराय मूं जांमौं १६हरखां लोइसिन ।
कीयो भजन साधन सबल अबला तन इन बाईयन ॥४७२
साध दया उर धारि प्रभु, कान्हर-जन लाह्यौ सीमी ॥
लग्यौ भजन मग सत्य धर्म गुर सरनै आयौ ।
साध भूठि पहिचानि अपत भ्रम दूरि उडायौ ।

सब सूं रह्यौ निराल, इदु द्रुम साखा नाईं।
भारी गुन-गंभीर, सकल जीवन सम श्रांईं।
सत[1] सुजस श्रांनन सदा, श्रपजस कबहूं नां कीयौ।
साध दया उर धारि प्रभु, कांन्हरदास लाहौ लीयौ ॥४७३
पापी कलि के जत जे, केवलराम कीये बिसद ॥
गुर सतन सौं बिमुख, नांव जगदीस न गांवै।
बहुत इसे नर-नारी, खैंचि मारग सति लावै।
उज्जल प्रीति श्रकांम, कनक श्ररु कांमनि त्यागी।
सार-द्रिष्टि श्रज्ञान नसन, रहति करुणा के भागी।
स्याम स्वाग नवमा भक्ति, देत नाहि बोलै श्रसिद।
पापी कलि के जत जे, केवलराम कीये बिसद ॥४७४

टीका

इंदव छद
धामहि धाम कहै मम देवहु, स्यौ हरि नावहि सेव बतावै।
स्वाग धरे लखिये न श्रचारहि, पूजन की प्रभु रीति सिखावै।
सागर है करुणा न सुने श्रनि, बैलहि चोट दई सु लुटावै।
ऊपरिई मगरा बिचि देखत, है सब ये कहि कै समझावै ॥६१०

मूल

छपै
हरि-बस संत सेवा करै, द्रिब्य रहत बिस्वास हरि ॥
गान गाथ सू हेत, साधन पूजन श्रति राजी।
खुरपा जाली न्याई, देत सर्बस ले बाजी।
करै नहीं बकबाद, सील सुमरन संतोषी।
भजे श्रखडत स्यांम, श्रातमि या बिधि पोखी।
श्रीरग सीस गुर धारि कै, प्रभू मिल्यौ भव सिंध तरि।
हरिबस संत सेवा करै, द्रिबि रहत बिस्वास हरि ॥४७५
कल्यांन लयो कन बीन कै, सुजस सुगन हरि भजन जग ॥
श्रान रहत पतिब्रत, सीस गोबिंदहि धारे।
बैन मिष्ट सुख देन, जगत चित[2]हरन उचारे।
करुणा के बड़ ढेर, दया उपगार बिबेकी।
सत चरन रज ध्यान, काय मन बच क्रम येकी।

१ सब। २ (नहीं)।

दूरि करयौ पट देखि गिरयौ नृप, वात नही द्रिवि की वयम कीजे ।
पानि दयौ यम सौ सिर[1] देवत, रीभि लई उनकी सुनि जीजे ।।६१३
रीति सुनी जगदेव सुता नृप, कैत पिता† सन मोइ न दीजै ।
भूप वुलाइ कही समभाइ, सुनौ यह राइ सुता मम लीजै ।
वार नख्यौ सत जाइ हती कत, लेर चले मम लै मति छीजै ।
नैनन देखहु काटि र ल्यावहु, आनि धरचौ सिर फेरित रीभै ।।६१४
रीभि कही विसतार सुनौ अनि, सतन सेव करै हरिदासा ।
साधन सू परदा न हिरदे सुख, भक्त रह्यौ इक पुत्रिय पासा ।
ग्रीषम की रुति सोत छता जुग, देहहि देह मिली सुवि नासा ।
प्रात भयें चढियो नृप ऊपरि, चादरि नाखि फिरचौ तरि वासा ।।६१५
दोउ जगे सखि चादरि लाजत, लेत पिछानि सुता पित जानी ।
साधन ये द्रिग ऊठि चल्यौ नृप, आय परचौ पग वात वखानी ।
होइ सुचेत करौ विधि सक न, दुष्ट सुनै नृप कै कुट वानी ।
निंदत है तुम हीय जरै मम, नाहि डरौ अपनी सुखदानी ।।६१६
भक्त कलक लगै इम कैत सु सतन को घटती नहि भावै ।
सर्म भई स बिषै छिटकावत, जीव बिचारि घनौं पछितावै ।
फेरि करे खुसी राखि लये, हसि, देत वडौ सुख स्याम लडावै ।
भ्रात गुबिंद बजावत बसिय, भूप कही मनमै नही ल्यावै ।।६१७

मूल

छपै कृष्णदास कौं कृष्णजी, स्वैपद तै दये घूघरा ॥
मधुर चाल सुर ताल, गान धुनि मांन तान पुनि ।
रमत रग द्रिग भग, सग सम अगरास सुनि ।
धुरपद अरु सगीत, बिरत[2] रतनाकर गावत ।
स्यामा स्याम प्रसन्न, रागमाला उर भावत ।
सुनार जाति खरगू अपति भक्ति भाप गुन सू भरा ।
कृष्णदास कौं कृष्णजी, स्वैपद तै दिये घूघरा ॥४७९

---

१ जोरि वयो सिर । २ ग्रथ ।

---

†(जयचन्द दल पांगलो धारा नगरी को) ।

पुत्र भयौ धर्मदास कौ, भयौ प्रगट श्रीरंग[1] भग।
कल्यान भयो कन्ह बीम के सुबस सुगन हरि भजन लग ॥४७६
साधन के सतकार कौं हरि जननी के निरमये[2] ॥
श्रीरंग १साहब सुमरि लागनि रसाला कै लागी।
भाल मुदित ३कल्यान ४सदानंद सदा सभागी।
५स्यामदास लघु ६लंब, भक्त भजिये नृमल मन।
७चेता ग्वाल ८गुपाल, परस ९बंसीनारायन।
१ संकर समाधि उर प्रसन करत प्रभु धर्म पे।
साधन के सतकार कौं, हरि जननी के निरमये ॥४७७
स्याम स्वांग पर भाग मैं, हरीदास हिरदौ सुहृद ॥
प्रीति परम प्रहलाद, सिव रस म है सरनाई।
देह दांन दधीच बाद पुनि बलि सो राई।
सीस दैन जयदेव, भजन पन मे डीकावत‡।
तूंवर-वंस बिगास साध सेवा मिलि भावत।
धुधापुत्र* पीछें बड़े, भवसुत कहा बस जगत सब।
स्याम स्वांग पर भाग मैं हरीदास हृदो सुहृद ॥४७८

टीका

इंदव छंद
श्रीप्रहलाद सु मादि कथा जग सौगुन है हरिदास सरीर†।
है जगदेव समां रिझवार सु, तास कथा सुनियौ सब धीरे।
येक नटी गुन रूप जटी कहि†† दान नटी हुत तौ भर भीरे।
रीझि रह्यौ नृप देवत सीसहि राखि भवै हमरी यह धीरे ॥६११
दाहिन हाथ दयौ तुम कौनहि चाहत भूप सु नीर बुझाई।
नाच र गांन करयौ नृप रीझन मे भव ल्यावहु बांम कराई।
कोपि कह्यौ धपमान इसो कर धीवन[3] तो जगदेव दिवाई।
चालु गुनी दस देव दिरावहु होत नहीं यह मोहि सुहाई ॥६१२
मौत कही गिह मांगत ल्यावहु चाव भई मम चीज सु दीजे।
काटि दयौ सिर सति रख्यौ वपु डांकि व मांगत मैम मलीजै।

1 श्रीबाल। 2 (रच)। 3 हाथ।

‡संनतसावि। (भजन पन बन ह)। *बुधिष्ठिर। ††(तत)। ¹ ईसता।

टीका

इंदव छंद
जानन कौं पनस्याचित आनत, दाम तिलक्कही द्यात[1] दुहाई।
जीवन कौं सब दूरि करै जन, मानत आनहु मारि डराई[2]।
लै भगवान बिसेख करे तन, भक्ति भयौ उर रीति सुहाई।
भूपति रीझि दई मथुरा बसि, मदिर श्रीहरिदेव कराई ॥६२१

मूल

छपै
गोविंद गलि सोहै सदा, सत रतनमय दाम ॥
सुष्ट सहज घनस्याम, धाम रतमत उत्म अति।
नाना व्रत जन प्रीति, रीति यह नीति सुघर-मति।
हृस[3] पीन सुर सरल बाक, कहि सब मन-भावन।
दिग दूनी बिसवास, साध का परचा गावन।
दास नराइन गोपि जे, कीये प्रगट गुन नाम।
गोबिंद गलि सोहै सदा, सत रतनमय दाम ॥४८२
मघवानदन भक्त नृप, परिजा प्रतिपालै भलै ॥
कमला सहित लडात जगत, स्यघ भजन भाव करि।
लक्ष्मीपति आधीन, कीये उत्म रसि उर धरि।
ताकी कीरति करत कठिन, कलिजुग के राजा।
बचन न लोपै भृत्य, सूर सांवत सुख साजा।
मारतड भुजदडा सम, अरि अचेर दोऊ पुलै।
मघवानंदन भक्त नृप, परिजा प्रतिपालै भलै ॥४८३

टीका

इंदव छंद
सेवत है लक्षमी सु नराइन, यौं पन सगहि राखत डोला।
जावत है जुध कौ तव आगय, नातरि पूठि रहै यह तोला।
जैसिंघ सो जसवत सुनी जल, ल्यावत सीस लखै यह छोला।
जात दिली सु बजारहि आवत, देखि परे पग थे निरमोला ॥६२२
जैसिंघ जूहि कहै मम नेह न, है तुम्हरी भगनी उर जैसौं।
दीपकुवारि बडी हरि भक्ति सु, क्यूक भजै हम नाहि नवैसौ।

---

१ ह्यात। २ मराइ। ३ हुस।

---

†टिप्पणी — सूरवीरता।

टीका

इंदव
छंद

दास किसन सुनार भुगल्ल हू सेव करै नृति गान उचारै।
होइ गयो गलतान दिना इक, नूपुर टूटि परयो न संभारै।
स्याम लख्यो गति भंग भई निज, पाय न काढ़ि र लाव पगारै।
होत भई सुधि नीर चल्यो द्रिग कीरति छाइ गई जग सारै ॥५१८

मूल

छपै

श्रीनारायनदास बड़, भजन प्रबधि स्वामी सरस ॥
जोग भक्ति करि प्रथम, गात अपने बस राख्यौ।
धर्मसंघन उर माँहि, स्याम जस आनन भाख्यौ।
आरबर्न मस चित रहसि, सदा मगतन सुख दाता।
बिचरत चैन मर बैन, श्रीनारायन राता।
साध सेव निति प्रीति करै, देस उत्तर गनि ता बरस।
श्रीनारायनदास बड़, भजन प्रबधि स्वामी सरस ॥४८०

टीका

इंदव
छंद

मथ्रियनाथ जु ते भसि आवत सो मथुरा सु किसोर रहाये।
मन्दिर भोग धरे कुंभ च तिम नेम सरूप लगै चित चाये।
आप रखा करि है सुख होवत आनत माहि प्रभात भुमाये।
दुष्ट लखे इक पोट धरी सिरि मेरि चले मग मा दुख पाये ॥५१९
देखि बड़े नर सेठ पिछानि सु, पाय लग्यौ परनाम करी है।
देखि प्रताप परयो पग दुष्टहु कष्ट लह्यौ नहि झूठ भरी है।
या करि दास भये तुमरो सति जात नहीँ परि आँखि झरी है।
संतन संति भयो उपदेसहु भक्ति मइ उर साध अरी है ॥५२०

मूल

छपै

सतमी भर भगवानदास सरस चित प्रति मुष्ट जन ॥
भक्ति भावना भूप किये उत्तम साधन धन।
पीवत रस भागौत बरनि जोशा जामि गन।
बसत मधुपुरी मिति, हेत साधन चरनामृत।
हेरत हरि बिश्राम नाम गुन रूप यहै बित।
तिमिर बुद्धि पर सहमता निरदर महा दाहे म पन।
सतमी भर भगवानदास सरस चित प्रति मुष्ट जन ॥४८१

टीका

इंदव छंद
जानन कौ पनस्याचित आनत, दाम तिलककही यात[1] दुहाई।
जीवन कौ सब दूरि करै जन, मानत आनहु मारि डराई[2]।
लै भगवान विसेख करे तन, भक्ति भयौ उर रीति सुहाई।
भूपति रीझि दई मथुरा वसि, मदिर श्रीहरिदेव कराई ॥६२१

मूल

छपै
गोविंद गलि सोहै सदा, सत रतनमय दाम ॥
सुष्ट सहज घनस्याम, धाम रतमत उत्म अति।
नाना व्रत जन प्रीति, रीति यह नीति सुघर-मति।
हुस[3] पीन सुर सरल वाक, कहि सब मन-भावन।
दिग दूनी विसवास, साध का परचा गावन।
दास नराइन गोपि जे, कीये प्रगट गुन नाम।
गोविंद गलि सोहै सदा, सत रतनमय दाम ॥४८२
मघवानदन भक्त नृप, परिजा प्रतिपालै भलै ॥
कमला सहित लडात जगत, स्यघ भजन भाव करि।
लक्षमीपति आधीन, कीये उत्म रसि उर धरि।
ताकी कीरति करत कठिन, कलिजुग के राजा।
बचन न लोपै भृत्य, सूर सावत सुख साजा।
मारतड भुजदडाँ सम, अरि अधेर दोऊ पुलै।
मघवानदन भक्त नृप, परिजा प्रतिपालै भलै ॥४८३

टीका

इंदव छंद
सेवत है लक्षमी सु नराइन, यौं पन सगहि राखत डोला।
जावत है जुध कौं तब आगय, नातरि पूठि रहै यह तोला।
जैसिंघ सो जसवत सुनी जल, ल्यावत सीस लखै यह छोला।
जात दिली सु बजारहि आवत, देखि परे पग थे निरमोला ॥६२२
जैसिंघ जूहि कहै मम नेह न, है तुम्हरी भगनी उर जैसौ।
दीपकुवारि बडी हरि भक्ति सु, क्यूक भजैं हम नाहिं नवैसौ।

---

१ ह्यात। २ मराइ। ३ हुस।

1टिप्पणी — सूरवीरण।

भूप सुनी सुखी होत हुती रिस गांव दये सु उतारत मे सौं।
कागद भेजि दयो बरसौ मति दीपकुवारि करौ मन हूं सौं ॥६२३

मूल

छपै गिरधरन ग्वाल गोविंद संगि, तन मन धन अर्पि कैं नच्यौ ॥
धर मधि धरिनि उधार, सदा मन पूरौ राख्यौ।
समैं सदन धन त्यागि, बचन सति पति सूं भाख्यौ।
मात पिता की रीति, पुनि पुत्र न पाली।
भक्ति सबीरज मंध परे, नहीं कतहूं चाली।
जन राघो रिझये रामजी मालपुरैं मंगल रच्यौ।
गिरधरन ग्वाल गोविंद संगि, तन मन धन अर्पि कैं नच्यौ ॥४८४

टीका

इंदव छंद संतन सेव करे गिरधरन सु, देखि सुखी हुद है रति साची।
त्याग करे बपु सोभित पियें पय रीति सबै धमि नाहि न काची।
विप्र कहै सब बात सुहात न त्याग करो अब फेरि न राची।
होइ प्रभाव बको मति भेमहु जानत हू पर भावन बाची ॥६२४

मूल

छपै साधू[1] सेवत सुहमति गोपाली असमति समी ॥
बसधा रस बिस मांहि प्रभु पतिब्रत सौं सेवत।
कमि कामिय ले रहत, संत कौं सर्बस देवत।
गुमल गिरा सुसील, सदा मोहन सैं पागी।
सुभ लछन सुभ कला पेख हरिजन रति लागी।
अंतहकरन बिसद महा भजन रसिक हिरदै बमी।
साधू सेवत सुहमति गोपाली असमति समी ॥४८५
संतन की सेवा समझि, रामदास रतमत करी ॥
सुहिद सांत सम सहजि, गिरा मार्दव मति कोमल।
मूरत साधू देखि खिलै बर अंबुज कोमल।
मंगलचार उछाह सहित भक्तन की पूजन।
पद पखारि प्रनामि, रचत नाना बिधि बिजन।

[1] साधन।

वसिवो वछ्र बन प्रेम पन, उभै पदन परि मति खरी।
सतन की सेवा समझि, रांमदास रतमत करी॥४८६

टीका

इंदव छंद संत सुनी इक भक्तिहि देखन, आवत राम हि दास बतावो।
आप उठे पग धोइ लयो जल, आवत रामहि दास रहावो।
भोजन पान करो उन ल्यावहु, राम हि दास यहै चलि पावो।
पाय परचौ जन भाव भयो मन, मात नही तन हौं अति चावो॥६२५
व्याह सुता हि रच्यौ घर मै वड, लै पकवान सुसाल घरे हैं।
चाक गुलीहु लगाय रहे सुत, खोलि लयो अनि नाहि डरे हैं।
साध पधारत पोट पठावत, जाइ जिमावत भाव भरे हैं।
पूजत है सु विहारीय लालहि, मो मन सतन भक्ति हरे हैं॥६२६

मूल

छपै रामराइ दिज सार सुत, प्रभु प्रीति पनपा रही॥
भजन जोग निरबेद, बोध दिढ़ ह्रीदै बिचारे।
लोभ क्रोध मद काम, मछर मोहादिक मारे।
श्रवन† मनन गुनगान, मुदित सुख सागर न्हावै।
साध सूर परकास, ह्रिदौ अबुज विगसावै।
वा पाध परी पृथ्वी परै, दोष पिसणता धार ही।
रांमराइ दिज सार सुत, प्रभु प्रीति पनपा रही॥४८७
भजन भाव दातारपन, यह निबह्यौ भगवंत कौ॥
स्यामा-स्याम बिहार, सार ह्रदै मं दरसै।
रसिक राइ जस गाइ, धाइ प्रभु पद सद परसै।
आंन रहत इक भक्ति, संपरदा मधि निहारी।
कर्म सुभासुभ डारि, धारि उर प्रीति बिचारी।
सुवन सरस माधौ तणौं, स्वांग भाइ हरि कंत कौ।
भजन भाव दातारपन, यह निबह्यौ भगवत कौ॥४८८

टीका

इदव छंद सूरज के भगवत दिवान, महा बन-बासिन सेव करी है।
साध गुसाइ र ब्राह्मन को, ब्रज-बासिन दे घन प्रीति खरी है।

†टिप्पणी—श्रोतघ।

भूप सुनी खुसी होत हुती रिस गाँव दये सु उदारत मैं सौं।
कागद भेजि दयो मरबो मति, दीपकुवारि करो मन हूँ सौं ॥६२३

मूल

छप्पै गिरधरन ग्वाल गोविंद सगि, तन मन धन अर्पि कै भज्यौ ॥
घर मधि धरिनि उदार, सदा मन पूरी राख्यौ।
तमै सदन धन त्यागि, भजन सति पति सूं भाख्यौ।
मात-पिता की रीति, पुनि पुत्र न पाली।
भक्ति सबीरज मंत्र परे, नहीं कतहूं खाली।
जन राघो रिझये रामजी, मालपुरै मगन रज्यौ।
गिरधरन ग्वाल गोविंद सगि, तन मन धन अर्पि कै भज्यौ ॥३८४

टीका

इंदव छंद सदन सेव करै गिरधरन सु, देखि सुखी हुत है रुचि साची।
त्याग करै मधु खोलि पिवै पन रीति सबै भनि नाहि न काची।
विप्र कहै सब बात सुहात न त्याग करो पन फेरि न राची।
होइ प्रभाव बको मति सेवहु जानत हू पर भावन बाची ॥६२४

मूल

छप्पै साधू[1] सेवत सुद्धमति, गोपाली जसमति समा ॥
वसधा रस विस माँहि प्रभु पतिव्रत सौं सेवत।
कलि कालिय तैं रहत संत कौं सर्बस देवत।
भूमस गिरा सुसील, सदा मोहन सैं पागी।
सुभ सजन सुभ दसा पैक हरिजन रति जागी।
संतहुदरम बिसद महा भजन रसिक हिरदै जमा।
साधू सेवत सुद्धमति गोपाली जसमति समा ॥३८५
संतन की सेवा समझि, रामदास रतनत करी ॥
सुहिद सांत सम सहजि, गिरा आर्जव मति कोमल।
सुरत साधू पेखि खिलै उर अबुज कोमल।
मंगलचार उछाह सहित भगतन को पूजन।
पद पखारि प्रनाम, रचत, मांनो विधि बिजन।

---
१ साधन।

राघो सुनत तुरग तन पलट्यौ, तसकर सुन्यौ बिचार है।
सत त्रेता द्वापर जुग्ग सूं, कलू कीरतन सार है ॥४६०

कव्वा तजत किराट कौं, गई अपसरा बरन कौं॥
भक्ति करत इक भूप, सही कसरणी अति भारी।
तब भेटे भगवान, आइ त्रिभुवन के धारी।
नारि पलटि नर भयौ, सीत परसादी पाई।
भांड भक्त परतक्ष, नृपति पूज्यौ निरताई।
कुवर कठारा की कथा, जन राघो कही जग तरन कौं।
कव्वा तजत किराट कौं, गई अपसरा बरन कौं ॥४६१

लाहौ मनिखा देह कौ, लालमती लीयौ लाल भजि॥
प्रिया प्रीय तै प्रेम, प्रेम कालिद्री तट तै।
कुज गली तै प्रेम, प्रेम अति[1] बसीबट तै।
जन गोकल तै प्रेम, प्रेम गिर गोवरधन तै।
प्रेम मधुपुरी अधिक, प्रेम घन बारे बन तै।
वृदाबन मै जा बसी, सो नगरी घर माल तजि।
लाहौ मनिखा देह कौ, लालमती लीयौ लाल भजि ॥४६२

दक्षरण-देस दूजौ कृष्ण, पडित कृष्णोजी सही॥
जाके पग के मान, भाव उर वही भावनां।
कृष्ण-बसन अरु कृष्ण, जपन पुनि कृष्ण चावनां।
कृष्णहि कौ उपदेस, कृष्ण सब माहि बतावै।
कृष्णहि सू रतमत, कृष्ण बिन और न गावै।
विवेक ग्यान निरबेद, निज भक्ति बिसतरी वा मही।
दक्षन-दिसि दूजो कृष्ण, पडित कृष्णौजो सही ॥४६३

उत्तरदिसि उज्जल भक्त, बारह भये बखांनिये॥
१थंभरण २द्वंदूराम ३कलकी कलंक उड़ायौ।
बहुरि ४बलकीरांम, ५रसालू दूध चितायौ।
६रामराइ ७हरिराय, रांम ८दादू दिल दरसे।
९रास मालू १०रांम रग, पुनह दादू ११प्रभु परसे।

---

१ श्रात।

गोविन्ददसजु सेव करै गुर, है हरिदास चले सु घरी है।
चावर दूध जच्यौ हरि आवत होत खुसी मति जान हरी है ॥६२७
भाल सुनैं गुर मात नहीं तन कैत तिया सन कौन करीजै।
जोइ कही घर संपति मातहि, भेट करी इक बेठ न लीजै।
होत खुसी सुनि भक्ति सु तो सनि, मानस मो मनि देख हि भीजै।
कान परी यह बात फिरे, हरिदास लख्यौ पन प्रामन रीझै ॥६२८
होत उत्साह रह्यौ तन दाह सु, भाय स पाय चले मन भाये।
मानि रहे सुभ सब्द कहे मुख, आइ वहां नृप लोग छुड़ाये।
चोरिय धाम करी न कुभावहि बुद्धि प्रिया पिय मैं द्रिग लाये।
है भक्तमाल हरी अनुराग पिता रसिको जन माधव पाये ॥६२९
अन्त पिछानि नहीं सुधि जानिस आगर सू सब लै मन भावैं।
मात भये अघि होइ गई सुधि कूर चले कत जो तुम भावै।
मा बपु फेरहु ल्यौ नहि लाइक, वारत वास प्रिया प्रिय पावै।
भर्जे मन होइ स आइ तहां चलि आवइ सो बहु आगि समावै ॥६३०

मूल

छप्पै　　बच्यो सुधरमा अगनिमुख, यौं राम जपत ज्वाला टरी ॥
चंद्रहास की बेर ज्याव हरिजी की कीन्हौं।
विष बैतै बिषिया भई, बहुरि नृप टीको दीन्हौं।
कुटम सहत इक भूप भवानी पूजन मारयौ।
भरत चक्रवत देखि पाय गहि चलौ पसारयौ।
जन राघो राख्यौ मरभरी भई सपत सुखी हरी।
बच्यी सुधरमो अग्निमुख यौं राम जपत ज्वाला टरी ॥४८६
सत त्रेता द्वापर जुग्ग सूं अब कलू कीरतम सार है ॥
गोपी ध्यंद प्रजम वतिन परिहरि मुनि भागी।
सुर नर असुर सु नाग पुरय-पतिनी हरि रागी।
धर्म छैल निगुरा बच्यो हरि गुन गृभ्यी कलस को।
वृष्मी बंस सिरोमतहि धन परजम धनपाल को।

---

१ पैठहि ।

---

†टिप्पणी—गैन ।

यौं वलिदाऊ कलि मैं करी, समन ज्यू सापुरस[1] गति ॥
कुलसू तातू तोरि, फोरि घर लई जलेबी।
सतन कौ मुख पूजि रह्यौ, अब छैनी ह्वै गेबी।
सौंज सवाई वढी, रामजी रीति विचारी।
जग्य[2] पुरस जगदीस, प्रगट रस राख्यौ भारी।
जन राघो उपजी राति इम[3], मन बच क्रम कीयो धर्म अति।
यौं वलिदाऊ कलि मैं करी, समन ज्यू सापुरस गति ॥४६६

मनहर छंद
[4]मसकति करत मगन मतिवारौ भयौ,
नांवकी लगनि कीन्ही कान्हा लड बावरौ।
येक निसा निकटि निसक रही बाई येक,
भोर भयें सोर भयौ चोर है तू राव-रौ।
ज्वाब कीन्हौं जुलम जगतपति जाणे भेद,
भरि आये थान कान्हा पीवें असें डावरौ।
राघो कहै परचौ प्रचंड भयौ जाण्यौं जब,
बीनती करत सब गाव[5] दोष छावरौ ॥५००

छपै
दादू दीनदयाल के, येते पोता सिष प्रसिध गनि ॥
प्रथम १फकीर २प्रहलाद, ३खेम छीतर सुबिचारी।
४कल्याण ५केवल ६चैन, ७नराइन च्यारि सु भारी।
८नृस्यघ ६दमोदरदास, १०गोबिंद ११बेणी ब्रह्मबसी।
१२दास बड़ौ १३गोपाल, १४अमर १५बालक हरि असी।
१६चत्रदास राघो उभै, १७मोहन १८भीख १६गरीब जन।
दादू दीनदयाल के, येते पोता सिष प्रसिध गनि ॥५०१

फकीरदासजी को मूल

मनहर छंद
दादूजी दयाल कीन्ही दया निज नाती परि,
फहम फकीरी कौ फकीरदास पायौ है।
आये कौं अजब दत रिधि सिधि सील सत,
येतौ अस कृपा मधि अैन आप आयौ है।

---

१ पुर सगति। २ जपै। ३ (चोरी परमार्थ)। ४ (उपाय कर गुदरान छै)। ५ (साच)।

यों बलिदाऊ कलि मैं करी, समन ज्यू सापुरस[1] गति ॥
कुलसू तातू तोरि, फौरि घर लई जलेबी।
संतन कौ मुख पूजि रह्यौं, अब छैनी ह्वै गैबी।
सौंज सवाई वढै, रामजी रीति बिचारी।
जग्य[2] पुरस जगदीस, प्रगट रस राख्यौ भारी।
जन राघो उपजी रानि इम[3], मन बच क्रम कीयो धर्म अति।
यों बलिदाऊ कलि मैं करी, समन ज्यू सापुरस गति ॥४९९

मनहर छंद
[4]मसकति करत मगन मतिवारौ भयौ,
नांवकी लगनि कीन्ही कान्हा लड बावरौ।
येक निसा निकटि निसक रही बाई येक,
भोर भयें सोर भयौ चोर है तूं राव-रौ।
ज्वाब कीन्हौं जुलम जगतपति जाणै भेद,
भरि आये थान कान्हा पीवै असै डावरौ।
राघो कहै परचौ प्रचंड भयौ जांण्यौं जब,
बीनती करत सब गाव[5] दोष छावरौ ॥५००

छपै
दादू दीनदयाल के, येते पोता सिष प्रसिध गनि ॥
प्रथम १फकीर २प्रहलाद, ३खेम छीतर सुबिचारी।
४कल्याण ५केवल ६चैन, ७नराइन च्यारि सु भारी।
८नृस्यघ ९दमोदरदास, १०गोबिंद ११बेरणी ब्रह्मबसी।
१२दास बड़ो १३गोपाल, १४अमर १५बालक हरि असी।
१६चत्रदास राघो उभै, १७मोहन १८भीख १९गरीब जन।
दादू दीनदयाल के, येते पोता सिष प्रसिध गनि ॥५०१

फकीरदासजी को मूल

मनहर छंद
दादूजी दयाल कीन्ही दया निज नाती परि,
फहम फकीरी कौ फकीरदास पायौ है।
आये कौं अजब दत रिधि सिधि सील सत,
येतौ अस कृपा मधि अंन आप आयौ है।

---

१ पुर संगति। २ जपै। ३ (चोरी परमार्थ)। ४ (उपाय कर गुदरान छै)। ५ (साच)।

१२रांम सागर रत रांम सुं, सुतै सिमि मैं जांनिये।
उत्तरदिस उज्जल भक्त, बारह भये बखांनिये ॥४९४

महंत राघवा पंथ भयौ, तिहू लोक उजागर।
पाटि द्वारिकादास बड़ौ सिष धर्म कौ आगर।
अरु टीकू हीरा सु, रांम रस पीय मतिवारा।
येकहूं ध्यांनां मांहि स्वामी मोहा गरवारा।
जन तिलोक पूरन बैरागी, कठि हरिया कृष्णदास भनि।
राघो रांम न बीसरै, जिनि बड़ौ सरन गह्यौ सत धनि ॥४९५

कृष्ण बाड़ौ संत, तास गुसांम अमीजै।
बाबा लाल सु उतर-खेड मैं धांम सुनीजै।
लालदास बहु बरणि गाइ जस लोभ अमत्ता।
सहर आगरे मांहि, कीयौ भक्तिहास सपत्ता।
राघो रहणि सराहिये कहां लौं बरनौं रांम बल।
और परैं भावै नहीं, यौं भगतन कै भगवांन बल ॥४९६

ग्यांनी गनि गलतांन अति, असौ येक गुजरात मैं ॥

सोमीकुल महि जनम आत्मा कौ अनभौ उर।
सता-सिंग मृग-मीर, जगत असौ जाम्यौं पुर।
जसवत राजा सुन्यौं, गयो सो आप तास पहि।
गोष्टि करी अघाइ जाइ बनराज आसनहि।
भक्ति ग्यांन बैराग सम, अतीत[१] दिखायौ बात मैं।
ग्यांनी गनि गलतांन अति असौ येक गुजरात मैं ॥४९७

ये पुनि पुनीति प्रमार्थी सब सरन प्रमानंद साह कौ ॥

करि उत्तम उदार उ देही करी उजागर।
पूजि भक्त भगवंत भक्ति कौ धरम्यौ आगर।
माहोरा सु रांमजी बालकृष्ण मुरधंग निपू।
सकल कुटंब धर्मात्मां सपु बीरद बेटी बपू।
राघो रांम निबाजि है प्रभु करि है तन निरबाह कौ।
ये पुनि पुनीति परमार्थी सब सरन प्रमानंद साह कौ ॥४९८

---

१ अवधूत। २ (इतना लिटाइना बाज)।

यौं बलिदाऊ कलि मैं करी, समन ज्यू सापुरस[1] गनि ॥
कुलस्त्ं तांबू तोरि, फोरि घर लई जलेबी।
संतन कै हुइ पूनि रह्यौ, अब छैनी ह्वै गैबी।
सांज मधाई बडी. रांमजी रीति विचारी।
जगन्नाथ पुरम कादीन, प्रगट रस राख्यौ भारी।
जन राघो उनजो रानि इम[3], मन बच क्रम कीयो धर्म धनि।
यौं बलिदाऊ कलि मैं करी, समन ज्यू सापुरस गनि ॥४९९

मनहर छंद
मधुर्कति करत मगन मतिवारी भयौ,
नोवकी लगनि कीन्ही कोन्हा लइ बावरो।
येक निसा निकटि निसक रही बाई येक,
भोर भयें सोर भयौ चोर है तूं भावरौ।
ज्वाब कीन्हौं जुलम जगनपति आगें भेद,
भरि आये थान कोन्हा पीवै प्रेम डावरौ।
राघो कहै परचौ प्रचंड भयौ आंख्यौं जब,
बीनती करत अब गाव[4] दोप छावरौ ॥५००

छपै
दादू दीनदयाल के, येते पोता सिष प्रसिध गनि ॥
प्रथम १फकीर २प्रह्लाद, ३खेम छीतर सुचित्रागे।
४कल्याण ५केवल ६चैन, ७नराइन च्यारि सु आगे।
८नृस्यघ ९दमोदरदास, १०गोविंद ११वेणी अघवर्गा।
१२दास वडौ १३गोपाल, १४अमर १५बालक हरि अर्गा।
१६चत्रदास राघो उभै, १७मोहन १८मीत १९जगजीव जन।
दादू दीनदयाल के, येते पोता सिष प्रसिध गनि ॥५०१

फकीरदासजी को मूल

मनहर छंद
दादूजी दयाल कीन्ही दया निज नामां परि,
फहम फकीरी कौ फकीरदास पायौ है।
धाये कौं अजब दत रिधि सिधि सील सत,
येतो प्रेम श्रुधा मांघ येह भाग पायौ है।

---

१ पुर सगति। २ जपे।
४ (साच)।

मनहर छंद
महत रजब कै अजब सिष खेमदास,
जाकै नेम निति प्रति व्रत निराकार कौ।
पंथ मधि प्रसिधि ह्वौ देखिये दैदीपमान,
बाणी कौ बिनांणी[1] अति मांझौं न मै मारि कौ।
रामति मेवाड मै वासी मुख सोहै बात,
बोलत खरौ सुहात बेता वा बिचार कौ।
राघो सारो रहणी कहणी सुकृत अति,
चैतन चतुरमति भेदी सुख सार कौ ॥५०६

छपै
प्रम-पुरष प्रहलाद धनि, देवजोति दिजकुल भयौ ॥
दिपत देह दैदीप, दुतौ सनकादिक वोपै।
दिढ द्रिगपाल महत, परम गुर थप्यौ पछोपै।
श्रीदादू दादा गुर लगै, सर्बग्य सुंदरदास गुर।
यौं निराकार कौ नेम व्रत, पहुचायौ परलोक धुर।
इम राघो राम परताप तै, प्राण मुक्ति परमपद लयौ।
प्रम-पुरष प्रहलाद धनि, देवजोति दिजकुल भयौ ॥५०७

मनहर छंद
दादूजी के पथ मैं दरद वंद देवजोति,
प्रगट प्रहलादजी प्रहलाद कै पटंतरे।
वह प्रेम वह नेम वह पण प्रीति रीति,
वह मन माया जित मगन महत रे।
वह जत वह सत वह रग राम रत,
नृमल नृदोष सुखदाई महासत रे।
राघो कहै मन वच क्रम धर्म धारणां सूं,
जीवत मुकति भयौ वोपमा अनतरे ॥५०८

छपै
दादू केरा पंथ मै, चैन चतुर चित चरण हरि ॥
कथा कीरतन प्रीति, हेत सौं हरि जस गाया।
साथि र[2] रहै समाज, प्रेम परब्रह्म लगाया।
गृथ रचे बहु भांति, बिहगम नामां रूपक।
सिधि साधिक गुन कथन, जास थै अधिके ऊपक।

---

१. छिनानी। २. साथरि है।

बाईजी स भाईजी सरस सिर हाथ धरयौ,
सत हूं महंतन सबन मन भायौ है।
राघो कहै राम धनि पाई बड़ी ठौर धनि
धनो मसकीन¹ धनि माता जिन जायौ है ॥५०२

छपै स्वामी प्रीत महंत क, टीके केवलदास वर ॥
प्रेम भक्ति को पुंज रचे पद साखी नीके।
करुणा बिरह वियोग, सुनत उद्धारक जी के।
जो जनि आवै साध बहुत तिन आदर करई।
भजन भाव सत सील देखि सब को मन टरई।
राघो महिमा करत पे, सुख पाव नारी र नर।
स्वामी प्रीत महंत क, टीके केवलदास वर ॥५०३

मनहर छंद सूबो अजमेरि ताको भयो ही दिवांन आयो,
केवल बिराजे यहीं सरणि मिलनि है।
आये असवार ताकों पकरि ले चाले जब
केवल हूं आये अरपाने दुसदाने है।
खिमो मे पछाऊ धोखे सुनत मरोरू यह
जंह बाके रावै मेरी काफरन जाने है।
दई काढि संवर की पेठ माझ मूति वाकैं
परचौ प्रतक्ष भयो जगत बखानि है ॥५०४

छपै हम रज्जब अज्जब महंत कै भये पछोपे साध सब ॥
बीरम १गोविंददास, पाटि अब रामट राखें।
२खेम सरस सरवाड़ि तास सिध तहां बिराजै।
३हरीदास ४श्रीतर ५गगन ६दामोदर ७केसो।
८जगन्नाथ जो बनवारि, राम रत-मत गहि केसो।
जन राघो मंगल राति दिन बीसत है हैकार अब।
हम रज्जब अज्जब महंतकै भये पछोपे साध सब ॥५०५

---
१ लवलीन।

बड़ो पुरष पुरसा[1] रचव, या आवानेरी अजब उठाण[2]।
जन राघो प्रणम पछोपै वोपै, तुलछीदास तपै जिम भाण ॥५१३

अब जगजीवन कै पाटि है, दिपत दमोदरदास भणि ॥
ध्यांनदास धनि पिता, आन तजि हरिगुण गावै।
भ्राता कान्हडदास, सहित हरि भक्ति बढावै।
सकल पराकृत संसकृत, कवित छंद गाहा गूढ़ा।
खीरनीर निरवारि, करै अरथन का कूढा।
यम राम जपत राघौ कहै, सकल कुटब की गई सु बणि।
अब जगजीवन कै पाटि है, दिपत दमोदरदास भणि ॥५१४

मनहर छंद

नाराइन दूधाधारी घड़सी गुर पाय भारी,
राजा जसवत असवारी भेजी आइये।
बैलन लीये चुराइ भैल कैसे चलै पाइ,
चढ्य करि कह्यौ जु निरंजन चलायये।
भैल चली आवै अचिरज सब पावै,
राजा सनमुख ध्यायौ हुलसायौ मन भाइये।
अदभुत कीनौं नृप चीन्हौं द्रिष्टि आपनी,
सु परचौ प्रतक्ष यह संतन सुनाइये ॥५१५

छपै

दादू दीनदयाल कै, घड़सी घट हरि भजन कौं ॥
घडसी कै गोबिंददास, कुल नांमां बंसी।
रची डीडपुर साल, भक्ति बल है हरि अंसी।
बांणी करी रसाल, ग्यान बैराग चितावनि।
साखि सबद मै राम, नांम गुन और न भावनि।
परचा दे परकाज कौं, जांनत तन प्रभु[3] संजन कौं।
दादू दीनदयाल के, घडसी घट हरि भजन कौं ॥५१६

मनहर छद

रतीयाज गाव देस जगल मै हुतौ सत,
प्रमांनद रहे दया सील सत पाले हैं।
परचौ है दुकाल देस मटकी भरी ही सात,
बाबा अन सौंपि लोग मालवा कौं चाले हैं।

---

१ पुरासार। २ (प्रमाव)। ३ प्रछ।

ग्यांन जोग बैराग मग, बरणे मन बच काम करि।
दादू केरा पंथ मैं चैन चतुर चित चरण हरि ॥२०९

इंदव छंद
दादूदयाल गोपाल प्रताप तैं चैन के चंन यौं ग्यांन उपज्यौ।
माठ्यु धांम प्रसंडल पेकहि, यौं घर मैं पुर जाप जप्यौ।
बीतिग सीघी बित ब्रह्म बड़ी निधि देख्यौ सबै जग झूठ सुपन्यौ।
सास स्वद सुरति बिचारत राघो कहै पुनि ग्यांन निपज्यौ ॥२१०

मनहर छंद
दादूजी के पंथ में सराहिबे सुगति अति
मांव कौ निहारी भारी निरांनदास भांगल्यौ।
सोभित सकल अंग रोम रोम मोक्ष मग,
ब्रह्मा बिद्या-बीचड़ी पहरि भयौ मांगल्यौ।
भजन कौ पुंज गलतांम जप्यौ रांम रंग
स्यांम कांम सूरबीर मोक्षपद मांगल्यौ।
श्राग्याकारी अतिस निसल भजनीकन की
राघो ज्यूं भांति देखि ताइकै रांमे रत्यौ ॥२११
मोहन दफतरी कै बिपत पखोपै दीप
जग्नदास संतनि परबीन परसिधि है।
रांमजी कौ दासौ जाकी रांमसाला मध्य कृष्ण,
बिद्या उपबिद्या ताकै क्रम मधि रिधि[1] है।
सोंबिजोम क्रमजोग भजन भगति-जोग
बिद्या बेद सास्त्रहि जाणें सारी बिधि[2] है।
राघो कहै राति दिन रांम न बिसारयौ छिन
तन मन चित निरपक्ष बड़ी निधि[3] है ॥२१२

छप्पै
दादू गुर बसहूं दिसि प्रगट धर्म †मोरधी मोहनदास ॥
तास पाटि थिर थप्यौ[4] धुरंधर जन गरीब गोबिंदनिवास।
तास पखोप भक्त सिरोमनि, हरिप्रताप उपज्यौ प्रमहंस।
मधि भगवंत भरम भ्रम प्रहरि कीयो उजागर ऊंचो बंस।

---

१ रिध्य। २ बिध्य। ३ निध्य। ४ थप्यौ।

---

†(धर्म की धोरी)।

बड़ो पुरष पुरसा[1] रचव, या आवानेरी अजब उठाण[2]।
जन राघो प्रणाम पछोपैं वोपैं, तुलछीदास तपै जिम भाण ॥५१३

अब जगजीवन कै पाटि है, दिपत दमोदरदास भणि ॥
ध्यांनदास धनि पिता, आंन तजि हरिगुण गावै।
भ्राता कान्हडदास, सहित हरि भक्ति बढावै।
सकल पराकृत ससकृत, कवित छंद गाहा गूढा।
खीरनीर निरवारि, करै अरथन का कूढा।
यम राम जपत राघौ कहै, सकल कुटब की गई सु बणि।
अब जगजीवन कै पाटि है, दिपत दमोदरदास भणि ॥५१४

मनहर छंद

नाराइन दूधाधारी घड़सी गुर पाय भारी,
राजा जसवत असवारी भेजी आइये।
वैलन लीये चुराइ भैल कैसें चलै पाइ,
चढ्य करि कह्यौ जु निरजन चलायये।
भैल चली आवै अचिरज सब पावै,
राजा सनमुख ध्यायौ हुलसायौ मन भाइये।
अदभुत कीनौं नृप चीन्हौं द्रिष्टि आपनी,
सु परचौ प्रतक्ष यह संतन सुनाइये ॥५१५

छपै

दादू दीनदयाल कै, घड़सी घट हरि भजन कौं॥
घडसी कै गोबिंददास, कुल नांमां बंसी।
रची डीडपुर साल, भक्ति बल है हरि अंसी।
वाणी करी रसाल, ग्यांन बैराग चितावनि।
साखि सबद मै राम, नांम गुन और न भावनि।
परचा दे परकाज कौं, जांनत तन प्रभु[3] संजन कौं।
दादू दीनदयाल के, घडसी घट हरि भजन कौं ॥५१६

मनहर छद

रतीयाज गाव देस जगल मै हुतौ सत,
प्रमानद रहै दया सील सत पाले हैं।
परचौ है दुकाल देस मटकी भरी ही सात,
बाबा अन सौंपि लोग मालवा कौं चाले हैं।

---

१ पुरासार। २ (प्रभाव)। ३ प्रछ।

ध्यान जोग बैराग मग, बरष्यो मन बच काम करि।
दादू केरा पंथ में, चैन चतुर चित चरण हरि ॥२०९

इंदव छंद
दादूदयाल गोपाल प्रताप तें, चैन क चैन यौं ध्यान उपज्यौ।
आतम राम अखंडत येकहिं, यौं उर में गुर आप अपज्यौ।
छीणि स्वौयो चित ब्रह्म बड़ी निधि देख्यौ सबै जग झूठ गुपज्यौ।
सास सबद सुरति बिचारत, राघो कहै मुनि ध्यान निपज्यौ ॥२१०

मनहर छंद
दादूजी के पंथ में सराहिबे कुशलि अति,
नाव की सिहारी भारी निरांनदास मांगल्यौ।
शोभित सकल अंग रोम रोम नांव मग्न
ब्रह्म बिद्या-बीवड़ी पहरि भयौ मांगल्यौ।
भजन कौ पुंज गलतांन सम्यौं रांम रंग
स्यांम कांम सूरबीर मोखपद मांगल्यौ।
माम्याकारी असिल मिसल भक्तीजन की,
राघो बड़ी भांति सेति आइके रांमें रल्यौ ॥२११
मोहन दफ्तरी कै बिपल पसोर्यं दीप
जग्गदास चेतनि परवीन परसिधि है।
रांमजी कौ बासी जाकी रांमसासा मध्य बृच्छ
बिद्या उपविद्या ताकै क्रम मधि रिधि[1] है।
सांखिजोग क्रमजोग भजन भगति-जोग,
बिद्या बेद सास्त्रहि जानै सारी बिधि[2] है।
राघो कहै राति दिन रांम न बिसारयौ छिन
तन मन जित निरपख बड़ी निधि[3] है ॥२१२

छपै
दादू गुर दसहूं दिसि प्रगट धर्म †मोरयौ मोहनदास ॥
तास पाटि थिर थप्यौ[4] धुरंधर जन गरीब गोबिंदनिवास।
तास पटोर्य अनगि सिरोमनि हरिप्रताप उपज्यौ प्रमहंस।
भजि भगवंत भरम कर्म प्रहरि कीयो उजागर ऊंचो बंस।

---

१ रिध्य। २ बिध्य। ३ निध्य। ४ थरप्यौ।

---

†(धर्म को चोरी)।

जनम करम गुन रूप, कृष्ण तन दसम बनायौ।
पखा-पखी सौं रहत, सहत बैराग बिबेकं।
पथ सप्रदा सत, सबन कूं जानत येकं।
चामलि तीर गगाइचौं, जन राघो कीयो वास वन।
माखू दादू दास कौं, जाकै बेणीदास जन ॥५२१
बूसर सुदरदास कै, सिष पांच प्रसिधि हैं ॥
टीकै दयालदास, बड़ौ पंडत परतापी।
काबि कोस ब्याकरण, सास्त्र मैं बुद्धि श्रमापी।
स्यांम दमोदरदास, सील सुमरन के साचे।
निरमल निराइनदास, प्रेम सौं प्रभु पै नाचे।
राघो-राम सु रांम-रत, थली थावरे निधि हैं।
बूसर सुंदरदास कै, सिष पांच प्रसिधि हैं ॥५२२

मनहर छंद

सुंदर के नराइनदास काहू कै न सग पास,
रहत हुलास निति ऊचे चढि गांवहीं।
दिल्ली के बजार माहि डोले मैं हुरम जाहि,
परे कूदि ताहि नीकी गोष्टि करावहीं।
साथ केनि सोर कीयौ श्राप उन चेत लीयौ,
कूदि गये जहां के तहा श्रचिरज पांवहीं।
गगन मगन जन सुख दुख नांहीं मन,
गावत सु राम गुन रत रहै नावहीं ॥५२३

छपै

दादू दीनदयाल के, नाती बालकरांम ॥
करै हंस ज्यू श्रस, सार श्रस्सार निरारै।
श्रांन देव कौं त्याग, येक परब्रह्म संभारै।
कीये कबित षट तुकी, वहुरि मनहर श्ररु इंदव।
कुडलिया पुनि साखि, भक्ति बिमुखिन कूं निंदव।
राघो गुर पखि मै निपुन, सतगुर सुंदर नांम।
दादू दीनदयाल कै, नाती बालकरांम ॥५२४
दादू दीनदयाल कै, नाती उभै सुभट भये ॥
चतुरदास श्रति चतुर, करी येकादस भाषा।

जनम करम गुन रूप, कृष्ण तन दसम बनायौ।
पखा-पखी सौं रहत, सहत वैराग विवेकं।
पथ संप्रदा सत, सबन कूं जानत येकं।
चामलि तीर गगाइचौ, जन राघो कीयो वास वन।
माखू दादू दास कौ, जाकै वेणीदास जन ॥५२१

बूसर सुंदरदास कै, सिष पांच प्रसिधि हैं॥
टीकै दयालदास, बड़ौ पंडत परतापी।
काबि कोस व्याकरण, सास्त्र मैं बुद्धि अमापी।
स्यांम दमोदरदास, सील सुमरन के साचे।
निरमल निराइनदास, प्रेम सौं प्रभु पै नाचे।
राघो-राम सु रांम-रत, थली थावरे निधि हैं।
बूसर सुंदरदास कै, सिष पांच प्रसिधि हैं ॥५२२

मनहर छंद

सुदर के नराइनदास काहू कै न सग पास,
रहत हुलास निति ऊचे चढि गांवहीं।
दिल्ली के बजार माहि डोले मैं हुरम जाहि,
परे कूदि तांहि नीकी गोष्टि करावहीं।
साथ केनि सोर कीयौ आप उन चेत लीयौ,
कूदि गये जहां के तहां अचिरज पावहीं।
गगन मगन जन सुख दुख नांहीं मन,
गावत सु राम गुन रत रहै नांवहीं ॥५२३

छपै

दादू दीनदयाल के, नाती बालकरांम॥
करै हंस ज्यू अस, सार अस्सार निरारै।
आन देव कौं त्याग, येक परब्रह्म संभारै।
कीये कबित षट तुकी, बहुरि मनहर अरु इंदव।
कुडलिया पुनि साखि, भक्ति बिमुखिन कूं निंदव।
राघो गुर पखि मै निपुन, सतगुर सुदर नाम।
दादू दीनदयाल के, नांती बालकरांम ॥५२४

दादू दीनदयाल कै, नाती उभै सुभट भये॥
चतुरदास अति चतुर, करी येकादस भाषा।

पाये हैं प्रसाद मास बरखा भई है पास,
बाहुन कौं भाज मास चिता मनि सासे हैं।
मड़की बलाई मन मरी सो बिलाई सब,
लीये[1] पाय दखि सब प्रविरज न्हासे हैं ॥५१७
मासेरी प्रमानि सुके टूकरे भिजोइ राखे,
पांनी घोरि पीवें स्वाद षटरस त्यागी है।
रिधि सिधि प्रबै बहु संतन सुवावें,
प्रमारथ बनावे प्राप स्वारथ न मांगी है।
प्रातम कंवल जहां ध्यान को प्रकास कीयो,
हिरदे कंवल तहां ब्रह्म लिव लागी है।
प्रनंतद प्रानंद सु पायो मनधारी गुर,
सेव सत चरण सदा ही बड़भागी है ॥५१८

छप्पै दादू षीमदास के सिष बिहांणी प्रागदास ॥
ताके सिष दस भये, दसौं बिसिहो कौ गाजै।
१रांमदास बड़ सिष, फतेपुर मस्तस राजै।
२कंसोदास ३निरांमदास ४बोहिथ ५धर्मदासा।
६हरीदास ७हरदास ८प्रमानंद ९छीतू पासा।
१०टीकी मानीदास गौं, सब दीयो बीदपुर मांहि तास।
दादू षीमदास के सिष बिहांणी प्रागदास ॥५१९
दादूजी के वर्गनाथ, आगे है बनराम निधि ॥
दिपे सहर प्रांबेरि राइ महारमण मनाये।
भजन तेज प्रताप प्रगट प्रषि दिरराये।
जित गनिब उमराव रहैं कर जोरें ठाढ़े।
कन्यायो मन धांम पूरनिमा सेवग गाढ़े।
बरस तरणा के प्राप रे तिनके कीये काज सिधि।
दादूजी के वर्गनाथ, आगे है बनराम निधि ॥५२०
मानूं दादू दास को जाके बेणीदास जन ॥
अनुभ ... को भाव मोष निति त्रिनि मग भायो।

---

१ करे।

हरीदास पुनि पाटि, कीयो हरि घर प्रवेसौ।
कान्हडदास कल्यांण, पुनहि परमानद घमडी।
रांमदास हरदास, भक्ति भगवत की समडी।
इम राघौ कै रुचि राति दिन, भणै भक्त भगवंत गुर।
इम प्रम-पुरष प्रहलाद कै, इतने सिष अब धर्म धुर ॥५२९

इम येक टेक हरि नाव की, हापाजी के सिषन कै॥
टीकै ऊधौदास, धर्म धीरज की आगर।
रथि राघो कै राम, बैठि उन कीयौ उजागर।
दीरघ दिनन कल्याण, उदैचंद ईस्वर अरजन।
आनंद लाल दयाल, स्यांम गोबिन्द जस गरजन।
तुरसी हैं हरिराम, पुनह पारबती बाई।
टीकू द्वै भगवान, सकल ग्यानि गुर-भाई ॥५३०

कृष्णदास मोहन मगन, अजमेरी ऊधौं रहै।
गगन मगन खेलत फिरै, जथासक्ति हरि हरि कहै।
परमार्थ मैं निपुन अति, आये कौं जल अन दे।
सतन कौ उर भाव बहु, सनमुख जाइ र धाम ले।
ये करणी कृतव भले, ज्यूं राजस वृति रिषन कै।
येक टेक हरि नाव की, हापाजी के सिषन की ॥५३१

भक्तवत्सल कौ उदाहरन

मनहर छंद

रांमजी की रीती असी प्रीति सु खुसी है भया,
करमां की खीचड़ी आरोगनें को आये हैं।
त्यागे हैं अवास दुरजोधन के जांनि बूझि,
बिदुर गरीब घरि साक पाक पाये हैं।
विप्र सुदामा कौ दलिद्र दुख दूरि कीयो,
कूरी कन देखे प्रभु हेत सौं चबाई हैं।
राघो कहै रामजी दयाल असे दीनन सू,
भीलन के झूठे बेर आप असे खाये हैं ॥५३२

भक्तवछल भगवत देखौ सत काज,
देहु रोद्र हाल फेरचौ नांमदे की टेर सूं।

पत्तापत्री कौं छाड़ि भक्यौ हरि सास उसासा।
भीख मांगनो प्रसिधि, सु तौं सारे जग होई।
जा माँहि सब भाव, जाहि भावै सो सोई।
संतदास गुर धारि उर, राघो हरि मैं मिलि गये।
दादू दीनदयाल के, मानो उभै सुभट भये ॥५२५

दादू दीनदयाल के, नाती दास सर्वज्ञ मनूं ॥
बांणी बहु बिसतरी, मांहि गुर हरि भक्तन जस।
सपतदीप बरणियां गुथ गुणसागर अति रस।
पंथपरख्या आदि ग्रन्थ, बहु पद ग्रथ साखी।
महिमां बरणी नाम, भक्ति बिरदावली भाखी।
राघो ठाकुर पद परसि इन पायौ अनुभौ मनूं।
दादू दीनदयाल के नाती दास सर्वज्ञ मनू ॥५२६

दादू दीनदयाल के, नाती दोइ दलेल मति ॥
गुरग्रंथ करी निज भक्ति, प्रेम परमेसुर मांहीं।
सर्वे सवईया कीये दोय दस दीये दिखाई।
अमरदास के सबद, धुर कैं पटतर दीजै।
बिरह प्रेम संमिलत, चोज अनभास सुनीजै।
राघो हूं बलि रहसि की, मोकै सुमरे प्रांनपति।
दादू दीनदयाल के नाती दोइ दलेल मति ॥५२७

इम प्रमपुरष प्रहलाद कै सिष हरीदास सिरोमनि भयो ॥
कुछवाहौ कुल आदि नांम पहुमी हो हायौ।
पुमह परसि प्रहलाद, तज्यौ कुल दल कम भायौ।
कोमल कुदन कुवार, नहि चंचलता हासी।
सम दम सुमरन करै मोक्ष-पद कुमति उपासी।
मौं हवक मारि हरि कौं मिल्यौ जग राघो रहि अमहद गयौ।
परम पुरष प्रहलाद के सिष हरीदास सिरोमनि भयौ ॥५२८

प्रम-पुरष प्रहलाद कै, इतने सिष सर्व धर्म-धुर ॥
तिन मधि बड़ बांनैत हेत हापोजी होई।
दीरघ अबर अमल, दुरी जिन मानी कोई।
चरणदास मजनीक, तिलकधारी है कैसी।

हरीदास पुनि पाटि, कीयो हरि घर प्रवेसौ।
कान्हडदास कल्यांण, पुनहि परमानद घमडी।
रामदास हरदास, भक्ति भगवत की समडी।
इम राघौ कै रुचि राति दिन, भरणै भक्त भगवंत गुर।
इम प्रम-पुरष प्रहलाद कै, इतने सिष अब धर्म धुर ॥५२९

इम येक टेक हरि नाव की, हापाजी के सिषन कै॥
टीकै ऊधौदास, धर्म धीरज की आगर।
रथि राघो कै राम, बैठि उन कीयौ उजागर।
दीरघ दिनन कल्याण, उदैचंद ईस्वर अरजन।
आनद लाल दयाल, स्याम गोबिन्द जस गरजन।
तुरसी हैं हरिराम, पुनह पारबती बाई।
टीकू द्वै भगवान, सकल ग्यानि गुर-भाई ॥५३०

कृष्णदास मोहन मगन, अजमेरी ऊधौं रहै।
गगन मगन खेलत फिरै, जथासक्ति हरि हरि कहै।
परमार्थ मैं निपुन अति, आये कौं जल अन दे।
सतन कौ उर भाव बहु, सनमुख जाइ र धांम ले।
ये करणी कृतब भले, ज्यू राजस वृति रिषन कै।
येक टेक हरि नांव की, हापाजी के सिषन की ॥५३१

भक्तवत्सल को उदाहरन

मनहर छंद

रामजी की रीती असी प्रीति सु खुसी है भया,
करमां की खीचड़ी आरोगनै को आये हैं।
त्यागे हैं अवास दुरजोधन के जानि बूझि,
बिदुर गरीब घरि साक पाक पाये हैं।
बिप्र सुदामां कौ दलिद्र दुख दूरि कीयौ,
कूरी कन देखे प्रभु हेत सौं चवाई हैं।
राघो कहै रामजी दयाल असे दीनन सूं,
भीलन के झूठे वेर आप असै खाये हैं ॥५३२

भक्तबछल भगवत देखौ सत काज,
देहु रोद्र हाल फेरचौ नांमदे की टेर सूं।

भोग छतीस कीये दुरजोधन, भाव बिनां भुगते न बिधाता।
येकक भाव इकोतर सै तजे, बिद्र कै कौंन उतारै है पाता।
साग कै लेतहि भाग उदै भयौ, कृष्ण मिले त्रिये-लोक के दाता।
राघो कहै हरि हेत के गाहक, प्रीति बिनां कुछ[1] नेह न नाता ॥५३८

छपै अधिकार श्रवन सुनि साध कौ, अदभुत कोई न मांनियौ॥
अहं भक्त आधीन, कह्यौ हरि दुरबासा सौं।
घ्रू प्रहलाद गयद, सेस सिवरी सरितासौं।
पांडुन के जगि कृष्ण, अंघ्रि सुचि झूठि बुहारी।
चद्रहास बिष मेटि, राज दे बिषया नारी।
परचा कलि महि बिदत बहु, आसतिक बुधि उर आंनियौ।
अधिकार श्रवन सुनि साध कौ, अदभुत कोई न मांनियौ ॥५३९

अरिल दाई आगै पेट, दुरायें क्यूं दुरै।
छपै ज्यू निजरबाज निसतू, कठ गहि ठांवो करै।
समझै साल सराफ, दरवि खोटो खरौ।
करै राग के भाग, गुनीजन कौ गरौ।
यौं साध सबद कौं पेखि कै, गुनी बहुतर[2] चाल रहि।
जन राघो यौं हस ज्यूं, खीरनीर निरनौ करहि ॥५४०
कीयौ ग्रंथ गमि बिना, सुनौं कवि चतुर बिनानी।
सरवर कौं सर मांझ, भिरा भरि अरप्यौ पांनी।
सोवन भई सुमेर, ताहि कचन की किर्ची।
गणपति कौं इक साखि, गिरा दे सरस्वती अरची।
सूरजवासी ससि दसी, कलपवृछ कौं धरि धजा।
स्यंघ खोज सेवत चढ़ी, जन राघो गज मस्तक अजा ॥५४१
अन लह माइ रु हस, गरुड गोबिंद को आसन।
लघु खग और अनेक, उड़हि पंखी आकासन।
सत जोजन हनवत, कूदि गयौ सबका[3] गावै।
मृग चीता मृगराज छल, और पै फाल न आवै।

---
१. कछ। २ बहुत चरचाल रही। ३ सब को।

कासी मैं कबीर कसि बाँधि डारयौ हाथी आगै,
स्यंघ रूप धारि कै पछारयौ मुटभेर सौं।
नीर मैं भगत काज बहुत बिरद लाज,
धूसे कीन्है प्रगट बधायो येक सेर सौं।
प्रगटे प्रहलाद काज खंभ सु नृस्यंघ रूप,
राघो हरयौ हिरनांकुस हाथ की चपेर सु ॥५१७॥
गरीबनिवाज सु प्रवाज कीन्हीं येक बेर
आये गज काज की छुडायौ येक छिन मैं।
द्रोपदी की राखी पति अंबर बधायो अति,
दुसासन दुष्ट खिसानौं परयौ मन मैं।
कासी मैं कबीर काज बालदि लै ल्याये नाज
ऐसे प्रभु दीनबंधु अैसे पूरे पन मैं।
राघो कहै अंजुन सु और ब्यू निबाही प्रीति
राखे येक बार करतार राति दिन मैं ॥५१८॥
दीनबंधु दीन काज दौरे गज टेर सुनि
बालिक छुडायौ जन रास्यौ त्रिय ताप सौं।
तारयौ बिटप बिन सोक गयौ मोक्ष निज
पखानेस प्रतकास नांव के प्रताप सौं।
सुवा कौं पढ़ावते सरीर सुधि भूलि गई
गनिका बिमांन चढ़ी चली हरि आप सौं।
राघो अंबरीस बेर भये हैं दुबासा बैर
कीन्यौ है दखिल जगदीस जन आप सौं ॥५१९॥

इंदव पैज रही परमेस्वर गावत आयुदयाल की देखौ रे भाई।
छंद कासी मैं कौंस दई जिनि कै सुनि स्वामी न दूखे सजा जम पाई।
सांभरि साल महींधिय कौं दल साती ही ठौर भये सुखदाई।
राघो रखा करी राज सभा मधि पौरि उमै पग लाग्यौ है धाइ ॥५२०॥
भारत मैं भुति राखि लीये पंडवा हरि हेत सौं खेत जितायौ।
जन की रिपु राम हरयौ हिरनांकुस प्रांन सौं प्रहलाद बचायौ।
टेर सुनी गज की इतनी पर्व नांव को लेत ही रांमजी आयौ।
राघो कहै द्रोपदी भई दीन सु, कीन्हीं कृपा हरि चीर बढायौ ॥५२१॥

राघो कवि कोविद महत सत स्यधजल,
मेरो उनमान अैसौ डाग मधि डोहरा ॥५४७

मम गुर माथै परि स्वामी हरीदासजू है,
प्रम गुर स्वामी प्रहलाद बडी निधि[1] है।
स्वामी प्रहलादजू के गुर बड़े सूरवीर,
नाम स्वामी सुदरदास जांणै सारी विधि[2] है।
तास गुर दादूजी दयाल दिणियर सम,
सो तो त्रियलोक मधि प्रगट प्रसिध्य है।
स्वामी दादूजु के गुर ब्रह्म है विचित्र विग,
राघो रटि राति दिन नातो प्रनती वुध्य है ॥५४८

साखी दुगध गऊ कौ लीन है, अस्त मास तजि चाम।
ज्यौं मराल मोती चुगै, त्याग सीप जल ताम ॥१
जौ अतिज आभूषन सजै, नख-सिख वार हजार।
तऊ हाटक हटवारे गये, मोल न घटै लगार ॥२
त्यू प्रसिध्य पचू बरण, अन्य न भक्ति उर जास कै।
तिन चरनन की चरणरज, मनि मस्तक राघोदास कै ॥३॥५४९
उर अतर अनभै नहीं, काविन पिंगुल-प्रमाण।
मैं चुणि बीण सिलोकीयौ, कबिजन लीज्यौ जांण ॥४
अक्षर जोडि जाणौं नहीं, गीत कवित छंद अैन।
सिसु रोटी टोटी कहै, जननी समझै सैन ॥५
भूल चूकि घटि वधि बचन, मो अनजानत निकसियौ।
राम जाणि राघो कहै, सत महत सब बकसियौ ॥६॥५५१
छद प्रबंद अक्षर जुरहि, सुनि सुरता देदादि।
उक्ति चोज प्रसताव बिन, बक्ता बकै सु बादि ॥७
बालक बहरौ बावरौ, मूरख बिनां बिबेक।
बार कुबार भलो बुरौ, इनकै सबही येंक ॥८
हूं अजांन यौं कहत हूं, कबिजन काढौ खोरि।
राघव अरजव अरज करै, सबहिन सूं कर जोरि ॥९॥५५१

---

१. निध्य। २ विध्य।

टीका मैंडक भाड भृग सरकि, सरनि उभ पुनि मह्यौ ।
त्यूं राघव रचि पचि रसन मम, भोर मिति भृति कृत कह्यौ ॥५५२

इंदव छंद
मौस निवासिन बीच निरंतर, स्याम सूं सोत मिलेहि रहैं हैं ।
चैसव चंद चकोर कमोदनि अमृत को पुट पान गहै हैं ।
कंज प्रकास बचे बिधि बारिक, भुसिक ब्रारि सतोष सहै हैं ।
राघो कहै गुर की मछि गुमस, निपजि रांमहि राम कहै हैं ॥५५३
पूरस भाग उद जब होतह, ताहि बिना सत-संगति भावै ।
साध रु बेद को भेद सुनें बिन कोटि करो हिरदै सुधि नावै ।
मुंडत केस अनेक जटा सिर, नाम बिना बिसरांम न पावै ।
बैठे तें व्याधि पद्धेन करै[1] कछु, राघो कहै भ्रम कौन सूं सावै ॥५५४
पूरण भाग बिना भृति की हत, कौन सहै पय आन मुवा के[2] ।
संगति सार बिचार बड़ो निधि, मोट मरे मनि स्वाति सुधा के ।
हाथि चढ़े मन धाम सु धीरज धीरज मध्य बमै सुखमा के ।
राघो कहै अस जोग समागम संत कौं आनद रूप उदा के ॥५५५

मनहर छंद
बीन कछू जाने नांहि बाजत है बीनकार
　　प्रतछ बजावत छतीस राग रागणी ।
पोथ की परेखा करै बाजीगर बाजी मधि
　　जेवरी सूं जुगम दिखावै नाग नागणी ।
दंपति अनेक बात करत उराव बहु
　　पति जाहि मानै सोई सबन सुहागणी ।
राघो कहै रीति बिन मानौं कोई कबिजन
　　राम रच बैठे तब देत आप बागणी ॥५५६
अक्षर अरथ तुक जोरैं व्यास सुक मुनि
　　मैं का जोरौं पंथ करि मूढमति छोहरा ।
आवत है सकुचि बड़ों सौं बकि दीन्हीं पोठ
　　दुरै न दुकान दूर कारीगर लोहरा ।
महर रुपैया नग[4] ज्वार टकसार बिन
　　सेत परसाद ताहि साहूकार सोहरा ।

---

१ (आ बम ही) । २ (पूरा तन धीर) । ३ (मर्म) । ४ मम मरा ।

लई मानि करी जानि धरे आनि भक्त सब,
नृगुन सगुन षट-द्रसन बिसाल है।
साखि छपै मनहर इदव अरेल चौपे,
निसानी सवइया छंद जानियो हंसाल है ॥६३१

प्रथमहि कीन्ही भक्तमाल सु निरानदास,
परचा सरूप सत नाम गाम गाइया।
सोई देखि सुनि राघोदास आप कृत मधि,
मेल्हिया बिबेक करि साधन सुनाइया।
नृगुन भगत और आनि या बसेख यह,
उनहू का नाव गाव गुन समझाइया।
प्रियादास टीका कीन्ही मनहर छंद करि,
ताहि देखि चत्रदास इदव बनाइया ॥६३२

स्वामी दादू इष्टदेव जाकौ सबै जानै भेव,
सुदर वूसर सेव जगत विख्यात है।
तिनके निरानदास भजन हुलास प्यास,
उनहू कै रामदास पंडित साख्यात है।
जिनके जु दयाराम कथा कीरतन नाम,
लेत भये सुखराम और नही बात है।
त्रिष्णा अरु लोभ त्याग लयौ है संतोष भाग,
असे जू संतोष गुर चत्रदास तात है ॥६३३

सप्रदाइ पंथ पाइ षट-द्रष्ण जक्त आइ,
भजत गोबिंद राइ मन बच काइये।
जिन माहै काढि खोरि निंदत है मुख मोरि,
दूषन लगाइ कोरि साचहि झुठाइये।
साध कौं असाध करै अनदेखी बात धरै,
राम सू न डरै लरै जोर तै घिकाइये।
यसे कलिजुगी प्रानी आइ कहै कटुबानी,
पाप की निसानी प्रभु ताहि न मिलाइये ॥६३४

इदव छंद
बुद्धि नही उर ना अनभै धुर, पासि न थे गुर दूषन टारै।
आइ गई मनि औरन पैं सुनि, संतन कौं भनि होद उघारैं।

जांनी गिलो न उच्चरहि, निकस नहि मुख मोरि।
सतवेता जिनतर कही, मिपट लगा ज्यूं तोरि ॥१०
महापुरुष मदि तक रहि तब पलटहि वसु वोई।
आत्म अनभव ऊपजै, सबद संचो यों होइ ॥११
इह जीव कंगूरा बापरौ कर कौन सौं टेक।
राघो सत कवि कहैंगे, तेरी कसा न मानै येक ॥१२॥५५२
माया को मद ऊतरै सुनि साधन की साखि।
कथा कीरतन भजन धन, हित सूं हिरदै राखि ॥१३
अठसिठ तीरथ कोटि धमि, सहंस गऊ के दान।
इन सबहिन सू अधिक है सत-संगति फल मांन ॥१४
भगवत गीता भागवत, विसन सहसर-नांम।
चतुर सलोकर अखर सब, पंचम पूजा धाम ॥१५॥५५३
गाइत्री गुर-मंत्र जपि अठसठि तीरथ न्हाइये।
भक्तमाल पोथी पढ़त इतनों तत फल पाइये ॥१६
भक्तवछल कृत भक्त कृ[illegible] कृत सब धर्म की गली।
राघो करि है रांमजी भोता बका की भली ॥१७
भक्तवछल गुन रावरो बदत बेद ब्याहैं बरण।
जन राघो रटि राति दिन, भक्तमाल कलिमल-हरण ॥१८॥५५४
संवत सत्रह-सै सतहोंतरा, सुकल पख सनिवार।
तिथि त्रितीया आषाढ़ की राघो कीयो विचार ॥१९

चौपई दीपा बंसी चांगल गोत। हरि हिरदै कीन्हौं उद्योत ॥
भक्तमाल कृत कलिमल-हरणी। आदि अंति मधि अनुक्रम बरणी ॥२०
सीखै सुणै तिरै बैतरणी। चौरासी की होइ निसरणी ॥
साध-संगति सति सुरग निसरणी। राघो भगतिन कौं गति करणी ॥२१॥५५५

इति श्री राघोदासजी कृत भक्तमाल संपूर्ण ॥ समाप्त

मनहर छंद
प्रथम गुर नाभा जू कौं आज्ञा दीन्हीं कृपा करि,
प्रथमहि साखि एपै कीन्हो भक्तमाल है।
पीछे प्रहलाद जू बिचार कहो राघो जू सू,
करो संत मावली सु बात यो रसाल है।

१ तब।

लई मानि करी जानि धरे आनि भक्त सब,
नृगुन सगुन षट-द्रसन बिसाल है।
साखि छपै मनहर इदव अरेल चौपे,
निसानी सवइया छद जानियो हंसाल है॥६३१
प्रथमहि कीन्ही भक्तमाल सु निरानदास,
परचा सरूप संत नाम गाम गाइया।
सोई देखि सुनि राघोदास आप कृत मधि,
मेल्हिया विवेक करि साधन सुनाइया।
नृगुन भगत और आनि या वसेख यह,
उनहू का नाव गाव गुन समझाइया।
प्रियादास टीका कीन्ही मनहर छद करि,
ताहि देखि चत्रदास इदव बनाइया॥६३२
स्वामी दादू इष्टदेव जाकौ सबं जानै भेव,
सुदर वूसर सेव जगत विख्यात है।
तिनके निरानदास भजन हुलास प्यास,
उनहू कै रामदास पडित साख्यात है।
जिनके जु दयाराम कथा कीरतन नाम,
लेत भये सुखराम और नही बात है।
त्रिष्णा अरु लोभ त्याग लयौ है सतोष भाग,
असे जू सतोष गुर चत्रदास तात है॥६३३
सप्रदाइ पथ पाइ षट-द्रष्णा जक्त आइ,
भजत गोबिद राइ मन बच काइये।
जिन माहै काढि खोरि निंदत है मुख मोरि,
दूषन लगाइ कोरि साचहि झुठाइये।
साध कौं असाध करै अनदेखी बात धरै,
राम सू न डरै लरै जोर तै चिकाइये।
यसे कलिजुगी प्रानी आइ कहै कटुबानी,
पाप की निसानी प्रभु ताहि न मिलाइये॥६३४

इंदव छंद
बुद्धि नही उर ना अनभै धुर, पासि न थे गुर दूषन टारैं।
आइ गई मनि औरन पैं सुनि, सतन कौं भनि होइ उधारैं।

जो तुक छंद र अक्षर मातर अर्थ मिल बिन साध सुधारै।
चातुरदास करै बिनती मति मानि कवीसुर चूक निवारै ॥६३५

संवत येक रु आठ लिखे सुभ चौप र सातहि फेरि मिलावै।
भाद्रव की बदि है तिथि चौदसि मंगलवार सु वार सुहावै।
ता दिन पूरन होत भयौ यह शिष्यगण चातुरदास सुनावै।
बाँचि बिचारि सुनै रु सुनावत सो नर-नारि भगतिहि पावै ॥६३६

इति श्री भक्तमाल की टीका संपूरण समापत। सुभमस्तु कल्याणरस्तु ॥ भगतपाठकथा ॥ छप ॥ ३३८ ॥ मनहर ॥१५२॥ हुलास ॥४॥ साखी ॥३८॥ चौपाई ॥२॥ इंदव ॥७५॥ राघोदासजी कृत संपूर्ण ॥ इंदव छं० ॥ सब ६२१॥ चतुरदासजी कृत टीका छ सर्व कवित ॥१२०४॥ ग्रंथ संख्या श्लोक ॥४१ १॥ लिखतं बाबाजी श्री चतुरदासजी तिनका सिष बाबाजी श्री नदरामजी तिनको सिष गोकलदास बांचे ताको रांम रांम।

मनहर छंद

बस दस आठा साठा उपरांत येक पुनि
मास वयसाख वदि तितिया बखानिये।
कह्यो मारु गुरधर बर भक्तमाल बनी
मानो मनि सुनि प्रानी मीर ढिग मानिये।
माही त बिचारि कै संभारि सार लीन्हो धारि
लिखि डीडवाने त्रिषि मीवी मन मानिये।
मोर मति भारी धनि कीजिया जु बुध सुध
घाट ठीठ मिल्यो कछु माऊ ग्रंथ मानिये ॥१॥

परिशिष्ट १

(परिवर्द्धित सस्करण का अतिरिक्त पाठ)

मूल मगलाचरण

दादू नमो नमो निरजन, नमस्कार गुरुदेवत ।
वन्दन सर्व साधवा प्रणाम पारगत ।।

पृष्ठ २ पद्यांक ६ के बाद—

कवित्त

नमो नमो गुरुदेव, नमो कर्ता अविनासी ।
अनन्त कोटि हरिभक्त, नमो दशनाम सन्यासी ।।
नमो जैन जोगेश, नमो जगम सुखराशी ।
नमो बोध दरवेस, नमो नवनाथ सिद्ध चौरासी ।।
नमो पीर पैगम्बरा, ब्रह्मा विष्णु महेश ।
धरनि गगन पाणी पवन, चन्द सूर आदेश ।।
नर-नारी सुर नर असुर, नमो चतुर-लष जीवको ।
जन राघौ सब को नमो, जे सुमरे नित पीव कू ।।१०

पृष्ठ १४ पद्याक २६ के बाद—

इदव छद

द्विज एक अजामिल अन्त समै, जमकै जमदूतनि आन गह्यो ।
भयभीत महा अति आतुर ह्वै, सुत हेत नरायन नाम लह्यो ।
जब सन्तनि आय सहाय करी, गहि बेत सो दूत को देह दह्यो ।
'माधोदास' कहै प्रभु पूरण है, हरि के सुमरे अघ नाहिं रह्यो ।।६३
जमदूत भजे जमलोक गये, जमराय सो जाय पुकार करी ।
जहा अग के भग दिखाय दियो, तहा त्रास की पास उतार धरी ।
करता हम और न जानत हैं, हम पै अब होत न एक घरी ।
'माधोदास' कहै अब मेटत हैं, सोई दीन अधीर न सन्त हरी ।।६४
जमराय कहै जमदूतन सो, तुम बात भली सुनल्यो अब ही ।
जहा भगत के भेष की बात सुनो, वह मारग जाहु मतै कब ही ।
हरि के जन सो कोई कोप करे, हरि देत सजा ताको जब ही ।
'माधोदास' को आस विश्वास यह, हरिराय की टेक सदा निवही ।।६५

बीव रु लौंड पुकारत आतुर आत दया हिय पाहरण ही है।
राघवदास अनाथ यू दाकत साध दुखावन को फल ली है ।।४४४

पृष्ठ ६३, मूल पद्यांक २०४ के बाद—

दीन ह्वै राम रहे जन के गृह प्रीति तिलोचन की मन भाई।
वात अज्ञात लखै मन की, ग्रह को सब काज करै सुखदाई।
एक समै कहु दासिक दूखन, पीस पोवन की मन आई।
'राघौ' कहै निज रूप निरन्तर, ह्वै गये सेवक को समझाई ।।४७७

पृष्ठ १३७, टीका पद्यांक ४१६ के बाद—

मनहर छन्द

शकर के शिष्य चारि जातै दस-नाम यह,
स्वरूपाचारज के द्वै तीरथ रु आरनै।
पदमाचारज के जु दोय शिष शूरवीर,
आश्रम रु वन नाम ज्ञानी गुन जार नैं।
ओटकाचारज के सु तीन शिष्य भक्त-ज्ञानी
प्रवत सागर गिरी तुरू सेय वार नै।
पृथीधराचारज के राघौ कहै तीन शिष्य,
सरस्वती, भारती, पुरी दश-नाम वारनै ।।७१६

पृष्ठ १४०, पद्यांक २८१ के बाद—

टीका

इदव छद

माग हुली सुत की नृप व्याहत, रूपवती अति वुद्धि चलाई।
खेलत गेंद गई दुरि ता घर, दौरि गयो तिस लेनहि जाई।
देखत रूप अनूप महा अति, बाह गही सग मोहि कराई।
हाथहि जोरि कहै मुख सूकत, वात अजोगि कहो जिन भाई ।।७३०
त्राम दिखावत मारि डरावत, एक न भावत शील गह्यौ है।
जोर करचो निकस्यो झट छूटिक, चालत दाव न फारि लह्यो है।
रूसि रही नृप आवत वूझत, कैत भई सुन भोग चह्यो है।
क्रोध भयो नृप हो तिय को, जित न्याव न वूझत मूढ वह्यो है ।।७३१
नीच वुलाय लयै कर पाव हि, काटि कुवा महि डारि सु आऐ।
राम भजे करुणा हि करे, गुरु गोरख आय रु वोल सुनाऐ।

जमदूत कहै जमरायन सों, तुम्ह काहे को बीच करावत हांसी ?
इतत पठ्यौ उत वे न गिनैं, हरिजन बीचहि मारि भगासी।
पशु मानुष पंखि की कौन चलै तहां कीट पतंग सब जु मैं वासी।
'माधोदास' नरायन नाम प्रताप सौं पाप जरै जैसे फूस की रासी ॥६६
डरे जमराय उठे अकुलाय, रहे जु सिखाई इक बात चलाई।
नाम उचार भयो तिहि वार सहि सिर मारग एक न धाई।
सुनहु जमदूत कु आन कुपूत भई मम सूत बचे हम भाई।
जहां काल प्रचण्ड को दण्ड मिट्यो, हमरी तुमरी किन बात चलाई ॥६७

पृष्ठ १० पद्यांक ६५ के बाद—

अन्य मत

मनहर छंद

भयो तू पिसाच तेरी कूखि अवतार लियो
मेरे जाने सिपटि पिसाचनी तूं कैकयी।
हंस दुति कुमति तें बांधि धरे वायस कों
अमृत लुटाय के जु बेलि विष की बई।
कमल से कोमल चरण रघुबीरजी के,
कैसे बन चलैं कुश-कण्टक मही छई।
मैं तो मरिबेहू मोसौं कैसे दुःख सह्यो जात
होणहार हुई और कहा होयगी दई ॥१४८

पृष्ठ ८२ पद्यांक १८८ के बाद—

परसजी का वर्णन मूल

छप्पय

मरुधर कसक गांव परस जहां प्रभु को प्यारो।
सतवादी सुतार कर्म कलियुग तें न्यारो।
ता बदलें हल धारि राम रथ-चक्र सुधारयो।
इकलग पूठो एक बिना लख तबै बिचारयो।
चरम गयो जहां भूपति चित बहुत चरजौ भयो।
'रामो समग्र रामजी भक्ति करत यों बस भयो ॥४१२

पृष्ठ ८८ पद्यांक २२९ के बाद—

भूपति मन्दिर लाम लगी अति भाट जु मन्दर लाम लगो है।
नांहि बुझै सु उपाय करे बहु हाय बुदा किम चूकि पर्यो है।

बीव रु लौंड पुकारत आतुर आत दया हिय पाहण ही है।
राघवदास अनाथ यू दाक्रत साध दुखावन को फल ली है ।।४४४

पृष्ठ ९३, मूल पद्यांक २०४ के बाद—

दीन ह्वै राम रहे जन के गृह प्रीति तिलोचन की मन भाई।
वात अज्ञात लखै मन की, ग्रह को सब काज करै सुखदाई।
एक समै कहु दासिक दूखन, पीस पोवन की मन आई।
'राघौ' कहै निज रूप निरन्तर, ह्वै गये सेवक को समझाई ।।४७७

पृष्ठ १३७, टीका पद्यांक ४१९ के बाद—

मनहर छन्द

शकर के शिष्य चारि जाते दस-नाम यह,
स्वरूपाचारज के द्वै तीरथ रु आरनै।
पदमाचारज के जु दोय शिष शूरवीर,
आश्रम रु वन नाम ज्ञानी गुन जार नैं।
त्रोटकाचारज के सु तीन शिष्य भक्त-ज्ञानी
प्रवत सागर गिरी तुरू सेय वार नै।
पृथीधराचारज के राघौ कहै तीन शिष्य,
सरस्वती, भारती, पुरी दश-नाम वारनै ।।७१९

पृष्ठ १४०, पद्यांक २८१ के बाद—

टीका

इदव छद

माग हुती सुत की नृप व्याहत, रूपवती अति बुद्धि चलाई।
खेलत गेंद गई दुरि ता घर, दौरि गयो तिस लेनहि जाई।
देखत रूप अनूप महा अति, बाह गही सग मोहि कराई।
हाथहि जोरि कहै मुख सूकत, वात अजोगि कहो जिन भाई ।।७३०
त्रास दिखावन मारि डरावत, एक न भावत शील गह्यो है।
जोर करचो निकस्यो झट छूटिक, चालत दाव न फारि लह्यो है।
रूसि रही नृप आवत वूझत, कैत भई सुन भोग चह्यो है।
क्रोध भयो नृप हो तिय को, जित न्याव न वूझत मूढ वह्यो है ।।७३१
नीच वुलाय लयै कर पाव हि, काटि कुवा महि डारि सु आऐ।
राम भजे करुणा हि करे, गुरु गोरख आय रु वोल सुनाऐ।

यमदूत कहै जमरायन सों, तुम्ह काहे को बीच करावत हाँसी ?
हतत पठ्यौं उत वे न गिनैं हरिजन बीचहि मारि भगासी।
पशु मानुष पंखि की जौम बसै तहां कीट पतंग सबै जु मैं वासी।
'माधोदास' नरायन नाम प्रताप सों पाप जरे जैसे फूस की राशी ।।६६
डरे जमराय उठे अकुलाय, रहे जु सिखाई इक बात बताई।
नाम उचार भयो तिहिं बार सहि सिर मारग एक न पाई।
सुनहु जमदूत कु पान कुपूत भई भल सूत बचे हम भाई।
जहां काल प्रचण्ड को दण्ड मिट्यो, हमरी तुमरी किन बात चलाई ।।६७

पृष्ठ ३० पद्यांक ६५ के बाद—

अन्य मत

मनहर छंद

भयो हू पिशाच तेरी कूखि अवतार लियो,
मेरे जाने निपटि पिशाचनी तू कैकयी।
हस हति कुमति तें बांधि धरे बायस कों
अमृत लुटाय के जु बेलि विष की बई।
कमल से कोमल चरण रघुबीरजी के
कैसे बन जैहैं कुश-कण्टक मही छई।
मैं तो मरिबेहू मोसों कैसे दुःख सह्यो जात
होणहार हुई और कहा होयगी दई ।।१४८

पृष्ठ ८२ पद्यांक १८६ के बाद—

परसजी का वर्णन मूल

छप्पय

मरुधर कलक गांव परस जहां प्रभु को प्यारो।
सतवादी सुतार कर्म कलिजुग तें न्यारो।
ता बदलैं तन मारि राम रथ चक्र सुधारयो।
इकलग पूठी एक बिना दाल तर्म बिचारयो।
परस गयो जहां भूपति चित चहत चरनों भयो।
राघो' समग्र रामजी भक्ति करत यों यश भयो ।।४१२

पृष्ठ ८८ पद्यांक २२२ के बाद—

भूपति मन्दिर लाय लगी अति जाट पु मन्दर लाय लगो है।
मांहि बुझै सु उपाय करै बहु हाथ पुरा किम फूंकि परी है।

हूदो कियो सुवज्र समानो। उर अन्तर नहिं उपज्यो ज्ञानू ।।
नीति अनीति कीयो नहिं खेदू। निरणै करि बूझ्यो नहिं भेदू ।।१५
काटि चरन करि नाख्यो कूपू। महाप्रवीन सु अजब अनूपू ।।
तहा मछिन्द्र गोरख आये। दरद देखि अरु अति दुख पाये ।।१६
करुणा करै भये कृपालू। बूझै पीर सु प्रेम दयालू ।।
कौन चूक सासना दीनी। सो तो हम पै जाय न चीन्ही ।।१७
माई दियो मिथ्या दोषू। राजा अति मान्यो मन रोषू ।।
सोति सुत अति भई सु क्रूरी। किये पिता हाथ पग दूरी ।।१८
बसै सुनि ध्रू गाइ किहि वासू। अपने पिता को नाम प्रकासू ।।
बसै सहीपुर माडल गाऊ। नृपति शालिवाहन है नाऊ ।।१९
ना हमसो कोई भई बुराई। कर्म-सजोग न मेट्यो जाई ।।
लिख्यो विधाता त्यूही होई। कोटि किया हू मिटै न सोई ।।२०
अब मोहि राखो निकट हजूरी। चरन-कमल सू करो न दूरी ।।
भाग बडे थे भेटे आई। तुम बिन दुती न और सुहाई ।।२१

दोहा
भाग बडे थे पाइये, निरमल साधू सन्त।
आनि मिलाप गैव मैं, कृपा करी भगवन्त ।।२२
आये सद्गति करन को, निन्यानवे कोटि नरेश।
भूपन का छन भवन सो, दे दे गुरु उपदेश ।।२३

चौपाई
तब अमृत फल करसो अर्प्यो। चौरगी अपनो कर थर्प्यो ।।
दियो मुदित ह्वै सिर पर हाथू। होहु सहायक गोरखनाथू ।।२४
गुरू मच्छन्दर सिष चौरगू। उपजी अनभै भक्ति अभगू ।।
आरती बडी सु आतम माही। भगवन्त नाम विसारै नाही ।।२५
इहा रहो तुम द्वादस वर्षू। सुमरि सनेही मन करि हर्षू ।।
रमे मछिन्द्र दे प्रमोधू। गोरख रहे सिखावन बोधू ।।२६

टीका

इदव छन्द
द्वादश वर्ष हि नेम लियो गुरु, गाव सु पट्टण पाउ[1] रहाई।
ग्राम गयो सिष भीष न पावत, एक कुम्हारि उपाय बताई।

---
१ पहाड।

सांच कहीं सत नांहि गयो सुम पारख से नहिं तार भुलाये।
छीवत तार भये कर पाद हु विष्य करयो हरि के गुण गाये ॥७३२

चौपाई तब सू लग उम सग रहिम। अन्तर कथा भली सो कहिये॥
नृपति शालवाहन की नारी। महाकपटनी अति धूतारी॥१
सुन्दर सुत सौतिको जायो। रूप देखि तासों मन लायो॥
अतिहि अन्यू सु अम्बुज-नना। महाअम्स मुख अमृत बैना॥२
हित करि सीया निकट बुलाई। मन माही उपजी सो बुराई॥
लज्जा छाडि करो परसंगू। सनमुख ह्व के देखो अंगू॥३
कियो शृंगार न बरन्या जाई। मन हु इन्द्रकी रम्भा आई॥
मृगनयनी सो विगसी बोले। महा अडिग मन कबहू न डोले॥४
कर पकरयो सुन बिनती मेरी। ह्व हु सदा तुम्हारी चेरी॥
कह्यो करहिं तौ सूं यौ राजू। सरबस दे सारूं सब काजू॥५
कर मुक्ती कर कह्यो सुनाई। तुम तो लगो धर्म की हमारी माई॥
ऐसी कथा का लेहु न नाऊ। नहिं तो प्राण त्यागि मर जाहू॥६
काको पूत कौन की माई। सुख दे हुं तोहि कही सुनाई॥
कियो नहिं सु कह्यो हमारो। अबै कौन तोहिं राखनहारो॥७
कामी शहर सों यों नृप येरी। काढों नगर ढंढोरा फेरी॥
अब आई है बेर हमारी। कछु न राखौं मानि तुम्हारी॥८
कर सू कर लियो मरोरी। करी कहां है तैं कछु चोरी॥
होहि चोरायो प्रगट ऐन। दूरि करौं भुज देखत नेन॥९
तजे अभूषन वस्त्र फारी। गई सु पति पै चोष उभारी॥
कह्यो मात मत भावे मेरा। तो उन छोड्यो मेरो केरो॥१०
मेरी पति सों नेक न राख्यो। देखि शरीर सु प्रगट भाख्यो॥
अब हु प्राण त्यागि मर जाऊं। कहा जगत में मुख दिखाऊं॥११
देखि गात कामिनी को नैन। पश्चाताप उपज्यो मन ऐन॥
दई दांत बिच अंगुरी दीन्ही। कैसी पूत कमाई कीन्ही॥१२
तब कोमी मौज मंगायो मारी। दे सिरोपाव भरतार सिगारी॥
तुमको दुष्ट बहुत दुख दीया। पावेगो ता अपना कीयो॥१३
पूत भर्यो पर मरी मेरो। अब कोई त्यावे मत मेरा॥
कीज्यो दूर हाथ पग जाई। जो हमकों मुख न दिखावै आई॥१४

हृदो कियो सुवज्र समानो। उर अन्तर नहिं उपज्यो ज्ञानू ।।
नीति अनीति कीयो नहिं खेदू। निरणै करि बूझ्यो नहिं भेदू ।।१५
काटि चरन करि नाख्यो कूपू। महाप्रवीन सु अजब अनूपू ।।
तहा मछिन्द्र गोरख आये। दरद देखि अरु अति दुख पाये ।।१६
करुणा करै भये कृपालू। बूझै पीर सु प्रेम दयालू ।।
कौन चूक सासना दीनी। सो तो हम पै जाय न चीन्ही ।।१७
माई दियो मिथ्या दोषू। राजा अति मान्यो मन रोषू ।।
सोति सुत अति भई सु कूरी। किये पिता हाथ पग दूरी ।।१८
बसै सुनि धू गाइ किहि बासू। अपने पिता को नाम प्रकासू ।।
बसै सहीपुर माडल गाऊ। नृपति शालिवाहन है नाऊ ।।१९
ना हमसो कोई भई बुराई। कर्म-सजोग न मेट्यों जाई ।।
लिख्यो विधाता त्यूही होई। कोटि किया हू मिटै न सोई ।।२०
अब मोहि राखो निकट हजूरी। चरन-कमल सू करो न दूरी ।।
भाग बडे थे भेटे आई। तुम बिन दुती न और सुहाई ।।२१

दोहा भाग बडे थे पाइये, निरमल साधू सन्त।
आनि मिलाप गैव मैं, कृपा करी भगवन्त ।।२२
आये सद्गति करन को, निन्यानवे कोटि नरेश।
भूपन का छन भवन सो, दे दे गुरु उपदेश ।।२३

चौपाई तब अमृत फल करसो अर्प्यो। चौरगी अपनो कर थर्प्यो ।।
दियो मुदित ह्वै सिर पर हाथू। होहु सहायक गोरखनाथू ।।२४
गुरू मच्छन्दर सिष चौरगू। उपजी अनभै भक्ति अभगू ।।
आरती बडी सु आतम माही। भगवन्त नाम विसारै नाही ।।२५
इहा रहो तुम द्वादस वर्षू। सुमरि सनेही मन करि हर्षू ।।
रमे मछिन्द्र दे प्रमोधू। गोरख रहे सिखावन वोधू ।।२६

टीका

इदव द्वादश वर्ष हि नेम लियो गुरु, गाव सु पट्टण पाउ[1] रहाई।
छन्द ग्राम गयो सिष भीष न पावत, एक कुम्हारि उपाय वताई।

---

१ पहाड।

साँच कहौं सत माँहि गयो तुम पारस से महि सार भुलाये।
छीवत सार भये कर पाद हु शिष्य करया हरि के गुण गाये ॥७३२

चौपाई तस सूं भगे उभै संग रहियें। अन्तर कथा भली सो कहिये ॥
नृपति शालवाहन की नारी। महाकपटनी अति धूतारी ॥१
सुन्दर सुत सोतिको आयो। रूप देखि वासौं मन भायो ॥
भसिहि भयू सु अम्बुज-नैना। महासन्त मुख अमृत बैना ॥२
हित करि भीया निकट बुलाई। मन माँही उपजी सो बुराई ॥
लज्जा छाड़ि करो परसगू। सनमुख ह्वै के देखो भयू ॥३
कियो शृगार न बरन्यो आई। मन हु इन्द्रकी रम्भा भाई ॥
मृगनयनी सो विगसी बोले। महा अडिग मन कबहु न डोले ॥४
कर पकरयो सुन बिनती मेरी। ह्वै हु सदा तुम्हारी चेरी ॥
कह्यो करहि तौ सू यौं राखू। सरवस दे सारू सब काजू ॥५
कर मुस्की कर कह्यो सुनाई। तुम तो लगो धर्म की हमारी माई ॥
एसी कथा का लेहु म नाऊ। नहिं तो प्राण त्यागि मर जाहु ॥६
काको पूत कौन की माई। दुख दे हु तोहि कही सुनाई ॥
कियो नहि सु कह्यो हमारो। अबै कौन सोहि राखनहारो ॥७
कह्यौ शहर सौं यौं नृप चेरी। काढौं नगर ढंढोरा फेरी ॥
अब भाई है बेर हमारी। कछु न राखौं मानि तुम्हारी ॥८
कर सू कर लियो मरोरी। करी कहा है तै कछु चोरी ॥
होहि चोरग्यो प्रगट ऐंन। दूरि करौं मुख देखत मैन ॥९
उपे अभूषन वस्त्र फारी। गई सु पति पै शोश उघारी ॥
कह्यो मात मत भाबे नेरो। तो उन छोल्यो मेरो केरो ॥१०
मेरी पति सौं नैक न राखी। देखि शरीर सु प्रगट साखी ॥
अब हु प्राण त्यागि मर जाऊं। कहा जगत में मुख दिखाऊं ॥११
देखि गात कामिनी को मैन। पश्चाताप उपज्यो मन ऐंन ॥
दहु दांत बिच अगुरी दोन्ही। कैसी पुत्र कमाई कीन्ही ॥१२
तब कीनी मौज मतोपो मारी। दे सिरोपाव भरतार सिगारी ॥
तुमको दुष्ट बहुत दुख दोया। पावेगो सो अपनों कीयो ॥१३
पुत्र नही पर अरी मेरो। अब कोई त्यावे मत नेरो ॥
कीज्यो दूर हाथ पग भाई। जो हमकों मुख न दिखावै आई ॥१४

'आयस जो ठगो' ॥१०॥
बाबा जे ठगिया ते तो मन बैठि गया, अरु ठगिया जम कालम् ।
हम तो जोगी निरन्तर रहिया, तजिया माया-जालम् ॥१०
'आयस जी फेरी द्यौ' ॥११॥
बाबा जे फेरे तो मन को फेरे, दस दरवाजा घेरे।
अरध उरध बीच ताली लावे, तो अठ-सिद्ध नो-निधि मेरे ॥११
'आयस जी धन्धै लागौ' ॥१२॥
बाबा गोरख धन्धै अहनिस इक मनि, जोग जुगति सो जागै ।
काल व्याल का मैं हम देख्या, नाथ निरजन लागे ॥१२
'आयस जी देखो' ॥१३॥
बाबा इहा भी दीठा उहा भी दीठा, दीठा सकल ससारम् ।
उलट पलटि निज तत चीन्हिवा, मन सू करिवा विचारम् ॥१३
जैसा करै सु पावै तैसा, रोष न काई करणा।
सिद्ध शब्द को बूझै नाही, तो विण ही खूटी मरणा ॥१४

इदव छद
जाय जहा सब दुष्ट ही देखत, खेचर तें सबदी हु करी है।
आय कही सिष सो तब सेवक, होय सु बाहरि जाय धरी है।
कोप भये गुरु पत्तर लेकर, पट्टण पट्टण मार करी है।
सन्त अनादर को फल देखहु, दण्ड दिये परजा सु डरी है ॥७३५

पृष्ठ १४२ पद्यांक २८८ के बाद—

(यह पद्य पृष्ठ २५ पद्यांक ४७ मे आ गया है)

अथ बोध-दर्शन

छप्पय छद
भृगु मरीच वाशिष्ठ पुल्हस्त पुल्ह क्रतु अगिरा।
अगस्त चिवन सौनक्क सहस अग्रासी सगरा।
गौतम गृग सौभ्री करिचक सृङ्गी जु समिक गुरु।
वुगदालमि जमदग्न जवल पर्वत पारासुर।
विश्वामित्र माडीफ कन्व वामदेव सुक व्यास पखि।
दुर्वासा अत्रेय अस्त देवल राघव ऐते ब्रह्म-रिप ॥७४२

इति बोधदर्शन समाप्त ॥

माँ सुत साथिहिं इंधन ल्याकर, पीसन पोवन की मम भाई।
आवत शिष्य जु पाव नहीं घर, बूझि गये गुरु भीष न पाई ॥७१४

अथ धुंधलीमल की शब्दी लिख्यते

आयस जी आवो' ॥ १ ॥
बाबा आवत जावत बहुत जग दीठा, कछु न चढ़िया हाथम् ।
अब का आवण सुफल फलिया पाया निरंजन-नाथम् ॥१
'आयस जी जावो' ॥ २ ॥
बाबा जे आया ते जाइ रहैगा, तामें कैसा संसा।
बिछुरत बेला मरण दुहेला ना जाणा कब हंसा ॥२
आयस जी बैठो ॥ ३ ॥
बाबा बैठा उठो ऊठा बैठो बैठि उठि जग दीठा।
घर घर रावल भिक्षा मांगै एक महा अमीरस मीठा ॥३
'आयस जी ऊभा' ॥ ४ ॥
बाबा ज ऊभा ते इक टग ऊभा, शम्भु समाधि लगाई।
ऊभा रहा ही कौण फायदा जे मन भरमैं जग मांही ॥४
'आयस जी आड़ा पड़ो' ॥ ५ ॥
बाबा जे आड़ा ते गहि गुण गाड़ा, मो दरवाजा तासी।
जोग जुगति करि सनमुख लागा पच पचीसों नासी ॥५
आयस जी सोवो' ॥ ६ ॥
बाबा जे सूता ते गया बिगूता जनम गया सब हारयो।
माया हिरणी काम अहेड़ी हम देखत जग मारयो ॥६
'आयस जी जागो ॥ ७ ॥
बाबा ज जाग्या ते जुग जुग जाग्या जाग्या सुन्या है जैसा।
गगन मण्डल में तामो सामी जाग रहे है ऐसा ॥७
'आयस जी मरो ॥ ८ ॥
बाबा हम भी मरगा तुम भी मरगा मरगा सब संसारम्।
सुर नर नाग गन्धर्व भी मरगा कोई बिरला उतरे पारम् ॥८
'आयस जी जीवो ॥ ९ ॥
बाबा ज जीया ते जिन ही जीया मारया ते सब मूवा।
जोग जुगति करि पवना साध्या सो अजरामर हूवा ॥९

काठ की रोटी वनाय पेट सो वाधी चढाय,
क्यू कही वढाय वात पूछिए सरीद को।
राघौ कहै तीसरे तरूर तप तेग भयो,
ग्राय के खुदाय दयो मौज दे मुरीद को।।७४६

सुलताना का वर्णन

ग्रजव है मजव गजव सो तरक दई,
शाह सुल्तान गलतान गल गूदरी।
ग्रासफ ग्रटारे लखि वुलक बुखारै देश,
त्यागे हाथी हसम सहस्र सोला सुन्दरी।
मादर विरादर वलक्क खेस ख्वाहि खेल,
खेलत खालिक दर छडि रहे वूदरी।
राघौ कहै कदम करीम के करार दिल,
शाहि रू खुदाई मिले मावूद मावूदरी।।७४८

हेसमशाह वर्णन

छप्पय छंद

दुश्मन करे दरेग, तेग हेतम सो हारचो।
इक गजा करत दरवेस, शाह तजि सर्म पुकारचो।
दुखतर करौं कबूल, सकल चाकर घर खगो।
दरबड चाहु दिवान, जाय हेतम सिर मंगो।
जिन्दै किया पयान, खाण कुछ खरच मगाया।
कुछ दिन लागे बीच, नगर हेतम के ग्राया।
जन राघौ मिले ग्रवाज करि, देहु सिर नियत खुदाई।
मैं ग्राया तकि तोहि, सकस ने शरम गहाई।।७४९
यो हेतम बूझी माय, फक्कर मेरो शिर मगै।
पिसर नियत खुदाय, देहु दिल करो न तगै।
मादर की दिल खूब रहै, खालिक सो नेरी।
रे तुम जाहु फकर के, साथि सुनो सुत वाता मेरी।
सुत चले कुनन्द करि, माय पायन गो सिर खुले।
तब दुशमन देखि रहफ गये, ग्रवगुन सब भूले।
सकल हसम घर राज तन, दुखतर दे पाऊ परचो।
जन राघौ हेतमशाह का, यो ग्रलह शीष कायम करचो।।७५०

पृष्ठ १४२ पद्यांक २८१ के बाद—

अथ जैन-दर्शन वर्णन

चौबीस तिर्थंकर चीन्हह जन राघौ मन वच कर्म ॥
ऋषभ अजित अरु पदम चंद्र संभव सुबुद्धि मन।
अभिनन्दन निम नेम सुमति शीतल श्रीहांसि गन।
वासुपूज्य पारस्स अनन्तजी बिमल धर्म धर।
सत कुंथ अरिहंत सुमलजी मुनि सुव्रत धर।
पारसनाथ मुनिहि प्रसिद्ध जगवीर वर्धमान सुधर्म धर।
चौबीस तिर्थंकर चीनह्नु जन राघौ मन वच कर्म ॥७४४

अन्य मत

पहुपन्त प्रभु चन्द चन्द सुमि सेत बिराजै।
पारसनाथ सुपार्स हरित पद्मामय साजै।
वासुपुज्य अरु पदम रक्त माणिक दुति सोहै।
मुनिव्रत अरु नेम श्याम सुरनर मन मोहै।
वाका सोलह कंचन वरन यह व्यवहार शरीर-द्युति।
निहचै अरूप चेतन विमल दरश ज्ञान चारित्र जुति ॥७४५

॥ इति जैन-दर्शन समाप्त ॥

अथ जीवन दर्शन वर्णन

मूल

छप्पय अनलहक मनसूर राबिया हेतम सेख फरीद सुलतान।
छन्द दास कबीर कमाल कमधुज देखो सामना सेऊ समन।
ए पट गुण जित गमतान बिम्मुलीखां बाजीन्द बिहाबदी कादन।
महमूद सत मनि वन अमुसा उसमान अवलिय पीरौं दास गरीब गन।
इन पच पचीसों वश किए, हरि पिण्ड ब्रह्माण्ड विधि तरक की।
जन राघौ रामहि मिले हद तजि हिन्दू तुरक की ॥७४६

फरीदजी का वर्णन

मनहर माई कीन्हीं परख बड़ी न हु छत्तीस वर्ष
छंद पीरका मुरीद कीन्हा फेरि कै फरीद को।
बारह बरष खाये पात दरखत चामै गात
कैम मामें बात सुदाई करीद को।

काठ की रोटी बनाय पेट सो बाधी चढाय,
क्यू कही वढाय वात पूछिए सरीद को।
राघो कहै तीसरे तरूर तप तेग भयो,
आय के खुदाय दयो मौज दे मुरीद को।।७४६

सुलताना का वर्णन

अजब है मजब गजब सो तरक दई,
शाह सुल्तान गलतान गल गूदरी।
आसफ अटारे लखि बुलक बुखारै देश,
त्यागे हाथी हसम सहस्र सोला सुन्दरी।
मादर विरादर वलक्क खेस ख्वाहि खेल,
खेलत खालिक दर छडि रहे वूदरी।
राघौ कहै कदम करीम के करार दिल,
शाहि रू खुदाई मिले माबूद माबूदरी।।७४८

हेसमशाह वर्णन

छप्पय छंद

दुश्मन करे दरेग, तेग हेतम सो हारचो।
इक गजा करत दरवेस, शाह तजि सर्म पुकारचो।
दुखतर करौं कबूल, सकल चाकर घर खगो।
दरबड चाहु दिवान, जाय हेतम सिर मंगो।
जिन्दे किया पयान, खाए कुछ खरच मगाया।
कुछ दिन लागे बीच, नगर हेतम के आया।
जन राघौ मिले अवाज करि, देहु सिर नियत खुदाई।
मैं आया तकि तोहि, सकस ने शरम गहाई।।७४६
यो हेतम बूझी माय, फक्कर मेरो शिर मगै।
पिसर नियत खुदाय, देहु दिल करो न तगै।
मादर की दिल खूब रहै, खालिक सो नेरी।
रे तुम जाहु फकर के, साथि सुनो सुत वाता मेरी।
सुत चले कुनन्द करि, माय पायन गो सिर खुले।
तब दुश्मन देखि रहफ गये, अवगुन सब भूले।
सकल हसम घर राज तन, दुखतर दे पाऊ परचो।
जन राघौ हेतमशाह का, यो अलह शीष कायम करचो।।७५०

पृष्ठ १४२ पद्यांक २८१ के बाद—

अथ जैन-दर्शन वर्णन

चौबीस तिर्थंकर कीनहु जन राघो मन वच कर्म ॥
ऋषभ अजित अरु पदम चंद्र संभव सुबुद्धि मन।
अभिनन्दन निम नेम सुमति शीतल श्रीहांसि गन।
वासुपूज्य पारस्स अनन्तजी विमल धर्म धर।
सत कुंथ अरिहंत सुमलजी मुनि सुव्रत धर।
पारसनाथ मुनिहि प्रसिद्ध जगबीर बर्धमान सुधर्म भर।
चौबीस तिर्थंकर कीनहु जन राघौ मन वच कर्म ॥७४४

अन्य मत

पहुपदन्त प्रभु चन्द चन्द समि सेत बिराजै।
पारसनाथ सुपार्श हरित पद्मासन छाजै।
बासुपुज्ज अरु पदम रक्त माणिक दुति सोहै।
मुनिव्रत अरु नेम श्याम सुरनर मन मोहै।
वाका सोलह कचन बरन मह व्यवहार शरीर-दुति।
निहचै अरूप चेतन बिमल दरस ज्ञान चारित्र दुति ॥७४५

॥ इति जैन दर्शन समाप्त ॥

अथ जीवन दर्शन वर्णन

मूल

छप्पय छन्द
अनलहक मनसूर राबिया हेतम सेप फरीद सुलतान।
दास कबीर कमाल कमघुज देखो साधना सेऊ समन।
ए षट् गुरु जित मसतान चिज्जुलीको वाजीन्द बिहावदी कावन।
महमूद सत भनि अम जमुसा उसमान अवलिय पीरौं दास गरीब गन।
इन पंच पचीसौं मद किए, हरि पिण्ड ब्रह्माण्ड बिधि उरक की।
जन राघो रामहि मिले हद तजि हिन्दू तुरक की ॥७४६

फरीदजी का वर्णन

मनहर छंद
माई कीन्ही परख मती न हु घ्रनोस वर्षे
पीरका मुरीद कीन्हा फेरि कै फरीद को।
बारह बरष खाये पात दरखत बामी गात
कं न मानै बात मुदाई सरीद को।

यो परमारथ के कारणै, जन राघौ हारचो सूर।
साहिब सरवरदीन विचि, पडदा ह्वै गये दूर ॥८
एक विपिन द्वै सिद्ध निपुन, साधक करी तरक्क।
अरस-परस शोभा सरस, राघौ दुवै गरक्क ॥६
मुसलमान मुरतजाअली, करी भली इक रोस।
जन राघौ काज रहीम कै, पुरई परकी हौस ॥१०

छपै छन्द
राघौ सन्त जु ऊतरे, सेउसमन घरि आयके ॥
पिता पुत्र पुनि मात, आहि अति पण के गाढे।
घर मे कछु नहिं अन्न, सोच सब दिन मन वाढे।
चोरी गए समन, फोरि घर अन पकरायो।
वणिक पुत्र सुत गह्यो, काटि मस्तक लै आयौ।
धड सूली मस्तक फिरचो, परसाद कियो जन भायके।
राघौ सन्त जु ऊतरे, सेउसमन घरि आयके ॥७५३

काजी महमद वर्णन

करुणा विरह विलाप करि, काजी महमद पिव मिले ॥
आठ पहर गलितान, छक्यो रस प्रेम सु मातो।
टोडी आशा राग, प्रीति सो हरि गुन गातो।
पुत्री को सुत मृतक देखि, मन दया जु आई।
सुता कियो मन सोच, मृतक सो लियो जिवाई।
राघौ कुल-मरजाद तजि, काम क्रोध सब गुण गिले।
करुणा विरह विलाप करि, काजी महमूद पिव मिले ॥७५४

नमस्कार

द्वादश पथ जोगी नमो, नमो दशनाम दिगम्बर।
नमो शेष सोफी जु नमो जैनी सेतम्बर।
नमो बोध शिव शक्ति, नमो द्विज निगम उपासी।
नमो महन्त विरकत, नमो वैकुण्ठा-वासी।
विष्णु वैसनो वेद गुरु, तारक तीनो लोक के।
ये षट्-दरशन पुजि खलक मे, जन राघो हता शोक के ॥७५५

इति श्री जीवन दरशन समाप्त ॥

मनसूर का वर्णन

मनसूर ग्रलह की बन्दगी, ग्रनल-हक्क कहि यों मिले ॥
ग्रनल-हक्क ग्रनल-हक्क कहै मनसूर जु प्यारो।
काजी मुल्ला सबै कहैं मिलि गरदन मारो।
डरपे नहिं हुशियार भ्राप दिल साहिब मायो।
जारि बारि तन भस्म उदधि के माँहि बहायो।
राघो कंचन ताइके हक्क हकी कतियों मिले।
मनसूर ग्रलह की बन्दगी ग्रनल-हक्क कहि यों मिले ॥७५१

वाजीन्द ख्वाज को वर्णन

ख्वाज वाजीन्द दरि मवस की, ख्वाही राह ठाही करी ॥
मृतक मठो ऊंट देखि तिहिं ग्रति डर लाग्यो।
बिना बन्दगी बाद स्वाद सब तजि करि भागो।
सुन ही बनके माहिं काटि तिहिं नीर पिलायो।
करी बन्दगी सार भेषि नहिं निमिष खिलायो।
राघो बुरी कुसम तजि साहब मिले तबकरी ॥
ख्वाज वाजीन्द दर मवसकी ख्वाही राह ठाही करी ॥७५२

साखी

बन्दा शाह खुदायका यठा जीवस जीति।
नाम मुलक राघो कहै ग्ररपि ग्रलह को प्रीति ॥१
कुल ही जामां भेष के नाम कुमार महक्कु।
राघो तन मन भरसमें ग्रवगि मजिस परिपक्कु ॥२
इक दमरी के साग कों हुजरत कही हुशियार।
सवा मए राघो कहै बकसि बुह करतार ॥३
मत मालिक मिमलोक में शोभित सरवरदीन।
राघो जब ग्रौरै न कों दृष्टि परत हूं हीन ॥४
तब पैंत बदी पतिशाह ने जो संग बीते याहि।
शाहर सहित राघो कहै कुसवर ग्याहु ताहि ॥५
यों राघो ग्रायो येस के भेष गवाई वारि।
बरा खुदाई काम है, तू मुझ ग्रागे हारि ॥६
राघो सरवरदीन धनि मुनि कीन्ही इकतार।
मैदा मिश्री घी मिरी ताम कुपोरस यार ॥७

यो परमारथ के कारणें, जन राघौ हारचो सूर।
साहिब सरवरदीन विचि, पडदा ह्वै गये दूर ॥८
एक विपिन द्वै सिद्ध निपुन, साधक करी तरक्क।
अरस-परस शोभा सरस, राघौ दुवै गरक्क ॥६
मुसलमान मुरतजाअली, करी भली इक रोस।
जन राघौ काज रहीम कै, पुरई परकी हौस ॥१०

छपै छन्द
राघौ सन्त जु ऊतरे, सेउसमन घरि आयके ॥
पिता पुत्र पुनि मात, आहि अति पण के गाढे।
घर मे कछू नहिं अन्न, सोच सब दिन मन वाढे।
चोरी गए समन, फोरि घर अन पकरायो।
वणिक पुत्र सुत गह्यो, काटि मस्तक लै आयौ।
धड सूली मस्तक फिरचो, परसाद कियो जन भायके।
राघौ सन्त जु ऊतरे, सेउसमन घरि आयके ॥७५३

काजी महमद वर्णन

करुणा विरह विलाप करि, काजी महमद पिव मिले ॥
आठ पहर गलितान, छक्यो रस प्रेम सु मातो।
टोडी आशा राग, प्रीति सो हरि गुन गातो।
पुत्री को सुत मृतक देखि, मन दया जु आई।
सुता कियो मन सोच, मृतक सो लियो जिवाई।
राघौ कुल-मरजाद तजि, काम क्रोध सब गुण गिले।
करुणा विरह विलाप करि, काजी महमूद पिव मिले ॥७५४

नमस्कार

द्वादश पथ जोगी नमो, नमो दशनाम दिगम्बर।
नमो शेष सोफी जु नमो जैनी सेतम्बर।
नमो बोध शिव शक्ति, नमो द्विज निगम उपासी।
नमो महन्त विरकत, नमो वैकुण्ठा-वासी।
विष्णु वैसनो वेद गुरु, तारक तीनो लोक के।
ये षट्-दरशन पुजि खलक मे, जन राघो हता शोक के ॥७५५

इति श्री जीवन दरशन समाप्त ॥

छप्पय ए हरु तजि हिन्दू तुरक की, साहिब सों रहे सरस-रू[1]॥
छन्द आभा जग मग न्हांन विष्णु ब्यापक अप सीधो।
सिद्ध भयो असनाम भेष भगवां धरि सोधो।
उद्धवदास उन्मास स सति सों राम बतायो।
लाल चाल अजास तज्यो पियहि कों पायो।
राघौ रजमों धारि कै नर-नारी सब पर सरू।
ए हरु तजि हिन्दू तुरक को साहिब सों रहे सरस-रू ॥७२६

इति षट् दरसन मध्ये भक्त बर्णन समाप्त ॥

पृष्ठ १५८ पद्यांक ४६२ के बाद—

नृप और चंकचूल वर्णन

(साखी) चारि मास चुपके रहे नीच नगर मधि सन्त।
राघौ यो सिध समझ करि काल बचायो अन्त ॥१
पुर मधि पूरे सन्त जन पावन कीयो वदीत।
राघौ पुनि आगो चले, चित स्वाधीन अतीत ॥२
पुरवासी गोहन चले पहुचावन को पंच।
राघौ सावन सुख दियो उपदेश्यो धन सच ॥३
फहम बिना पूज तोरिके मरि लै आयो गोत।
राघौ पुनि प्रगट भये एक बचन परमात ॥४
कबर जिमो सन्यास-हित साघ सबद उर धारि।
राघौ पुनि मगरो रही बची बहुनी मक मारि ॥५

जसु कुठारा का वर्णन

नर-नारी मन बिन जिते ते नाहि न माया बसू।
राघौ त्यागी लप म्होर लकरी बीन तज्यो जसू ॥६
भूप रूप भगवन्त को आयो ताके पास।
झिलमिलाट करती म्हार राघौ देखो रास ॥७
नीति विचार निपट कर राघौ भूप में भूमि।
भूप अतीत में को पड्यो प्रब्य छुवे नहि भूमि ॥८
भूप भूपो प्रजा दण्ड तऊ न या सम भार।
राघौ उच्छिष्ट के लिये भूक-तन हू भण्डार ॥९

1 गुर्लरहू।

जदपि अजाची जाचई, तो शुभ भिक्षा लीन्ह।
राघौ अब हित ना गहै, सो अतीत परवीन ॥१०
जन राघौ राजा कियो, विन पर इती विचार।
जे कोई दुर्बल मिलै, ताहि करू उपकार ॥११
मनको चाणक दे चल्यो, नृप विवेक को पुज।
राघो गुरू ज्ञानी मिले, जहा सघन वन-कुज ॥१२
देख्यो लकरी बीनतो, दुर्बल उभानै पाव।
जन राघौ नृपनै कही, महोर बताऊ आव ॥१३
जन राघौ नृपनें कही, मोहर जिसी मल खात।
वर्ष बारह देषत भई, कहू न चलाई बात ॥१४
राघौ नृप विनती करी, स्वामी मे शिष तोर।
पूरे गुरु बिन उर-विथा, मिटे न तिमिर अघोर ॥१५
कही जसू तू द्रव्य सौं, बन्ध्यो द्रव्य वित-पूर।
हू कमीण तू नृपति नर, भिन कर भजि है दूर ॥१६
नृपति कही भाजो नही, मैं राखौं गुरु भाव।
जन राघौ दण्डव्रत कियो, मस्तक धारो पाव ॥१७
राघौ करि है लोक-लज, कही जसू नृप डाटि।
हू निकसोगो मीड लै, तू बैठेगो पाटि ॥ ८
नृपति कही चूको नही, धर्म खडग की धार।
राघौ देखि रु दौरि हू, लेहू सिर ते भार ॥१६
धन्नि सिष्य वह धन्नि गुरु, निह-स्वारथ निर्दोष।
सहर सहित राघौ कहै, भये भजन करि मोष ॥२०

पृ० १६५, मूल पद्यांक ३१६ के बाद—

रामदास वर्णन

इदव आप गऐ वनिजी अनि गावहि मोट धरें सिर बोझ सु भारी।
छद दास दुखी लखि मोट लई हरि जानि गऐ मन माहि विचारी।
होय कढी फुलका जलता तहु जाय कही धरि मोट उतारी।
आय रु देखत सो पछितावत रामहि थे सुनि मूरख नारी ॥८८२

गुजरात घटा उत्पन्नि, न्याती नगर जानी।
लोदीराम सु तात, लछि जाके बहुत्रानी।
वर्ष बीते दश एक, आप हरि दर्शन दीन्हो।
कर सो कर जब गह्यो, लाय अपने अग लीन्हो।
जन राघौ सुर-नर-दुर्लभ, सो प्रसाद मुख सो दियो।
जग जहाज परमहस, एक दादू दयाल प्रगट भयो ॥६५८

पृष्ठ १८३ प० ५५७ के बाद—

टीका

इदव छद
सीकरी शाह अकब्बर ने सुनि दादू अवलन फकीर खुदाई।
भगवन्त बुलाय लये इक साव तू ल्याव दरव्वड बेरिन लाई।
नृप करी तसल्लीम ततक्षन सूजे को भेज दिया तब भाई।
राघौ गयो दिन राति प्रभाति यो दादू दयाल को आन सुनाई ॥६७०
दादू दयाल चले सुनि के उनके सतिरामजी एक सहाई।
सिष सातक सगि लिये सब ही दिन सात मे साध पहुँचे जाई।
अवल्लि फजल्लि उभै द्विज देखित खोजत बूझन ले गय आई।
राघौ कहे धनि दादू अकब्बर साखी कबीर की भाखि सुनाई ॥६७१
आदि रु अन्त उत्पत्ति की सब वूभी अकब्बर दादू को भाई।
तुम इलम गैब अतीत मौकलि मौल न अगंति कैस उपाई।
दादू कही करतार करीम के एक शबद्द मे ह्वै सब जाई।
राघौ रजा दिल मालिक की भई सार हकीकति हाल सुनाई ॥६७२

छप्पय छद
इम कही अकब्बर शाह देहु दादू को डेरा।
तब विप्र विद्यापति कहि सुनो हजरति मन मेरा।
इनको मैं ले जाहुँ करो खिजमति सो इलहणा।
तब शाह खुशी ह्वै कहो मजब सुनि हमसो कहना।
बहुत खूब हजरात जिवै गुदराऊँगा आनिकै।
जन राघौ तब रात दिन अति खोजे इन आनि कै ॥६७३
द्विज अपने डेरे जाय जावता कीन्हो भारी।
नृप विवेक को पुज बात अति भलो विचारी।
सब विधि बहुत विछाहना पादारघ परणाध करि।
अचवन को कोरे कलश तुरत मगाये नीर भरि।

पृ० १७८, प० १४६ के बाद –

छप्पय   मर्मेति मारफत मोज मरद मक्के कों आया।
छंद   जिकर करत गय आम परे टुक पैर झुलाये।
रिषये मआ धर कैफ कौन यह परथा धिकारा।
कारो बाहर खैंच मसह दिस पाव पसारा।
कही मवक्का यह देहु दिस मालिक मस्यो।
चेतन लाग अबै भई मजमति अरध को।
जन राघो सुलतान दिस फिरयो वस हु दिस मकों ॥१४१

पृष्ठ १७९ प० १५१ के बाद

दादू दिल दरियाव हंस हरिजन तहाँ भूलै।
गगन मगन गलितान, राम रसनां नाहि भूले।
उपजे महन्त मराल मुक्ति मुक्ताहल भोगी।
रहत अथम अमबोल विष भमि होहिं न रोगी।
मन माला गुरु तिलक तत रटणि राम प्रतिपाल की।
जन राघो छाप छिपे नहीं दादू दीनदयाल की ॥१५४

पृष्ठ १८० प० १६० के बाद—

दादू दीनदयाल सो धमि जननी एक जन्यो॥
भक्ति भूमि दे दान नाम नौबत्ति बजाई।
चारी बर्ण कुल धर्म सबन कों भक्ति दिढाई।
हरि बिन आन जु धर्म तास के माहि उपासी।
पूरण ब्रह्म अखण्ड, तहाँ की करत खवासी।
हद छाडि बेहद गयो जग तार्यौ नाहि न तप्यू।
दादू दीनदयाल सोध निज जननी एको जग्यो ॥१५६
यह चवदह रतन प्रगटे उदधि म दादू दयाल प्रगट भयो॥
महा पुत्र की चाह विप्र स्नानै जल मांही।
बालक-बूवा होय तिरता आए ता मांही।
ऋषि ह लिये उठाय जिन्ह मरमुव से दरसे।
कर्ता पुत्र यह दियो कहा हमरो को करसे।
कोटानकोटि जीव तिरहिंगे परा सम्य राघो कह्यो।
यह चौदह रतन प्रगटे उदधि म दादू दयाल प्रगट भयो ॥१५७

गुजरात घटा उत्पन्नि, न्याती नगर जानी।
लोदीराम सु तात, लछि जाके वहुवानी।
वर्ष बीते दश एक, आप हरि दर्शन दीन्हो।
कर सो कर जब गह्यो, लाय अपने अग लीन्हो।
जन राघौ सुर-नर-दुर्लभ, सो प्रसाद मुख सो दियो।
जग जहाज परमहस, एक दादू दयाल प्रगट भयो ॥६५८

पृष्ठ १८३ प० ५५७ के बाद—

टीका

इंदव छंद
सीकरी शाह अकब्बर ने सुनि दादू अवलन फकीर खुदाई।
भगवन्त बुलाय लये इक साव तू ल्याव दरव्वड बेरिन लाई।
नृप करी तसल्लीम ततक्षन सूजे को भेज दिया तब भाई।
राघौ गयो दिन राति प्रभाति यो दादू दयाल को आन सुनाई ॥६७०
दादू दयाल चले सुनि के उनके सतिरामजी एक सहाई।
सिष सातक सगि लिये सब ही दिन सात मे साध पहुँचे जाई।
अवलि फजलि उभै द्विज देखित खोजत बूझन ले गय आई।
राघौ कहे धनि दादू अकब्बर साखी कबीर की भाखि सुनाई ॥६७१
आदि रु अन्त उत्पत्ति की सब बूझी अकब्बर दादू को भाई।
तुम इलम गैब अतीत मौक्कलि मौल न अगंति कैस उपाई।
दादू कही करतार करीम के एक शबद्द मे ह्वै सब जाई।
राघौ रजा दिल मालिक्क की भई सार हकीकति हाल सुनाई ॥६७२

छप्पय छंद
इम कही अकब्बर शाह देहु दादू को डेरा।
तब विप्र विद्यापति कहि सुनो हजरति मन मेरा।
इनको मैं ले जाहुँ करो खिजमति सो इलहणा।
तब शाह खुशी ह्वै कहो मजब सुनि हमसो कहना।
बहुत खूब हजरात जिवै गुदराऊँगा आनिकै।
जन राघौ तब रात दिन अति खोजे इन आनि कै ॥६७३
द्विज अपने डेरे जाय जावता कीन्हो भारी।
नृप विवेक को पुज बात अति भलो विचारी।
सब विधि वहुत विछाहना पादारघ परणाध करि।
अचवन को कोरे कलश तुरत मगाये नीर भरि।

मक्ष मोजम मति भाव सों महल दिखाये निज नये।
जन राघो भूपसों निपट विरक्त बचन स्वामी कहे ॥१७४

बझूदास बहु ज्ञान को भिन्न-भिन्न पूछ्यो भेद।
दादूजी इस देह में कहत हैं चारों वेद।
तब निर्वाण-पद आपणों, स्वामी उचरै बैन।
जिन देती प्रत्य-दृष्टि ह्वै सो गुण निरखों नैन।
गुरु लक्ष बिन उर बज्र, ब्रह्मा जड़े कपाट।
जन राघो स्वामी कही बिकट ब्रह्म की बाट ॥१७५

इत अनभै को पुञ्ज भरतहि कवि चतुर बिनाणी।
ज्ञान घटा परसाहि सुहर्षा अन्त्र बाणी।
इत आगम उत निगम कह्यो सग बरणों गाथा।
तब स्वामी दादू हँसे, बीरबल नायो माथा।
परचा दिन चालीस यों अष्ट पहर नितप्रति नई।
जन राघो नृप की नसा, मन बच कर्म करि कै भई ॥१७६

यों गयो अकब्बर पासि बीरबल बुद्धि को आगर।
हमरति मैं हैरान साध दादू सुख-सागर।
सबब बहुत बसियार ज्ञानमुक्ति कहत न आवै।
तब कही अकब्बर एक बेर मुझि क्यों न मिलावै।
दरगह जही से आय अब तलब बहुत दीदार की।
जन राघो धनि रामजी यों ओट बुकावै धारकी ॥१७७

मनहर छंद

दूर हो के तखत रु पाए जाके दूर ही के
दूर ही के दादू दास दूर मम भाव ही।
दूर ही के मुमीजन गावत गुणानुवाद,
दूर ही को सभा करजोर शीश नावहीं।
धरनी आकाश माही देखे सो अमर मांही
दूर को दिदार कियो पाप-ताप जावही।
राघो कहै ताकी छबि मानो उदय कोटि रवि
दरबत की महिमा कछु कहत न आव ही ॥१७८

छप्पय छंद

इम देखि तखत पुनि नूर को, शाह अकब्बर को ससो मिट्यो ।।
खडो करत अरदासि पार किनहुँ नहिं पाए।
तुम जहाँन के वीचि खुदा के दोस्त आए।
मेरी बगसो चूक, अकब्बर ऐसे भाखै।
हम यह करत अरदास, साहिब तुम सरनै राखै।
ऐसे आप काशिया, अफताप तुदै ज्यू तम तिप्यो।
यम देखि तखत पुनि नूर को, शाह अकब्बर को ससो मिटचो ।।९७९
यो स्वामी दादू चलत, बीरबल अति विलखानो।
मोहर रुपैया धरै, प्रभुजी एह रषानो।
हम यह हाथ छुयें न लेह को चेला-चाँटी।
तुम राजा हम अतिथि देहु विप्रन को बाँटी।
बहुरि बीरवल ले गयो, अकब्बर के दरबार।
यौं राघौ चलते रस रह्यो, जग माहि जय जयकार ।।९८०

इदव छंद

आय रहे दिवसा सरके तट स्वामि कह्यो सहनान करीजै।
शिष्य जगो यह कहत भयो प्रभु तावि जिलेबी जिमावन रीजे।
जानि गये सबके मन की हरि ध्यान करयो सिधि आय खरीजै।
राघौ कहै हरि छाव पठावत पात वची जल माहि करीजै ।।९८१
आत ही आमेर भई एक नाथहु वैन सुबोलि सुनायो।
स्वामी करी जरना मन मे सिष टलिहु जोगि अकाश उडायो।
स्वामी खिजे सिषगा करुणा पद जोगि सिलासुधरा परि आयो।
दुष्ट पर्ले तजि आय परयो पग राघौ कहै जब शिष्य कहायो ।।९८२

मनहर छंद

कपट सो तुरक सगोती लायो ढाक करी,
जानि गये स्वामी हरि भोग न लगाये हैं।
कह्यो परसाद लेहु स्वामी खोलि ऐहै,
बूरा भात मेवा गिरी प्रगट दिखाए हैं।
रामत करत सुने माधो, कारिण टोक मधि,
स्वामी को बुलाए हिये, अति हुलसाए हैं।
राघौ कहै गुरु महा छै मे सन्तन देखि,
रिधि थोरी जानि आय स्वामी को सुनाए हैं ।।९८३

इन्दव स्वामि कह्यो जिन सोच करो हरि ध्यान करो प्रभु पूरण हारे।
छन्द सामगरी गंज मांहि मंगाय रु भोग लगा हरि ता महि डारे।
रिद्धि अटूट भइ दिन सात सो जस भयो जग भाग मवारे।
लोग मिरचि प्रसाद दिये भुग राघो कहै गुरु बहुरि पधारे ॥१८४
देखि प्रताप जल्यो अति दुष्ट कपट छिपाय रु स्वामि बुलाए।
मारन को खरिए गाडिहिं डौकस जानि गए चित नांहि डुलाए।
काढि तलाक चले ततकालहि लोहर लाइत बेगि बुलाए।
राघो कहै जल कूप परे मसि गा कलमा पद भौरि चलाए ॥१८५
बानि प्रकाश भई मम रूपहि भाय मिलो हरि सैन करी है।
ढूंढि सथान मिराने मकान जु राखि मना मन चिन्त परी है।
दास नरान निरानहु को नृप दे सुपनों हरि मति हरी है।
दक्षिण तें ततकालहि आय रु राघो कहै गुरु प्रीति खरी है ॥१८६
मन्दिर में पधराय रखे गुरु भीर भई तब बाहर आये।
कोउ दिना तर पोर रहे पुनि शेष के साथ सु खेजर आए।
मासक तीन हुई हरि की सब तत्व मिलाए रु ब्रह्म समाए।
राघो कही बुधि के अनुमान सु दादुदयाल को पार न पाये ॥१८७

पृ० १८६ पद्यांक १७२ के बाद—

करतार सुनि करुणा जिनकी जन चारि विचारि रु ले घरि आए।
रीति बड़े की बड़े पहिचानत सार करी बहु भांति जिवाए।
कपड़ा हथियार तुरी करचि दई यों करिके घरिकों पहुंचाए।
राघो कहै सति सुन्दरदासजो आवत ही मथुरा मधि न्हाए ॥१० •

पृ० १८५ मूल पद्यांक १९९ के बाद—

सुन्दरदास वर्णन मूल

छप्पय गुरु दादू कइ शिष्य भयो सधु नृप बीकानेर को।
बादशाह करि हुकम पठायो काबलि धाई।
जुद्ध करि भाबा पकयो समक्षि किन लियो उठाई।
ताजा है राठौड तुरी चढ़ि मथुरा आयो।
मिल्यो देस को लोग सति समचार सुनायो।
राघो मिमि चतुरै कही मग मै सामरि सैर को।
गुरु दादू कइ शिष्य भयो सधु नृप बीकानेर को ॥१९९

पृ० १६० पद्याक ३६० के वाद —

इन्दव माँहि रहाय रु वार मुँदाय सु प्राण चढाय समाधि लगाई।
छन्द मारि विलाय लै माँहि नखाय कही द्विज जाय न होय भलाई।
माँहि मुवो सिव होय लिख्यो विधि वासि उठ्यो सुनि राय रिसाई।
राय निसाय दियो वलि वायक ह्यो सिष श्राप जु खाज गँवाई ॥१०१७

अरेल श्रीफल चन्दन तूप चिता विधि सो करी।
अगनि सु दई लगाय देह अति परजरी।
ब्रह्मड फूटि सुशव्द होत रकार रे।
परिहा राघौ खल भये फट राय दृग धार रे ॥१०१८

पृ० १६० पद्याक ३६१ के वाद—

मनहर काशी को पण्डित महानाम जग-जीवन,
छन्द सुदिग्गविजै कृत आम्रावती सु पवारे है।
सुने दादू सन्त वड दर्शन को गयो तट,
चर्चा को उभावो अति पण्डित जु हारे हैं।
प्रश्न कीयो है जाय स्वामी दियो समझाय,
रामजी मिले सुकरि वैन उर धारे हैं।
रघवा मिटी है आँट पोथा द्विज दीन्हाँ वाँटि,
मन वच कर्म स्वामी दादूजी तुम्हारे हैं ॥१०२०

पृ० १६१ पद्यांक ३६३ के वाद—

अरेल देह त्यागतो वेर कही सब साधि का।
धरि आज्यो मम देह श्रीगुरु पादुका।
चलो वीच जगत हट्ट पट परे करे।
परहा राघौ रथ सुरीति देख चर पग परे ॥१०२३

दोहा जगजीवन धनि राघवै, रीत भलि अति कीन।
देह कारवज कारण मिले, आप भये व्रह्मलीन ॥१

पृ० १६३ पद्याक ४०२ के वादे —

चतुरदासजी का वर्णन मूल

छप्पय मरदनियाँ की छाप शीश शिष्य चतुरदास दयाल को ॥
व्राह्मन कुल उत्पत्ति जगत गति निपट निवारी।
गगन मगन गलतान भजन रस मे मति धारी।

उर बैराग अपार सार ग्राही गुण सागर।
निहकामी निर्दोष मोष मारग मधि नागर।
पाम परमपद विमल मिल गयो भानि भय काल को।
मरदनियाँ की छाप चीव शिष्य चतुरदास दयाल को॥१०३३
चतुरदास चौकस चतुर, धीर वीर ध्रुव धर्मधर॥
गुरु सेवा को नम प्रेम नित नूतन लायो।
भजन ध्यान की खान ज्ञान उर उदिग सवायो।
गुरु दादू प्रताप पाप, दुख यु दोष निवारे।
रह्यो न संसो कोय काज सब सुधर सँवारे।
पुर संग्रावट वास बसि मिले महा सुख सिन्धुवर।
चतुरदास चौकस चतुर धीर वीर ध्रुव धर्मधर॥३४

पृ० १६५ पद्यांक ४०८ के बाद—

साधूजी का वर्णन

इन्दव दादूजी दीन दयालु के पथ में साधुजी साध शिरोमणि सारो।
छन्द बड़ो भजनीक भगति को पुंज हो नामी महा करतूति करारो।
धर्म नहीं गमतान मतो गह्यो धर्म की टेक निबाहनहारो।
शीश सर्वस दियो जगदीश हि राखी रह्यो जग सेति नियारो॥१०४१

मनहर भगति को पुंज भजनीक बड़ो शूरवीर,
छन्द आसन विभूति वामें साधू साध सारो है।
बालापन माँहि जाके विरह अत्यन्त बढ़ि,
प्रभु-रुचि प्रीति गढ़ि लग्यो सब बारो है।
आवे कोऊ वेवमाल बूझे हित नाम धाम
रोग को वमावे मोहि भयो सोच भारो है।
काहू शिष्य स्वामीजी का पद गायो सुनि धायो
राघो पूछ बंद मिले कियो निर्विकारो है॥१०४२
आसन को दिढ़ कर शास मधि ध्यान धर,
चिद्रूप व्यापक में गमत पू भीनो है।
काहू नर बिना ज्ञान नहे कीर्ह समाई चोट
आपने पु भई चोट उपरी है खोट तन एक महा चीनो है।

ताहि समै सेवकहु दर्शन को आयो जित,
गुरुजी लगाई कित,
स्वामी कही हकीकत शीश चरण दीनो है।
राघौ वात छानी नहीं, प्रगट जगत माही,
नासिक को मूंदिवार पच्छिम को कीनो है ॥१०४३

पृ० २०२ मू० पद्याक ४९८ के वाद—

दादूजी के सेवकों का वर्णन

छप्पय दादू दीनदयाल के, ए सेवग भूपति भले ॥
छन्द अकवर शाह वडमती, वीरवल बुधि को आगर।
खघार स्यघ नरायण (भापर) सिह, कृष्णसिह भोज उजागर।
ईश्वर कुछवाहोहि, ताहि गुरु दादू भाए।
लाडखान घाटवै दयाल दादू पधराए।
पीथो निर्वाण उर आण धरि, पुनि खीची सूरजमलै।
दादू दीनदयाल के, ए सेवग भूपति भले ॥१०६४

बाईया को वर्णन

दादू दीनदयाल की, सगति ए वाई तिरी ॥
नेमा के गुरु नेम, तहा गुरु दादू पूजे।
रम्भा जमुना जानि गगा छोडे भ्रम दूजे।
लाडा भागा सन्तोषी, राणी हरिजाणी।
रुक्मणि रतनी भलै, गुरू की रीति पिछाणी।
जगत जसोधा जस लियो, सीता सान्ति हृदय धरी।
दादू दीनदयाल की, सगति ए वाई तिरी ॥१०६५

पृष्ठ २३५, प० ५०८ के बाद—

मीठे मुख वचन रु कचन ज्यू क्रान्तिवन्त,
दिपत लिलाट पाट स्वामी प्रहलाद को।
हाथ को उदार हरि हेत होते राखे नाही,
सुध बुध महा सन्त जैसे सनकादि को।
भगति को पुज भगवन्त जु रिझायो जिन,
भूत भविष्य वर्तमान आज्ञाकारी आदि को।

मोपो नांही रामरेप प्रीति सेती पूज्यो भेप,
राघो कहै रामजी निभाहेंगे व्रत साम को ॥१०७२

इदव कलिकाल में निहाल भये प्रहलाद मिले प्रहलाद की नांई।
छन्द उदार अपार दया सनमान, इसी विधि सों रिझिए जिन सांई।
सील सन्तोष निर्दोष निरम्मल सन्तन सों न दई कछु बांई।
राघो कहै गुरु के गुरु सों मिलियों मुजरो कियो राम के तांई ॥१०७३

पृष्ठ २४१ प० ११ के बाद—

दादूदयालजी के शिष्यों के भजन-स्थानों का निरूपण उदाहरण

मनहर दादूजी दयाल पाट गरीब मसकीन ठाठ
छन्द जुमसबाई निराट निराणैं विराज ही।
बखनों संकर पाक बसो चांदो प्राग टाक
बडो उ गोपाल ताक गुन्धारे राज ही।
सांगानेर रज्जब पु, बेवल दयालदास
घडसी कडेलवासी धरम की पाज ही।
इवे पूरणदास तेजानन्द जोधपुर
मोहन सु भजनीक आसोप निवाज ही ॥१०९८
गूलर में माधोदास बिदाद में हरिसिंह,
चमदास संग्रामटि कियो तन काज ही।
विहाणी प्रयागदास डीडवाणै है प्रसिद्ध
सुन्दरदास दूसर सु फतेपुर गाजही।
बनवारी हरदास रतिये थंगल मधि
सादूराम मांडोठी में नीके नित छाजही।
सुन्दर प्रल्हाददास बाटडे सु छीड मधि
पूरब चतुरभुज रामपुर बाराजही ॥१०९९
नराणदास मांगल्यो सु डांग मांही इकलोद
रणत-भवरगढ़, चरणदास जानिए।
हाडोती गमायचा में माधूजी मगन भये
जगोजी भडोंच मधि प्रचाधारी मानिये।
लालदास नायक सु पीरान पटणदास
फोफले मेवाड़ मांही टीलोजी प्रमानिए।

सादा पर्मानन्द इंदोर वली मे रहे जपि,
जैमल चौहान भले बोलि हरि गानिये ॥११००
जैमल जोगी कछाहा वनमाली चोकन्यौ सु,
साभर भजन करियो वितान तान तानियो।
मोहन दफ्तरी सु मारोठ चिताई भलै,
रघुनाथ मेडते सु, भाव करि आनियो।
कालेडेहरे चत्रदास, टीकमदास नाँगले मे,
झोटवाडैं झाझू वाझू, लघु गोपाल घानियो।
आम्बावति जमनाथ, राहौरी जनगोपाल,
बारै हजारी सतदास चाँवण्डे लुभानियो ॥११०१
आधी मे गरीरबदास, भानुगढ माधव के,
मोहन मेवाडा जोग, साधन सो रहे हैं।
टेटडे मे नागर-निजाम हू ,भजन कियो,
दास जगजीवन सुदचो, साहरि लहे हैं।
मोह दरियाई सु, समिधी मधि नागर-चाल,
बोकडास सत जु, हिंगोल गिरि भए हैं।
चैनराम काणोता मे, गुदेर कपिल मुनि,
श्यामदास झालाणा मे, चोडके मे ठये हैं ॥११०२
सौक्या लाखा नरहर, अलूदै भजन कर,
म्हाजन खण्डेलवाल, दादू गुरू गहे हैं।
पूरणदास ताराचन्द, म्हाजन मेहरवाल,
आधी मे भगति करि, काम क्रोध दहे है।
रामदास राणी बाई, झाजल्या प्रगट भये,
म्हाजन डिंगायच सु, जाति वोल सहे हैं।
बावनहि थाभा अरु, बावन महन्त ग्राम,
दादूपन्थी चतरदास, सुनी जैसें कहे हैं ॥११०३
इति दादू सम्प्रदाय मध्ये भक्तवर्णन समाप्त ॥

पृ० २०६ प० ४४४ के बाद—

अथ पुनि समुदाय-भक्त वर्णन

अरेल यम हरि सो रत हरिदास, पठाण भाण भयो भक्ति को।
धनि माधो मुगल महन्त, गह्यो मत मुक्ति को।

सोधो नांही रामदेव प्रीति सेती पूज्यो भेष,
राघो कहै रामजी निवाहेंगे व्रत साध को ॥१०७२

छप्पय कलिकाल में मिहाल भये प्रहलाद मिले प्रहलाद की नांई।
उदार अपार दया सनमान, इसी विधि सो रिझिए जिन सांई।
शील सन्तोष निर्दोष निरम्मल सन्तन सों न दई कहु धांई।
राघो कहै गुरु के गुरु सों मिलियो मुजरो कियो राम के ठांई ॥१०७३

पृष्ठ २४१ प० ५११ के बाद—

दादूदयालजी के शिष्यों के भजन-स्थानों का निरूपण उदाहरण

मनहर दादूजी दयाल पाट गरीब मसकीन ठाठ
छप्पय जुगलबाई निराट निरालो विराज ही।
बलनों सकर पाक जसो चांदो भाग टाक
बड़ो उ गोपाल ताक गुरुद्वारे राज ही।
सांगानेर रज्जब सु देवल दयालदास
घड़सी कड़ेलबंधो धरम की पाज ही।
ईडवै पूजणदास तेजानन्द जोधपुर,
मोहन सु भजनीक आसोप निवास ही ॥१०९८
गूलर में माधोदास विदाद में हरिसिंह
चत्रदास सग्रावटि कियो सन काज ही।
विहाणी प्रयागदास डीडवाणे है प्रसिद्ध
सुन्दरदास धूसर सु फतपुर गाजही।
वनवारी हरदास, रतिये जंगल मधि
माधुराम मांडोठ में भौरे नित छाजही।
सुन्दर प्रल्हाददास पाटन सु छीड मधि
पूरण घनुरमुख रामपुर बाराजही ॥१ ९९
मराणदास मांगल्या सु डांस मांही दसोर
रगाज मेंराणक, चरणदास जानिए।
टहोली गंगायचा में मानूजी मगन भय
जगाजी भराण मधि प्रभादासी मानिये।
मामदास सांभर सु पारान परशराम
चोटो मेवाड़ मांही टीलोजी प्रमानिए।

पृ० २३१, प० ४६१ के बाद—

कडवा तजत किराट को, गई अप्सरा वरनकू ॥
भक्ति करत इक भूप, सही कसणी अति भारी।
तव भेटे भगवान, आप त्रिभुवन-धारी।
नारी पलटि नर भयो, सीत परसादी पाई।
भाड भगत प्रतिछ नृपत, पूज्यो निरताई।
कवर कठारा की कथा, जन राघौ कही जग-तिरन को।
कडवा तजट किराट को, गई अप्सरा वरनकू ॥१२५१

खरहंत को वर्णन

सत-सगति परताप ते, निकसि गयो सब खोट।
घुनही तोरी घान कै, आयो हरि की वोट ॥

अत्यज एक अन्तर मही, धुनि धुनिही हिरदै घरी ॥
दुनी देख वेहाल, काल को बहुत पसारो।
लुक्यो धाम के माहि, मूदि पग घर को द्वारो।
ाम्वानेरी विप्र, तास ने मोठ पठाई।
र ,जो सैन, भक्त मेरो वह भाई।
धनि धनि रामजी, खरहन्त की रक्षा करी।
एक अन्तर मही, धुनि धुनिही हिरदै घरी ॥१२५२

अन्तज कूम अवतार कहर पछि परहरयो।
मत्स्यवत्सल रसिपाम काल भ्रम परहरयो।
जन राघो पट मृत, व्यास अजपा आपर्सो।
निधि दिन गोष्ठी शाम आपमों आपर्सो ॥११२२

पृ० २०६ प० ४४५ के बाद—

निपटजी का वर्णन

निपट कपट सब छाडि कर, एक अखण्डित उर धरे॥
उत्तम कविसो ऐन काव्य सब के मन भाव।
मनहर छन्दव छप्पै झूलणां खूब सुनावै।
ज्ञानी अति गलितान ब्रह्म अद्वैतहि गायो।
साखी दे आएक भरम गहि अमर उडायो।
आप निरंजन की तहां जिते कवित राघौ करे।
निपट कपट सब छाडि करि एक निरंजन उर धरे॥११२४

पृ० २१८ प० ४६४ के बाद—

करमैती कर्म न भग्यो साहा पती दोस दह।
गृह ते निकसि भागि करक को मन्दिर कीन्हो।
तीन रैन तहाँ बसी बहुरि मारग पथ दीन्हो।
ब्रज भूमि में जाय महा ऊँचे स्वर रोये।
लोक कुटुम्ब सब त्याग पंथ हरिजी को जोवै।
जन राघो हरिजी मिले सुख प्रगट्यो दुख गयो दह।
करमैती कर्म न भग्यो साहा पैसो मोहा दह॥११८६

पृ० २३० मू प ४८६ के बाद—

पत्तोजी का वर्णन

हुकुम हसम घर माल तजि असिराम उर मुख कियो॥
मनी नाम सों प्रीति रीति धीरे मन लागी।
पिया ब्रह्म रस नीर धाम धर्म छाडि र नाठी।
गयो पातामा पासि ज्ञान वैराग दिपाए।
दोऊ करम बांग पांच दाऊ मुरझाए।
राधी भक्ति करी हमो श्रवण सुमत उमग्यो हियो।
हुकुम हसम घर माल तजि अमिराम उर मुख कियो॥१२४६

पृ० २३१, प० ४६१ के बाद—

कडवा तजत किराट को, गई अप्सरा वरनकू ॥
भक्ति करत इक भूप, सही कसणी अति भारी।
तब भेटे भगवान, आप त्रिभुवन-धारी।
नारी पलटि नर भयो, सीत परसादी पाई।
भाड भगत प्रतिछ नृपत, पूज्यो निरताई।
कवर कठारा की कथा, जन राघौ कही जग-तिरन को।
कडवा तजट किराट को, गई अप्सरा वरनकू ॥१२५१

खरहंत को वर्णन

साखी सत-सगति परताप ते, निकसि गयो सब खोट।
घुनहो तोरी धान कै, आयो हरि की वोट ॥

छप्पय छंद अत्यज एक अन्तर मही, धुनि धुनिही हिरदै धरी ॥
दुनी देख वेहाल, काल को बहुत पसारो।
लुक्यो धाम के माहि, मूदि पण घर को द्वारो।
आम्बानेरी विप्र, तास ने मोठ पठाई।
दईरामजी सैन, भक्त मेरो वह भाई।
राघौ धनि धनि रामजी, खरहन्त की रक्षा करो।
अत्यज एक अन्तर मही धुनि धुनिही हिरदै धरी ॥१२५२

दोहा साहिब के घर वस्तु बहु, खरहन्त अपना खोठ।
गेहू चावल घी घणा, लिख्या भाग मे मोठ ॥

पृ० २३३, प० ४६८ के बाद—

टूटै व्रत आकाश, कौन करता विन जौरे।
परमेश्वर पति राखि, होह परजा कै वोरे।
वूडत बाजी राखि, विधाता चित्र घिनाणी।
चौरासी लक्ष जोनि, पूरि सब को अन-पाणी।
रघवो प्रणवत रामजी, दृष्टि न कीज्यो कहर की।
जतो सती को पण रहै, करि वर्षा एक पहर की ॥१२६०

पृ० २४६, प० ५५५ के बाद—

अनन्यशरणता

मनहर छन्द

दादू को सेवक हूं दादूजी सहाय मेरे
दादूजी को ध्यान धरूं दादू मेरे पक्ष है।
दादूजी रिझाऊं नित नाम लेऊ दादूजी को,
दादू-गुन गाऊं यश दादूजी सों पक्ष हैं।
दादूजी सों नातो रसनातो रहू दादूजी सों
दादूजी अधार मेरे दादू धन मन है।
कहै दादूदास मोहि भरोसो एक दादूजी को
दादूजी सों काम दादू भव के हरन है॥१२८०

इति राघौदासजी कृत मूल भक्तमाल सम्पूर्ण॥

परिशिष्ट २

दादूशिष्य जग्गाजी रचित

भक्तमाल

(दादूपन्थी सम्प्रदाय की प्राचीन व सक्षिप्त भक्तमाल)

चौपाई ढाढियो हरि सन्तन केरो। निसदिन जस करौ मे चेरौ ॥
प्रथमे गुरु दादू मैं जाच्या। दिया राम धन दुख सब वाच्या ॥१
चन्द सूर धरती असमाना। इनहू कह्यौ रामको ग्याना ॥
एक पवन अरु दूजा पानी। तेज तत्त कह्यौ राम वखानी ॥२
ब्रह्मा विष्णु महेश हनुवत भाई। इनहू हरि की सन्धि वताई ॥
गोरष भरतरी गोपीचन्द। इनहू कह्यौ भजौ गोविन्द ॥३
सन्त कणेरी चरपट हालो। प्रिथीनाथ कह्यौ हरि मार्ग चाली ॥
अजैपाल नेमीनाथ जलध्री कन्हीपाव। इनहू कह्यौ भज समरथ-राव ॥४
घूघलीमल कथड भडगी विप्रानाथ। इनहू कह्यौ हरि देवे हाथ ॥
नागार्जुन बालनाथ चौरगी मीडकीपाव। इनहू कह्यौ भज समरथ-राव ॥५
सिद्ध गरीबदेव लहर ताली। चुणकर कह्यौ लाय उनमनी ताली ॥
गणेश जडभरथ शकर सिद्ध घोडाचोली। इनहू कह्यौ राम लै रोली ॥६
आजू-वाजू सुकल हंस ताविया भाई। इनहू कहयौ गोविन्द गुण गाई ॥
वगदाल मलोमाच सिंगी रिष अगस्त। इनहू कहयौ राम भज वस्त ॥७
रिषिदेव कदरज हस्तामल व्यास। इनहू कहयौ भज सासैं-सास ॥
ऋषि वशिष्ट जमदग्नि पारासर मुचकदा। इनहू कह्यौ भज हरिचदा ॥८
गर्ग उत्तानपाद वामदेव विश्वमात्र भाई। इनहू कहयो साची राम सगाई ॥
भृगी अगिरा कपिल दुरालभा। इनहू कहयौ हरि भज सुलभा ॥९
दुरवासा मार्कंडेय मत्तन नासाग्रेह। इनहू कहयौ हरि भज प्रेह ॥
अष्टावक्र पुलिस्त पुलह गगेव। इनहू कहयौ करो हरि-सेव ॥१०
सुभर च्यवन कुभज गजानद। इनहू कहयौ हरि भज आनद ॥
पहुपाल्या अदे कुभ मुजजा भगनो। इनहू कहयौ राम भज घनो ॥११

शांडिल्य कुरसवा जामवाभिनय श्यमा। इनहू कह्यो राम भज नमा ॥
दासजोति दासोति सहस्रजोति गालबरिषि। इनहू कह्यो राम रस चषि ॥१२
मांडव्य पिपलाद उद्दालक नासकेस। इनहू कह्यो करि हरि सौं हेत ॥
कर भमन नारद प्रमुख सरस्वती। इनहू कह्यो राम भज पती ॥१३
सनक सनंदन सनतकुमार। इनहू कह्यो भज राम संसार ॥
कामाहरि भतरिप प्रमुखा। इनहू कह्यो भज समरथ सुखा ॥१४
चहुपाल्या मर्द दमसा चमासे। इनहू कह्यो राम हरि रमासे ॥
अब्राहम रसूल बमेस महामदी मुल्ला। इनहू कही मला की गल्ला ॥१५
फरीद हाफिज ईसा मूसा। इनहू कह्यो भला तोहि दूसा ॥
बाज वाजिद किसन समन सहबाज। इनहू कह्यो मल्ला की आवाज ॥१६
बमल का बादशाह बल बूढा मनसूर। इनहू कह्यो रख मला हजूर ॥
मलहदाद मनलहक खान। इनहू दिया नाम निसान ॥१७
काजी महमूद कहा पठाना। इनहू दिया नांव निज खाना ॥
कामाग्री संभावतो सविया मन्दासशाह। इनहू कह्यो भज समरथ साह ॥१८
एता सिद्ध ऋषीसुर तुरकी संत कगियो गावै। और भगतनि पै मांग पावै ॥
ध्रू प्रहलाद शेष सुखदेवा। सत्यराम की कहि मोहि सेवा ॥१९
नामदेव तिलोचन कबीर पूरी स्वामी। इनहू कह्यो भज अन्तरयामी ॥
रामानन्द सुखा श्रीरंगा। नानक कह्यो रहहु हरि-संगा ॥२०
पीपा सोंभ्र धना रैदासा। राम राम की वधाई भासा ॥
सुकाम सेठ जनक रांका बांका। इनहू दिया हरिनाम का नाका ॥२१
पदमनाभ आधारू नरसी। सो म कह्यो तोकी हरि वरसी ॥
उमपति मुनपति हंस परमहंस। इनहू कह्यो राम भज अंस ॥२२
कोसल बणी नापा हरिदास। इनहू कह्यो हरि तेरे पास ॥
अगद भुवन परस अस्सेन। ए भी उधा रामधन देन ॥२३
सूर परमानन्द माधौ जगनाथी। इनहू कही मोहि राम की साखि ॥
छीतर वहबल सीहा भाई। इनहू मोकौ दई दिखाई ॥२४
कीता सन्ता चत्रभुज कान्हा। प्रगट राम कह्यो मोहि छाना ॥
दत्त दिगम्बर श्रीचन्द भरथरि भारथी। इनहू बात कही इक सूधी ॥२५
ग्यान तिलोक मति सुन्दर मीत। मुकुंद कह्यो रह हरि की सीत ॥
विचिमा बेमिया हासण भव हाथी। इनहू कह्यो राम है साथी ॥२६

दीप कील्ह अरु वेलियानन्द। भर्तृ कह्यौ भजि राम गोविन्द ॥
घाटम द्यौगू सूरिया आसानन्दा। इनहू कह्यौ राम भजि गदा ॥२७
सधना सावल मुवा अर गालिम। इनहू कह्यौ राम भजि खालिम ॥
तापिया लोदिया सायर अरु नीर। इनहू कह्यौ करि हरि सू सीर ॥२८
वोहिथ पैवत हरिचन्द ऋषीकेश। इनहू दियो राम उपदेश ॥
डूगर विसालप परमानन्द वीठल। इनहू कह्यौ राम भज मीठल ॥२९
कान्हैयो नाइक वैकुण्ठ-वन। सारी कह्यौ हो हरि को जन ॥
लाडरण वालमीक भैरू कमाल। इनहू कह्यौ हरि मारग हाल ॥३०
हातम छीहल पदम धूधली। इनहू कह्यौ भज राम भली ॥
जैदेव कृष्ण राम लिछमरण भाई। इनहू हरि-मारग दियो वताई ॥३१
सीता माता मैंरणावती बाई। पारवती अरु धू की माई ॥
सरिया कुभारी अनुसूया अजनो जारणी। इनहू कहो राम की वारणी ॥३२
इतना सन्त पुरातन जगियो हिरदै राखै। गुरु दादू का सेवग भाखै ॥
गुरु दादूका सेवग वखारण। गरीबदास मसकीना जारण ॥३३
नानी माता दोन्यु बाई। इनहू कह्यौ राम भज भाई ॥
वावो लोदी माता वसी। हवा साधु कह्यौ हरि-मारग धसी ॥३४
सतदास माधो मागौ रामदास। इनहू कह्यौ हरि तेरे पास ॥
चान्दा टीला दामोदरदास। इनहूं कह्यौ रहु हरि के वास ॥३५
दयालदास वडो गोपाल सतदास। इनहू कहह्यौ वन हरि के दास ॥
जगजीवन जगदीश स्याम पहलादू। इनहू कह्यौ भजो हरि साधू ॥३६
वखनो जैमल जनगोपाल चतुर्भुज वरणजारो। इनहू कह्यौ भजो साहब सारो ॥
नारायरण प्रागदास भगवान मारु सन्तदास। इनहू कहह्यौ करो हरि के वास ॥३७
मोहन दफतरी मोहन मेवाडो केशा राघो। इनहू कह्यौ भजो हरि आघो ॥
रज्जव दूजरण घडसी ठाकुर। इनहू कह्यौ होहु राम को चाकर ॥३८
सादो परमानद रीझू लालदास नाइक। इनहू कह्यौ भजो हरि लाइक ॥
जैमल पूररण गरीव साधु साध। इनहू कह्यौ भजि हरि-अगाध ॥३९
चतरो भगवान हरिसिंह भवना। इनहू कह्यौ होहु हरि-जना ॥
दयाल माधो जोगी खाटरयो चत्रददास। इनहू कह्यौ भज हरि अवास ॥४०
प्रागदास धीरो जगनाथ चतरो मर्दनो वीरो। इनहू कह्यौ भजो हरि हीरो ॥
लघु गोपाल रामदास मोहन नरसिंह लावालो। इनहू कह्यौ भजि राम राले आलो॥४१

तेजानन्द हरिदास कृष्ण गोविन्द झावरि वासो । इनहू कह्यो जगा राम सभासो ॥
डूंगो भगवान माधो सन्तदास । इनहू कह्यो करो हरि की आस ॥४२
वनमाली गैवेन्द्र ब्रह्मा धर मोनी । इनहू कह्यो भजो हरि क्यों भी ?
गंगदास चरणदास साधू अर मोहन । इनहू कह्यो राम भजि सोहन ॥४३
हरिदास कपिल नारायण टोडू माली । इनहू कह्यो जगाराम सभाली ॥
बघू चेतन नरहरि माधा कासी । इनहू कह्यो भजो एक विनांणी ॥४४
वाजिन्द परमानन्द निजाम नागर । इनहू कह्यो भजो हरि उजागर ॥
परसराम चतरो गोविन्द जंगी । इनहू कहयो राम है संगी ॥४५
गजनीसा सांवल महमूद वाहिद । इनहू कह्यो राम रमि सोहिद ॥
पूरण चतरो लालदास नागो । केवल केसो झांझु हरि मांगो ॥४६
बीठल जसा अरु जगनाथ । इनहू कह्यो रहु हरि के साथ ॥
केसो चतरो निरंजनी सन्ता तोलो सरबंगी । इनहू कहयो राम रंग रंगी ॥४७
ऊधो रामदास भूहड़ वनमालो । इनहू कहयो जगा राम संभालो ॥
बैन नारायण ठाकुर पांचो । इनहू कहयो भज साहब सांचो ॥४८
नारायण दांतणियो जगनाथ गोपाल ऊधो । इनहू कहयो राम भजि सूधो ॥
मरीजन रामदास सारंगदास । इनहू कहयो हरि हिरदै वास ॥४९
नारायण गोविन्द बिढ दास मुरारी । इनहू कहयो हरि भगति सारो ॥
दमणा माहन उजराधा हरिदास टोको पारहा इनहू कहयो राम भजि बारहा ॥५०
ईसर केनो साहूकार वैरागी स्यामा जगा । इनहू कहयो राम है सगा ॥
स्यामदास पूरबिया सांगा गांगा । इनहू कहयो सै राम मैं पांगा ॥५१
सांगो वहुराम स्यामदास कमो । इनहू कह्यो राम भज भलो ॥
सुन्दरदास गोपाल भगवान देवो गुजराती साथ । इनहू कह्यो भज हरि अगाध ॥५२
चरणदास मायो पचायण पूरा । इनहू कह्यो राम भज सूरा ॥
रामदास दामोदर नारायण नरसिंह पेमदास । इनहू कह्यो होहु हरि के दास ॥५३
ध्यानदास वामा लाला हरिदास जग्गी । इनहू कह्यो राम भज मंगी ॥
जगदीश मन्नदास माधो बाहिद मागी । इनहू कह्यो राम करे रलयासी ॥५४
चरणदास हेमो शकरदास धन । इनहू कह्यो होहु हरि को जन ॥
मानू माधो बैसोमास । इनहू कह्यो भज हरि हर हास ॥५५
चरणदास गुजराती बीरम बैगो रापा । इनहू कह्यो राम भज बाता ॥

उतराधा सन्त वखाणों

दयालदास दामोदर माधो। इनहू कह्यौ सोध हरि लाधौ ।।५६
परमानन्द भगवान मनोहर जीता। इनहू कह्यौ राम भज रहो न रीता ।।
गोपाल मनोहर वनमाली मीठा। इनहू कह्यौ राम तोहे दीठा ।।५७
हरिदास दमोदर परमानन्द दूदा। इनहू कहयौ राम भज सूदा ।।
हरिदास कलाल दयालदास काणोतेवालौ। इनहू कह्यौ राम भज रलि पालो ।।५८
सतोषो राघो कान्हड हरिदासा। इनहू कह्यौ राम भजि खासा ।।
राघो भगवान गोरा तो मोहन धनावसी। इनहू कह्यौ हरि के दर वसी ।।५६
जन जलाल खेमदास राघो माली। इनहू कह्यौ राम करै रखवालो ।।
ऊधोदास जोधा सतोषदास पिनारो। हरीदास मूडती-वालो ।।६०
विरही राघो राम लखी नारो। इनहू कह्यौ गहि राम को डालो ।।
तुलसी गोविंद दामोदर ईसर। इनहू कहयौ राम जनि वीसर ।।६१
पूरण ईसर गोपाल रंदास वशी। इनहू कह्यौ हरि के दर वसी ।।
लाखो नरहरि कल्याण केसो। इनहू दियो राम उपदेशो ।।६२
टोडर खेमदास माधो नेमा। इनहू कह्यौ रहु हरि की सीमा ।।
राणी रमा जमना अरु गगा। इनहू कह्यौ राम भज चगा ।।६३
लाडा भागा सतोषा राणी। इनहू कहयौ भज एक विनाणी ।।
रुकमणी रतनी सीता जसोदा। इनहू कहयौ करि राम का सौदा ।।६४

स्वामी दादू के कीरतनिया वखाणों

स्वामी दादू का कीरतनिया वखाणो। रामदास हरीदास धर्मदास बावो बूढौ वानो ।।
रामदास नाथो राघो खेम गोपाल। इनहू कहयौ हरि वडे दयाल ।।६५
हरिदास लखमी विसनदास कल्याण। तुलछा नेता स्याम सुजाण ।।
हुये होहिंगे अब ही साधा। तिनकौ खोजय हु मारग लाधा ।।६६
अगणित साध अगोचर वाणी। कृपा करौ मोहिं अपणौ जाणी ।।
गुरु प्रसादे या बुधि आई। सकल साध मेरे वाप र माई ।।६७
गुरु गुरु-भाई सब मे वूझ्या। तिनके ग्यान परम-पद सूझ्या ।।
जगि ये साध सिध सुण्या ते जाच्या। दियो रामधन दुख सब वाच्या ।।६८
जनम-जनम का टोटा भाग्या। अखै भडार विलसने लाग्या ।।
भक्तिमाल सुनै अरु गावे। योनि-सकट बहुरि न आवै ।।६६

॥ इति जग्गाजी की भक्तिमाल सम्पूर्ण ॥

विरह वालमीक स सुमरै एक। चन्द्रहास चित्रकेतु अनेक।
सरभऋषि कर्दम भृगु अगिराई। लउचम अत्रि करहे ल्यौ लाई ॥१३
विश्वामित्र माधवाचार्य ध्यावै। पदमनाभ परमातम गावै।
पुलह च्यवन जस कहै वखानी। लीन भये गौतम से ग्यानी ॥१४
सनक सनदन सन्त कवारू। सनातन पावै नहि पारू।
कवि हरि अन्तरिक्ष हरि गावै। प्रबुद्ध पुहपला पार न पावै ॥१५
अविर होत दुर्मिल हरिदासू। चम स रहै क्रमाजन पासू।
सनकादिक नारद भये पारू। नौ जोगेश्वर सुमिरे सारू ॥१६
कदरज हस्तामल निज सतू। अष्टावक्र भजै भगवन्तू।
जै विजै माडवी भृगु अगराई। अजामेल गरिणका गति पाई ॥१७
अनुसूया अजनी सु धावै। सहस अठ्यासी मुनि हरि गावै।
कोटि तेतीसूं कहे सु देऊ। इन्द्रदेवनि दुर्वासा सेऊ ॥१८
गवरां श्याम कार्तिक गनेसू। लियो कपिल कर निज उपदेसू।
धू सुनीति लिछमन सुख दैऊ। सन्त शौनिक गुरु गगेऊ ॥१९
गरण गन्धर्प देहुति सुमाई। जप निज नाम सु शुन्य समाई।
धमराय जयदेव वखारणी। जनक भये निज सन्त विनारणी ॥२०
ऊधो अक्रूर प्रहलाद हरणवतु। विल्वमगल वशिष्ट जपै अनन्तू।
अलखनाथ पराशर दिलीप अम्बरीष। समकि सीगी गुरु की सीख ॥२१
जड-भरथ रघु गुरणदत्त गुँसाई। मछिदर गोरख लगै सु नाई।
बालनाथ औघड सावरानन्दू। करणेरी चौरगी जपै गोविन्दू ॥२२
सुध-बुध भीन र भैरूँ रु जोगी। काकभडी कोरट अमृत भोगी।
टिटरणी कपाली खड नाम सारू। वीरू पाख वेलिया भई करारू ॥२३
नित्यनाथ निरजन विदु सु नाथू। सिद्धपाद सदानद कियो मन हाथू।
भून्नी गौड भालुकी तारे। निनारणवै कोड नृप पार उतारे ॥२४
सतीनाथ भर्थरी करै अनदा। श्री मछिदर चर्पट वन्दा।
सिध गरीबा वालगु नाई। देवल सुरति निरन्तर लाई ॥२५
नागार्जुन अरु घोडाचोली। अजैपाल अन्तर हरि वोली।
चुरणकर गोपीचन्द मैंरणवती माता। जलन्द्रीपाव धूधली जपै हो विमाता ॥२६
पूजपाद अरु हालीपाऊ। कान्हीपाव सिधा सौ भाऊ।
नागदेव जोगी जप जप जागै। माडकी पाव सु भये सभागे ॥२७

मोहनदास भजै हरि प्यारो। सिखन साखा सबसौं न्यारो।
रहै भासोप बह्म ल्यो लाई। गुरु दादू की नाभ्यो सगाई ॥५८
मोहनदास दफतरी सन्तू। सदगति भये सु भक्त भगवन्तू।
चत्रदास सिख भगति प्रकासू। भांफू के सोहे निज दासू ॥५९
देवल दमा रही भरपूरी। सन्त बिराजै जीवन मूरी।
तहाँ सुख को सागर दयालदासू। प्रेम प्रीति पंजर परकासू ॥६०
गलित गरीबी साहक दीन। रहै अहोनिसि हरि सू लीन।
स्वामी दादू को मत माक। छिन छिन देखै हरि सुख साक ॥६१
कमो दिसावर सांगो सन्तू। सिख पहराज सही दिढमन्तू।
भागां कर्मां के हरि रंगू। साध मग सूं पलट्यौ ग्रमू ॥६२
पीपा-वधी सन्त पिरागू। प्रगट भये सु पूरण भागू।
हिरदै बिराजै चोमदयालू। रहै सोह माहू गोपालू ॥६३
वन सु दमास घना को सांगो। हरि सन्तन में भीमो भागो।
अहनिसि सुरत निरन्तर जोरी। सकर वसो उनमनी डोरी ॥६४
पण्डित कपिल ग्रौर जगनाथू। सिरधाथौ सीस गह्यौ हरि हाथू।
सिख सुन्दर गोपाल दयालू। सतगुरु काटे सकल झंझालू ॥६५
सुन्दरदास सन्त निज पादू। सिख सुधरे पीपा पहलादू।
केसो चतरा कै गहि भापी। पोता सिख हरिदास र छापौ ॥६६
हरीदास हिरदै हरि हीक। सिख नारायण निर्मल सरीक।
पोपा वधी पूरण ग्यांन। परम-जोति मैं धरे सु ध्यान ॥६७
ऊधौ माधौ रामदास हेमू। भर देवल को भामक पेमू।
स्यामदास झालांणी साधू। करै सु भवगति को भाराधु ॥६८
प्रागदास बिहांणी सन्त सुजांण। दादू किरपा भजे नीसांण।
चरणदास सिख बन्यो नारायण। रामदास भगवन्त परायण ॥६९
सतदास परमानंद सुखनिवासू। बह्म निरमै गोबिन्ददासू।
गोपाल दामोदर गुरु सिख लीन। कैसो मनोहर मधुकर दीन ॥७०
मोहन मेवाड़ो मन धीक। संगि जगनाथ माधो मति धीक।
गरीबजन गोबिन्द गुरु ग्यांन। हरीदास कै हरि को ध्यान ॥७१
निर्मल सन्त मिजामर नागर। दोऊँ भये ग्यान के आगर।
ऊधो चतुर्भुज भर माधो काणी। रहची कही राम की बांणी ॥७२

सन्तदास अरु तेजा नन्दू। चरणदास नित करै अनन्दू।
माधौदास रु रुकमाबाई। रूपानन्द के राम सहाई।।७३
माधौ देव देवो गुजराती। आतम रहै परम रग राती।
देवेदर अरु मौनी कालो। श्यामदास मदाऊ वालौ।।७४
ठाकुर मोहन घडसी सन्तू। पावन भये सु भज भगवन्तू।
मगन भयो हरि को रग राच्यो। स्वामी दादू आगै नाच्यौ।।७५
चतरो थलेचो रामाबाई। सिख वीठल जोवौ सुखदाई।
रैदास-वशी दयाल सुधारे। नामा-वसी टीकू सारे।।७६
माधौ सन्तदास सिख गोपाल। हिरदे विराजै दीनदयाल।
पूरणदास सुमति को धीरू। सिख चतरो साहिबखा राघौ हीरू।।७७
चत्रौ भगवान भज करै विलासू। सुमर वनमालो हरिदासू।
साधू कियो शुद्ध शरीरु। सतगुरु कृपा दई हरि धीरु।।७८
सन्तदास सिख को अति सेवा। किये प्रशन्न परम गुरुदेवा।
मोहनदास महा वैरागी। रहै टहरडै हरि ल्यौ लागी।।७९
सादो परमानन्द भगवन्त भज जाग्या। माधो खेम सु गुरु की आग्या।
हरिसिह सन्त-शिरोमणि सारु। सिख सपूत मोहन हुशियारु।।८०
धनावसी चत्रदास सूरो। हरि मारग मे निविह्यौ पूरो।
जगदीशदास बाबो भगवानू। परम जोति मे प्राण समानू।।८१
देदो रहै धणी सू दीन। गरीबदास आगै लै लीन।
जगन्नाथ बाबा जपि जपि जागे। वणिक भगवान ब्रह्म कै आगे।।८२
गिरधरलाल गवार हरि साधू। नापा-वसी तहाँ जगनाथू।
सीधू सन्तदास बारा-हजारी। जैमल माधौ की बलिहारी।।८३
गोविन्ददास वैद्य मऊ थानू। सिख सपूत माधौ भगवानू।
जैदेव-वशी गोविन्द द न। तिलोचन वसी सुन्दर लीन।।८४
साभर भगवान राघौ जपियो।
सैर परै चोखा की साला। तहाँ रहे दादू दीनदयाला।।८५
जैमल को सिख सारगदासू। सिख नारायण भक्ति प्रकासू।
पोता सिख सो लालपियारो। सनमुख सदा सन्त निज सारौ।।८६
हरिसू हित लपट्यो जगनाथू। आनदास सिख विचरै साथू।
निर्गुण भोजन कियो न स्वादू। हिरदै न आन्यो वाद-विवादू।।८७

मोहनदास भजे हरि प्यारो। सिखन साखा सबसौं न्यारो।
रहै घासोप ब्रह्म ल्यो लाई। गुरु दादू की बंध्यो सगाई ॥५८
मोहनदास दफ्तरी सन्तू। सदगति भये सु भज भगवन्तू।
चत्रदास सिख भगति प्रकासू। झांझू कै सोहे निज दासू ॥५९
देवल दमा रही भरपूरी। सन्त बिराजै जीवन मूरी।
तहाँ सुख को सागर दयालदासू। प्रेम प्रीति पंजर परकासू ॥६०
गलित गरीबी भाइक दीन। रहै अहोनिसि हरि सू लीन।
स्वामी दादू को मत भारू। छिन छिन देखै हरि सुख सारू ॥६१
कमो बिसावर सांगी सन्तू। सिख पहराज सही चितमन्तू।
भागा भर्मा के हरि रंगू। साध संग सूं पलट्यो अंगू ॥६२
पीपा-वधी सन्त पिरागू। प्रगट भये सु पूरण भागू।
हिरदे बिराजै दीनदयालू। रहै सोह बादू गोपालू ॥६३
बन सु दयाल धना को सांगो। हरि सन्तन में लीया भागो।
अहनिसि सुरत निरंतर भारी। शंकर असो उनमना डोरी ॥६४
पंडित कपिल और जगनाथू। निरखयो सीस गह्यो हरि हाथू।
सिख सुन्दर गोपाल दयालू। सतगुरु काटे सकल जंजालू ॥६५
सुन्दरदास सन्त मिज आदू। सिख सुघरे पीपा पहलादू।
केसो चतरा के नहिं आपो। पोता सिख हरिदास र हापो ॥६६
हरीदास हिरदै हरि हीरू। सिख नारायण निर्मल सरीरू।
पोपा बधी पूरण ग्यान। परम-जोति में धरे सु ध्यान ॥६७
ऊधो माधो रामदास हेमू। घर देवल को आगम पेमू।
श्यामदास झालाणी साधू। धरे सु अनगति को आराधू ॥६८
प्रागदास बिहाणी सन्त सुजाण। दादू किरपा बधे नीसाण।
चरणदास सिष बन्यो नारायण। रामदास भगवन्त परायण ॥६९
सतदास परमानंद सुनमिदासू। ब्रह्म निरखै गोविन्ददासू।
गोपाल दामोदर गुरु सिख लीन। केसो मनोहर मधुकर दीन ॥७०
मोहन मेवाडो मन धीर। संगि जगनाथ माधो मति धीर।
गरीबजन गोविन्द गुरु ग्यान। हरीदास कै हरि को ध्यान ॥७१
निर्मल सन्त निजामर नागर। दोऊँ भये ग्यान के आगर।
ऊधो चतुर्भुज पर माधो कांणी। रहयो बढै राम की बाणी ॥७२

सन्तदास अरु तेजा नन्दू। चरणदास नित करै अनन्दू।
माधौदास रु रुकमाबाई। रूपानन्द के राम महाई ॥७३
माधौ देव देवो गुजराती। आतम रहै परम रग राती।
देवेदर अरु मौनी कालो। श्यामदास मदाऊ वालौ ॥७४
ठाकुर मोहन घडसी सन्तू। पावन भये सु भज भगवन्तू।
मगन भयो हरि को रग राच्यो। स्वामी दादू आगै नाच्यौ ॥७५
चतरो थलेचो रामाबाई। सिख वीठल जीवौ सुखदाई।
रैदास-वशी दयाल सुधारे। नामा-वसी टीकू सारे ॥७६
माधौ सन्तदास सिख गोपाल। हिरदै विराजै दीनदयाल।
पूरणदास सुमति को धीरू। सिख चतरो साहिवखा राघौ हीरू ॥७७
चत्रौ भगवान भज करै विलासू। सुमर वनमालो हरिदासू।
साधू कियो शुद्ध शरीरु। सतगुरु कृपा दई हरि धीरु ॥७८
सन्तदास सिख को अति सेवा। किये प्रशन्न परम गुरुदेवा।
मोहनदास महा वैरागी। रहै टहरडै हरि ल्यौ लागी ॥७९
सादो परमानन्द भगवन्त भज जाग्या। माधो खेम सु गुरु की आग्या।
हरिसिह सन्त-शिरोमणि सारु। सिख सपूत मोहन हुशियारु ॥८०
धनावसी चत्रदास सूरो। हरि मारग मे निविह्यो पूरो।
जगदीशदास वावो भगवानू। परम जोति मे प्राण समानू ॥८१
देदो रहै धणी सू दीन। गरीबदास आगै लै लीन।
जगन्नाथ वाबा जपि जपि जागे। वणिक भगवान ब्रह्म कै आगे ॥८२
गिरधरलाल गवार हरि साधू। नापा-वसो तहाँ जगनाथू।
सीधू सन्तदास वारा-हजारी। जैमल माधौ की वलिहारी ॥८३
गोविन्ददास वैद्य मऊ थातू। सिख सपूत माधो भगवानू।
जैदेव-वशी गोविन्द द न। तिलोचन वसी सुन्दर लीन ॥८४
साभर भगवान राघौ जपियो।
सैर परै चोखा की साला। तहाँ रहे दादू दीनदयाला ॥८५
जैमल को सिख सारगदासू। सिख नारायण भक्ति प्रकासू।
पोता सिख सो लालपियारो। सनमुख सदा सन्त निज सारौ ॥८६
हरिसू हित लपट्यो जगनाथू। आनदास सिख विचरै साथू।
निर्गुण भोजन कियो न स्वादू। हिरदै न आन्यो वाद-विवादू ॥८७

गह्यो निरंजन को मत ताकू। माया पंक न लगी लगाकू।
धनि प्रतिमा अविनाशी गायो। अन्तरयामी सूं मन लायो ॥८८
श्यामदास के सन्त प्रसंगू। निराकार को लागो रंगू।
आप निज नाम सु धर्म सुधारयो। साचो इष्ट सीस प धारयो ॥८९
सिस ऊधो नवल सुजा भक्त लाल। रामदास जंगली को हरि सू ख्याल।
रामदास गोकली कोमल-बैन। निर्मल मूरति देख्यो नैन ॥९०
माधो मोहन नारायण मदेरे। नाच्यो हरि को मारग हेरे।
पिराग रावत जमनाबाई। कुन्ती जसोदा सीस नमाई ॥९१

॥ इति बैनजी की भक्तमाल सम्पूर्ण ॥

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

प्रकाशित ग्रन्थ

राजस्थानी और हिन्दी

		मूल्य
१	कान्हड़दे प्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभ विरचित, सम्पादक—प्रो० के० बी० व्यास, एम०ए०।	१२.२५
२.	क्यामखा-रासा, कविवर जान रचित सम्पादक—डॉ० दशरथ शर्मा और श्री अगरचन्द नाहटा।	४.७५
३	लावा-रासा, चारण कविया गोपालदान विरचित सम्पादक—श्री महतावचन्द खारैड़।	३ ७५
४.	बाँकीदासरी ख्यात, कविराजा बाँकीदास रचित सम्पादक—श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम०ए०, विद्यामहोदधि।	५ ५०
५	राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १ सम्पादक—श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम०ए०, विद्यामहोदधि।	२ २५
६	राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग २ सम्पादक—श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम०ए०, साहित्यरत्न।	२ ७५
७	कवीन्द्र-कल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वती विरचित सम्पादिका—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत।	२ ००
८	जुगल विलास, महाराज पृथ्वीसिंह कृत, सम्पादक—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत।	१ ७५
९	भगतमाळ, ब्रह्मदास चारण कृत, सम्पादक—श्री उदैराजजी उज्ज्वल।	१ ७५
१०	राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर के हस्तलिखित ग्रंथों की सूची, भाग १।	७.५०
११.	राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग २।	१२ ००
१२	मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मुहता नैणसी कृत, सम्पा०—श्री बदरीप्रसाद	८ ५०
१३	,, ,, ,, ,, २, ,, ,, साकरिया	९ ५०
१४	,, ,, ,, ,, ३, ,, ,,	८.००
१५	रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढा कृत, सम्पादक—श्री सीताराम लाळस।	८ २५
१६	राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची, भाग १, सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य।	४ ५०
१७	राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची, भाग २, सम्पादक—श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम०ए०, साहित्यरत्न।	२ ७५
१८	वीरवांण, ढाढ़ी बादर कृत सम्पा०—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत।	४ ५०

गाह्यो निरञ्जन को मत सारू। माया एक न लागी लगारू।
तजि प्रतिमा अविनासी गायो। अन्तरयामी सूं मन लायो ॥८८

स्यामदास कैं सन्त प्रसंगू। निराकार की लागो रंगू।
आप निज नाम सु अग्म सुधारयौ। साखो इष्ट सीस प धारयौ ॥८९

खिल क्यो नवल सूजा अरु लाल। रामदास जगजी कौ हरि सू स्याल।
रामदास गोकली कोमल-चैन। निर्मल मूरति देख्या नैन ॥९०

माधो मोहन नारायण मदेर। नायो हरि का मारग हेरे।
पिराग रावत जमनाबाई। कुन्ती जसोदा सील समाई ॥९१

॥ इति चैनजी की भक्तमाल सम्पूर्ण ॥

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

प्रकाशित ग्रन्थ

राजस्थानी और हिन्दी

		मूल्य
१	कान्हडदे प्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभ विरचित, सम्पादक-प्रो० के० बी० व्यास, एम०ए०।	१२.२५
२.	क्यामखाँ-रासा, कविवर जान रचित सम्पादक-डॉ० दशरथ शर्मा और श्री अगरचन्द नाहटा।	४.७५
३	लावा-रासा, चारण कविया गोपालदान विरचित सम्पादक-श्री महताबचन्द खारैड।	३ ७५
४.	बाँकीदासरी ख्यात, कविराजा बाँकीदास रचित सम्पादक-श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम०ए०, विद्यामहोदधि।	५ ५०
५	राजस्थानी साहित्य-सग्रह, भाग १ सम्पादक-श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम०ए०, विद्यामहोदधि।	२ २५
६	राजस्थानी साहित्य सग्रह, भाग २ सम्पादक-श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम०ए०, साहित्यरत्न।	२ ७५
७	कवीन्द्र-कल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वती विरचित सम्पादिका-श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत।	२ ००
८	जुगल विलास, महाराज पृथ्वीसिंह कृत, सम्पादक-श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत।	१ ७५
९	भगतमाळ, ब्रह्मदास चारण कृत, सम्पादक-श्री उदैराजजी उज्ज्वल।	१ ७५
१०	राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर के हस्तलिखित ग्रंथों की सूची, भाग १।	७ ५०
११.	राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग २।	१२ ००
१२	मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मुहता नैणसी कृत, सम्पा०-श्री बदरीप्रसाद	८ ५०
१३	,, ,, ,, ,, २, ,, ,, साकरिया	९ ५०
१४	,, ,, ,, ,, ३, ,, ,,	८.००
१५	रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढा कृत, सम्पादक-श्री सीताराम लाळस।	८ २५
१६	राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची, भाग १, सम्पादक-पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य।	४ ५०
१७	राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची, भाग २, सम्पादक-श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम०ए०, साहित्यरत्न।	२ ७५
१८	वीरवांण, ढाढी बादर कृत सम्पा०—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत।	४ ५०

१९. स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण ग्रन्थसंग्रह सूची
सम्पादक—श्री गोपालनारायण बहुरा एम०ए० और श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी दीक्षित। ६.२५

२० सूरजप्रकास भाग १ कविया करणीदानजी कृत सम्पा०—श्री सीताराम लालस। ८.००

२१ " " २ " " " ६.५०

२२ " ३ " " ६.७५

२३ नेहतरंग रावराजा बुधसिंह हाडा कृत सम्पा०—श्री रामप्रसाद दाधीच, एम०ए०। ४.००

२४ मत्स्यप्रदेश की हिन्दी साहित्य को देन (शोध प्रबन्ध)
डॉ० मोतीलाल गुप्त एम०ए० पी-एच०डी०। ७.००

२५ राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज एस० आर० भाण्डारकर
हिन्दी अनुवादक—श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी एम०ए० साहित्याचार्य काव्यतीर्थ। ३.००

२६ समदर्शी आचार्य हरिभद्र श्री सुखलालजी सिंघवी
हिन्दी अनुवादक—शान्तिलाल म० जैन एम०ए० शास्त्राचार्य ३.००

२७ बुद्धि विलास बखतराम साह कृत सम्पादक—श्री पद्मधर पाठक एम०ए०। ३.७५

२८ रुक्मिणी हरण सांयाजी झूला कृत
सम्पादक—श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया एम०ए० साहित्यरत्न। ३.५०

२९ सन्त कवि रज्जब सम्प्रदाय और साहित्य (शोध प्रबन्ध) डॉ० व्रजलाल वर्मा ७.२५

३० भक्तमाल राघवदास कृत टीका—चतुरदास सम्पा०—श्री अगरचन्दजी नाहटा। ६.७५

प्रेसों में छप रहे ग्रन्थ

राजस्थानी-हिन्दी

१ खेंगार वंशज पताईरावल आख्यान कवि हेमरत्नकृत सम्पा०—श्री उदयसिंह भटनागर, एम०ए०

२ राठौड़ां री वंशावली सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य।

३ सचित्र राजस्थानी भाषा साहित्य ग्रन्थ सूची
सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य।

४ मीरां बृहत् पदावली स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण द्वारा संकलित
सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य।

५ राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग ३ सम्पा०—श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी दीक्षित।

६ पश्चिमी भारत की यात्रा कर्नल जेम्स टॉड
हिन्दी अनुवादक और सम्पादक—श्री गोपालनारायण बहुरा एम०ए०।

७ पृथ्वीराज रासो महाकवि चन्दबरदाई कृत
सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य।

८ सोढ़ायण महाकवि किसनजी कविया कृत सम्पादक—श्री शक्तिदान कविया एम०ए०।

९ बिन्नू रासो कवि मोहनदास राव कृत सम्पादक—श्री सौभाग्यसिंह शेखावत एम०ए०।

१० वसुधीरे बुकरा एवं मेहाजी बिटू कृत सम्पादक—श्री जौहरजी उज्ज्वल।

११ प्रताप रासो, जाचिक जीवण कृत
सम्पादक—डॉ० मोतीलाल गुप्त एम०ए० पी-एच०डी०।

१२ मुंहता नैणसी री ख्यात भाग ४ सम्पादक—श्री बदरीप्रसाद साकरिया।

सूचना पुस्तक-विक्रेताओं को २५% कमीशन दिया जाता है।

१९ स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण ग्रन्थसंग्रह सूची,
सम्पादक—श्री गोपालनारायण बहुरा एम.ए. और श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी दीक्षित।

२० सूरजप्रकास भाग १, कविया करणीदानजी कृत सम्पा.—श्री सीताराम लालस।

२१ ,, ,, २ ,, ,, ,,

२२ ,, ,, ३ ,, ,,

२३ नेहतरंग रावराजा बुधसिंह हाड़ा कृत सम्पा.—श्री रामप्रसाद दाधीच, एम.ए.।

२४ मत्स्यप्रदेश की हिन्दी साहित्य को देन (शोध प्रबन्ध)
डॉ० मोतीलाल गुप्त एम.ए. पी-एच.डी.।

२५ राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज एस. आर. भाण्डारकर
हिन्दी अनुवादक—श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी एम.ए. साहित्याचार्य काव्यतीर्थ।

२६ समदर्शी आचार्य हरिभद्र, श्री सुखलालजी सिंघवी
हिन्दी अनुवादक—शान्तिलाल म. जैन एम.ए. शास्त्राचार्य

२७ बुद्धि विलास बखतराम साह कृत सम्पादक—श्री पद्मधर पाठक एम.ए.।

२८ रुक्मिणी हरण सांयाजी झूला कृत
सम्पादक—श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम.ए. साहित्यरत्न।

२९ सन्त कवि रज्जब सम्प्रदाय और साहित्य, (शोध प्रबन्ध) डॉ० व्रजलाल वर्मा

३० भक्तमाल राघवदास कृत टीका—चतुरदास, सम्पा.—श्री अगरचन्दजी नाहटा।

प्रेसों में छप रहे ग्रन्थ

राजस्थानी-हिन्दी

१ गोरा बादल पदमिणी चउपई कवि हेमरतनकृत, सम्पा.—श्री उदयसिंह भटनागर, एम.ए.

२ राठौड़ांरी वंशावली सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य।

३ सचित्र राजस्थानी भाषा साहित्य-ग्रन्थ सूची
सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य।

४ मीरां बृहत् पदावली स्व. पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण द्वारा संकलित
सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य।

५ राजस्थानी साहित्य संग्रह भाग ३ सम्पा.—श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी दीक्षित।

६ पश्चिमी भारत की यात्रा कर्नल जेम्स टॉड
हिन्दी अनुवादक और सम्पादक—श्री गोपालनारायण बहुरा एम.ए.।

७ पृथ्वीराज रासो महाकवि चन्दबरदाई कृत
सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य।

८ [illegible] महाकवि किसनजी कविया कृत सम्पादक—श्री शक्तिदान कविया एम.ए.

९ बिन्द रासो कवि महेशदास राव कृत सम्पादक—श्री सौभाग्यसिंह शेखावत एम.ए.।

१० पाबूजीरे [illegible] एवं मेहाजी बिठू कृत सम्पादक—श्री [illegible]।

११ प्रताप रासो जाचिक जीवण कृत
सम्पादक—डॉ० मोतीलाल गुप्त एम.ए. पी-एच.डी.।

१२ मुंहता नैणसीरी ख्यात भाग ४ सम्पादक—श्री बदरीप्रसाद साकरिया।

सूचना : पुस्तक-विक्रेताओं को २५% कमीशन दिया जाता है।